

REFERENCE
Not to be lent out.

PROF. RAGHUVIRA'S EXPEDITION TO CHINA

PART I

(Travel Diary and Photographs)

edited by

Prof. Dr. **LOKESH CHANDRA**

and

Dr. Mrs. **S. D. SINGHAL**, Benaras Hindu University

**Published by the
INTERNATIONAL ACADEMY OF INDIAN CULTURE
J22 Hauz Khas Enclave
New Delhi 16 (India)**

*All rights reserved, including the right to
reprint, translate or to reproduce this
book or parts thereof in any form.*

**Printed: January 1956
Published: January 1969**

**Printed by
the Arya Bharati Mudranalaya
New Delhi-16**

आचार्य रघुवीर का चीन-अभियान

भाग १ (यात्रा-दैनिकी)

संपादक

डॉ. लोकेशचन्द्र एम्. ए., डी. लिट्.

एवं

डॉ. श्रीमती सुदर्शना बेबी सिंहल, डी. लिट्.

प्रकाशक

सरस्वती-विहार, नई दिल्ली

ŚATA-PITAKA SERIES

INDO-ASIAN LITERATURES

Volume 76

Reproduced in original scripts and languages
Translated, annotated and critically evaluated by
specialists of the East and the West
in a Series of Collectanea

Founded by

RAGHU VIRA M.A., Ph.D., D.Litt. et Phil.

आचार्य-रघुवीर-ममुपक्रान्तं

जम्बुद्वीप-राष्ट्राणां

(भारत-नेपाल-गान्धार-शूलिक-तुर्क-पारस-ताजक-भोट-चीन-मोंगोल-मञ्जु-
उदयवर्ष-सिंहल-मुवर्ण-भू-श्याम-कम्बुज-चम्पा-द्वीपान्तरादीनां)

**एकैकेषां समस्रोतसां संस्कृति-साहित्य-समुष्णय-
सरितां सागरभूतं**

शतपिटकम्

विषयसूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
भारत से प्रस्थान	१	युन्-काङ्	५२
क्वाङ्-चोड	४	उपरि ह्वा-यन् स्स	६३
षड्बोधिवृक्ष मन्दिर	६	अधो ह्वा-यन् स्स	६४
पेइ-चिङ्	१२, १२५	कोयले की खान में	६४
पेइ-चिङ् पुस्तकालय	१४	तुन्-ह्वाङ् के लिए प्रस्थान	६६
राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य विभाग	१४	लान्-चाओ	६७, ८६, ९५
प्रथम मई का उत्सव	१६	चू-च्यान् (नगर)	६६, ८६
विद्या-विभाग	२३	युङ्-मन्	७१
प्रामाद-पुस्तकालय	२३ १२७	आन्-शी (ग्राम)	७१, ८८
भाषाविज्ञान-पीठ	२५	तुन्-ह्वाङ्	७१
युङ्-हो-कुङ्	२७, १२०, १२५	तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय	८०
क्वान्-ची मन्दिर	२६, १२५, १३२	तुन्-ह्वाङ्-गिलालेख	८४
मुङ्-चू स्म	३०	पञ्चोत्स मन्दिर	८६, ९६
फू-थी स्म	३०	शी-निङ् में भोट और मोंगोल नृत्य	९०, ९५
तुङ्-च्याओ स्म	३०	कुम्-बुम् अथवा ता-अर् स्म	९१
कृषि-उत्पादन-महकारी-मण्डल	३१	ताओ मन्दिर	९६
वस्त्र-निर्माणी संख्या १	३१	शी-आन्	९६
राष्ट्रीय-अल्पसंख्यक-जाति-विद्यालय	३३	दुन्दुभि-भवन	९७
पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय	३८	घण्टा-भवन	९७
पी-विन् स्म (५०० अर्हतों का मन्दिर)	४०	थस-अन् स्म	९७
चोउ-अन्-लाइ से भेट	४१	ता-यन्-था (वनहंस का महामन्दिर)	९८
श्रीधम-प्रासाद का बुद्ध-परिमल-स्तम्भ मन्दिर	४४	ता-च्यान्-फू स्म	९९
फू-तू स्स	४५	श्याओ-यन्-था	९९
महाकाल-म्याओ	४५	शी-आन् विश्वविद्यालय	९९
श्रमिक-संघ	४६	फू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स	१००
ता-नुङ् (नगर)	४७, ५१, ६३	तू-शू-क्वान् (पुस्तकालय)	१०१
होहे-हाँता	४८	शी-आन् अङ्गू तागार	१०२
शी-ली-थू-चाओ मन्दिर	४९	क्वान्-जन्-स्स	१०२
फा-शी स्स (धर्मनन्दी विहार)	४९	हुङ्-फू स्स	१०३
ता-चाओ-बू-ल्याङ् स्स.	५०	थस-अन् स्स	१०३
हु तारम स्मारक-स्तम्भ	५१	मिङ्-लुङ् भवन	१०३

	पृष्ठ		पृष्ठ
शिङ्-च्याओ स्स	१०३	चिङ्-लिङ् अर्थात् नान्-चिङ्-बीडसूत्र-	
ता-शिङ्-शान् स्स	१०४	मुद्रणालय	१४३
काङ्-खेन् स्स	१०४	छो-श्या स्स	१४४
वो-लुङ् स्स	१०५	शाङ्-हाङ्	१४६
पेङ्-लिन् (शिला-वन)	१०५	चिन्-आन् स्स	१४६
वन्-म्याओ (ऐतिहासिक गिलालेखों का संग्रहालय)	१०५	यू-फू स्स	१४७
ह्वान्-यन् स्स	१०६	सूती कपड़ों को रंगने और छापने की निर्माणी	१४७
थ्साओ-थाङ् स्स	१०६	हाङ्-चोउ	१४९
चीनी छाया-नाटक	१०६	लेङ्-फङ् स्तूप	१५०
लो-याङ्	१०८	लिङ्-गिन् स्स	१५१
पो-मा स्स (श्वेताश्व-विहार)	१०८	फेङ्-लाङ्-फङ्	१५२, १५४
छो-युङ् था अथवा पूर्वीय पो-मा स्स	११०	श्या-ध्येन्-चूं स्स	१५२
अष्टकोण-स्तम्भ-धारणी	१११	षाओ-छिङ्-लू स्स	१५२
लुङ्-मन्	११२	काओ-ली स्स	१५३
ता-चिङ् (ग्राम)	१२१	लू-फो स्तूप	१५३
मुक्देन्	१२२	युन्-छी स्स	१५३
श-सङ् स्स अथवा पीत मन्दिर	१२३	श-वू तुङ् (५१६ अर्हत्)	१५४
छिङ् राजाओं के प्रासाद में	१२३	यन्-श्या तुङ्	१५४
मुक्देन् पुस्तकालय	१२३	चिङ्-शान् स्स	१५६
आन्-शान् में लोहे की निर्माणी	१२४	स-याङ् गिरि	१५६
पेङ्-चिङ् पुस्तकालय	१२५, १२६	वू-थाङ्-शान् अथवा छिङ्-ल्याङ्-शान्	१५७
भारत-संगीत-मण्डल का विशेष कार्यक्रम	१२५	ता-था-खेन् स्स	१५८
शिष्टगुणाला	१२७	वू-पाङ्-खो-हन्-था अर्थात् ५००-अर्हत् मन्दिर	१६०
चीनी संसद् का मन्त्र	१२७	ना-फू स्स अर्थात् महाबुद्ध-मन्दिर	१६०
पुरातन साहित्य विक्रयशाला	१२८	सुन्-यात्-सन्-विश्वविद्यालय	१६०
मोंगोल सेना की संगीत-मण्डली	१२९	हौङ्-कौङ् से प्रस्थान	१६२
महाभक्ति पर पङ्कालेख	१३०	सिंहपुर	१६३
चीन में संस्कृत	१३२	पीनांग	१६३
चीन से प्रस्थान-भोज	१३३	श्रीलंका	१६३
चोउ-अन् लाङ् को कविता समर्पण	१३८	बम्बई	१६४
पेङ्-चिङ् से प्रस्थान	१४२	नई दिल्ली में प्रवर्षांनी	१६५
नान्-चिङ् अङ्क तागार	१४२		

चित्रसूची

पृष्ठ के सामने

चीन का जनव्याप्त संस्कृत मन्त्र	१
भारत के एक आचार्य चीन-प्रवास में	२
इ-चिङ्ग विरचित संस्कृत-चीनी कोष के विलोकन में तत्सलीन आचार्य रघुवीर	३
पेइ-चिङ्ग के स्थात्र पर आचार्य रघुवीर का स्वागत	१२
राष्ट्रमन्दिर छि न्येन् ध्येन् में	१३
युङ्ग-हो-कुङ्ग	२६
युङ्ग-हो-कुङ्ग में मैत्रेय की महाप्रतिमा	२७
क्वान्-ची मन्दिर	२८
क्वान्-ची मन्दिर के पुस्तकागार में	२९
क्वान्-ची मन्दिर की महाप्रतिमा के समक्ष	३०
पेइ-चिङ्ग की वस्त्र-निर्माणी में	३२
कुओ-मो-जो आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए	३७
चोउ-अन्-लाइ के साथ	४१
आचार्य रघुवीर चोउ-अन्-लाइ को अपनी 'अहिंसा-पञ्चाशिका' देते हुए	४३
धर्मनन्दी विहार (होहे-हाँता)	४८
धर्मनन्दी विहार की मुद्रणशाला में	४९
होहे-हाँता के विहार की वेदी देखते हुए और मन्त्रपाठ लिखते हुए	५०
आभ्यन्तर मोंगोल का अमिताभ-विहार	५१
युन्-काङ्ग के गुहा-कलाप में	५२
युन्-काङ्ग में तथागत की विशाल प्रतिमा	५३
युन्-काङ्ग की बुद्ध-त्रिमूर्ति (६-७वीं शती)	५४
युन्-काङ्ग की गुहा २२	५५
तुन्-ह्वाङ्ग गुहावली का नवभूमिक काष्ठ-निर्मित प्रवेश-मण्डप	७१
तुन्-ह्वाङ्ग के नवभूमिक मण्डप की शिखरभूमि पर आचार्य रघुवीर	७२
तुन्-ह्वाङ्ग गवेषणालय में प्राचीन लिपियां देखते हुए आचार्य रघुवीर	७३
तुन्-ह्वाङ्ग गुहा २८८ में चित्रानुकृति-संभार के पास	७४
तुन्-ह्वाङ्ग गुहा २८५ में चित्रानुकरण करता हुआ कलाकार	७५
तुन्-ह्वाङ्ग गुहा २७५ में छिङ्ग-कालीन लीलागमना नारी	७६
आधुनिक चीन में तुन्-ह्वाङ्ग कला	७७

मो-गाओ-कू में षडक्षरी विद्या का षड्लिपि शिलालेख	७८
तुन्-ह्वाङ् की स्वी-कालीन मूर्तियों में आचार्य रघुवीर	७९
तुन्-ह्वाङ् गुहा ३१९ की स्वर्णयुगीन कलाकृतियों में आचार्य रघुवीर	८०
तुन्-ह्वाङ् गुहा २३८ में पुनरालेखन देखते हुए आचार्य रघुवीर	८१
तुन्-ह्वाङ् के थाङ्-कालीन भित्तिचित्रों में आचार्य रघुवीर	८२
तुन्-ह्वाङ् की थाङ्-कालीन तथागत-प्रतिमा देखते हुए आचार्य रघुवीर	८३
तुन्-ह्वाङ् में ब्राह्मी लिपि में ध्वजस्तम्भ-लेख	८४
तुन्-ह्वाङ् के अध्यक्ष छाङ् आदि के साथ	८८
लान्-चाओ के मन्दिर-द्वार पर कालचक्रतन्त्र का बीजमन्त्र	८९
आम्यन्तर निम्बत स्थित कुम्-बुम् बिहार	९०
कुम्-बुम् के दो जीवित बुद्धों के साथ	९१
कुम्-बुम् का उपदेश-भवन	९२
कुम्-बुम् का जाम्याङ्-कुन्सिक् खाङ् पुस्तकागार	९३
कुम्-बुम् की प्राचीन मुद्रणशाला	९४
कुम्-बुम् के जीवित बुद्ध आचार्य रघुवीर को भेंट करते हुए	९५
कुम्-बुम् के दिवंगत आचार्यों के मुरक्षित शरीर	९६
शि-आन् में सप्तभूमिक श्वेन्-च्वाङ् स्तूप	९७
श्वेन्-च्वाङ् स्तूप की उपरिभूमि	९८
पञ्चदशभूमिक ई-चिङ् स्तूप	९९
श्वेन्-च्वाङ् समाधि के समीप का विहंगम दृश्य	१००
पञ्चभूमिक श्वेन्-च्वाङ् समाधि	१०१
श्वेन्-च्वाङ् के समाधि-लेख की छाप लेते हुए	१०२
बिच-चि (श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य)	१०३
य्वेन्-त्स (श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य)	१०४
वो-लुङ् स्स विहार में गिलोस्कीर्ण बुद्ध-पाद	१०५
शो-आन् के अद्भुतागार में ६-७वीं शती की मूर्तियां	१०६
पो-मा स्स अर्थान् चीन का प्रथम श्वेताश्व विहार	१०७
पो-मा स्स के प्रवेशद्वार पर श्वेत घोड़ा	१०८
पो-मा स्स में दो भारतीय धर्माचार्यों की समाधियां	१०९
पो-मा स्स के पूर्व में १३-भूमिक छी-युङ्-या अर्थात् मेघचुम्बी स्तूप	११०
लुङ्-मन् गुहाएं प्रवेश करते हुए आचार्य रघुवीर	११२
लुङ्-मन् से बुद्ध-त्रिमूर्ति के शिलाचित्र की छाप	११३

लुङ्-मन् की १३वीं गुहा की छत में विराट् पद्य	११६
लुङ्-मन् की महाप्रतिमाओं की अधिच्छाया में	११७
लुङ्-मन् की महाप्रतिमा का समीप-चित्र	११८
लुङ्-मन् की गुहा में मूर्ति का अवलोकन करते हुए	११९
युङ्-हो-कुङ् के अध्यक्ष यिशिगावा के साथ	१२०
महाकाल के अनुचर क्षेत्रपाल	१२५
श्वेत्-च्वाङ् का शिलाचित्र	१४१
डॉ. राधाकृष्णन् प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए	१६४
आचार्य रघुवीर पं. नेहरू को मोंगोल से लाए सत्तू का प्रसाद देते हुए	१६५
प्रदर्शनी का विहंगम दृश्य	१६६
प्रदर्शनी में तान्त्रिक कपाल	१६७

PREFACE

I have witnessed hoary sights
 And have sipped wondrous saps.
 Nineteen centuries have rolled back
 And I have joined the marching caravan of time.
 What the Han, the Uigur,
 The Tibetan, the Mongol and the Manchu
 Had garnered,
 A part, a tiny part,
 But withal a substantial part,
 I carry as a cherished gift
 Bestowed by your loving heart
 And generous hands.

Raghu Vira

Trailing into the steps of the great Indian Ācāryas who spread the Dharma in China and the Chinese pilgrims of faith who betook hazardous journeys to India, my father Prof. Raghu Vira took an expedition to China, Inner Mongolia, Central Asia and Inner Tibet in search of materials for his grand project of Indo-Asian literatures to which he gave the collective appellation of the Śatapīṭaka. On his return, he described his richly rewarded expedition in the following statement :

“On an invitation from the Government of China I went there to study and to collect materials concerning the interflow of culture between India and China. To assist me my daughter Sudarhana Devi accompanied me.

“We travelled throughout China for three months and three days. We were given great facilities by the Government. We went as far and as long as we could. We saw wonderful places and things till our eyes got fatigued. We collected till our arms could bear the weight no longer. We enjoyed the hospitality of the Chinese people and Government. Premier Chou En-lai took personal interest in all our activities, of which I may particularly mention the activity of acquiring literature in Chinese, Tibetan, Mongolian, Manchurian and Hsi-hsia languages.

“While Chinese and Tibetan have already attracted some students and scholars, Mongolian, Manchurian and Hsi-hsia languages and literatures are brought for the first time in the long history of India. Hsi-hsia is a name to conjure with, a name known to a score of men, but its literature hardly known. China has about a hundred texts. The Government of China have complied with my request of microfilming the entire lot and giving it to me.

“My list of rare acquisitions contains a remarkable set of coloured photographs taken by me with the help of the Government photographers inside the world-famed grottoes of Tun-huang, lying beyond the western-most gate of the Great Wall of China. An inscription preserved in the Caves gives us 366 A.D. as the starting point of the undertaking of the first cave. They are no less than 476, some small, some big, some no more than niches, others being spacious halls. Their walls and ceilings have been made the messengers of the noble message of Lord Buddha. Artists have been busy till as late as 1936 A.D. It is the biggest art gallery, authenticated historically, covering a period of sixteen centuries and the result of collaboration of artists and scholars belonging to a multitude of nationalities: Chinese, Tibetans, Mongols, Uigurs and Indians. There was a time when the restricted view of nationalism did not form either boundaries or barriers.

“The Tun-huang caves were made famous in the beginning of the century. Scholars of various nationalities led scientific expeditions and photographed them. Aurel Stein, Pelliot, Warner and others took away thousands of manuscript rolls. They were written in diverse tongues, before the 10th century A.D. These rolls were preserved in one of the caves. Only eight thousand and odd rolls still remain in China.

“The pictures of Tun-huang so far have been taken in monochrome. As I was told by the Director of the Tun-huang Institute. I am the first to be allowed and helped in photographing the murals in colour. I hope I shall be able to publish them in colour and that paucity of funds shall not stand in the way.

“When I said to Premier Chou En-lai that Tun-huang Caves are significant to the whole world, he said ‘yes’ but they are the standing monuments of the close co-operation between India and China. Their historical value for China and India is inestimable. The Chinese Government has made Tun-huang murals the focal point in the new art-resurgence and has utilised them for decorating pillars, walls and ceilings of new public buildings all over China.

“The younger as well as the older generation of Indians knows in a very broad way that Buddhism spread over the length and breadth of China. While in China, Mongolia and Manchuria and on the borders of Turkistan, I have been able to see and collect ample evidence of Indian religion as it obtained during the 7th, 8th, 9th and 10th centuries. Then Buddhism had been permeated thoroughly with Śaiva practices in their Tantric form. I bring with me an astounding mass of mantras wherein Buddhism and Śaivism have welded.

“In future it would be better to rename the religion of High Asia and East Asia as Śaiva-Buddhism. Only then one would understand the presence of the Mahākāla Temple in the heart of Peking. Only then one would understand the

presence of the famous Gāyatri mantra of the Yajur-Veda in the grand collection of dhāraṇīs.

“How the Mongols live their spiritual life is best told by silk-paintings in monastery halls. I have been able to bring dozens of these wondrous works of art. The oldest among them may be three to four centuries old. The youngest are of the 19th century.

“Sanskrit inscriptions are generously sprinkled over the provinces of China. I have brought estampages of a few.

“China is a land of stelae. The interflow of culture between India and China could not have been historically phased without the information communicated by these stelae. Even portraits are incised on them. It was able to get skilled and experienced men who could prepare lovely inked copies from the slabs. It was worthwhile to have the estampages mounted. Mounting estampages is a Chinese art unknown to India and not practised on any appreciable scale anywhere in Europe or America”.

Thirteen years have passed since 1955 and my father is no more. His wishes and words ring in my ears. From the deeps of silence I can still hear his voice: “I am planning to publish an account of my Chinese travels together with a number of photographs. Very soon we shall be starting the publication of some of the rare works”. The present volume is the first of a long series designed to present important and outstanding materials of his Expedition. It reproduces his travel diary, illustrated with photographs. The coming volumes will comprise photographs of different Buddhist monasteries, stūpas and cave-complexes, estampages of important inscriptions, a full volume of coloured plates of Tun-huang murals and sculptures, over a hundred volumes of Tun-huang Chinese rolls, a volume or two of Uigur, Saka and Tibetan fragments and rolls from Tun-huang, three or four volumes on early Mongol texts from the Imperial Palace at Peking, a few volumes of Manchu Buddhist texts, thirty volumes of Sanskrit texts in Manchu, Chinese, Mongolian and Tibetan transcriptions and so on. This knowledge will widen the horizon and deepen the understanding of those who are trying to comprehend the culture of India.

Lokesh Chandra

ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः
 ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः
 ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः



चीन का जनव्याप्त संस्कृत मन्त्र । पाठ है—
 ॐ नमः शंभुः
 अमोघवीरोचन महापुत्र मणिपत्र
 ज्वल प्रवर्तय हूं फट् स्वाहा
 आविर हूं कां वं प्र ष्मं भः

ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः
 ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः
 ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः ॐ शंभुः



One of the widespread Sanskrit mantras in China.

प्रातः का समय था। मैं संसद् जाने लगा था कि चीनी दूतावास से श्री सो-वान्-पिट् ने दूरभाष किया - यदि आप आज मिलने का कष्ट कर सकें तो महती कृपा होगी। संसद् के सत्र से लौट कर दोपहर के समय मैं श्री सो-वान्-पिट् से मिलने गया। आपने चीनी शासन के विद्या-विभाग (Academia Sinica) की ओर से आया हुआ पत्र दिखाया। पत्र चीनी भाषा में था। केवल एक पंक्ति थी - विद्या-विभाग आचार्य रघुवीर को छः सप्ताह की चीन-यात्रा के लिए निमन्त्रित करता है।

बहुत मासों से मैं चीनी शासन से चीनी वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावलि के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार कर रहा था। वैज्ञानिक शब्दावलि की समस्या चीन और भारतवर्ष में मूलतः समान है। चीनियों ने इस शताब्दि के आरम्भ से इस दिशा में विशेष प्रगति की है। पेन्सिल, मोटर, रेल, बिस्कुट, चॉकलेट, पुलिस, रेडियो आदि शब्दों के लिए उन्होंने प्रारम्भ से ही चीनी के नए बनाए हुए शब्दों का प्रयोग किया है।

निमन्त्रण-पत्र इस पत्र-व्यवहार का परिणाम था।

इन दिनों मैंने दिल्ली में लिखने पढ़ने के लिए अपना नया कार्यालय बनाया था। संसद् के सदस्यों के लिए संसदीय प्रक्रिया की दो अढ़ाई सौ पृष्ठ की पुस्तक लिखना आरम्भ कर दिया था। चारों ओर से सामग्री इकट्ठी हो रही थी। चीन जाने का अर्थ इस कार्य को स्थगित करना होते हुए देख मन में कुछ क्षोभ हुआ। किन्तु एक ओर से चीन और भारत के प्राचीन सम्बन्ध और दूसरी ओर से नए सम्बन्ध - इनका आकर्षण संसदीय प्रक्रिया पुस्तक लिखने की अपेक्षा अधिक महत्त्व का जान कर मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया और प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से परामर्श करके अपनी चीन-यात्रा की योजना चीनी शासन को भेज दी।

मेरा विचार जलयान से जाने का था। किन्तु जलयान से यात्रा करने पर विलम्ब हो जाता और पेइ-चिङ्ग का पहली मई का उत्सव मैं देख न पाता। श्री सो-वान्-पिट् की यही इच्छा थी कि मैं इस उत्सव में अवश्य सम्मिलित होऊँ। साम्यवादी चीन की क्या आशाएँ हैं, क्या उद्देश्य हैं और इनको पूरा करने के लिए माओ-त्स-तुङ्ग और उनके साथी जनता को किस प्रकार से देश के विकास के लिए काम में प्रेरित किए हुए हैं, यह जनता किस उत्साह और परिश्रम से नव-समाज-निर्माण में लगी हुई है, यह देखने का अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। अतः जलयान का विचार छोड़ कर विमान से ही जाने का निश्चय किया।

चीन में व्यक्तता इतनी रहेगी कि यदि प्रतिदिन का विवरण प्रतिदिन न लिखा गया तो पीछे जाकर अनेक छोटी छोटी किन्तु आवश्यक बातें भूल जाएंगी। पुस्तकालयों, मन्दिरों, शिक्षा-स्थानों, उद्योग-निर्माणियों, स्त्री और बच्चों के हित के लिए बनाए गए भवनों आदि में अकेले जाने की अपेक्षा एक और व्यक्ति का साथ होना आवश्यक है। आवश्यक राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक वार्तालापों में जो व्यक्ति साथ साथ टिप्पण लेता जाए ऐसे व्यक्ति का होना लाभकारी होगा। चीन में सब स्थानों पर और सब कार्यों में एकमात्र भाषा चीनी का प्रयोग होता है। इसलिए यदि यह व्यक्ति चीनी लिख भी सके तभी पूरा लाभ होगा। चीनी शब्दों को अंग्रेजी अथवा देवनागरी लिपि में लिखना निरर्थक है। चीनी भाषा की विशेषता ही यह है कि लिखे हुए शब्द अधिकांश उच्चारण के अनुकूल नहीं, किन्तु अर्थ के अनुकूल है। भारतीय अक्षर इस स्थिति के अच्छे उदाहरण हैं। हिन्दी और पंजाबी दोनों में ३ का अक्षर एक ही समान लिखा जाता है। यह अर्थ का वाची है, उच्चारण का नहीं। अतः इसका अर्थ हिन्दी और पंजाबी दोनों में एक ही है। किन्तु यदि उच्चारण के अनुकूल लिखना हो तो पंजाबी में “त्रै” लिखेंगे और हिन्दी में “तीन”।

बौद्ध धर्म के साथ परिचय होना तथा संस्कृत जानना भी ऐसे व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

मेरी लड़की सुदर्शना ने २७ मार्च को अपनी बी.ए. की परीक्षा पूरी की थी। वह अब रिक्त थी। अनुसन्धान में प्रायः प्रयुक्त शब्दों से परिचित है। संस्कृत में काव्यतीर्थ कर चुकी थी। चीनी जापानी का भी अध्ययन आरम्भ किया हुआ था। मैंने इसको अपनी यात्रा का साथी बनने के लिए लिखा।

दिल्ली से नागपुर आया। वहां दो तीन दिन ठहर कर यात्रा की सज्जा पूरी की। यात्रा के प्रारम्भिक व्यव के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने सहायता की। अपना बृहत् आंग्ल-हिन्दी कोष (जिसमें प्रशासन, विज्ञान, व्यापारादि के डेढ़ लाख से ऊपर शब्द, समास और वाक्यांश हैं) तथा अपनी अन्य वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकें साथ लीं। चीन में कितने ही प्राचीन दृश्य देखने को मिलेंगे जिनको सदा के लिए अपनी स्मृति में बांधना सम्भव न होगा पर आवश्यक अवश्य होया। इसलिए अपनी स्मृति की सहायता के लिए और अन्य मित्रों के उपकारार्थ मैंने चार कॅमिरे (camera) साथ लिए। एक चलचित्रों के लिए, एक विशेष रूप से प्राचीन कला-कृतियों की अनुकृति के लिए, और दो सञ्चारण काले और रंगीन चित्रों के लिए। भारतीय संघीत के उदाहरण-स्वरूप तीस चालीस सीताविम्ब (records) साथ किए। भारतवर्ष ने पिछले दिनों में किस्तकी आर्थिक उन्नति की है वह दिखलाने के लिए चार पांच चलचित्र भी साथ लिए।



भारत के एक आचार्य प्रवास में।
“तभी तो मैने अपने पग इस
ओर उठाए कि मै उस संस्कृति-
सरिता-प्रवाह की गवेषणा करू
जिसने चीन और भारत के
हृदयों को जोड़ा था।”

रघुवीर

One of the Indian Acāryas who took the Dharma to the Celestial Empire,
a precursor of Prof. Raghu Vira a modern pilgrim to China in search of
that interflow :

“I have witnessed hoary sights
And have sipped wondrous saps,
Nineteen centuries have rolled back
And I have joined the marching caravan of time.” Raghu Vira



इन्चिह्न विरचित मस्कृत-चीनी कोष के विलोकन मे मल्लीन आचार्य रघुवीर
Prof. Raghu Vira glancing through a Sanskrit-Chinese
lexicon compiled by I-tsing

संजीत और उद्योग प्रगति के ये श्रेष्ठ और दृश्य उदाहरण श्री केसकर जी के सौजन्य से प्राप्त हुए ।

१७ एप्रिल को प्रातः हम दिल्ली से चले और २० को कलकत्ते से विमान द्वारा आठ नौ घण्टे में चीनी राज्य बहिःस्थित चीनी नगर हॉङ्ग-काँङ्ग में पहुंच गए । यहाँ हमारा स्वागत करने के लिए चीनी शासन के प्रतिनिधि आए हुए थे ।

यद्यपि हॉङ्ग-काँङ्ग द्वीप और उसके साथ का चीनी तटस्थ ब्वो-लून् चीन का भाग है किन्तु अभी तक चीनी शासन ने इसकी मांग नहीं की । यहाँ अंग्रेज निष्पाक राज्य करते हैं । जब तक राजनैतिक स्थिति शान्तिमयी नहीं बन जाती तब तक चीन हॉङ्ग-काँङ्ग की मांग न करेगा ऐसा मेरा विश्वास है । हॉङ्ग-काँङ्ग द्वार है जिसमें से सारे संसार के पदार्थ चीन में प्रवेश करते हैं और आवश्यकतानुसार बाहर जाते हैं ।

हमको दिल्ली में ही बता दिया गया था कि रंगीन चित्रपट्टियां (films) चीन में न मिलेंगी और हॉङ्ग-काँङ्ग में भारतवर्ष की अपेक्षा सस्ती मिलेंगी । सो हमने हॉङ्ग-काँङ्ग से चित्रपट्टिया और अन्य सम्भार मोल लिया ।

२३ को प्रातः ही गाड़ी में पेइ-चिङ्ग के लिए प्रस्थान किया । ४०, ५० मील की दूरी पर चीन की सीमा आ गई । संयान (train) परिवर्तन हो गया । चीनी शासन के अधिकारी स्वागत करने के लिए आए । इनके साथ एक दुभाषिया लड़की भी थी ।

२३ एप्रिल, दोपहर के एक बजे से लेकर २६ जुलाई तीन बजे तक, जब हम फिर यहां लौट कर पहुंचे, दुभाषिये और शासन के कोई न कोई अधिकारी हमारे साथ रहे, एक दिन भी हमसे अलग न हुए ।

शासन के अधिकारियों के साथ रहने के कारण आयातकर विभाग ने हमारे से न कोई प्रश्न पूछे और न सम्भार को ही खोला ।

दो बजे चीन की गाड़ी में सवार हुए । गाड़ी में बैठते ही उच्च स्वर में साम्यवादी गीत कर्णगोचर हुए । संयान के प्रत्येक डिब्बे में ये गीत सुनाई पड़ते हैं ।

हम गवेषणा करते करते एक डिब्बे से दूसरे, दूसरे से तीसरे में चलते गए और अन्त में छोटी सी कोठड़ी में पहुंचे जहां एक लड़की बैठी हुई सीताबाख (gramophone) के डिस्क (records) बजा रही थी । यात्रियों को यदि कोई सूचना देनी होती थी तो वह भी यही लड़की देती थी । आरम्भ में ये गीत अच्छे लगे । नवीनता के कारण इनमें विशेष आकर्षण प्रतीत हुआ, किन्तु कुछ समय के पश्चात् इनका ऊंचा स्वर कानों को अवरुद्ध करता । ठहर ठहर कर ये गीत बघट्टे तक चलते हैं ।

गाड़ी में स्वच्छता का विशेष प्रबन्ध है । यहाँ में बहुत बराबर व्यक्ति स्वच्छ करने जाता है । रोमाणु न कैंसै इसलिए रोमाणु न कैंसै का प्रयोग बहुत है । साम्यवादी

शासन जनता के स्वास्थ्य के लिए प्रयत्नशील है। किन्तु देश बहुत बड़ा है। जनता की संख्या भी बहुत बड़ी है। आरोग्य संपादन में अभी अनेक वर्ष लगेंगे।

चाए और उष्ण पानी का चीनी गाड़ियों में निरन्तर प्रबन्ध है। ज्यों ही यात्री गाड़ी में आकर बैठता है उसको हरी चाए की छोटी सी पुड़िया और उष्ण पानी का पात्र मिल जाता है। जैसे ही वह पानी समाप्त हुआ फिर व्यक्ति नया उष्ण पानी डाल जाता है। दिन में १०, १५ बार उष्ण पानी पात्र में भरा जाता है। किन्तु चाए की पत्ती प्रायः दोबारा नहीं डाली जाती।

गाड़ी में दोनों ओर हमने चीन की पहाड़ियों खेतों आदि के दर्शन किए। एप्रिल मास सूखा मास है। अतः हरियाली अधिक न थी। पर्याप्त दूर तक मिट्टी ह्वेत रंग की थी।

५, ६ घंटे धीरे धीरे चलती हुई गाड़ी क्वाङ्ग-चोउ पहुंची। आयुर्विज्ञान-विद्यालय के अध्यक्ष तथा अन्य शासन के अधिकारी स्वागतार्थ आए और हमको १५ भूमि ऊंचे विश्रान्ति-गृह में ले गए। यह विश्रान्ति-गृह मुक्ता नदी के तट पर स्थित है। दूर दूर तक जहां तक भी दृष्टि काम देती है नौकाएं खड़ी हैं। ये नौकाएं घर और व्यापार दोनों का ही काम देती हैं। सहस्रों की संख्या में चीनी नाविक परिवार इनमें अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यहां ही उनका जन्म और मृत्यु होते हैं और ये ही नौकाएं इनकी आजीविका का साधन हैं। हमारे दुभाषिये ने बतलाया कि साम्यवादी शासन से पूर्व इन नाविकों को स्थलवासी जनता के साथ विवाह करने की आज्ञा न थी। इतना ही नहीं, इनके कोई राजनैतिक अधिकार न थे। इनको भूमि पर घर बसा कर रहने का भी अधिकार न था। हमारे दुभाषिये का यह कथन किस अंश तक सत्य है यह अन्वेषण करने का हमको समय और अबसर न मिल सका। रात्रि में सहस्रों दीपकों के प्रतिबिम्ब रूपी लम्बे लम्बे रश्मिस्तम्भ पानी में अनुपम शोभा फैला रहे थे। यदि एक नौका दूसरी नौका के मार्ग में आती तो वह अपनी यान्त्रिक भाषा में पीं पीं पीं करके उसको आगे से हटने का आदेश देती। नौकाओं के बाहुल्य के कारण दूसरी नौका तीसरी को यही आदेश देती और तीसरी चौथी को। इस प्रकार दो चार कला (minute) तक पीं पीं पीं, पीं पीं पिं, पीं पीं पिं, की निरन्तर माला सी बंध जाती।

२४-४-५५

कल रात्रि को निश्चय हुआ कि क्वाङ्ग-चोउ के उन्हीं स्थानों का दर्शन करेंगे जो साम्यवादी युग में बने हैं। अपवाद-स्वरूप केवल एक बौद्ध विहार हमारे कार्यक्रम में रखा गया।

सर्वप्रथम प्रातः ९ बजे नगर के प्रसिद्ध क्रीडास्थान (stadium) पर गए। यह क्रीडास्थान आठ मास के परिश्रम से बनाया गया है। ५० सहस्र व्यक्तियों के बैठने का स्थान है। मध्य में पाद-कन्दुक का क्षेत्र है और चारों ओर दीड़ने के लिए ७,८ रेखाएं

लगी हुई है। जनता के कुछ व्यक्ति प्रातः सायं आकर व्यायाम करते हैं। प्रथम मई की सार्वजनिक सभा भी यहां पर होती है। इस स्थान के ऊपर अद्भुतागार है। पहले यहां मन्दिर हुआ करता था। पूर्वतिहासिक युग से प्रारम्भ करके माओ के युग तक की वस्तुएं यहां रखी हुई हैं। अद्भुतागार में प्रवेश करते ही भोटे श्वेत काष्ठाक्षरों में जनता को राष्ट्रपति माओ का आदेश है कि राष्ट्र की सम्पत्ति राष्ट्र की संस्कृति है। जनता को इन सांस्कृतिक पदार्थों की रक्षा करनी चाहिए।

एक अनुपम बुद्ध की मूर्ति भी है जो १,५०० वर्ष पहले भारतवर्ष से आई थी। विचित्रतम वस्तु समय नापने की द्रोणियां हैं। ऊपर की द्रोणी का पानी नीचे की द्रोणी में टूटी द्वारा गिरता है। इसी प्रकार दूसरी का तीसरी में और तीसरी का चौथी में। चौथी द्रोणी में दो पट्टियां खड़ी की गई हैं। एक घातुमयी और दूसरी काष्ठमयी। जैसे जैसे पानी बढ़ता है, काष्ठ की पट्टी ऊपर उठती है और लोहे पर लगे हुए चिह्नों से देख लिया जाता है कि कितना समय व्यतीत हुआ। लोहे की पट्टी पर १२ चिह्न लगे हैं। प्राचीन चीन में दिन रात के १२ विभाग किए जाते थे।

समीप ही राष्ट्रपिता सुन्-यात्-सन् का ऊंचा स्मारक है। हम वहां गए। जनता न चारों ओर से हमको घेर लिया। उनकी मुद्रा-विहीन दृष्टि को मंत्रीपूर्ण बनाने के लिए उनसे हमने बातें प्रारम्भ की। एक एक बच्चे और व्यक्ति का नाम पूछ कर हिन्दी में लिख कर उनको दिया। विस्मय-स्फारित नेत्रों से देख कर उन्होंने उसको ग्रहण किया। जो मुस्काकृतियां कुछ क्षण पूर्व वैदेशिकता के भाव से भरपूर थीं वही अब मित्रता और स्नेह से भर गईं। विदेशों में आकर जनता से सीखा सम्पर्क करना अत्यावश्यक है।

विक्षार-जल (soda water) के स्थान में सोया का रस प्रचलित था। गन्ने की पोरियां, लगभग १६ अंगुल लम्बी, स्थान स्थान पर बिक रही थीं। हमने लेनी चाहीं किन्तु हमको नहीं मिली। कारण बताया गया कि फीकी हैं।

संयान की समय-सारणी (railway time-table) प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु न कहीं दिखाई पड़ी और न प्राप्त हो सकी। कारण बतलाया गया कि गाड़ियां इतनी थोड़ी और सुनिश्चित हैं कि जनता को समय-सारणी की आवश्यकता ही नहीं। न मानते हुए भी यह बात स्वीकार करनी पड़ी।

१२ बजे कम्प्यूसास के मन्दिर में प्रवेश किया। १९२४ में यह मन्दिर फ्रान्ति-शिक्षणालय में परिवर्तित किया जा चुका था। १९२४ से १९२७ तक इस मन्दिर में माओ-त्स-नुङ, झउ-अन्-लाइ और उनके साधियों ने फ्रान्ति के नेताओं का निर्माण किया। कुषक-फ्रान्ति की मींव यहां डाली गई।

मन्दिर विशाल और दर्शनीय है। अब इसका प्रयोग केवल स्मारक के रूप में है।

माओ-त्स-तुङ्ग का कार्य-कोष्ठ, उसकी आसन्दी और पटल, सोने के लिए काष्ठ-शय्या, लेखनी तथा मसीपात्र, बापू गान्धी के अवशेषों का स्मरण दिलाते हैं। इस सरलता में रह कर ही माओ ने अग्नि प्रज्वलित की थी।

एक कोष्ठ में योद्धाओं का बेष, दूसरे विशाल कोष्ठ में विद्यार्थियों के बैठने के सीधे साधे फलक (bench)। कोष्ठ के बाहर सौ वर्ष पुराना, किन्तु फिर भी वामन, देवदारु की जाति का एक पात्र में लगा हुआ वृक्ष। बाहर निकलने के द्वार से पूर्व कृत्रिम पुल। इस प्रकार के कृत्रिम संक्रमण अर्थात् पुल अन्य स्थानों पर भी देखने में आए।

क्रान्ति के लिए सहस्रों ने ही प्राणों की आहुतियां दी हैं। क्वाङ्-चोउ क्रान्ति का जन्म-स्थान है। यहां ७२ हुतात्माओं का गौरवपूर्ण स्मारक है।

स्मारकों के दर्शन करने के पश्चात् दोपहर की कड़ी धूप में हम शासन के बहु-विभागीय विक्रयगार (departmental stores) में पहुंचे। यह ५, ६ भूमि ऊंचा भवन है। सभी प्रकार की छोटी बड़ी वस्तुएं यहां प्राप्य हैं। आज यहां अत्यधिक भीड़ है। हमने एक जाली मोल ली जिसमें अपनी बिस्तरी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जा सकें। सुदर्शना का विचार गुड़िया लेने का था किन्तु देख कर निराशा हुई। सब पाश्चात्य गुड़ियां थीं। कोई भी तो उनमें से चीनी गुड़िया न थी। हाथीदांत की वस्तुएं सुन्दर थीं। वस्तुओं के मूल्य पर्याप्त है। भारत से लगभग दुगने।

आधुनिक चीन में बड़े व्यापार और हट्टियां शासन के हाथ में हैं। छोटे व्यापार जनता के हाथ में। पूछने पर भी बिस्तार से पता न लग सका कि आज जनता और शासन के बीच में सीमा कहां है।

मध्याह्न भोजन के पश्चात् हम सुन्-यात्-सन् का भवन देखने गए। इसका निर्माण १९२७ से १९३१ तक हुआ था। अन्दर से भवन अष्टकोण है। इसमें ५००० जनता के बैठने के लिए आसन्दियां लगी हुई हैं। भारतीय नृत्यमण्डल का नृत्य भी इसी भवन में हुआ था।

बोधिविह्वल मन्दिर

द्वार पर चार बजे क्वाङ्-मिङ्ग ने स्वागत किया। बड़े पुजारी ग्याओ-फिन् फुफ्फुस-रोग से कई मास से पीड़ित हैं, इसलिए स्वागत करने बाहर द्वार पर न जा सके। मन्दिर ७ भूमि ऊंचा है। १४१४ वर्ष पूर्व इसका निर्माण हुआ था। इस मन्दिर की प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जापानियों ने सम्पूर्ण चिपिटक इस मन्दिर को भेंट किया है।

एक सहस्र वर्ष पूर्व कई भारतीय पण्डित बुद्धगया से बोधिवृक्ष का पीठा लाए थे।

उस वृक्ष के बीज से उगा हुआ प्राचीन पीपल वृक्ष इस बिहार में विद्यमान है ।

मन्दिर १,४०० वर्ष पुराना प्रतीत नहीं होता किन्तु अन्तिम भूमि पर जाकर लगा हुआ धातु-स्तम्भ अवश्य प्राचीन है । अनेक शताब्दियों तक यह स्तम्भ वर्षा, धूप और वायु झेलता रहा है । इस स्तम्भ पर छोटे छोटे बूढ़ मढ़म पड़ चुके हैं । धातु-स्तम्भ की छत में सिद्धम् लिपि में कई धारणियां लिखी हुई हैं । पुजारी सिद्धम् पढ़ने में असमर्थ है । मन्दिर के प्रांगण में राजाश्रम का छोटासा स्तम्भ खड़ा है जिसे धारणी-स्तम्भ कहते हैं । इस पर चारों ओर धारणी है । प्रत्येक सिद्धम् अक्षर के पास चीनी अक्षर में उच्चारण दिया हुआ था ।

धातुगर्भ-सप्तभूमि स्तूप में ८८ स्थानों में से केवल ७ स्थानों पर चीनी मिट्टी की मूर्तियां रखी हुई थीं, शेष लुप्त हो चुकी थीं । मैंने पूछा मूर्तियां कहाँ गईं । उत्तर मिला कि प्रतिक्रियावादी नवो-मिन्-ताऊ के लोग उठा ले गए और तोड़ दीं । पुजारी के हृदय में ग्लानि और आंखों के सामने उस समय के दृश्य आ खड़े प्रतीत हुए । उन दृश्यों की स्मृति और तज्जन्य दुःख में वह बिना बोले हुए ७०, ८० सीढ़ियां नीचे उतर गया ।

सीढ़ियों की सम्पूर्ण संख्या १५३ है । यह नगर का सबसे ऊंचा स्थान है । ऊपर चढ़ कर ठण्डी वायु और चतुर्दिक् दृश्य इन्द्रियगोचर होते हैं । चार उल्लेखनीय भवन हैं जो ऊपर से दिखाई पड़ते हैं । इनकी छतें नीली अथवा रक्तपीत चीनी मिट्टी से पकी हुई खपर्रेलों से बनी हैं । इन खपर्रेलों का प्रयोग केवल वैभवशाली भवनों की छतों पर होता है । प्रथम भवन डा. सुन्-यात्-सन् का स्मारक है । इसकी छतों के कोनों से घण्टे लटके हुए हैं, परन्तु इतने बड़े और भारी हैं कि वायु चलने पर बजते नहीं । दूसरा भवन शासन का कार्यालय है । तीसरा घट-रूप में नगर का जलप्रदाय-स्रोत (water-works) है ।

धातुगर्भ-स्तूप के अनेक अंग हैं । कभी इसका अनन्त वैभव रहा होगा । आज केवल चार पुजारी विद्यमान हैं और सायं छः बजे की पूजा पर केवल तीन उपासक और तीस चालीस दर्शक । सम्भव है इनमें से कुछ हमारे कारण से हों । पूजा का दृश्य श्रद्धा और भक्ति से पूर्ण था । मुख्य पुजारी धारणियों का सस्वर पाठ कर रहे थे । चीनी में भी कुछ अनुवाद थे । नमो-शब्द के अतिरिक्त चीनी और संस्कृत गान में भेद सुनाई नहीं पड़ा । घुटने टेकने के लिए छोटे छोटे पट्टे प्रत्येक पुजारी के सामने रखे हुए थे । पट्टों पर बहियां रखी थीं, जिससे लकड़ी की कठोरता घुटनों को कष्टदायी न हो । पुजारी आधातवाद्यों का प्रयोग कर रहे थे । दो बाद्य लकड़ी के और दो कांसे के थे । एक पत्तीले के समान था । प्रत्येक धारणी की समाप्ति पर विराम-स्वरूप डंके की एक चोट इस पत्तीले के तट पर पुजारी लगाता था । दूसरा कांसे का बाद्य आलू के समान गोल था ।

अन्दर से कुछ खोखला और बीच में दराड़ । इस पर भी डंका मारने से मधुर ध्वनि निकलती थी । अब रहे दो लकड़ी के बाद्य । एक छोटा और एक बड़ा । छोटा साधारण गेंद जितना बड़ा । आकार गोल किन्तु एक ओर से पकड़ने के लिए कर्णरूपी हस्तक और हस्तक के दूसरी ओर गोलाई में दराड़ । इस पर भी डण्डा मारने से पर्याप्त ध्वनि निकलती थी । इसी गेंद का बड़ा स्वरूप लकड़ी की चतुष्पदी पर रखा हुआ था । इसको हाथ में पकड़े रखना सम्भव न था । इस पर आघात करते करते छिलके उतर चुके थे । काष्ठमय दोनों बाद्यों का नाम है—काष्ठमीन अर्थात् लकड़ी की मछली । इन चारों पर लगातार आघात न होता था । केवल ताल-स्वरूप कहिए अथवा विराम-स्वरूप । कुछ कुछ समय के पश्चात् ही इन पर एक दो चोट लगाई जाती थी । पूजा की समाप्ति पर सीढ़ी पर चढ़ कर मुख्य पुजारी ने दो लकड़ी के डण्डों से चार पांच कला तक लगातार नगाड़ा बजाया । धूपदीपादि की क्रिया हमारे प्रवेश से पहले ही हो चुकी थी ।

मन्दिर में पूजा प्रतिदिन दो बार होती है । प्रातः साढ़े चार बजे और सायं छः बजे । प्रातः की पूजा के समय उपासकों की भीड़ होती है । पटलों की संख्या से अनुमान होता है कि अधिकाधिक बीस उपासक आते होंगे ।

पूजा-स्थान में प्रवेश करते ही पहले हास्य-शील, तुन्दिल मूर्ति के दर्शन होते हैं । ये प्रसिद्ध मी-लो-फ्रो अर्थात् भावी मंत्रेय हैं । आगे चल कर धूपबत्तियां जलाने के लिए लोहे की ६, ७ पाद ऊंची धूपधानी बनी है । पूजा-स्थान में तीन मुख्य मूर्तियां हैं । तीनों स्वर्णरोपित । इनके आगे क्वान्-यिन् अर्थात् अवलोकितेश्वरी की मूर्ति है । दोनों ओर हस्त-बद्ध दो उपासक खड़े हैं । और कुछ दूर पर पाद-भक्तियों में १८ लोहन् अर्थात् अर्हतों की मूर्तियां हैं । प्रत्येक ओर ९ । मूर्तियों की चमक दमक तथा मुख की मुद्राएँ, इनकी वेशभूषा और शरीरभङ्ग, सब अध्ययन के भाजन हैं । चीनी और भारतीय कला का मिश्रण सर्वत्र व्यक्त है ।

हमने १० शतिक (cent) की धूपबत्तियां लीं । इनकी संख्या १८ रही होगी । धूप की राख से पात्र भरा हुआ था । इसी मृदु राख में एक एक करके धूपबत्ती सड़ी की । धूपबत्तियां दीपक की लौ में पहले जला ली थीं । दीपकों में मंगफली के तेल का प्रयोग करते हैं । दीपकों में ही नहीं, भोजन में भी । चीन से ही वनस्ति धी का प्रारम्भ हुआ है ।

हमने पुजारी से सिद्धम् लिपि के सम्बन्ध में बात छोड़ी । वह अपने दैनिक पूजापाठ की पुस्तक ले आया । इस पुस्तक में वन-व्यधिद् ही सिद्धम् अक्षर थे । सर्वत्र चीनी अक्षरों में ही चारणियां लिखी हुई थीं । यह पुस्तक साह-हाइ में छपी थी ।

पुजारी के तीन शिष्य हैं जो पूजापाठ सीख रहे हैं ।

हमारे प्रार्थना करने पर पुजारी ने छपे हुए चित्र मंगाए। केवल तीन चित्र थे। तीनों हमने साढ़े तीन युवान् में ले लिए। एक में २२ के लगभग व्यक्ति हैं जिनमें से १८ अर्हत् हैं।

ये पुजारी १४ वर्ष की आयु में भिक्षु बने थे। अभी तक अविवाहित हैं। इन्होंने हमारे साथ सहर्ष धूप में खड़े होकर रंगीन चित्र खिचवाया और अपनी पञ्जिका में हमारा नाम और पता लिखवाया। हमसे पूर्व हरीन्द्र चट्टोपाध्याय यहां आ चुके हैं। उन्होंने अपना नाम बंगला और रोमन लिपि में लिखा हुआ था। और भी दो तीन भारतीयों के नाम थे। हमने प्रश्न किया क्या भारत में तीर्थ-यात्रा के लिए आने की कामना है। प्रफुल्ल-वदन और स्मितनेत्र बोले - वह जीवन का पुण्यतम दिवस होगा। किन्तु कहते ही निराशा छा गई कि यह कैसे सम्भव हो सकेगा। भारतीय जनता और शासन का कर्तव्य है कि भारत और चीन के प्राचीन प्रेम को बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष बुद्ध-जयन्ती तथा निर्वाण के दिन चार सौ पांच सौ चीनी पुजारियों और उपासकों को अपने व्यय पर भारत में तीर्थ-यात्रा कराया करे। उनके स्वागत तथा रहन-सहन का बड़ी सुन्दर प्रबन्ध हो जो राजनीतियों का होता है। साथ में बौद्ध विहारों, मन्दिरों और गुफाओं की यात्रा करने के लिए भारतीयों की यात्रि-मण्डलियों को भी प्रतिवर्ष चीन में आना चाहिए।

चित्रादि दिखला कर पुजारी हमको अपने पुस्तकालय में ले गए। ताइ-शो त्रिपिटक के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ और मूर्तियां विद्यमान थीं। पुजारी ने दो तीन धारणियों की पुस्तकें हमको उपहार दीं। ये पुस्तकें हमारे अपने पुस्तकालय में नहीं हैं। इनका प्रकाशन होना चाहिए। तत्पश्चात् हम आचार्य के मन्दिर में गए। अद्भुत काली मूर्ति थी। इनके सामने लकड़ी के छोटे छोटे १०० कोष्ठकों में छपे हुए पत्रक रखे हुए थे। साथ में खोखले बांस की नली में कुछ बांस की चपटियां थीं। नली को हिलाने से जो चपटी बाहर गिर पड़ती है उसकी संख्या को पढ़ कर कोष्ठक में से छपा हुआ पत्रक निकाल कर उपासक को दे दिया जाता है। पत्रक में छपे हुए आदेशानुसार आचरण करने से उपासक के कष्ट दूर हो जाते हैं। इस स्थान पर दो तीन बूद्ध चित्रियां खड़ी थीं। उन्होंने हमको भक्तिपूर्वक अञ्जलिबद्ध नमस्कार किया। बाहर निकल कर बोधि-वृक्ष के दर्शन हुए। समीप ही आंगन में ऊंचे प्रस्तर-पीठ पर अनघट प्राकृतिक टेढ़ी-मेढ़ी शिला खड़ी की हुई थी। यह चीनी सौन्दर्य-बुद्धि का प्रतीक है।

इसके पश्चात् शय्या-ग्रस्त बूद्ध पुजारी के कोष्ठ में गए। शय्या नियमानुकूल काष्ठ-फलकों की बनी थी। इस पर हलका कपड़ा बिछा था। मैंने पूछा आपके रङ्ग शरीर के लिए यह शय्या कठोर होगी। मेरा कहना था कि बूद्ध सञ्जन अपनी शय्या पर सिद्धासन लगा कर बैठ गए और कहा यदि शय्या कोजल हो तो सिद्धासन ठीक नहीं

लगता। सिद्धासन को देख कर हृदय गद्गद् हो उठा। यही सिद्धासन क्वाड्र-बोर्ड आते हुए जावा-निवासी श्रमिक-नेता और अध्यापक को लगाते देखा था। ये श्रमिक-प्रतिनिधि-मण्डल में पेइ-चिङ्ग जा रहे थे। आसन, भारत एवं भारतीयता में अंगांगि-सम्बन्ध है।

मैंने प्रश्न किया हम आपके लिए क्या कर सकते हैं। उत्तर मिला हमें भारतवर्ष से पुस्तकें भेजिए। यह चीन की परम्परा है। इनको पुस्तकें भेजेंगे। कौन सी पुस्तकें। योग की पुस्तकें, संस्कृत सीखने की पुस्तकें, भारत के तीर्थ-स्थान, इत्यादि।

साढ़े छः बजे मन्दिर से बाहर निकले। विचार था कि सीधे १५ भूमि ऊंचे अन्ताराष्ट्रीय यात्रि-केन्द्र में पहुँचेंगे और द्वादश-भूमिस्थ अपने कोष्ठ में कुछ काल विश्राम करेंगे। किन्तु विश्राम से बढ़ कर, संमस्त दिन की इकट्ठी थकान को, मन्दिर-द्वारस्था आपण-स्वामिनी वृद्धा ने बोधिपत्र-चित्रित वेष्टन को हाथ में दे कर तज्जन्य विस्मय से सर्वथा उड़ा दिया। एक वेष्टन में १८ पत्तों पर १८ चित्र थे। मूल्य २ युआन् अर्थात् साढ़े चार रुपये। क्या ये १८ लोहन् के १८ चित्र हैं। घर जाकर समय देकर अध्ययन करके निश्चय करेंगे कि ये लोहन् हैं अथवा नहीं। अब तो इनके सौन्दर्य का रसास्वादन ही पर्याप्त है। यह नेत्रोत्सव अनुपम है। पास ही बीच में से घड़ा हुआ कमण्डलु लटक रहा है। चलो इसे भी ले लेवें। चीन में कमण्डलु के दर्शन भारत के दर्शन हैं। यन्त्रयुग से पूर्व नहीं, धातुयुग से पूर्व का यह पात्र है। इसका सम्बन्ध उच्चतम विचारकों से है। ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों से है, जो मानव-जन्म का प्रयोग मानव-जन्म से ऊपर उठने के लिए करते थे, मानव-जन्म का प्रयोजन मानव-सुखों के उप-भोग को नहीं मानते थे, शरीर को तपा कर, इन्द्रियों का दमन करके, मानव की मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करके विश्व के स्रोत और नियन्ता प्रभु में लीन होने के लिए इन्द्रियजन्य सुखों को मिछावर कर देते थे। कमण्डलु इन्हीं का तो प्रतीक है न! क्वाड्र-बोर्ड नगरी के षड्बोधिबुद्ध मार्ग में, षड्बोधिबुद्ध मन्दिर के पुराने द्वार पर, अंगुष्ठमात्र कमण्डलु शताब्दियों के इतिहास को एक क्षण में स्फुरदीप्त कर बैठा। कुछ पैसे दे कर कमण्डलु को हस्तगत किया। और चमकते हुए काँच में मढ़े नवभूमि मन्दिर के चित्र को लेकर गाड़ी में बैठ गए।

अन्ताराष्ट्रीय यात्रि-केन्द्र में आकर हाथ मुँह धोकर दो चार सट्टे सन्तारों का रस पीकर फिर नौका-पर्यटन के लिए चल पड़े। नीचे उतरते हुए रूसी प्रतिनिधि-मण्डल के दर्शन हुए। ये भी आज रात्रि को हमारे वाली गाड़ी से पेइ-चिङ्ग की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। उनसे बालचीत करने का यत्न किया परन्तु सफलता न हुई। यात्रि-बनावेस (traveller's cheques) भुनाने का यत्न किया। उसमें भी विफल रहे। आज इतवार है। सब अधिकोष (bank) बन्द हैं। वैसे भी सायं के सात बज चुके हैं। यदि हॉज-कॉज में होते तो हमारा विश्रान्तिगृह ही विनिमय कर देता। अब हमारे पास केवल चार युआन् बचे

हैं और यदि षड्बोधिबुद्ध मन्दिर के पुजारी हमारे चार युवान् के उपहार को स्वीकार कर लेते तो हम सर्वथा अकिञ्चन हो जाते ।

पूरे सवा सात बजे हम नौका में बैठे । एक घण्टे तक चू-चाङ्ग अर्थात् मुक्ता-नदी में विहार किया । नदी में सहस्रों दीपों के जगमगाते झिलमिलाने, हिलते और डोलते प्रकाश-स्तम्भ शोभायमान थे । चू-चाङ्ग का चीन की नदियों में तीसरा स्थान है । प्रथम ह्वाङ्ग-हो अथवा पीत-नदी और दूसरी याङ्ग-त्स ।

क्वाङ्ग-चोउ से समुद्र बहुत दूर नहीं है । साधारण बहित्र-नौका (motor-boat) में समुद्र-तट तक पहुंचने में दो घण्टे लगते हैं । इस नदी पर ही तो वह प्रसिद्ध पुल है जिसको बवो-मिन्-ताङ्ग ने गोलों से उड़ाया था और साम्यवादियों को दक्षिण में आने से कुछ समय के लिए रोका था ।

क्वाङ्ग-चोउ से पेइ-चिङ्ग पहुंचने के लिए दो साधन उपस्थित थे । एक संयान और दूसरा विमान । संयान से तीन दिन तीन रात का मार्ग था और विमान से केवल एक दिन का । हमारे चीनी मित्रों की इच्छा थी कि हम विमान द्वारा जाएं किन्तु हमारी भी उतनी ही उत्कट इच्छा थी कि विमान से न जाकर संयान से ही जाएं । हमने निश्चय अपने मित्रों पर छोड़ना चाहा किन्तु जब उन्होंने सर्वथा हम पर ही बात छोड़ दी तो यात्रा के कष्टों का विचार न करके हमने संयान से ही जाने का निश्चय किया । हम चीन देखने के लिए आए हैं । विमान से तो बादल ही दिखाई पड़ेंगे । चीन की धरती दो तीन मील ऊपर जा कर अपना रूप हमको कैसे दिखाएगी ? फिर जनता, खेती, घर, पशु पक्षी, उद्योग-निर्माणियां, नदी नाले, और जनता का परस्पर व्यवहार ये सब विमान से हमको कैसे दिखाई दे सकेंगे । एक साथ पेइ-चिङ्ग नगर में पहुंचने की अपेक्षा तीन दिन और तीन रात चीनी स्थिति से परिचय प्राप्त करना अच्छी भूमिका होगी इत्यादि अनेक विचार सामने थे ।

आठ बज कर बीस कला पर अपने १२०१, १२०२ संख्यक कोष्ठों में पहुंचे । पीने ९ बजे भोजन समाप्त किया । घण्टा भर नींद ली । १० बजे सम्भार लेने के लिए सेवक आ पहुंचे । उनको सम्भार देकर फिर लेट गए । ११ बजे उठ कर स्थात्र के लिए प्रस्थान किया । संयान बहुत लम्बा था । एक सिरे पर रूसी प्रतिनिधि-मण्डल और दूसरे सिरे पर हम । क्या हम लोग इकट्ठे ही एक डिब्बे में न जा सकते थे । नहीं । स्थान पहले से निश्चय हो चुके थे । परिवर्तन की प्रार्थना करना भी उचित प्रतीत नहीं हुआ ।

क्वाङ्ग-चोउ के सबसे बड़े वैज्ञानिक और चीन के राष्ट्रीय विज्ञान-मण्डल के प्रतिनिधि डा० काओ-लिन हमको मिलने आए । ये यहाँ के आयुर्विज्ञान-विद्यालय के अध्यक्ष हैं । इस वर्ष इस विद्यालय से ३०० स्नातक निकलेंगे । आपके कथनानुसार तीन पञ्चवर्षीय बीजनाओं में उपयुक्त संख्या में चिकित्सक पूरे हो सकेंगे । चीन में चिकित्सकों की अस्थ-

धिक आवश्यकता है। चिकित्सा-विभाग और जनस्वास्थ्य-विभाग साम्यवादी शासन का बड़ा भारी अंग है। इनके अधिकारी स्थान स्थान पर फँस रहे हैं। डा० फाओ-लिन् भारत-चीन-मंत्री के दूढ़ पोषक हैं। आपने बताया कि नेत्र-चिकित्सा में चीन ने प्राचीन काल में भारत से बहुत कुछ सीखा था। मंने जब अधिक विस्तार में प्रश्न किया तो आपने बताया कि इस प्रकार का अन्वेषण पेइ-चिङ्ग में किया जा रहा है और भारत चीन के वैज्ञानिक सम्बन्ध के आदान-प्रदान के विषय में सामग्री पेइ-चिङ्ग में ही मिल सकेगी।

संयान-सेवक नीचे बिछाने और ऊपर ओढ़ने के लिए गद्दे और तुलाई ले आया। १२ बजे चुके थे। लेटते ही आँखें बन्द हो गईं।

२६ को प्रातः मार्ग में बड़ी नदी पड़ी। इसका नाम याङ्ग-त्स' है। इस पर पुल नहीं बना। एक दो वर्षों तक बनने की आशा है। हमको उतरना पड़ा। यहां भी शासन के अधिकारी स्वागत करने के लिए आए। दो चार घण्टे ठहर कर विश्रान्तिगृह में स्नानादि किया। नगर का चक्कर लगाया और फिर नौका में बैठ कर नदी को पार कर नए संयान में सवार हुए।

२७ को सायं साढ़े चार बजे चीन की एक सहस्र वर्ष पुरानी राजधानी पेइ-चिङ्ग में पहुंचे। भारतीय दूतावास की ओर से श्री मोवर्घन जी विशेष रूप से आए हुए थे। साथ में श्री अग्रवाल जी थे। चीनी स्वागतकारी सज्जन भी थे।

पेइ-चिङ्ग में दो विश्रान्तिगृह हैं जिनमें विदेशियों के निवास का प्रबन्ध है। केवल पेइ-चिङ्ग में ही नहीं, चीन की प्रान्तीय राजधानियों में भी विदेशियों के लिए विशेष विश्रान्ति-गृह बनाए गए हैं। इनका स्तर पश्चिम यूरोप के विश्रान्तिगृहों का स्तर है। जिस विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया उसका नाम शिन्-च्याओ फ्रान्-स्येन् है। शिन् का अर्थ नदीन, च्याओ का अर्थ प्रवासी चीनी, फ्रान् का अर्थ भोजन और त्येन् का अर्थ गृह है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि चीनी भाषा में होटल आदि विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं होता।

आज से हमारा सम्पर्क कुओ-मिन्-घ्साइ और चाओ-युङ्ग-चुङ्ग से हुआ। श्री चुङ्ग दुभाषिया हैं। प्रत्येक विभाग के अलग अलग दुभाषिये हैं। श्री चुङ्ग विदेश से सांस्कृतिक सम्बन्धों के लिए स्थापित चीनी जनसंघ से सम्बद्ध हैं।

श्री घ्साइ विद्या-विभाग के सम्पर्काधिकारी हैं।

चीन के आधुनिक जीवन में दुभाषिये बाह्य संसार के साथ योजक क्षुल्ला का काम करते हैं। राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, सेनापति आदि उच्चाधिकारियों से लेकर सामान्य सैनिक, कुली और बिद्यार्थी तक कोई भी चीन का व्यक्ति विदेशी भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त करने का यत्न नहीं करता। राज्य का नियम है कि विदेशी भाषा का प्रयोग न हो। जो विदेशी भाषा जानते भी हैं, वे भी बहुत सीमित रूप में उसका प्रयोग करते हैं। शेष



पेङ-चिङ के म्यात्र पर आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए भारतीय दूतावास के श्री गोवर्धन जी, चीन के भाषाविज्ञान-पीठ के अध्यक्ष लो चाङ्-पेइ, भाषा अनुसंधान संस्थान के मंचिव श्री वु श्याओ-लिङ्, अनुवाद-विभाग के अध्यक्ष श्री चोउ ताइ-य्वान्।

Lo Chang-pei, Director of the Linguistic Research Institute of Academia Sinica, Mr. Wu Shiao-ling, Secretary of the Linguistic Research Institute, Mr. Chou Tai-yuan, Director of the Bureau of Translation and Compilation, and Shri Goburdhan from the Indian Embassy welcoming Prof. Raghu Vira at the Peking railway station.



आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री मुदर्शना देवी राष्ट्रमन्दिर छि न्येन् ध्येन् मे,
जहा प्रतिवर्षं देग-कल्याण के लिए यज्ञ सम्पन्न हुआ करते थे ।

Prof. Raghu Vira and his daughter Sudarshana Devi at the historic
Chi Nien Tien, the magnificent Temple of Heaven where great
sacrifices and offerings were held every year.

संसार से सम्बन्ध के लिए दुभाषियों की पद्धति विद्यालय रूप से चलाई गई है। हमारे विश्वान्तिगृह में भोजन के समय विचित्र दृश्य उपस्थित होता था। प्रत्येक पटल पर एक दुभाषिया और एक अथवा अनेक विदेशी बैठे भोजन कर रहे हैं। विदेशी को चीनी जानने की आवश्यकता नहीं, और जानता हो तो प्रयोग करने की आवश्यकता अथवा अवसर नहीं।

किसी पटल पर विदेशी दुभाषियों के साथ इस्पानी बोल रहे हैं, किसी पर जर्मन, किसी पर रूसी, किसी पर चैंक, किसी पर पोले, किसी पर जापानी और किसी पर मलय। यदि हमारे देश में अंग्रेजी न जानने वाला विदेशी पहुंच जाए तो वह गूंगा और बहरा बन कर केवल सकेतों से ही अपना निर्वाह कर सकता है।

विदेशी भाषाएँ सिखाने के लिए विशेष विद्यालय और श्रेणियाँ हैं। न्यूनतम दो वर्ष और अधिकतम चार वर्ष की पढ़ाई होती है। इनमें विद्यापियों को लिखने पढ़ने और बोलने का पूर्ण अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार की श्रेणियों की हमारे देश में भी अत्यन्त आवश्यकता है।

हमको पेइ-चिङ्ग नगर शान्त लगा।

भावी कार्यक्रम को सामान्य रूप से दृष्टि में रखते हुए दिन प्रतिदिन का चलना फिरना, देखना भालना आरम्भ हुआ। चीन के नेताओं से मिलना, केवल राजनैतिक नेताओं से नहीं, किन्तु सांस्कृतिक नेताओं से भी मिलना और अपनी योजना के साफल्य के लिए उनसे परामर्श करना दिनचर्या का अत्यावश्यक अंग बन गया।

भारतीय राजदूत श्री राधवन् भारतीय संस्कृति के भक्त हैं। उन्होंने हमारे कार्य में बहुत रुचि दिखाई। यद्यपि पेइ-चिङ्ग में ही पहली बार इनसे साक्षात् हुआ था तब भी इनके साथ भ्रातृ-स्नेह सा हो गया, और चाहे छोटी बात हो अथवा बड़ी, इन्होंने उसके साफल्य के लिए भरसक यत्न किया।

पहले कुछ दिन तो प्रति सायं कोई न कोई महाभोज होता था जिसमें चीन के गण्य मान्य विभागाध्यक्षों और विद्वानों से परिचय होता। दिन में विद्या-संस्थाओं में जाते और उनका अध्ययन करते। चीन को समझने के लिए यह हमारा प्रथम पग था। कहीं भी जाना अथवा मिलना तभी सम्भव होता था जब पहले से उपयुक्त अधिकारियों के द्वारा प्रबन्ध हो।

आर्थिक और राजनैतिक संस्थाओं को भी हमने पर्याप्त देखा और अनुभव किया कि साम्यवादी राज्य में व्यक्ति का क्या स्थान है, वह कैसे देश की प्रगति में सहयोग दे रहा है। एक मत, एक विचार का चारों ओर साम्राज्य है। देश की गतिविधि के सम्बन्ध में किसी का कहीं पर मतभेद नहीं। हड़ताल का नाम नहीं। शासन अथवा नेता की समालोचना नहीं। नियम बहुत बड़े किन्तु उनका पालन कठोरता से होता है। देश के

सभी व्यक्तियों का उद्देश्य सर्वथा एक है। इसलिए जो भी योजना बनती है उसको एकाग्रचित्त से जनता और अधिकारी निभाने का यत्न करते हैं।

रूस परम मित्र है। अनुभवी सला और सहायक है। उद्योग और राजनीति के प्रत्येक विभाग में रूसी विशेषज्ञ विद्यमान हैं।

भारत के प्रति आदर और भ्रातृ-भावना है। जब से पण्डित जवाहरलाल नेहरू चीन आए और पञ्चशील की स्थापना हुई तब से समस्त समाचारपत्र भ्रातृभाव का राग अलापते हैं। जनता उनका अनुकरण करती है।

बौद्ध मन्दिरों में संस्कृत देवी भाषा मानी जाती है। अमोघवज्र ने संस्कृत लिपि और ध्वनियों को पूजा का स्थान दिया था। संस्कृत मन्त्रों का मन्दिर मन्दिर में उच्चारण आरम्भ हुआ और उस समय की भारतीय संस्कृत लिपि का प्रसार हुआ। आज भी ऐसा कोई मिश्र नहीं जो संस्कृत सीखने को पुण्यकर्म न मानता हो। यदि भारतीय पण्डित जाएं तो चीन के एक एक विहार में संस्कृत शिक्षार्थी मिल जाएंगे।

प्रतिदिन प्रातः नौ बजे से एक बजे तक और दोपहर के तीन बजे से रात्रि के ग्यारह बजे तक हमारा कार्यक्रम चलता था।

पेइ-चिङ्ग चीन का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। एक दो शताब्दियों से नहीं किन्तु दस शताब्दियों से। हम पेइ-चिङ्ग के बड़े पुस्तकालय का निरीक्षण करने गए। यहां लाखों पुस्तकें हैं, किन्तु सब चीनी भाषा में। विदेशी भाषाओं के ग्रन्थ तो सहस्रों तक ही सीमित हैं। इससे भारत को भी शिक्षा लेनी चाहिए। भारतीय आधुनिक भाषाओं में साहित्य बहुत थोड़ा है। साहित्य-सर्जन का कार्य देश की बौद्धिक प्रगति का साधन है। हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में साहित्य इतना थोड़ा है कि अपने को बड़ा देश मानते हुए लज्जा आती है। यह सच है कि संस्कृत का साहित्य विशाल और विस्तृत है, गम्भीर और विपुल है, किन्तु वह तो हस्तलिखित संग्रहालयों में सीमित है। उसका भी यदि प्रकाशन हो जाए तो हमारे पुस्तकालयों का आधार गहरा और ऊंचा हो जाए। दूसरी ओर से हमारे यहां वैज्ञानिक साहित्य की न्यूनता है अथवा यह ही क्यों न कहें कि अभाव है।

३०-४-५५

पेइ-चिङ्ग पुस्तकालय में साम्यवादी शासन के पश्चात् एक विभाग खोला गया जिसका नाम है राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य-विभाग। आज प्रातः हमने इस विभाग में प्रवेश किया। ली-ते-ची मोंगोल आदि के अच्छे विद्वान् माने जाते हैं। वे इस विभाग के अध्यक्ष हैं।

इनके भोट संग्रह में कञ्जूर (𑖑𑖧𑖟𑖩𑖰𑖪𑖫) और तञ्जूर (𑖑𑖧𑖟𑖩𑖰𑖪𑖫) के दो संस्करण हैं, देगे (𑖑𑖧𑖟𑖩𑖰𑖪𑖫) और नार्पाङ्ग (𑖑𑖧𑖟𑖩𑖰𑖪𑖫)। देगे रक्त मसी में छपा है।

नार्थिक सम्पूर्ण है। किन्तु देगों के कुछ अन्तिम भाग नहीं है। फिर भी ३०० भाग हैं। पेइ-चिङ्ग संस्करण का केवल एक भाग है।

इस विभाग में विशेष संग्रह मञ्जु साहित्य का है। ५०० से अधिक ग्रन्थों के दस सहस्र के लगभग खण्ड हैं। अधिकांश मूल हैं। कुछ नीली अनुकृतियाँ (blue prints) हैं। इनके मूल प्रासाद-पुस्तकालय में विद्यमान हैं। मञ्जु में आधुनिक ऐतिहासिक पुस्तकों का है। बौद्ध साहित्य पर्याप्त है। किन्तु खण्डित दशा में है। जो भी बौद्ध साहित्य आज पेइ-चिङ्ग में बचा है वह कू-कुऊ-पो-बू-य्वेन् अर्थात् प्रासाद में है। प्रासाद में कञ्जूर के ६० भाग हैं। कुछ तञ्जूर के भी अंश हैं।

श्री ली ने बताया कि मञ्जु का त्रिपिटक जो १८०५ विक्रम में महाराज ने प्रकाशित कराया था सो मुक्देन् में होना चाहिए। मञ्जु-लिपि के अनेक रूप जो आज तक कभी प्रकाशित नहीं हुए, वे इस संग्रह में दिखाई पड़े। ये रूप आलंकारिक हैं। इनका ऐतिहासिक मूल एक ही है।

मञ्जु राजाओं के काल में बहुभाषा-कोषों की रचना हुई। इनमें से एक कोष संस्कृत का है। प्रत्येक संस्कृत शब्द का अनुवाद भोट, चीनी, मंगु और मञ्जु में दिया है। एक और कोष है जिसमें फारसी लिपि में 'हुइ' भाषा के प्रतिशब्द भी चीनी, भोट और मोगोल के साथ दिए हैं। बहिर्मोगोल के साम्यवादी शासन की ओर से प्रकाशित हुआ ११३० पत्रों का मोगोल-भोट कोष भी यहाँ देखा। भोट भाषा में इसका नाम इस प्रकार है—
 བོད་ཀྱི་ཤེས་ལུ་མཁས་པའི་རྒྱུ་རྒྱུ་ལྟོས་པའི་ཤེས་ལུ་མཁས་པའི་བྱེད་སྒྲུབ་ལས།

१८२८ विक्रम में मञ्जु-चीनी का सामान्य कोष बना था। यह कोष संसार के बहुत थोड़े पुस्तकालयों में मिलेगा। मुझे बताया गया कि चीन में भी इस कोष की दूसरी प्रति विद्यमान नहीं।

पेइ-चिङ्ग पुस्तकालय (पेइ-चिङ्ग बू-बू-बवान्) का यह अनोखा संग्रह है।

नए व्यक्ति के लिए पेइ-चिङ्ग में अनेक अद्भुत दृश्य हैं। पुराने पेइ-चिङ्ग के जानकार भी आज के पेइ-चिङ्ग को देख कर चकित होते हैं कि यहाँ के आरोग्य-विभाग ने मस्जिदों और मञ्छरों को कैसे सर्वथा समाप्त कर दिया। गलियों के ऊँचे नीचे गड़े सम कर दिए। नए भवनों का निर्माण चारों ओर चल रहा है। जो आश्चर्य हमने देखा वह यह था कि एक स्थान जो पहले रिक्त था और जहाँ कुछ गड़े और खाइयाँ खुद रही थीं वहाँ रातोंरात दस बारह हाथ ऊँचे बृक्ष लग गए। यह चीन की कला है कि झाड़ियों, पौधों और २० पाद तक ऊँचे बृक्षों को भी एक स्थान से लाकर दूसरे स्थान में लगा देते हैं। स्थानान्तरण से न पौधों और झाड़ियों के पत्ते मुरझाते हैं और न उनके फूल झड़ते हैं। छोटे पौधे अथवा बड़े बृक्ष मोल बिकते हैं। आप लीजिए और घर में अथवा बाहिका में कुछ घण्टों में ही नई बाड़ लगा लीजिए अथवा पूरी नई बाटिका खड़ी कर

लीजिए। यह बात ठीक है कि सब प्रकार के बूढ़ों का स्थानान्तरण होना सम्भव नहीं किन्तु जितनों का भी स्थानान्तरण चीनी कर रहे हैं, उतनों का हम भारत में तो नहीं करते।

१-५-५५

पेइ-चिङ्ग के जीवन में प्रथम मई का उत्सव उल्लासपूर्ण है। शीतर्तु समाप्त हो चुकती है, बसन्त का आदि होता है। इस उत्सव की सज्जा दो चार मास पहले आरम्भ होती है। शासन और जनता, कार्यालय तथा निर्माणियां, स्त्री और पुरुष, बच्चे तथा बूढ़े, सभी इस उत्सव की प्रतीक्षा करते हैं। छः मास पूर्व ही विदेशों से प्रतिनिधि-मण्डलों को निमन्त्रित करने के लिए दूतावासों से शासन सूचियां मंगाता है। साम्यवादी देशों के प्रतिनिधि तो बड़ी संख्या में आते ही हैं। इनके अतिरिक्त अन्य देशों से भी समाजवाद से सम्बद्ध संस्थाओं और समितियों के प्रतिनिधियों को पर्याप्त संख्या में बुलाया जाता है।

इस वर्ष भारतवर्ष से व्यापार-संघों (trade unions) के ३२ प्रतिनिधि आए हैं। इनमें से दो तीन व्यक्ति नागपुर के हैं। द्वीपान्तर (Indonesia) से श्रमिक-संघों के २९ प्रतिनिधि हैं। ये हमको ब्याङ्क-बोड आते समय संयान में मिले थे। बर्मा, पाकिस्तान के भी अनेक व्यक्ति आए हैं। बर्मा के प्रतिनिधि-मण्डल में तीन पतली दुबली, सौम्यवदना, महिलाएं भी हैं। बुल्गेरिया, चेखोस्लोवाकिया, वीतनाम और रूस से भी बहुत पुरुष, स्त्रियां और बच्चे आए हैं। आज उत्सव में दो तीन हृक्षीं स्त्रियां दिखाई पड़ी।

हम अपने निवास स्थान से नौ बजे चल पड़े। ठीक दस बजे राष्ट्रपति माओ ध्येन्-आन्-मन् पर अन्य अधिकारियों सहित आ पहुंचे। पेइ-चिङ्ग के नगराध्यक्ष और उपराष्ट्रपति श्री माओ के साथ थे।

प्रारम्भ राष्ट्रीय गान के बाद्य से हुआ। तत्पश्चात् अन्ताराष्ट्रीय श्रमिक-गान का बाद्य बजा। साथ में २१ शतध्वनियों की दनदनाती स्फोट-ध्वनि होती रही।

ध्येन्-आन्-मन् के सामने सी पाद से अधिक चौड़ी सड़क पर पांच बहिर्त्रों ने पानी का अच्छा छिड़काव कर दिया था। भूमि सुसिक्त हो गई थी और लगातार तीन घण्टों तक पांच लाख व्यक्तियों के चलने पर भी एक रजःकण नहीं उठा।

सामने बाद्य बजाने वाले श्वेत वस्त्रों में शोभायमान थे। उनके दोनों ओर पाठ-शालाओं के विद्यार्थी तथा आदर्श कार्यकर्ता आदि के बर्ग थे। लगभग प्रत्येक बर्ग में बेष की समानता थी। बंसे पेइ-चिङ्ग का अधिकांश बेष नीला बन्द गले का कोट और नीली पतलून है। स्त्री पुरुष के बेष में भेद नहीं। कभी कभी कोट के गले की बनावट में भेद होता है। सिर सब के बूले रहते हैं। केवल स्त्रियों का केशविन्यास तथा मुष्काकृति-उनके स्त्रीत्व के सूचक हैं।

सड़क के दोनों ओर लगभग ५, ६ पाद के अन्तर पर सैनिक खड़े हुए थे। इनका प्रबन्ध अन्त तक सुव्यवस्थित रहा। क्षणमात्र के लिए भी कहीं उच्छ्वसकलाता दिखाई नहीं पड़ी।

जनता पंक्तिबद्ध धीरे धीरे चलती थी। चार चार व्यक्तियों के कन्धों पर एक एक चित्र का चौखटा रखा हुआ था। ५, ६ पाद ऊंचे चित्र सहस्रों की संख्या में लाए गए थे। चित्रों से भी अधिक संख्या रक्तवर्ण झण्डों की थी जिन पर प्रायः कुछ लिखा हुआ न था। विभिन्नता के लिए अन्य वर्णों के झण्डे भी जनता उठाए हुए थी। जिस प्रकार से माओ आदि के चित्र कन्धों पर उठा रखे थे उसी प्रकार से बड़े बड़े काष्ठमय चीनी के अक्षर भी जनता ने उठाए हुए थे। कपड़ों पर नाना प्रकार के घोषनाद लिखे हुए थे।

जो वर्ग यात्रा में सबसे पूर्व आए उन्होंने सैकड़ों सहस्रों वायुगोले (balloons) छोड़े। दृश्य अविस्मरणीय था। रक्त, जामनी, पीले, नीले वर्णों के गोले वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर उठते और बहते हुए आकाश में चढ़ते गए, छोटे होते गए और शनः शनः इतने ऊंचे चढ़ गए कि अदृश्य हो गए। गोलों के साथ लम्बे लम्बे चीनी के घोषनाद भी १०, १२ यष्टि लम्बे कपड़ों पर लिखे हुए आकाश में चढ़ने लगे। इनमें से प्रथम घोषनाद था— हम अफ्रीका एशिया सम्मेलन का अभिनन्दन करते हैं। एक और वर्ग आया। उसने सैकड़ों कबूतर एक साथ हाथों में से उड़ाए। ये कबूतर हम पर से उड़ते हुए आठों दिशाओं में फैल गए।

तीन घण्टे तक अविच्छिन्न रूप से जनता और शासन के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति नाना प्रकार के फूल हिलाते हुए और "माओ-त्स-तुऊ वानु चिव" (१०,००० वर्ष जीवित रहो) का नाद करते हुए निकलते रहे।

प्रत्येक वर्ग ने राष्ट्रपति को बतलाया कि हमने पिछले वर्ष में कितना कार्य किया है। कितना उत्पादन बढ़ाया है। वर्गों के आगे बड़े बड़े झण्डों पर चित्र बने थे कि इस वर्ष में इतना उत्पादन हमने बढ़ाया है। चीन की प्रथा के अनुसार अधिकांश वस्तुएं मनुष्यों के कन्धों पर चल रही थीं। पशु तो एक भी न था। गाड़ियां भी न थीं। हां, कुछ भारी यन्त्रों के नीचे पहिए लगे हुए थे जिनको मनुष्य-शक्ति धकेल रही थी। ये यन्त्र वे थे जो चीन में बनाए जा रहे हैं जैसे बरीवर्त (turbines), बाष्पित्र (boilers), गन्ध (engines)। एक वर्ग तो एक चट्टान ले जा रहा था जिसमें एक मूर्तिमय श्रमिक बालि-स्वय (pneumatic drill) लगाए हुए था। यह कोयला निकालने वालों का वर्ग था।

विश्व-शान्ति की चिन्ता, प्रचार और उसके लिए सज्ज रहना अनेक वर्गों के चित्रों और घोषनादों में प्रतिबिम्बित था। कई वर्गों ने भूमि के मानचित्र-रूपी बिसाल गोले उठाए हुए थे। इन पर साम्यवादी देशों का सन्तत क्षेत्र रक्त रंग में घोषित था।

शासन के साक्ष-विभाग ने सूअर और मछली ऊपर उठाई हुई थी। जनता का समुद्र पुष्पभूमि बना हुआ था। एक एक वर्ग ने एक ही प्रकार के फूल उठाए हुए थे। विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों के पृथक् पृथक् वेष थे। लड़कियों के वर्गों ने भी निकरें पहनी हुई थीं। आधी टांगें अनावृत थी। एक वर्ग के प्रान्त पर बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों का समूह था। इन्होंने काली कुर्ती और काषाय पहना हुआ था। इनके पीछे काली टोपी वाले कुछ ताओ सम्प्रदायी चल रहे थे। कुछ वर्गों के पश्चात् श्वेत टोपी पहने हुए मुस्लिम पाठशालाओं के विद्यार्थी थे।

घूप प्रखर थी। लगभग एक घण्टे के पश्चात् ऊपर खड़े हुए अतिथि नीचे जाने लगे जहां चाए और निम्बुरस का प्रबन्ध था। इस उत्सव में बैठने का स्थान नहीं। राष्ट्रपति, मन्त्रिगण, राजदूत और विदेशी अभ्यागत पुरुष अथवा स्त्री सभी बिना छतरियों के खड़े हुए थे।

अन्त में खिल्लाही और नाटक मण्डलियों के समूह आए जिनमें दो विदेशी मण्डलियां भी थीं। एक चेखोस्लोवाकिया की और दूसरी वीतनाम की। ये नाचते खेलेते कूदते जा रहे थे। सब ने अपने देश के वेष पहने हुए थे। भोट, मोंगोल आदि चीनी राष्ट्र के भी पृथक् वर्ग थे। समाप्ति पर वाद्य बजने लगे। राष्ट्रपति माओ हमारी ओर आए। माओ हृष्टपुष्ट और स्वस्थ प्रतीत होते थे। इनकी प्रसन्न मुखाकृति चित्र से बहुत भिन्न है। चित्र में तो जीवन का आभास ही नहीं होता। साक्षात् दर्शन करने पर माओ सजीवता और स्फूर्ति की मूर्ति हैं।

बड़े बड़े चित्रों का निम्न क्रम था। सर्वप्रथम माक्स, तदनन्तर एंगल्ड्, लेनिन्, स्टालिन्, माओ और बुल्गानिन्।

कई वर्गों ने दो चित्र उठाए हुए थे। पहले माओ और फिर बुल्गानिन्।

शासन ने पहली मई के लिए घोषणादों की सूची निकाली थी। यह सूची अध्ययन करने योग्य है और हमारे श्रमिकों के लिए अनुकरणीय है।

Long live the world's working people!

Strive for lasting world peace! Long live world peace!

Fraternal salutations to the great Soviet people now triumphantly carrying out communist construction! Long live the Soviet Union, model for China's construction work and invincible bastion of world peace! The great alliance between China and the Soviet Union is a reliable safeguard for consolidating peace in the Far East and the whole world. Long live the unbreakable friendship between the Chinese and the Soviet peoples!

Develop relations of peaceful cooperation among Asian nations on the basis of the five principles of mutual respect for each other's sovereignty and territorial integrity, non-aggression, non-interference in each other's internal affairs, equality and mutual benefit and peaceful coexistence! Oppose U.S.

imperialists creating division in Asia, organising military blocs for aggressive purposes and prepare for new war!

Long live friendship between the Chinese people and the people of India, Burma, Indonesia and other nations in Asia, Africa and the Pacific region!

People throughout the country work together conscientiously and industriously to overcome difficulties, increase production and practice economy so as to fulfil the First Five-Year Plan for the development of China's national economy! Work for the all-round completion and overfulfilment of the 1955 state plan!

Men and women workers, technicians and office employees in factories and mines! Observe labour discipline, study and raise your technical level, promote advanced experiences, develop emulation campaigns, raise the quantity and quality of products, increase the number of new items, reduce costs and create more wealth for the nation!

Men and women workers, technicians and office employees in the capital construction departments! Strengthen the work of designing, surveying and management of construction, ensure the quality of construction, reduce costs of construction and installation, pay strict attention to economy, guard against waste and ensure the completion of construction projects fast, well and at lower costs!

Men and women workers, technicians and office employees in the geological prospecting departments! Try to fulfil your task of prospecting, raise the quality of work, improve the work of analysis and research, expand general geological surveying according to plan and meet the national construction demands for resources and geological data!

Men and women workers, technicians and office employees in the communications, transport and postal and tele-communications departments! Improve communications, transport and postal and tele-communications work, speed up the turn-round of vehicles and vessels, make more efficient use of equipment, increase the quality in transport work, reduce transport costs, build new and improve old communications lines and expand communications, transport and post and tele-communications work!

Trade unionists! Keep in close touch with the mass of workers and employees, raise their socialist consciousness to a higher level, increase education in labour discipline, help them raise their technical and educational levels, promote labour emulation campaigns, get the workers to make rationalisation proposals, disseminate advanced experience, pay real attention to the welfare of the workers, increase education in safety and sanitation, and ensure fulfilment of state plans!

Men and women peasants! Work actively to increase the production of grain, cotton, oil seed and other farm produce, improve farming technique, popularise high-quality seed, build water conservancy work, cultivate carefully, make effective use of land, reclaim arable wasteland, take precautions against and combat natural calamities, adhere to the state policy of planned purchase and supply, and make efforts to support the country's industrial construction!

Workers, technical personnel, office employees and civilian workers taking part in water conservancy work! Complete the water conservancy projects, develop rural irrigation, take proper precautions against drought, flood and water-logging, defeat natural calamities, strive to achieve abundant harvests and make full use of water resources!

Forestry workers, technical personnel and tree-growers! Improve the work of lumbering and transport, improve management and administration, ensure the supply of timber, plant and protect forests, develop mutual aid and cooperation among tree-growers step by step, and strive to develop the country's afforestation work!

Workers, technical personnel and office employees on livestock farms and livestock breeders! Improve animal strains, improve methods of breeding, prevent animal diseases, protect and cultivate pasture lands, gradually develop mutual-aid and cooperation among livestock breeders and strive to raise more livestock and turn out more animal products!

Salt industry workers and salt producers! Increase the output of salt, raise its quality and strive to meet and overfulfil the national plan!

Workers in state commerce, supply and marketing cooperatives and consumer cooperatives! Work zealously to develop urban-rural trade, improve business management, reduce the cost of commodity turnover, carry out fully the state policy of planned supply and purchase, work well for the socialist transformation of private commerce, gradually develop mutual-aid and cooperation among pedlars and improve your service to the producers and consumers!

Shop assistants in private commerce! Unite with and supervise the capitalists to improve business management under the leadership of state commerce and work to supply consumer needs!

Government workers! Raise your political consciousness and vocational level, carry out state policies, raise working efficiency constantly, at all times maintain and strengthen close contact with the mass of people, oppose bureaucracy, avoid arrogance and self-complacency, serve the people whole-heartedly! Government institutions should make reasonable readjustment of their staff, reduce the number of departments and save on administrative expenses!

Teachers! Raise the quality of teaching, instruct our youth and children

with advanced scientific knowledge, patriotism and a socialist outlook and the spirit of loving labour and observing discipline, pay attention to the moral education and health of young people, strive to fulfil the state plan for training personnel and bring up active builders of socialism!

Child-care workers! Love children and improve child-care work!

Scientists! Work hard to raise the level of scientific research, strengthen the link between theory and practice, link research work with production, actively train personnel, popularise scientific knowledge, make scientific work serve national construction effectively!

Medical and public health personnel! Raise your scientific and technical level, train medical and public health personnel, strengthen unity between doctors of traditional Chinese medicine and western-trained doctors, ensure that doctors of traditional Chinese medicine play a fuller role in medical and public health work, develop health work for the masses and improve the people's health!

Physical culturists! Develop people's sports and improve the people's physique!

Young men and women! Students! Carry out Chairman Mao's call to "keep healthy, study well and work well," do physical training, acquire knowledge of culture and science, observe discipline conscientiously, cultivate the habit of work and good moral qualities, serve national construction and defence!

Children! Study hard, do physical training, cultivate love of labour and observe discipline, train yourselves to be loyal sons and daughters of the motherland!

Followers of all religious creeds! Develop patriotism, take an active part in the struggle against imperialist aggression in defence of peace!

Overseas Chinese unite, oppose the suppression and deceit of the traitorous Chiang Kai-shek clique, develop mutual help, protect your legal rights and interests, love your motherland

Long live the great solidarity of the people of the whole country!

Long live the great People's Republic of China!

राशि को साढ़े आठ बजे अग्निक्रीडा (fireworks) आरम्भ हुई। यदि इसको स्फोट-क्रीडा कहें तो अधिक उपयुक्त होगा।

स्फोट आकाश में बहुत ऊंचे जाकर फटते थे। गर्जन-ध्वनि मेघों और शतधनियों के समान थी। स्फोट-क्रीडा चीनी आविष्कार है और पेइ-चिङ्ग चीन का केन्द्र है। पेइ-चिङ्ग का आज महत्तम उत्सव है। विदेशों के नाना प्रतिनिधि आए हुए हैं। इसलिए आज का

स्फोट-प्रदर्शन चीन का उत्कृष्ट प्रदर्शन है। एक ओर स्फोट फटने पर बिजली के लघुओं के समान नीले, लाल और पीले सँकड़ों दीप आकाश में फैल जाते हैं। मूल स्फोट से निकलने और चारों ओर फैलने में, धूम्र-रेखाएं वृक्ष की टहनियों का रूप धारण कर लेती हैं। जिनके आगे लटके हुए विद्युत्-कन्ध इधर उधर फैलते ही जाते हैं।

दूसरी ओर देखा एक और स्फोट फटा। छतरी के खुलने के समान इसमें से फूल और तारे झड़ने लगे।

सर्वथा सामने, निर्झररूपी स्फोट में से फूलों की लम्बी लम्बी शाखाएं निकलती ही जा रही हैं।

जनता नाच रही है, गा रही है।

आज कितना व्यय हुआ यह कोई नहीं बता सकता। लाखों यष्टि कपड़ा, लाखों बांस और लकड़ी के फटे। सहस्रों मन रंग, लाखों पत्र के बने फूल।

अलग अलग देखने पर वस्तुएं साधारण और सस्ती दिखाई पड़ती थी किन्तु उनका सामूहिक प्रभाव वैभव और ऐश्वर्य का था।

२-५-५५

पेइ-चिङ्ग का भारतवर्ष के साथ दूरभाष-सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। ३ कला (minute) का ४० रुपये शुल्क है। तत्पश्चात् प्रत्येक कला का शुल्क १३३ रुपये होता है। यद्यपि विमान द्वारा डाक आती है तथापि कई बार अनेक दिनों तक पत्र नहीं मिलते। हमको नागपुर छोड़े १९ दिन हो चुके थे और घर से कोई पत्र न मिला था। इसलिए २-५-५५ को शासन के द्वारा प्रबन्ध हुआ कि एक और दो बजे के मध्य दूर-भाष किया जाए। पेइ-चिङ्ग का समय नागपुर से साढ़े तीन घण्टे आगे है। जब पेइ-चिङ्ग में दोपहर का एक बजता है तब नागपुर में प्रातः के साढ़े नौ। दूरभाष में ध्वनि अस्पष्ट आती है। दिल्ली से लन्दन दूरभाष करने में जो स्पष्टता है वह यहाँ नहीं। केवलमात्र हमको यह सन्तोष हुआ कि घर में सब सकुशल हैं और हम अपनी कुशलता की सूचना दे सके।

हमने अनेकों निर्माणियों का निरीक्षण किया। सब स्थानों पर एक विशेषता पाई कि यहाँ श्रमिक वेतन-वृद्धि और मन्द-गति के लिए यत्न नहीं करते। वेतन कितना हो, श्रमिकों को क्या सुविधाएं मिलें—यह निश्चय करना शासन का काम है। देश की आर्थिक दशा के अनुकूल उनको यथोचित वेतन दिया जाता है। ६० रुपये से लेकर ५०० रुपये तक वेतन की अवधि है—कोई वेतन अधिक मांगने का नाम नहीं लेता। निर्माणियों में यदि किसी बात की चिन्ता है तो उत्पादन बढ़ाने की। एक एक श्रमिक की यह इच्छा है केवल प्रबन्धकों की नहीं। जो बहुत अधिक कार्य करता है वह आदर्श श्रमिक कहलाता है। इन श्रमिकों के चित्र निर्माणियों में लगते हैं। इनका आदर और सत्कार होता है और छुट्टी

मोटी अनेक सुविधाएं दी जाती हैं।

पेइ-चिऊ में बड़े पुस्तक-विक्रयालय शासन के हाथ में हैं। केवल कुछ छोटे आपण हैं जो अभी लोगों की निजी सम्पत्ति हैं। अनाज आदि भोज्य पदार्थों का नियन्त्रण सर्वथा शासन के हाथ में है।

अनेक स्थानों पर यत्न करने के पश्चात् पता लगा कि ल्यू-ली-छाऊ नामक मार्ग में बौद्ध पुस्तकें मिल सकेंगी। ल्यू-ली-छाऊ में कुछ पुस्तकें मिलीं भी किन्तु बहुत थोड़ी।

वैसे तो साम्यवादी शासन में निश्चित मूल्य रखने का सार्वत्रिक आदेश है, नहीं तो घोर दण्ड मिलने की सम्भावना रहती है। “दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः” यह मनु-वाक्य जहाँ कहीं भी प्रयोग में लाया जाएगा वहाँ व्यवहार सत्यपूर्ण होगा। किन्तु फिर भी व्यापारी अपनी पुरानी प्रथाओं को नहीं भूले हैं। ल्यू-ली-छाऊ में एक ८८ खण्डों वाली पुस्तक का मूल्य २४० रुपये बताया गया किन्तु एक खण्ड न्यून था। व्यापारी ने कहा यह खण्ड कल पूरा कर दूंगा। आप कल आकर ले लीजिए। अगले दिन व्यापारी ने केवल हमको एक खण्ड ही नहीं दिया किन्तु मूल्य भी २८० रुपये कर दिया। हम स्तब्ध रह गए। दुमाषिये ने व्यापारी का ही पक्ष लिया। कहा कि अब एक खण्ड बढ़ गया इसलिए ४० रुपये मूल्य बढ़ गया।

३-५-५५

आज चीन के विद्या-विभाग में वैज्ञानिक शब्दावलि पर मेरा भाषण हुआ। गण्य मान्य वैज्ञानिक और साहित्यिक, जो इस कार्य में संलग्न हैं, वे उपस्थित हुए। इनकी और हमारी विचारधारा लगभग सर्वथा मिलती है। इनके कार्य का मूल सिद्धान्त है कि जो शब्द चीनी भाषा में बन सकते हैं वे बनाए जाएं। और इनको नव-शब्द-निर्माण में ९५ प्रतिशत से अधिक सफलता हुई है।

प्रांगार-रसायन जो अति-विस्तृत विषय है उसका इन्होंने सफलतापूर्वक चीनी में एक एक शब्द करके अनुवाद किया है। वनस्पति- और प्राणि-शास्त्र में भी अन्ताराष्ट्रीय कहे जाने वाले लाखों लातीनी शब्दों का चीनी में अनुवाद किया जा रहा है।

४-५-५५

हम अपने मित्रों के आभारी हैं कि वे आज हमको प्रासाद में ले गए। अध्यक्ष ने अपने कोष्ठ में हमारे लिए रंगीन सुनहरी चित्रित कलात्मक, हस्तलिखित तीन बौद्ध सूत्र निकाले। इनमें से पहला हृदय-सूत्र का मोंगोल भाषा में अनुवाद था। दूसरा मोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी भाषाओं में संस्कृत मन्त्रों का संग्रह आर्य-सर्व-संघागत-अधिष्ठान-हृदय-सुख-धातु-करण्ड-नाम क्षरणी-महायान-सूत्र। तीसरा महा-रत्न-सञ्जय-सूत्र। ये ग्रन्थ पोथी रूप में अलग अलग पत्रों पर लिखे हुए हैं। ऊपर और नीचे लकड़ी के पाट लगे हैं जिन

पर इन्द्र, यम, ब्रह्मा आदि के चित्र हैं। इन चित्रों से मनुष्य घण्टों तक स्वनेत्रतर्पण कर सकता है।

हमको बताया गया कि अनेक ग्रन्थ चाङ्क-काङ्-शेक् ताङ्-वान् ले गया। क्या क्या ले गया यह कोई नहीं बता सका।

प्रासाद में वाचनालय और गवेषणालय भी है किन्तु इनको देखने के लिए शासन की विशेष अनुमति चाहिए।

जिस प्रासाद-पुस्तकालय का पिछले ३० वर्षों से हम वर्णन पढ़ते आ रहे थे, आज पेइ-चिङ्ग में आकर भी उसके केवल ३ ग्रन्थों पर दृष्टिपात कर सके। इन पर भी दृष्टिपात हो सका सो सौभाग्य मानना चाहिए। किन्तु फिर भी बुद्धि नहीं मानी। बहुत समझाया कि चीन की नई परिस्थिति है। इसमें यही बहुत है। किन्तु जो बुद्धि इतने दिनों से एक महाभोज के लिए लालायित थी वह कैसे तृप्त होती। जब विश्रान्तिगृह में आए तो अर्ध-मृत अवस्था में हाताश बिस्तर पर लेट गए। जब हमने कुछ चीनी मित्रों से प्रासाद पुस्तकालय देखने की बात की तो उत्तर मिला प्रासाद में अद्भुतागार है। अद्भुतागार में राजाओं के रहने सहने की सामग्री है। भला प्रासाद में पुस्तकालय का क्या स्थान। भोगी विलासी राजाओं को पढ़ने में क्या रुचि इत्यादि इत्यादि।

सायं को हम फिर पुरानी पुस्तकों के स्थान पर गए और वहाँ हमको प्रासाद-पुस्तकालय के मञ्जु और मोंगोल ग्रन्थों का छपा हुआ सूचीपत्र मिला।

बोपहर दोनों देशों के सम्बन्ध की चर्चा होती रही। व्यापार की दृष्टि से जो संविदा हुई है वह विशेष लाभदायक नहीं। मुख्य कारण यह है कि भारत और चीन की आर्थिक व्यवस्था लगभग समान है। जो वस्तुएं भारतवर्ष से बाहर जाती हैं वे ही चीन से भी बाहर जाती हैं।

तिब्बत के साथ अनेक वर्षों से जो हमारा व्यापार रहा है वह अब बहुत घट गया है। चीन तथा तिब्बत के मध्य नई सड़कें बन जाने से भारत और तिब्बत के व्यापारिक सम्बन्ध भविष्य में बढ़ने की आशा नहीं।

हमने इस वर्ष बर्मा का चावल नहीं लिया। चीन ने ले लिया। चावल लेकर उन्होंने पूरा मूल्य भी नहीं दिया। केवल २० प्रतिशत मूल्य दिया। ६० प्रतिशत चीन में बनी हुई वस्तुएं दीं और शेष २० प्रतिशत के बन्ध (bonds) दिए कि बर्मा इतने मूल्य के कोई भी पदार्थ रूस से ले लेवे। कितना सुन्दर प्रबन्ध है। भारतवर्ष का कपड़ा, कोणायस (angle iron), लोहे की नालियां इत्यादि अनेक पदार्थ अब चीन से बर्मा जाया करेंगे।

पाकिस्तान के साथ भी चीन की संविदा हुई है। पाकिस्तान चीन से कोयला और सूती कपड़ा लेगा और चीन को रूई और सन् देना।

इसी प्रकार द्वीपान्तर का भारतीय व्यापार चीन के हाथ में आ रहा है। लंका से

बुधि (rubber) महंगा लेकर चीन अन्ताराष्ट्रीय मूल्य से न्यून मूल्य पर लंका को चावल बे रहा है।

कई बार हमारी नीति तत्काल दृष्टि से सीमित होती है। हमें दीर्घकालीन दृष्टि से काम लेना चाहिए। विदेश-व्यापार की नीति शासन को बनानी चाहिए। वैयक्तिक व्यापारियों पर न छोड़नी चाहिए। शासन को भी सावधानी और बुद्धिमत्ता से अपने हितों की रक्षा करनी चाहिए।

पहले भारतवर्ष का प्रतिद्वन्दी जापान था। अब इस क्षेत्र में चीन ने भी पदार्पण किया है।

चीन में दो प्रकार की विचारधाराएं हैं। एक प्रधान मंत्री की, जो भारत से मैत्री रखना परमावश्यक समझते हैं। और भारत की मैत्री का पूर्ण लाभ उठाना चाहते हैं। पिछले ५, ६ वर्षों में भारत की सद्भावनाओं की परीक्षा हो चुकी है। और भारत की मैत्री का अनन्त लाभ चीन ने उठाया है। दूसरा पक्ष कट्टर साम्यवादियों का है। खुले रूप में तो इस पक्ष ने कभी भी भारत का विरोध नहीं किया किन्तु गुप्त परामर्शों में यह शन प्रतिगत रूस के साथी हैं। इनको कभी भी यह बात नहीं भाती कि भारत साम्यवादी नहीं। इनका सिद्धान्त रोमन कैथोलिक लोगों का है— "There is no salvation outside the Roman Catholic faith" अर्थात् जो हमारे साथ नहीं वह हमारा शत्रु है।

चीन की मित्रता को बनाए रखने के लिए हमको आभ्यन्तर शक्ति-निर्माण की आवश्यकता है। आज हम औद्योगिक क्षेत्र में चीन से आगे हैं। किन्तु यदि हम ऐसे ही चलते गए तो दस वर्ष में चीन हमसे आगे निकल जाएगा। प्रान्तीय झगड़े मिटा कर राष्ट्रभाषा की स्थापना और राष्ट्रभाषना का निर्माण सब दृष्टियों से अनिवार्य समझना चाहिए।

५-५-१५

आज भाषा-विज्ञान-पीठ देखने गए। यहां अध्यक्ष ने प्रेम और आदरपूर्वक स्वागत करते हुए कहा— आचार्य रघुवीर ने कोषों का महत् कार्य किया है। हम इनके अनुभव से अवश्य लाभ उठाएंगे।

हमको बतलाया गया कि इस संस्था में रूसी पढ़ना अनिवार्य है तथा समस्त अनुसन्धान-कार्य मार्क्स के आधार पर किया जा रहा है।

श्री छाङ्ग-येइ-लो "चीनी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग"— इस विषय पर कई वर्षों से व्यापृत हैं। श्री लुओ-छाङ्ग-फेइ ने "चीनी ध्वनिशास्त्र के अध्ययन में भारत की देन"— इस विषय पर दस वर्ष पूर्व लेख लिखे थे। ये लेख चीनी में ही नहीं किन्तु हिन्दी में भी प्रकाशित हुए थे।

श्री बु-स्याओ-लिङ्ग, जिनका संस्कृत नाम दिवाकर उपाध्याय है, चार संस्कृत ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद कर रहे हैं ।

प्रथम— लघु-सिद्धान्त-कौमुदी का समास-प्रकरण

द्वितीय— साहित्य-दर्पण का नाटक-परिच्छेद

तृतीय— मृच्छकटिक

चतुर्थ— शाकुन्तल

इनके अतिरिक्त, रामायण के चीनी साहित्य में कितने उल्लेख हैं, उनका भी ये संकलन कर रहे हैं ।

भाषा-विज्ञान-पीठ-पुस्तकालय चीनी दृष्टि से बहुत अच्छा है किन्तु वैज्ञानिक अनु-सन्धान की दृष्टि से अधूरा है । पाश्चात्य पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं ।

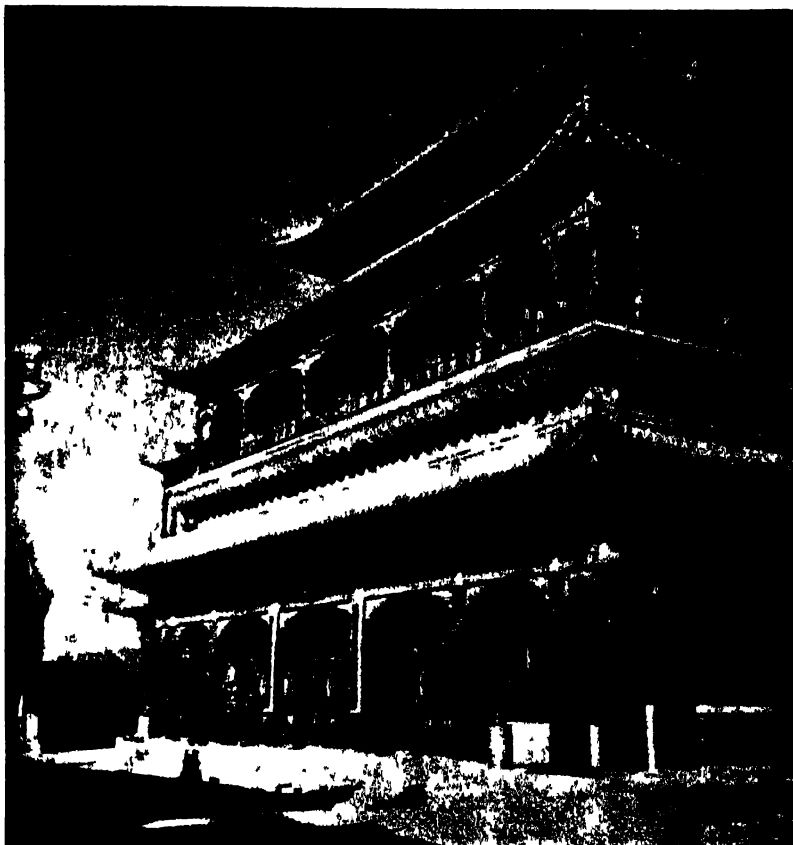
हस्तलिखित ग्रन्थ दो चार देखने में आए । उनमें से दक्षिण चीन के युन्-नान् प्रान्त में प्राचीन चाइ लिपि में लिखित पुस्तिका विशेष उल्लेख्य है । चाइ लिपि ब्राह्मी की पुत्री तो नहीं किन्तु दौहित्री अवश्य है । इसी प्रकार पुइ भाषा की लिपि भी चीन में रही होगी ।

भारतवर्ष का सम्पर्क शताब्दियों से हट गया, इसलिए आज ये लिपियां भी लोप होती जा रही हैं । किसी को यह भावना ही नहीं कि इन लिपियों का लम्बा इतिहास है और ये भारत के साथ मंत्री की बहुत आवश्यक शृंखलाएं हैं । भारत में हम अनभिज्ञ हैं ।

श्री किन्-फङ्ग ने आज से १८ वर्ष पूर्व अभिषमं की भोट और चीनी पारिभाषिक शब्दमाला प्रकाशित की थी ।

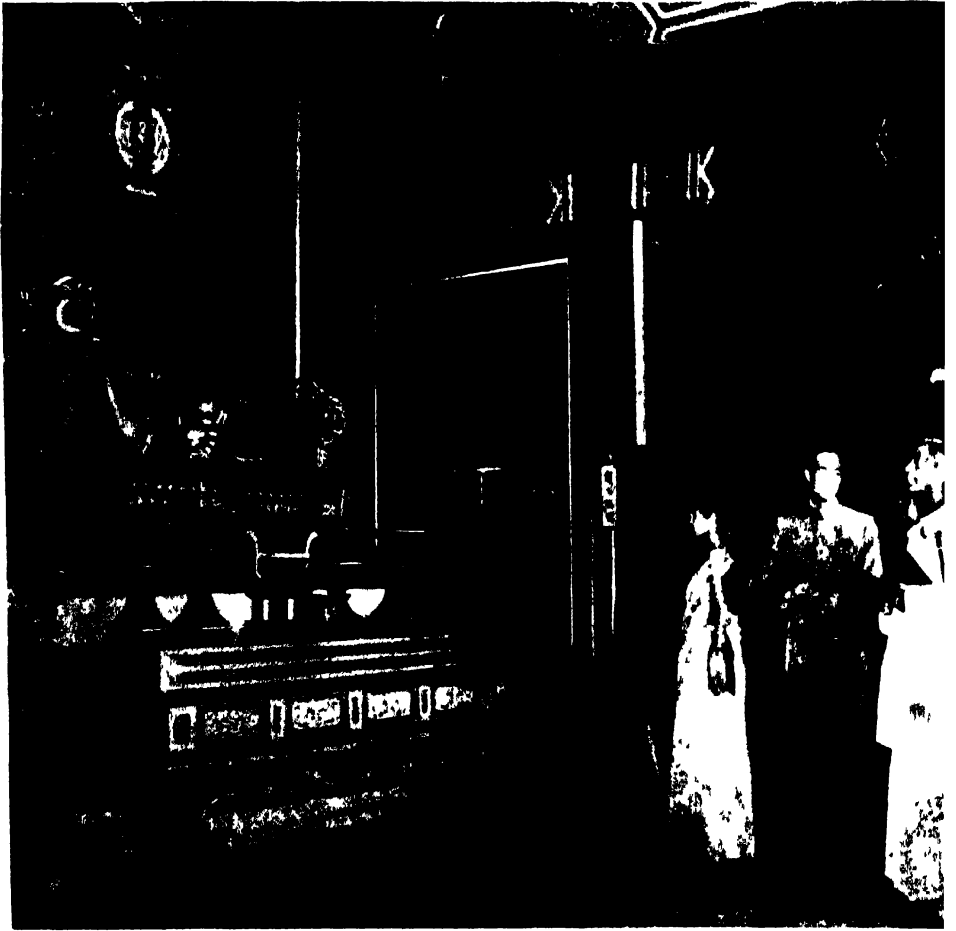
प्राचीन बीगूर भाषा में श्री सिङ्गु साली तुतुङ्ग ने श्वेन्-च्वाङ्ग की जीवनी का अनुवाद किया था । इसकी प्रति यहाँ के पुस्तकालय में देखी । यह अनुवाद असामान्य महत्त्व का है । भाषाविज्ञान, धर्मप्रचार, भारत-चीन-बीगूर-सम्बन्ध आदि अनेक दृष्टियों से इसका महत्त्व है । इस पर बातचीत करते हुए चीनी मित्रों ने इच्छा और आशा प्रकट की कि भारतवर्ष में श्वेन्-च्वाङ्ग का उपयुक्त स्मारक बनना चाहिए । श्वेन्-च्वाङ्ग चीन के प्रेम-पात्र हैं । श्वेन्-च्वाङ्ग की "पश्चिम अर्थात् भारत की यात्रा" नामक पुस्तक राष्ट्रपति माओ-त्सुङ्ग बुङ्ग वें भी अपने साथ रखते रहे हैं । जब श्वेन्-च्वाङ्ग १६ वर्ष लम्बी भारत-यात्रा से लौट कर चीन आए तब चीन की राजधानी छाङ्ग-आन् में घर-घर में अवलोकितेश्वर की मूर्ति की स्थापना हुई । राजा और रंक बुङ्ग के गुणगान में अपने को अन्य मानने लगे । श्वेन्-च्वाङ्ग ३ ३ शब्दालु और चतुर्ही नहीं थे किन्तु दार्शनिक और प्रभावशाली केन्द्रक भी थे । इनकी केन्द्री ओजस्विनी थी और इनका व्यक्तित्व सर्वांगिभावी था ।

श्वेन्-च्वाङ्ग का स्मारक भारत के व्यक्ति व्यक्ति के हृदय में बनना चाहिए ।



पेकिङ्ग स्थित ऐतिहासिक मोंगोल मन्दिर युङ्ग-हो-कुङ्ग प्राचीन काल से भारत-भारती के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। सम्राट् छघेन्-लुङ् ने अपने भव्य प्रासाद को पुनीत मन्दिर का रूप दिया, जैसाकि तत्रवर्ती शिलालेख पर उत्कीर्ण है—“हमने इस स्थान को जेतबन का रूप दिया है, घामिक चित्रो से सजाया है, गन्ध, ध्वज और रत्नमालाओं से भूषित किया है, जहां प्रातः मन्त्रों का जप होता है, और सायं घण्टों की मधुर ध्वनि। मन्दिर के भवन शुद्ध एवं अवदात आचार के भिक्षुओं से बसे हैं।” इस मन्दिर में नववर्ष और पर्वदिनों पर उर्गा, क्यास्ता, और कोब्दो के मोंगोल, बैकाल भील के बुर्यात्, वोल्गा नदी के काल्मुक्, चिचिलार् के मञ्जु, कोकोनोर् भील के ताङ्गुत्, ल्हासा के भोट और नेपाल के गोरखे अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने आते थे।

The famous Mongolian temple Yung-ho-kung erected by Emperor Ch'ien-lung in the 57th year of his reign, i.e. 1782.



युद्ध-हो-कुद्ध के दिक्पाल-भवन में मंत्रेय की महाप्रतिमा का अवलोकन करते हुए आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्रिका के चार कोनों पर चार दिक्पाल वैश्रवण, विरूपाक्ष, विरुद्धक और घृतराष्ट्र स्थित हैं।

The Smiling Buddha in the Hall of Guardian Gods. Flanking the hall are the Four Guardian Gods, of whom one is visible behind Prof. Raghu Vira

आज प्रसिद्ध मोंगोल मन्दिर युङ्ग-हो-कुङ्ग में गए। यहां ८० मोंगोल लामा रहते हैं। इनकी धर्मभाषा भोट है। कञ्जूर तञ्जूर का पाठ केवल भोट में ही करते हैं। आपस में बातचीत की भाषा मोंगोल है, अन्यो के साथ बातचीत की भाषा चीनी है। यहां हमको बतलाया गया कि सुङ्ग-चू स्स में भोटग्रन्थ छपते हैं। अभी तक मुद्रण-काष्ठ-फलक लामाओं के पास हैं किन्तु शासन उनको हस्तगत करने का प्रयत्न कर रहा है। हमने इस स्थान को देखना चाहा किन्तु हमको सफलता न मिली। युङ्ग-हो-कुङ्ग के अध्यक्ष वृद्ध वैद्य हैं। इनका नाम यिश्शिकावा ཡུང་ཨོ་ཀུང་མཁའ་ལོ་སྒྲུབ་ལེ་ཤེས་དགའ་པ་ है। इनके अर्धिन दो और प्रबन्धक लामा हैं— ལ་ཡིན་ཤས་ और ཧྱི་མ།

युङ्ग-हो-कुङ्ग मोंगोल धर्म का महान् केन्द्र रहा है। यहां भोट और मोंगोल के सहस्रों और लाखों पृष्ठ छपते रहे हैं। यहां पीतल और कासे की मूर्तियां ढलती रहीं हैं। एक समय था जब चीन के सम्राट् हेमवर्ण पालकियों से उतर कर रत्नाभूषित परिवार और मन्त्रिमण्डल के साथ युङ्ग-हो-कुङ्ग की राजाश्रममयी सीढियों पर चढ़ते थे। और जिन मूर्तियों का उन्होंने मन्दिर को स्वयं दान दिया था उनकी आराधना और उपासना करने के लिए घण्टो बिताने थे। यह वही युङ्ग-हो-कुङ्ग है जहां महाराणिया शांति और सान्त्वना पाने के लिए आती थी। पिछले ५०, ६० वर्षों में युङ्ग-हो-कुङ्ग की सम्पत्ति, साहित्य, मूर्तियों और चित्रों को विदेशियों ने, चोरों, डाकुओं और नास्तिकों ने भरसक लूटा है। किन्तु फिर भी १६ विशाल भवन अद्भुत और अपूर्व पूजासामग्री से भरे हैं। यह ठीक है कि अब यहां वे विधियां और सस्कार नहीं होते जो पहले हुआ करते थे। अब यहां पुरातन वैभव नहीं रहा। फिर भी जो कुछ शेष है वह अध्ययन और दर्शन के योग्य है।

युङ्ग-हो-कुङ्ग में अलौकिक श्रद्धा और भावना के साथ साथ तान्त्रिक मार्ग के रौद्र आचार भी होते रहे हैं। यह ऐतिहासिक मन्दिर है जहां नववर्ष और पर्वदिवसों पर उर्गा, क्यास्ता, और कोब्दो के मोंगोल, बंकाल् झील के बुर्यात्, बॉला नदी के काल्मुक्, चिचि-सार्द के मञ्जु, कोको-नोर् झील के ताङ्गुत्, ल्हा-सा ल्हा'स' के भोटिए और नेपाल के गोधूमवर्ण वामनाकृति गोरखे अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने आते थे।

युङ्ग-हो-कुङ्ग प्राचीन काल से अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। आज भी यहां आयुर्वेद, ज्योतिष, तन्त्र और धर्म का अध्ययन अध्यापन होता है।

कभी युङ्ग-हो-कुङ्ग का फ्रो-छाङ्ग अर्थात् बुद्ध-भाषागार चीन का गौरव था। इसमें मन्दिर की समस्त सामग्री रखा करती थी। इसमें अब क्या कुछ बचा है सो हम न देख पाए।

युङ्ग-हो-कुङ्ग का इतिहास दो राजाश्रम-शिलाओं पर चार भाषाओं में उत्कीर्ण है। इनमें मूल चीनी को मानना चाहिए, तत्पश्चात् मञ्जु, मोंगोल और भोट। सम्राट् छवेन्-

लुङ्ग ने पितृगणों के कल्याण के लिए गद्दी पर बैठते ही अपने प्रासाद को मन्दिर का रूप दिया। हम इस शिलालेख के एक दो उद्धरण देते हैं।

“हमने इस स्थान को जेतवन का रूप दिया है। हमने इसको धार्मिक चित्रों से सजाया है। गन्ध, ध्वजा और रत्नमालाओं से भूषित किया है। यहां प्रातः मन्त्रों का जप होता है और सायं षष्ठों की मधुर ध्वनि। हमने मन्दिर के भवनों को शुद्ध और अवदात ज्ञानाचार के भिक्षुओं से बसाया है।

“हमारे पूज्य पिता धर्म-भक्त थे। वे निर्वाण-समाधि और अनुत्तर-सम्यक्-सम्बोधि प्राप्त कर चुके हैं। महाराज शाक्यमुनि के समान वे शक्तिशाली और करुणामय थे। सब प्राणी उनमें शरण लेंगे थे।

“पितृवर, प्रेम के मोक्षों से आच्छादित, माधुर्य के अवश्याय-बिन्दुओं से विभूषित तथा चिन्तामणि प्राप्त करके आप निर्वाण के महासागर में प्रवेश कर गए हैं। गंगा के बालु के समान असंख्य लोग आपके पवित्र तत्त्व का रसास्वादन कर रहे हैं।”

इत्यादि इत्यादि।

ये शिलालेख सम्राट् छपेन् लुङ्ग ने अपने राज्य के नवें वर्ष (१८०१ विक्रम) के दसवें मास में उत्कीर्ण कराया था।

आज दोपहर को पारिभाषिक शब्दावलि समिति ने बुलाया है। इस समिति ने बहुत काम किया है। इनके कार्य-सिद्धान्त वे ही हैं जो हमारे हैं। इन्होंने अपनी सब पुस्तकें भेंट कीं।

यद्यपि जापानी भी पारिभाषिक शब्दों के लिए चीनी का आश्रय लेते हैं और उन्होंने पहले ही वैज्ञानिक शब्दावलि बनाई हुई है तथापि उनके साथ समानता रखने का आज चीन में कोई विचार नहीं। ये स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं।

हमारे विश्रान्तिगृह में प्रतिदिन नाना दिग्दिगन्तर से आए हुए विदेशी मिलते रहते हैं। आज हमको विशेष प्रसन्नता हुई कि तीन जर्मन विद्वान् जिन्होंने चीन को अपना अनुसन्धान-क्षेत्र बनाया हुआ है वे पूर्वी जर्मनी से यहां आए हैं। प्राध्यापक Eduard Erkes लाइप्सिक् विश्वविद्यालय में चीनी के अध्यापक हैं और पूर्व एशिया संस्था के अध्यक्ष हैं। इन्हीं के साथ Dr. Schubert तथा Dr. Völker बर्लिन अङ्कतागार के अधिकारी हैं। प्राध्यापक Robert Heidenreich जेना (Jena) के पुरावशेषज्ञ हैं। इन्होंने बतलाया कि भोट और मोंगोल छपने का स्थान अभी तक पेइ-चिङ्ग में विद्यमान है। इनसे यह भी पता लगा कि बूदापेस्त से प्राध्यापक लियेती आए हुए हैं। प्राध्यापक लियेती ने १९४२ में मोंगोल कञ्चूर का सूचीपत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित किया था। यह सूचीपत्र में अपने साथ लाया हुआ था। इनसे मिलने पर पता चला कि कञ्चूर का सूचीपत्र उलान्-बातोर् में बन रहा है और शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगा।



प्रसिद्धतम चीनी मन्दिर क्वान्-ची । यह विशाल और भव्य प्रासाद रूप में बना मन्दिर
अपने पुस्तक-संग्रह और अङ्गुतागार के लिए प्रसिद्ध है ।

The celebrated Chinese Buddhist Kuan Chi Temple, a rich repository of Buddhist texts and art treasures.



क्वान्-ची मन्दिर के पुस्तकागार में चीन-बौद्ध-मण्डल के प्राणभूत भदन्त चू-त्सान् के साथ आचार्य रघुवोर । श्री चू-त्सान् की योग तथा तन्मम्बन्धी माहित्य में विशेष रुचि है ।

Prof. Raghu Vira in the Kuang-chi Temple with Venerable Chiu-tsang the moving spirit of the Chinese Buddhist Association.

आज प्रातः ९ बजे चीन की प्रसिद्ध ऐतिहासिक विशाल भित्ति देखने के लिए चले । मार्ग की लम्बाई १५० ली । सड़क कुछ कच्ची कुछ पक्की । मार्ग में आंधी से शरीर भर गया । बड़ी भित्ति के अतिरिक्त और भी दो छोटी छोटी भित्तियां दिखाई पड़ीं । भित्ति पहाड़ पर बनी है । इस पर केवल मनुष्य ही चल सकते हैं । सम्भव है पेइ-चिङ्ग से आगे जाकर सीढ़ियां आदि न हों और भित्ति पर घोड़े दौड़ सकते हों । भित्ति पर सदा वायु चलती रहती है । निर्जन पर्वतों का चारों ओर का दृश्य शोभान्वित है ।

आते समय मार्ग में मिङ्ग राजाओं की १३ समाधियां देखने के लिए सड़क से बाईं ओर को मुड़े । समाधियां आरम्भ होने से कई कोस पहले एक द्वार है । द्वार से आगे सड़क के दोनों ओर सिंह, घोड़े, ऊट, हाथी, गधे, सेनापति और मन्त्री आदियों की बड़ी बड़ी अश्ममयी प्रतिमाएं सड़क की रक्षा करती हैं । बहुत दूर आगे जाकर पितृपूजा के विशाल और विस्तृत भवन है । ये भवन आज बन्द थे । चारों ओर बांसों और बल्लियों की पंढे बाधी हुई थी । जीर्णोद्धार का बहुत बड़ा कार्य चल रहा था । भवनों के पीछे मिट्टी की एक कोस क्षेत्रफल वाली पहाड़ी सी है जिसकी ऊंचाई भवनों से नीची है । इस पहाड़ी में किसी अज्ञात स्थान पर द्वितीय मिङ्ग राजा का शरीर समाधिस्थ है । ठीक स्थान का किसी को पता नहीं । यह रहस्य शव की रक्षा के निमित्त है । इसी प्रकार दूर दूर १२ और भवन तथा समाधियां हैं । प्रथम मिङ्ग राजा की समाधि नान्-चिङ्ग में है ।

जिस प्रकार से युङ्ग-हो-कुङ्ग पेइ-चिङ्ग का प्रसिद्धतम मोगोल मन्दिर है उसी प्रकार चीनियों का प्रसिद्धतम मन्दिर क्वान्-ची है । मन्दिर प्रासाद रूप में बना है । यह मन्दिर पुस्तक-संग्रह और अङ्गतागार के लिए प्रसिद्ध है । श्री चू-त्सान् इस मन्दिर की आत्मा हैं । ये चीन-बौद्ध-मण्डल में भी कार्य करते हैं । तथा राजनीति में भी भाग लेते हैं । इनकी योग में अत्यन्त रुचि है । जितनी बार भी इनसे साक्षात् होता रहा उतनी ही बार इन्होंने अभ्यर्थना की कि योग-सम्बन्धी साहित्य मुझे भेजिए । १९५२ में लंका से 'सेली अर्थात् बुद्ध का शरीरांश यहां भेंट में आया था । यह सेली कूपी में रखा हुआ है । श्री चू-त्सान् ने हमारा स्वागत करते हुए कहा— आपका आगमन इतिहास की विशेष घटना है । इस वाक्य में कितना स्नेह और कितनी आशाएं बंधी हैं, यह कौन कह सकता है ।

पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय में केवल एक भारतीय विद्यार्थी है— श्री नारायण चन्द्र सेन । भारतीय विद्यार्थियों की संख्या बढ़नी चाहिए । इस ओर भारतीय शासन और जनता का ध्यान आकर्षण करना परमावश्यक है । पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय में पर्याप्त विदेशी विद्यार्थी हैं । संख्या की दृष्टि से पहला स्थान बीत-नाम का है और दूसरा कोरिया का । उत्तर बीत-नाम से २१० विद्यार्थी और कोरिया से १०० । इस, हंगरी

और बाह्य मोंगोल से १०, १० विद्यार्थी हैं। द्वीपान्तर के भी ६ विद्यार्थी हैं। चीन हमारा पड़ोसी है। हम दो सहस्र वर्षों से सांस्कृतिक बन्धु हैं। आज भी राजनीति में भारत चीन का साथ दे रहा है। हमारा राजनैतिक और सांस्कृतिक कर्तव्य है कि सैकड़ों की संख्या में भारतीय विद्यार्थी चीन के विश्वविद्यालयों में आकर इनके प्राचीन और आधुनिक साहित्य, कला, दर्शन, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। केवल अंग्रेजी पढ़ने से और चीन पर अंग्रेजों की लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने से हम चीन को कभी न जान सकेंगे। चीन प्रगतिशील देश है। हम भी प्रगति कर रहे हैं। एक दूसरे को सम्यग् रूपेण जानना और समझना हमारे लिए अनिवार्य है।

आज श्री वूबर्ट नामक जर्मन विद्वान् के पुनः दर्शन हुए। इन्होंने प्रसिद्ध बीड विद्वान् वेलर (Weller) का जयन्ती-ग्रन्थ सम्पादित किया है। अनेक बातें जो हमको वैसे पता न लग सकतीं वे आज उनसे पता लगी हैं। स्वभाव से सौम्य और भारत के स्नेही हैं। आप लाइप्सिक् में रहते हैं।

१०-५-५५

अन्ताराष्ट्रीय विद्यार्थी-सघ-स्वास्थ्यश्रम अनोखी संस्था है। केवल यक्ष्मा के प्रारम्भिक रोगी इस संस्था में लिए जाते हैं। अभी तक यहां कोरिया और वीत-नाम के रोग विद्यार्थी आए हैं। मैत्री का अच्छा साधन है।

साम्यवादी देशों में स्वास्थ्यश्रम सुन्दरतम स्थानों पर बनाए जा रहे हैं। इन पर अनन्त द्रव्य व्यय किया जा रहा है। यन्त्र अधिकांश पूर्वी जर्मनी और रूस के बने हुए हैं।

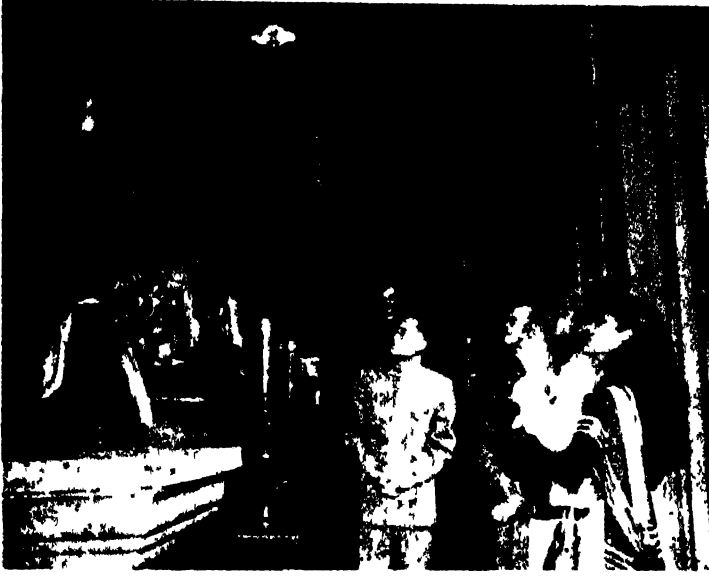
११-५-५५

सुऊ-थू स्स— यह भोट मन्दिर है। यहां २१ लामा रहते हैं। ज्येष्ठ लामा श्री वा-थू-सऊ हैं। इनके सबसे छोटे शिष्य दस वर्ष की आयु के हैं। देगों का सम्पूर्ण कञ्जूर तञ्जूर यहां रखा हुआ है।

फू-थी स्स— यह मन्दिर ३०० वर्ष पुराना है। फू-थी चीनी का शब्द नहीं, संस्कृत का शब्द "बोध" है। इसके द्वार पर देवनागरी लिखी हुई है। दलाइ-लामा ལྷུངས་ལྷོ་ལོ་ལོ་ལོ་ तथा पञ्छेन्-लामा དཀར་ཆེན་ལོ་ལོ་ལོ་ यहां उपदेश करते रहे हैं। इनके पास ल्हासा का सम्पूर्ण कञ्जूर है। मोंगोल, चीनी और भोट विद्वान् मिल कर भोट-चीनी-कोष बना रहे हैं। इनको हमारे भोट-संस्कृत-कोष की अत्यन्त आवश्यकता है।

तुऊ-व्यामो स्स— यह मिझुणी मन्दिर है। ५३ मिझुनियां यहां निवास करती हैं। मन्दिर विद्यालय, सुन्दर और अत्यन्त स्वच्छ है। चीनी त्रिपिटक के तीन विशिष्ट संस्करण हैं जिनका अध्ययन और पारायण सदा होता रहता है।

छोटी आयु की भी बस मिझुनियां हैं।



भदन्त चू-त्मान् क्वान्-ची मन्दिर के मुख्य भवन में बोधिमत्त्व की भव्य, सौम्य और दान्तिमय मूर्ति, श्रद्धा और स्नेहाप्लावित गर्व से आचार्य रघुवीर को दिखाते हुए ।

Prof. Raghu Vira, his daughter and Venerable Chiu-tsang gaze at the central image of the Kuang-chi temple.

एक बूढ़ा ने अपनी जिह्वा के रुधिर से पांच वर्ष तक चीनी त्रिपिटक के बहुत से अंश लिखे । प्रतिदिन पांच पृष्ठ लिखा करता था । एक पृष्ठ में २०० अक्षर ।

पेइ-चिङ्ग की सीमा पर अनेक कृषि-उत्पादन-सहकारी-मण्डल हैं । हम इनमें से एक काओ-पेइ-स्येन् में गए । यहां १४२५ कुल हैं जिनमें ४८५५ नर नाडी और बच्चे हैं । भूमि का क्षेत्रफल ८५०० माओ है । छः माओ का एक एकड़ होता है । प्रत्येक काम करने वाले व्यक्ति को लगभग दो माओ भूमि मिली है । यहां मक्की, गेहूँ और चावल की खेती होती है ।

साम्यवादी शासन से पूर्व इस ग्राम में ४२ घनी कुल थे जिनके पास ५१२ एकड़ भूमि थी । अर्थात् ११, १२ एकड़ वाले परिवार को घनी माना जाता था । मध्यवर्ग के परिवार २५३ थे । इनके पास ३८ प्रतिशत भूमि थी । ८०५ कुल भूमिहीन तथा दरिद्र थे । इनकी भूमि-सम्पत्ति २६ प्रतिशत थी ।

साम्यवादी शासन ने भूमि का वण्टन कार्यकर्ताओं के आधार पर किया । जिस चौधरी से हम बात कर रहे थे उसके परिवार में दस व्यक्ति हैं । पहले इनके पास ११ माओ भूमि थी । अब १६ माओ है । खेती के अतिरिक्त स्त्रियाँ कढ़ाई का काम और पुरुष खच्चर आदि से भार ढोने का काम करते हैं । यदि किसी पुरुष के पास एक खच्चर और एक गाड़ी हो और उसको लगातार काम मिलता रहे तो पेइ-चिङ्ग की सीमाओं पर उसे ४, ५ युआन् प्रतिदिन मिल जाते हैं ।

ग्राम में मछलियों का तालाब है ।

१२-५-५५

आज हम पेइ-चिङ्ग की शासन-चालित वस्त्र-निर्माणी संख्या १ देखने गए । पेइ-चिङ्ग में तीन वस्त्र-निर्माणियाँ हैं । यन्त्र पूर्वी जर्मनी से आए हैं तथा कुछ चीन के हैं । प्रतिदिन दो पर्यायों में काम होता है । इस निर्माणी में ५०,००० तर्कु (spindles) और ११५२ करघे (looms) हैं । श्रमिक संख्या २६५० । एक श्रमिक २४ करघों अथवा ६०० तर्कुओं की देखभाल करता है । जो सूत इस निर्माणी में बनता है उसका ३ भाग बेच दिया जाता है और ३ भाग से कपड़ा बना जाता है ।

इस निर्माणी में केवल एक ही प्रकार का साधारण वस्त्र बनता है । रंगाई और छपाई यहां नहीं होती ।

श्रमिकों को बेतन कार्य की मात्रा के अनुसार मिलता है । दिनों और घण्टों के अनुसार नहीं । बेतन का माध्य प्रतिमास ५३ युआन् पड़ता है ।

८० प्रतिशत श्रमिक निर्माणी से संलग्न भवनों में रहते हैं । भवन तीन मूँछि ऊँचे हैं । समस्त भवन संख्या २६ है । शीत ऋतु में भवन भाग से उष्ण रखे जाते हैं ।

बच्चों के लिए प्राथमिक पाठशाला है जिसमें ९० बच्चे पढ़ते हैं। शिशुशाला स्नानागार आदि भवनों के साथ संलग्न हैं।

श्रमिक स्त्रियां ५१.८ प्रतिशत हैं। हमको देख कर आश्चर्य हुआ कि ५ श्रमिक २४ वर्ष की आयु से नीचे के हैं। अधिकारी भी अधिकांश छोटी आयु के हैं।

उच्चाधिकारियों की संख्या ३०० है। इस निर्माणी में कोई विदेशी कार्य नहीं करता। यदि आवश्यकता पड़े तो रूसी विशेषज्ञों से सहायता ली जाती है। मुख्य अभियन्ता का मासिक वेतन २५० युआन् है। उसके नीचे चार साधारण अभियन्ता हैं।

प्रति तीन मास में १ लाख ४० सहस्र घान बनते हैं। प्रत्येक घान की लम्बाई ४० सेंटीमीटर है। अथवा यों कहें कि प्रतिदिन २००० के लगभग घान बनते हैं।

एक वर्ष में केवल सात छुट्टियां मिलती हैं। नववर्षावतार एक दिन, श्रमिक-दिवस एक, राष्ट्रीय दिवस दो, तथा वसन्त की छुट्टियां तीन दिन।

चीन में हड़ताल नहीं होती। यह प्रश्न कोई उठता ही नहीं। यदि किसी श्रमिक को असंतोष हो तो वह व्यक्तिरूप से श्रमिक-संघ को बतला सकता है किन्तु संघरूप से कोई असंतोष प्रकट नहीं किया जा सकता। श्रमिकों का काम कार्य की वृद्धि है। और इसके लिए उनका कर्तव्य है कि वे अपने सुझाव दें कि किस प्रकार से थोड़े व्यक्ति अधिक काम कर सकेंगे तथा किस प्रकार से नए यन्त्र लगाए जाएं जिनमें थोड़े से थोड़े श्रमिक लग सकें।

स्थिति भारत से सर्वथा विपरीत है। भारतीय श्रमिक थोड़े से थोड़ा काम और अधिक से अधिक वेतन चाहता है। वह नए और अधिक काम करने वाले यन्त्रों का विरोधी है। वह प्रबन्धकों को अपना शत्रु माने बैठा है। उत्पादन की वृद्धि करना उसका कार्य नहीं। हड़तालें करना, असंतोष फैलाना उसके जीवन का अंग है। और आश्चर्य यह कि यह सब कुछ साम्यवादी तथा उनके साथी करते हैं।

चीन की निर्माणियों में स्थान स्थान पर घोषणाद लगे हुए हैं। इनमें से कुछ हम यहां बेटे हैं—

- (१) यह निर्माणी हमारा गौरव है। हमारे यहां अधिकतम उत्पादन-मात्रा है।
- (२) श्रमिकों, भरसक यत्न करो कि बस्तुओं का स्तर ऊंचा उठे।
- (३) श्रमिकों, भरसक यत्न करो कि छोटे से छोटी बस्तु का भी नाश न हो।
- (४) श्रमिकों, देखो प्रतियोगिता में तुम कहां हो।
- (५) यह श्रमिका सबसे अधिक उत्पादन करती है। यह आवर्धकर्त्री है। इससे शिक्षा लो।
- (६) कच्ची सामग्री को बचाओ और नाश न होने दो।
- (७) अधिक पूंजी का संग्रह करो जिससे राष्ट्रीय निर्माण धीमे-धीमे हो और हम ताइ-



गद्द-चिद्द की शामनचालित बम्बुर-निर्माणी पूर्वी जर्मनी से आए तथा स्वदेश-निर्मित यन्त्रों से सुसज्जित है जहा एक श्रमिक २४ कर्घों अथवा ६०० तर्कुओं की देखभाल करता है ।

Prof. Raghu Vira and his daughter visited the Peking State No. 1 Cotton Mill on 12 May 1955.

वान् द्वीप क्षीघ्र स्वतन्त्र करा सकें ।

(८) श्रमिकों, तुम में एकता होनी चाहिए । जो तुम्हारा अनुभव है वह तुम दूसरों को दो और जो दूसरों का अनुभव है उसको तुम लो और कार्य-योजना को पूरा करो ।

(९) श्रमिकों, केवल तुम अपना ही कार्य पूरा न करो किन्तु वर्ग का कार्य भी पूरा करो ।

(१०) यान्त्रिक स्तर को ऊंचा उठाओ ।

(११) चारों ओर देखभाल रखो कि कहीं दुर्घटना न हो ।

(१२) कोई यन्त्र बिगड़ने न पाए ।

(१३) किसी श्रमिक को चोट लगने न पाए ।

(१४) नियमों का पालन सर्वमनसा करना ही चाहिए ।

(१५) इस निर्माणी के अध्यक्ष का आदेश पालन करना श्रमिकों का कर्तव्य है । इत्यादि इत्यादि ।

प्रत्येक श्रमिक-वर्ग के लिए उत्पादन-सारणी लटकी रहती है । जो वर्ग अधिक कार्य करता है उसको पीले प्रान्त वाली रक्तवर्ण ध्वजा मिलती है । निर्माणी में एक पर्वत-चित्र बना है । उस पर प्रत्येक वर्ग चढ़ने का यत्न कर रहा है । निश्चित अवधि के अन्त में देखते हैं कि चोटी पर कौन सा वर्ग पहुंचा है ।

श्रमिक अन्य श्रमिकों को पत्र लिखते हैं और आह्वान करते हैं कि आओ अधिकाधिक काम करें । अधिकाधिक कर्मकौशल प्राप्त करें । अधिकाधिक देश की उन्नति हो ।

निर्माणी के संचालक श्रमिकों का उत्साह वर्धन करने के लिए उनके अच्छे कार्य की प्रशंसा और न्यूनतापूर्ति के लिए प्रेरणात्मक पत्र लिखते हैं । ये पत्र निर्माणी की भित्तियों पर चिपकाए जाते हैं ।

आज प्रातः वस्त्र-निर्माणी देखने गए थे । वहां हमने श्रमिक विधान की पुस्तिका लेनी चाही । निर्माणी की सचिवा ने पुस्तिका मंगाई भी, पर बुमाधिये ने कहा कि यह प्रति ठीक नहीं और यह कह कर लौटा दी । सायंकाल अंग्रेजी की प्रति लाकर दी गई ।

निर्माणी में अच्छे कार्य के लिए ध्वजाएं दी जाती हैं । बर्म (shields) नहीं । बर्म देने की प्रथा यावनी (यूलानी) प्रथा है । झण्डा टांगा जा सकता है, फहराया जा सकता है । डाल को लेकर क्या करेंगे ।

पेद्र-चिद्ध में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जातियों के लिए एक विशेष विद्यालय जून १९५१ में खोला गया । समस्त चीन में इसी प्रकार के छः और विद्यालय हैं । हमने पूछा राजनीति

में कौन सी पाठ्यपुस्तकें हैं तो उत्तर मिला पहले आप विद्यालय देख लीजिए उसके पश्चात् आपको बताएंगे ।

इस विद्यालय में १३०० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं जिनमें ३०० कन्याएं हैं । अधिकांश विद्यार्थी चीनी हैं जो चीनी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का अध्ययन करते हैं जिससे कि वे इन जातियों में जाकर प्रचार और शासन का कार्य कर सकें तथा इनकी भाषाओं में मार्क्सवाद पर पुस्तकें लिख सकें । १३०० विद्यार्थियों में से ७०० चीनी हैं, ४०० भोट और मोंगोल हैं, और २०० बीगूर तथा कजाक् । इस विद्यालय में तीन विभाग हैं । पहला राजनीति, दूसरा भाषा और तीसरा प्रारम्भिक प्रौद्योगिक शिक्षा (elementary technical education) । यदि इस नीति का भारत अनुसरण करे तो उसका अर्थ यह होगा कि हिन्दी-भाषी विद्यार्थी अहिन्दी-भाषी प्रान्तों की भाषाओं को सीखें और उनमें राष्ट्रीयता का प्रचार करें, पुस्तकें लिखें, जिससे कि वे अन्य प्रान्तों को अपने साथ ले सकें ।

यहां चार साहित्यिक भाषाओं के पढ़ने पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध है— (१) भोट, (२) मोंगोल, (३) बीगूर, (४) कजाक् । जो भाषाएं साहित्यिक नहीं और केवल छोटे क्षेत्रों में बोली जाती हैं उन भाषाओं को भी चीनी विद्यार्थी सीखते हैं । इनके लिए बारह श्रेणियां हैं । जो विद्यार्थी अल्पसंख्यक जातियों में से यहां शिक्षा प्राप्त करने आते हैं उनका स्तर उठाने के लिए छोटी और बड़ी कक्षाएं हैं । आधुनिक आर्थिक और राजनैतिक स्थिति को जानने के लिए अनुसन्धान विभाग हैं ।

सब विद्यार्थियों का व्यय शासन देता है । खाना, कपड़ा और कभी कभी दस बारह युवान् ऊपर के व्यय के लिए विद्यार्थियों को दिए जाते हैं । यदि विद्यार्थी पहले कहीं काम करते हों और उनके मातापिता आदि का भार उन पर ही हो तो उनकी शिक्षा की अवधि तक शासन परिवार की सहायता भी करता है । मुसलमान विद्यार्थियों के लिए रसोई अलग है ।

चार वर्ष के अध्ययन अध्यापन में मार्क्सवाद को अधिकतम समय दिया जाता है । वह समस्त शिक्षा का आधार है ।

हमने पूछा कि विद्यार्थियों के पास कितनी पुस्तकें रहती हैं । कुछ ठहर कर, कुछ सोच कर, धीरे धीरे बड़े शब्दों में उत्तर मिला— विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर पढ़ लेते हैं ।

चीनी विद्यार्थियों के लिए किसी प्रकार के पूजापाठ का प्रबन्ध नहीं, वे तो सब धर्महीन बन ही चुके । किन्तु भोट और मोंगोल विद्यार्थियों के लिए अलग पूजा-कोष्ठ बनाया हुआ है । यहाँ हमने भोट का सम्पूर्ण कम्प्लेक्स देखा । यह नार्थाइ संस्करण है । वेर्ने संस्करण के सम्पूर्ण कम्प्लेक्स तम्पूर मंगाए जाने का प्रबन्ध किया जा रहा है । मुस्लिम विद्यार्थियों के लिए भी एक अलग उपासना-कोष्ठ है जिसमें सजर की चटाइयां बिछी

हुई हैं। यहाँ पुस्तक केवल एक ही है, इस्लाम को दूसरी पुस्तकों की आवश्यकता नहीं। एक ओर भोट और मोंगोल पूजा-गृह में कोमल गद्दे, अद्भुत चित्र, बहुमूल्य मूर्तियाँ और सहस्रों ग्रन्थों का संग्रह कञ्जूर है, उसके प्रति इस्लाम का उपासना-गृह सांसारिक और बौद्धिक बैभवहीन है। किन्तु इस्लाम की एक दूसरे को बांधने वाली शक्ति संभवतः कहीं अधिक है। वैभव की अपेक्षा भावना की उग्रता मनुष्य के जीवन के नियमन में अथवा एकसूत्र में पिरोने में कहीं अधिक समर्थ है।

इस विद्यालय में सब से बड़े विद्वान् यू-ताओ-छवेन् हैं। ये आजकल असाहित्यिक भोट-कोष निर्माण में लगे हुए हैं। ये लन्दन में अनेक वर्षों तक School of Oriental and African Studies में पढ़ाते रहे हैं। इनकी बड़ी कामना थी कि मेरे से लम्बी बातचीत करें किन्तु अवसर न था। यही एक व्यक्ति हैं जो धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते हैं, जिनको आधुनिक अनुसन्धान-पद्धति का ज्ञान है और जो इस दृष्टि से उपलब्ध भोट और चीनी साहित्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ सूचना दे सकते हैं।

चीन में तिब्बत का लीन हो जाना नई घटना है। चीनी, तुर्किस्तान और मोंगोल देश को भी चीन में पूर्णरूप से मिला देना शासन के उद्देश्यों में से है। इस सम्बन्ध में माओ-त्स-नुङ के घोषणाद स्थान स्थान पर मिलते हैं— चीन की सब जातियाँ एक हों, सबमें एकता रहे, कोई विघ्न न पड़ने पाए। दलाइ-लामा के इस आशय के वचन सब भोट और मोंगोल मन्दिरों तथा शिक्षालयों में प्रमुख स्थानों पर लटके हुए मिलते हैं— चीन की सब जातियों की नई एकता दृढ़ हो।

विद्यालय में एक प्रसिद्ध भोट चित्र का अति-मनोहर रूप देखा। विशालकाय सौम्य प्रकृति हाथी, उस पर नटखट बन्दर चढ़ा हुआ, बन्दर की पीठ पर सशंक और सतर्क शश, तथा शश पर अभिमानपूर्वक कौवा चढ़ा हुआ। बन्दर के हाथ में फल है।

तत्पश्चात् हमको अनुसन्धान-विभाग में ले गए। अनुसन्धान-कोष्ठ का अर्ध अनुसन्धान नहीं किन्तु केवलमात्र विषय-विशेष के अध्यापकों के संमनन का कोष्ठ है। शिक्षक इकट्ठे बैठ कर यहाँ विद्यार्थियों को पढ़ाने की पद्धति पर विचार करते हैं। जिस कोष्ठ में हमको पहले ले गए वह भोट-भाषा का था। भोट के लिए छः भोटिए और आठ चीनी अध्यापक हैं। एक अध्यापक की पञ्जिका हमने देखनी चाही और समझनी चाही। उत्तर बहुत अस्पष्ट मिला— बहुत खोदने पर यह समझ में आया कि यह पञ्जिका का पृष्ठ ल्हासा के प्रथम दिवस के उत्सव का वर्णन है। किस प्रकार का वर्णन है यह पता न लग सका। केवल इतना पता लगा कि भोटिया अध्यापक चीनी अध्यापक को समझाएगा और चीनी अध्यापक विद्यार्थियों को समझाएगा। सभी भाषाओं में जो इस विद्यालय में अथवा अन्यत्र पढ़ाई जाती है यही स्थिति है। यह अल्पसंख्यक अध्यापकों पर एक ओर से नियन्त्रण है और दूसरी ओर से चीनी अध्यापकों का प्रशिक्षण है।

पूर्णरूपेण तो हमने विद्यालय न देखा न दिखाया गया । एक श्रेणी देखी जिसमें भोट विद्यार्थी चीनी सीख रहे थे ।

भोट मोंगोल आदि सब जातियों के विद्यार्थी और अध्यापक चीनी सीखते हैं । चीनी ही उनका माध्यम बनता है और चीनी विद्यार्थी भोटादि भाषाएं पढ़ते हैं ।

इस विद्यालय का उद्देश्य चीन-राष्ट्र को भाषा और राजनीति द्वारा एक बनाना है । राष्ट्रपति माओ का बचन है कि राष्ट्र में एकता होनी चाहिए । सब जातियों को अपनी भाषा में स्वातन्त्र्य है किन्तु राष्ट्र में एकता होनी चाहिए, परस्पर घनिष्ठता होनी चाहिए ।

इस विद्यालय में दलाइ-लामा और पञ्छेन्-लामा आ चुके हैं । दलाइ-लामा ने राष्ट्रीय एकता पर व्याख्यान भी दिया था ।

यहां चीनी और भाषित भोट का कोष बन रहा है ।

चीनी शासन ने शरच्चन्द्र दास के भोट-अंग्रेजी कोष का १९५१ में पुनर्मुद्रण किया । ३५ युवान् में यह कोष सर्वत्र प्राप्य है । इस कोष की प्रतियां भारतवर्ष और अन्य पश्चिमी देशों में पहुंचनी चाहिएं ।

भोजनशालाएं सात हैं । प्रत्येक बहुत विशाल । हम भी एक भोजनशाला में गए । वहां विभिन्न प्रकार के भोजन करने वाले विद्यार्थियों की सूची लगी हुई थी । २०० में से सात भोट विद्यार्थी शाकाहारी हैं । कुछ भोट और मोंगोल विद्यार्थी ऐसे हैं जो गोमांस और अजाविमांस नहीं खाते । यह जान कर आश्चर्य हुआ कि केवल मुसलमान ही नहीं किन्तु और भी कुछ विद्यार्थी ऐसे हैं जो शूकर-मांस नहीं खाते । भोजनशालाओं में दुर्गन्ध तीव्र और सिर को फाड़ने वाली होती है ।

वाचनालय में पुस्तक-सूची देखी । उसमें एक सहस्र मोंगोल पुस्तकों के नाम थे । हमें आश्चर्य हुआ । जाकर देखा तो छोटी छोटी १९४८ के पश्चात् की 'प्रचारात्मक पुस्तिकाएं' हैं । इनमें प्राचीन मोंगोल साहित्य का कोई ग्रन्थ नहीं । यही दशा अन्य साहित्यों की भी है ।

यहां पढ़ने वाले कुछ भोट विद्यार्थी हिन्दी भी जानते हैं । उनसे हमारा मिलना नहीं हुआ । वास्तव में चीन में किसी स्थान पर हम विद्यार्थियों से खुल कर बात न कर पाए । कोई ऐसा अवसर ही नहीं आया । विद्यालयों में समस्त समब मुख्याध्यापक तथा एक दो और अध्यापक के जाते थे । कोरिया के २८ विद्यार्थी हैं । उनके लिए कोरिया भाषा के समाचार-पत्र आते हैं । इन पत्रों में चीनी के अक्षर सर्वथा मिक्काल दिए गए हैं । हमको बतलाया गया कि १९४९ के पश्चात् साम्यवादियों ने कोरिया भाषा में यह सुधार किया ।

मोंगोलिया के दो समाचारपत्र आते हैं । दोनों पांचवें दिन प्रकाशित होते हैं ।



विद्या-विभाग के अध्यक्ष बुद्धधर्मानुरागी कुओ मो-जो आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए। शतपिटक योजना के विस्तार और महत्त्व को समझते हुए आपने चीन में आचार्यजी की यात्रा को मुफलवती बनाने में सहयोग दिया।

**Kuo Mo-jo, President of the Chinese Academy of Sciences, welcoming
Prof. Raghuvira.**

पञ्चाह की प्रथा प्राचीन है ।

कोरिया के विद्यार्थी चीन के अनेक विद्यालयों और संस्थाओं में दिखाई पड़ते हैं । यक्मा के रुग्णालय में भी अधिकांश वीत-नाम और कोरिया के विद्यार्थी थे । किसी दिन कोरिया और वीत-नाम चीन के भाग बनेंगे । इसको कौन रोक सकता है ।

जिधर भी पेइ-चिङ्ग नगर में जाओ उधर ही प्राचीन मिति के बाहर नए भवनों का निर्माण हो रहा है । कुछ वर्षों में पेइ-चिङ्ग आधुनिक नगर बन जाएगा । नए भवन अधिकांश पाश्चात्य ढंग के बनाए जा रहे हैं । कहीं कहीं छत और बाह्य द्वार चीनी पद्धति से बने और रंगे हुए होते हैं ।

सड़कों पर बँल अथवा ऊट नहीं दिखाई पड़ते । सर्वत्र गधे, खच्चर तथा घोड़े ।

पुरुष सिर पर भार नहीं उठाते । बंहगी का बहुत अधिक प्रयोग है । चीन में प्राचीन काल से ही भार उठाने का कार्य अधिकांश मनुष्य करते आए हैं । दुष्काल के समय चीनी पशुओं को खा जाते हैं और फिर खेती के लिए पुरुष अपने कन्वों पर हल रख कर भूमि जोतते हैं ।

आज रात को पेइ-चिङ्ग नाटक में गए । नाटक में एक ओर कला और दूसरी ओर साम्यवाद का प्रचार था । दुष्ट भूमिपति ने व्याधों के मारे हुए व्याध्र को छिपा लिया इत्यादि ।

भारत से लाया हुआ हमारा केश-तैल समाप्त हो चुका है । कई दिनों से यत्न कर रहे हैं किन्तु सारे पेइ-चिङ्ग में केश-तैल की एक बूद नहीं मिली ।

१३-५-५५

आज का दिन विद्या-विभाग के प्रधान श्री कुओ-मो-जो से प्रारम्भ किया । मिलते ही आपने कहा— आपसे दिल्ली में भेंट हुई थी । साढ़े नौ से साढ़े ग्यारह बजे तक बातचीत होती रही । आप बुद्धधर्मानुरागी हैं । धीरे धीरे आपसे अपनी योजना का परिचय कराया । आप हमारी योजना के महत्त्व को समझने लगे हैं ।

मैंने कहा सुदर्शना यहां अकेली है । इसका परिचय किसी भी चीनी परिवार से नहीं हुआ तो उत्तर दिया— मेरी पत्नी बाहर गई हुई है नहीं तो उनसे परिचय करा देता ।

थकते समय आपने अपनी दो पुस्तकें भेंट दीं । पुराने कांसी के पात्रों पर जो चीनी के अक्षर खुदे हुए हैं उन पर वे अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ हैं । इन ग्रन्थों को आपने अपने हाथ से लिखा है और अपनी भा-विषय द्वारा हुई है । कार्लप्रेन् के सम्बन्ध में आपने कहा कि इनको चीनी उपजातियों का अच्छा ज्ञान है और हम उनका आधर करते हैं । किन्तु कांस्य-पात्रों की मिति का ज्ञान इतना अच्छा नहीं ।

आज सायंकाल को श्री जन्-पो-सक मिलने आए । ये बौद्ध हैं । इन्होंने कहा आपके जाने से बौद्ध धर्म को शक्ति मिली है । ये एक मास तक हरीन्द्र चट्टोपाध्याय के साथ रहे हैं । जब इनसे कहा कि आज आप हमारे यहां आए हैं, हम भी किसी दिन आपके घर आएंगे, तो तुरन्त उत्तर मिला— मैं तो किसी समय घर में रहता ही नहीं ।

दोपहर पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय में व्यतीत किया । यहां का जलस्वात्र त्रयोदश-भूमि स्तूप के समान बना हुआ है । पुस्तकालय में घुसते ही मस्क्वा (Moscow) विश्वविद्यालय के संस्थापक श्री लोमोनोसोफ़ की मूर्ति के दर्शन हुए । इनका जीवन काल १७११ से लेकर १७६५ तक था । यह इबेत राजाश्रम की मूर्ति रूस से सेंट में आई है ।

विश्वविद्यालय में मोट और मोंगोल के संकड़ों ग्रन्थ हैं । ये काष्ठ-मुद्रित हैं । कञ्जूर के छः, सात भाग सुन्दर हस्तलिखित भी देखे । श्री वज्रामृतपञ्चिका बहुत सुन्दर और मोटे अक्षरों में मुद्रित है ।

यह विश्वविद्यालय तीन विश्वविद्यालयों का बना है । १९५२ में पेइ-चिङ्ग, चिङ्ग-ह्ला तथा यन्-चिङ्ग विश्वविद्यालयों को मिला कर एक कर दिया गया । पुराना १८१८ का पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय नगर के भीतर है ।

४ मई १९१९ से लेकर निरन्तर तीस वर्षों तक पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों ने क्रान्ति के लिए कार्य किया है । श्री माओ का कोष्ठ नगर के भीतर है ।

विश्वविद्यालय में तेरह विभाग हैं । विद्यार्थी संख्या पांच सहस्र । विदेशी विद्यार्थी १५०, जिनमें से केवल एक भारतीय है । भाषा-विभाग में चार खण्ड हैं । प्रथम खण्ड— चीनी, द्वितीय खण्ड— रूसी । इसमें पोलू और चेक् भी पढ़ाई जाती है । तृतीय खण्ड— पश्चिमी भाषाएं । अभी केवल तीन भाषाओं का प्रबन्ध है— अंग्रेजी, जर्मन और फ्रांसीसी । चतुर्थ खण्ड— पूर्वीय भाषाएं । दस पूर्वीय भाषाओं का प्रबन्ध है— मोंगोल, कोरिया, जापानी, चीतनामी, द्वीपान्तर, बर्मी, स्यामी, हिन्दी, उर्दू और अरबी ।

हिन्दी पढ़ाने के लिए चार भारतीय और उनके साथ चार चीनी अध्यापक हैं । पुष्पोत्तम प्रसाद और उनकी पत्नी प्रभा । प्रभा नागपुर में पढ़ी हैं । ये हमारी चीनी प्रदर्शनी भी देखने आई थीं । राजेशासरण और भानुचन्द्र बर्मा । उर्दू के लिए एक मुसलमान अध्यापक उत्तरप्रदेश से आए हैं— मुस्तार अहमद । पांचों शाकाहारी हैं और पांचों साम्यवाद के भक्त हैं ।

द्वीपान्तर के पांच विद्यार्थी हैं । रूस का एक भी विद्यार्थी नहीं । किन्तु चीन के ५,००० विद्यार्थी रूस में अध्ययन कर रहे हैं । चीत-नाम और कोरिया के लगभग २०० विद्यार्थी हैं । हंगरी, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गेरिया और पूर्वी जर्मनी के लगभग ४० विद्यार्थी हैं ।

रूसी भाषा को विशेष रूप से २०० चीनी विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। शेष पश्चिमी भाषाएं पढ़ने वालों की संख्या २०० के लगभग है। हिन्दी के ८० विद्यार्थी और उर्दू के १०। उर्दू का प्रारम्भ इसी वर्ष हुआ है।

हिन्दी अध्यापन का उद्देश्य अनुवादक और दुभाषिये बनाना है। इसी उद्देश्य को रक्ष कर अन्य विदेशी भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। हिन्दी का पाठ्यक्रम चार वर्ष का है।

सब विद्यार्थियों का रहना सहना और पढ़ना निःशुल्क और निर्व्यय है। दरिद्र विद्यार्थियों को शासन कपड़ों आदि के व्यय के लिए १० युवान् मासिक देता है। खाने पीने रहने सहने आदि का व्यय १५ युवान् प्रतिविद्यार्थी हो जाता है।

विश्वविद्यालय में तीन प्रकार के कर्मचारी हैं—कर्मों, अध्यापक और अधिकारी। इन तीनों का वेतन ३२ श्रेणियों में बंटा हुआ है। कर्मों को २५ युवान् और कुलपति को २४० युवान् मिलते हैं। अध्यापकों के चार वर्ग हैं— (१) सहायक अध्यापक, ५० युवान् प्रति-मास। (२) व्याख्याता, १०० युवान् प्रति-मास। (३) संयुक्त प्राध्यापक, १३० युवान् प्रति-मास और (४) प्राध्यापक, १६०-२४० युवान् प्रति-मास।

अध्यापकों के घरों का भाड़ा ५ से २० युवान् प्रतिमास तक है। संस्कृतज्ञाता प्राध्यापक ची के तीन कोष्ठ वाले घर का भाड़ा पांच युवान् मासिक है और बिजली का व्यय १.२० युवान् मासिक।

भृत्या अथवा आया का वेतन प्रति-मास १५ से २० युवान् तक है। इसमें प्रायः भोजन सम्मिलित नहीं होता।

श्री ताऊ-युऊ-तुऊ दर्शन-विभाग के बहुत प्रसिद्ध अध्यापक हैं। आपने बुद्ध-धर्म का इतिहास लिखा है। इसका अनुवाद अमेरिका में हुआ है।

साम्यवादी अपना अधिकांश काम समझा बुझा कर निकालते हैं। यदि कोई एक बार कहने से नहीं मानता तो दो बार तीन बार समझाते हैं। एक नहीं अनेकों व्यक्ति उसके पीछे पड़ जाते हैं। और मना कर छोड़ते हैं। माओ का आदेश है— झगड़ा मत करो, संघर्ष मत करो, समझा कर अपना काम निकालो। जितनी दूर तक हो सके दूसरे के साथ चलो और फिर अपने मार्ग पर लाओ। साम्यवाद की शक्ति का यह भी एक रहस्य है।

विद्यार्थियों में अपूर्व उत्साह है। विद्यालय में प्रवेश करते ही विद्यार्थी के जीवन-कार्य का निश्चय हो जाता है और तबनुकूल उसकी शिक्षा होती है। जब भारतीय विद्यार्थी सेन पेइ-चिङ्ग में आया तो उससे प्रश्न किया गया भारत में जाकर आप क्या बनेंगे, हम उसी के अनुसार आपको शिक्षा देंगे। सेन के पास कोई उत्तर न था और अब भी नहीं है। विद्यार्थियों का संगठन सुवृद्ध और सर्वव्यापी है।

जब पण्डित नेहरू चीन आए तब चीनी शासन तथा जनता को हिन्दी पढ़ने पढ़ाने के महत्त्व का आन हुआ।

आज पी-बिन् स्स अर्थात् नीलमेष-मन्दिर में आए । १८०६ विक्रम में ५०० अर्हतों के मन्दिर का निर्माण हुआ जिसमें सुवर्ण-पत्र-मण्डित काष्ठमयी ५०८ मूर्तियां स्थापित हैं। ५०० अर्हतों के भवन चीन के मन्दिरों की विशेषता हैं। अब ये मन्दिर बहुत बड़े रह गए हैं। यहां मनुष्य कुछ घण्टे नहीं किन्तु अनेक सप्ताह व्यतीत कर सकता है। अर्हतों में काश्यप, नागसेन, वनपाश, सुभग, राहुल, इन्द्र आदि संस्कृत नाम पहचाने जा सकते हैं। किन्तु अभी तक हमने सम्पूर्ण नाम संस्कृत में नहीं देखे। बड़े से समय में हम जो कुछ कर पाए वह था ५०० अर्हतों के नामों का संग्रह। ये हमने चीनी अक्षरों में परिशिष्ट में दिए हैं।

अर्हतों की रूपाकृति एक दूसरे से भिन्न, विचित्र, सौम्य अथवा क्रूर, सुरूप अथवा कुरूप सभी प्रकार की है। एक अर्हत् के पेट में से मूर्ति निकल रही है। इसको देख कर कंगरू का स्मरण हो आता है। एक अर्हत् ने पर्णमाला पहनी हुई है। लंगोटी भी पर्णमयी है। एक अन्ध-पंगु-युगल है। इत्यादि।

इस मन्दिर में श्री सुन्-यात्-सन् का शव चार वर्ष तक रखा गया। १९४९ के पश्चात् रूसी शासन ने चांदी तथा काच के दो सात सात पाद लम्बे शवाधान (coffins) उपहार में दिए। उनके लिए विशेष भवन बनाया गया।

नीलमेष-मन्दिर में आज कोई मिछु नहीं। मन्दिर में भी केवल काष्ठ तथा धातु की मूर्तियां शेष हैं।

यथापूर्व साढ़े आठ बजे दुभाषिया चुड़ आया और कहने लगा आज ग्रीष्म-प्रासाद न चलेंगे। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आज साढ़े नौ बजे एक उच्चाधिकारी आपसे मिलने आएंगे।

नौ बजे प्रातरास समाप्त कर के हम अपने कोष्ठ में पहुंचे तो श्री राखनू का दूरभाष आया— क्या आपको पता है कि आज ग्यारह बजे प्रधान मन्त्री श्री चोउ-अन्-लाइ ने आपको निमन्त्रित किया है। यदि आप साढ़े दस बजे मेरे यहां पहुंच जाएं तो हम इकट्ठे चलेंगे।

सुदसैना कहने लगी कि क्या मैं भी साथ चल सकती हूं। मैंने कहा अबश्यमेव। यदि नागपुर से पेइ-पिचक आ सकती हो तो किन्-प्याको फ्रान्-स्येन् विभागित्मूह से प्रधान मन्त्री के घर तक भी जा सकती हो। हमारे लिए तो चोउ-अन्-लाइ चीफ के साक्षात् प्रतीक हैं।

साढ़े नौ बजे शासन के उच्चाधिकारी भी आ पहुंचे। कुसक-असन के पश्चात्



चीन के प्रधान-मन्त्री चोउ अन्-लाइ ने भारतीय श्वेन्-प्याङ्क कहकर आचार्य रघुवीर का स्वागत किया । आपने बड़े प्रेम से कहा—“हम आपको सूत्र दिए बिना यहाँ से प्रस्थान न करने देंगे ।”

Premier Chou En-lai receives Prof. Raghu Vira.

प्रधान मन्त्री का निमन्त्रण मौखिक रूप से दिया। आपको और सुदर्शना देवी को श्री चौउ-अन्-लाइ ने ग्यारह बजे निमन्त्रित किया है। आप पधारने की कृपा कीर्तव्यम्।

सुदर्शना की चिन्ता भी दूर हुई। मैंने अपनी पुस्तकें इकट्ठी कीं— आंग्ल-भारतीय-बृहत्कोश, अहिंसा पर चीनी कविताएं और चित्र, तान्त्रिक बीज, आलि-कालि, श्री नेहरू का सरस्वती-विहार में आगमन।

श्री राघवन् द्वीपान्तर में रह चुके हैं। उनका द्वीपान्तर और संस्कृत के प्रति गाढ अनुराग है। उनके लिए अपने यहां प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक *Sanskrit in Indonesia* उठाई और परिश्रमी विद्यार्थी के समान पुस्तकों का बारह सेर भार उठा कर विश्रान्तिगृह से नीचे उतरे। श्री राघवन् को *Sanskrit in Indonesia* भेंट दी। उन्होंने गद्गद-स्वर में आभार प्रदर्शन किया। हम ठीक ग्यारह बजे प्रधान मन्त्री के बंगले पर पहुंच गए।

बाहर ६, ७ गाड़िया खड़ी देख कर श्री राघवन् ने कहा क्या बात है कि आज इतनी गाड़िया खड़ी है। इस प्रश्न का उत्तर प्रधान मन्त्री के कोष्ठ में पदार्पण करते ही मिल गया। शासन के गण्यमान्य अधिकारी, विद्वान् और साहित्यिक अर्थात् जो कोई भी व्यक्ति मेरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधक हो सकते थे, वे सब आज निमन्त्रित थे। इन में मुख्य महानुभाव ये थे— विद्या-विभाग के प्रधान श्री कुओ-मो-जो, संस्कृति के उपमन्त्री श्री चन्-चङ-तो, विदेश सांस्कृतिक सम्पर्क मण्डल के अध्यक्ष श्री हुङ-सङ और उनके उपाध्यक्ष चङ-चुङ-चिङ, भाषा-विज्ञान-संस्था के अध्यक्ष श्री लो-चाङ-पेइ, पेइ-चिङ विश्वविद्यालय के प्राच्य-भाषा-विभागाध्यक्ष श्री ची-श-लिन तथा कवयित्री श्रीमती स्ये-पिङ-शिङ। आज प्रतीत हुआ कि चौउ-अन्-लाइ केवल शिष्टाचार निष्णात ही नहीं हैं किन्तु कार्य साधने में भी निपुण हैं। कुशल-प्रश्न के पश्चात् प्रधान मन्त्री ने वार्तालाप आरम्भ की— पुरातन काल में स्वेन्-च्वाङ सूत्रों के संग्रह के लिए भारत गए थे। अब आप भारत से यहा आए हैं। आप भारतीय स्वेन्-च्वाङ हैं। ये सूत्र आपकी सम्पत्ति हैं।

उपस्थित सज्जनों में से एक एक का परिचय कराते गए— ये हमारे उपप्रधान हैं, ये विद्या-विभाग के प्रधान हैं, ये हमारी कवयित्री हैं जिनका नागपुर में सुदर्शना ने स्वागत किया था। ये हमारे संस्कृति के विशेषज्ञ हैं, आदि आदि।

“मैंने आज इन सज्जनों को आपके कार्य को सिद्ध करने के लिए बुलाया है। आपको यहां आए कितने दिन हुए।” मैंने उत्तर दिया— “हम यहां २७ एप्रिल को पहुंच गए थे।” प्रधान मन्त्री ने कहा— “तो आपके २० दिन नाश हुए। मैं बाण्डुङ में था तो आपको पहले निमन्त्रित न कर सका। किन्तु अब मैं आपको विद्यवाय दिलाता हूं अब आपका एक भी क्षण नाश न होगा।”

बाण्डुङ सम्मेलन का बर्षान करते हुए प्रधान मन्त्री ने कहा— “हमने बाण्डुङ में सर्व-

सम्पत्ति से यह प्रस्ताव पारित किया है कि हमारे देशों में सांस्कृतिक विनिमय हो। भारत और चीन प्राचीन सखा हैं। हमने भारत से बहुत कुछ लिया। हमारा कर्तव्य है कि जो कुछ आप चाहते हैं हम आपको दें।”

फिर प्रश्न किया—“आप यहां कब तक ठहरेंगे।” मैंने कुछ उपहास में तथा कुछ सत्यरूपेण कहा—“जब तक सूत्र न मिलेंगे तब तक यहां ठहरूंगा।” श्री चोउ-अन्-लाइ ने बड़े प्रेम से कहा—“हम आपको सूत्र दिए बिना यहां से प्रस्थान न करने देंगे।”

परस्पर विमर्श के पश्चात् चोउ-अन्-लाइ ने कहा—“कि (१) जिन सूत्रों की हमारे पास एक से अधिक प्रतियां हैं उन सूत्रों की एक एक प्रति हम आपको सदा के लिए दे देंगे। (२) जिनकी हमारे पास एक प्रति है उनके हम आपको अणुचित्र दे देंगे। (३) समयभाव से जिनके चित्र न हो सकेंगे उनको आप एक वर्ष अथवा निश्चित अवधि के लिए उधार ले जाएँ और (४) अन्त में जिन ग्रन्थों का आप केवलमात्र निरीक्षण करना चाहते हैं उनका आप निरीक्षण कर सकेंगे।”

व्याख्या रूप में श्री चोउ-अन्-लाइ ने कहा—“जिन ग्रन्थों की हमारे पास केवल एक प्रति है उनको देश से बाहर भेजने का अथवा देने का कोई पूर्व उदाहरण नहीं, किन्तु चीन को भारत पर पूर्ण विश्वास है। हमारी कोई वस्तु आपसे छिपी हुई नहीं। एक दूसरे की सहायता करना हमारा कर्तव्य है। यह वस्तु आपकी ही तो है। अब आप यहां एक सप्ताह और ठहरिए और इन सज्जनों के साथ मिल कर कार्यक्रम बना लीजिए। तत्पश्चात् एक भास तक उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में बुद्धधर्म के प्राचीन अवशेषों का निरीक्षण कीजिए। फिर पेइ-चिङ में लौट कर एक सप्ताह और ठहरिए और सब सूत्र लेकर भारत जाएँ।”

प्रधान मन्त्री ने चीन के प्राचीन यात्रायोग्य स्थानों का नाम लेते हुए तुन्-ह्वाङ और युन्-काङ 玄 荒 आदि का जब नाम कीर्तन किया तो उपस्थित सज्जनों में से दो तीन ने कहा कि ये स्थाव ती हम में से भी अनेकों ने नहीं देखे हैं। प्रधान मन्त्री ने उनको परामर्श दिया—“आप भी इनके साथ चलें क्योंकि पचास वर्ष के पीछे शरीर की शक्तियां क्षीण होने लगती हैं सो आवश्यक है कि कर्तव्य कार्य पूरे किए जाएँ और द्रष्टव्य स्थानों का दर्शन किया जाए।”

मैंने से पूछा आपकी आयु कितनी है? मैंने कहा ५३ वर्ष। कहने लगे आप भी ५० से ऊपर हो चुके हैं आपको ये स्थान देखाने ही चाहिए। मैंने श्री प्रधान मन्त्री से निवेदन किया कि चीन जाने का एक बड़ा कल इन स्थानों को देखना है। तुन्-ह्वाङ और युन्-काङ केवल चीन की राष्ट्रीय सम्पत्ति और गौरव नहीं हैं किन्तु सम्पूर्ण संसार की सम्पत्ति और गौरव हैं। इस पर चोउ-अन्-लाइ ने बल देकर कहा कि ये भारत और चीन के सांस्कृतिक सहकार्य के कल हैं।



आचार्य जी द्वारा प्रकाशित 'चीनवर्षीया अहिंसा-पञ्चाशिका' नामक अहिंसा-संबन्धी चीनी कविताओं और उनकी चित्राक्षिव्यक्ति को स्नेह एवं आश्चर्य से देखते हुए श्री चोउ अन्-लाइ कहने लगे — "आपको चीनी कविता प्रिय है । भारतवर्ष और चीन में साहित्य और कला का आदान-प्रदान होना चाहिए।" पुस्तक में चीनी कविताएं और उनका संस्कृत तथा आंग्ल अनुवाद है ।

Prof. Raghu Vira presenting his book *Chinese Poems and Pictures on Ahimsā* to Premier Chou En-lai.

कान्-सू प्रधान मन्त्री को संसार की उतनी चिन्ता नहीं जितनी भारत और चीन की मंत्री की चिन्ता है ।

इसके पश्चात् मैंने कहा कि मुझे दो चार स्थानों पर और भी जाना चाहिए । कान्-सू प्रायः में कान्-सू 'मन्त्री' और कुन्-नुन् 'मन्त्री' मन्त्रुरिया में 'होल्' और होलोनों और आभ्यन्तर मोंगोलिया में 'होल्-होल्' इत्यादि ।

संस्कृत के प्राध्यापक श्री श्री से पूछने लगे— ये सूत्र कितनी भाषाओं में हैं ? श्री श्री ने उत्तर दिया— पाँच भाषाओं में । चीनी, मोट, मोंगोल, मन्चु और श्री-स्या ।

अभी तक मैंने श्री-स्या के त्रिपिटक की बातचीत न श्री राषबन् से की थी और न ही अपने पत्र-व्यवहार में चीनी शासन से ।

सुदर्शना ने अपनी हस्ताक्षर-पञ्जिका आगे बढ़ाई । कबयित्री ने सहायता की । प्रधान मन्त्री ने चीनी पञ्जिका देख कर हर्षोत्फुल्ल नेत्रों से आश्चर्य प्रकट किया । अहो ! तुम तो चीनी पञ्जिका लाई हो । हस्ताक्षर किए । १९५५, ५, १५ यह तिथि डाली । श्री राषबन् ने परिचय कराया कि यह भी बहुभाषाध्वेदी है । प्रधान मन्त्री ने कहा— दुहिता पितृचरणानुगामिनी है ।

मैं पुस्तकें भेंट करने लगा तो प्रधान मन्त्री बोले— अभी हमने तो सूत्र दिए नहीं और आप पहले ही हमको अपनी पुस्तकें दे रहे हैं । तान्त्रिक बीज में से शम् की कविता पढ़ कर सुनाई । बहुत प्रसन्न हुए । अहिंसा को बारंबार पत्रे उलटा कर इधर उधर से देखते रहे । मैंने कहा इसका प्रथम संस्करण तीन मास में समाप्त हो गया । कहने लगे तो आपको चीनी कविता प्रिय है । पण्डित नेहरू ने भी अपने जीवनचरित में चीनी कविता का प्रेम दर्शाया है । भारतवर्ष और चीन में साहित्य और कला का आदान-प्रदान होना चाहिए ।

मैंने उनके उदात्त भाव, सौजन्य और कुपालता का धन्यवाद किया । प्रधान मन्त्री ने उत्तर दिया हम आपको सन्तुष्ट करने का पूर्ण यत्न करेंगे । सब उपस्थित सज्जन आमके लिए प्रबलशील होंगे । भारत और चीन साथी हैं और साथी रहेंगे ।

पूरे बारह सत्र गए । और हमने श्री प्रधान मन्त्री से अनुज्ञा ली । आज का दिन हमारे कार्य के प्रारम्भ का दिन है । भारत और चीन के प्राचीन सम्बन्धों और गौरव का विषय है । उनके पुनरुज्जीवन का नया प्रारम्भ है । यह तो निश्चित है कि इससे भारत में उत्साह की ऊहरेँ फैलेंगी । भारतीयों में आत्म-सम्मान जागृत होगा ।

हम वहाँ भी जाते हैं—आचिन्तक वहाँ पहले ही पहुँचा होता है । किन्तु आज बातः हमको सन्देश था कि वह प्रधान मन्त्री के निवासस्थान पर भी पहुँच पाएगा अथवा नहीं । क्योंकि यहाँ हमको ही निम्नलिखित ती सत्रे मिले तो उसकी सूचना मिल गई होगी वह

संदिग्ध था। हमको तो आशा थी कि उसको सूचना देना भी सम्भवतः किसी के ध्यान में न आया होगा। किन्तु हमारा सन्देश प्रधान मन्त्री के घर पहुँचते ही दूर हो गया। भाषिकक अज्ञानबल्लभलि हनुमान् के समान एक कोचे में सड़ा हुआ था।

श्री शोच-अन्-काइ जब दिल्ली में आए थे उस की अपेक्षा अब कुछ दुबले प्रतीत हुए।

१६-५-५५

यह दिन पेइ-चिक के प्रसिद्ध ग्रीष्म-प्रासाद में व्यतीत किया। यहाँ से ही डेढ़ बजे नावपुर में लोकेस को दूरभाष किया। किन्तु सात कला तक निरन्तर यत्न करने पर भी कमातार बार्तालाप न हो सका। ध्वनि ठीक प्रकार सुनाई नहीं पड़ी।

ग्रीष्म-प्रासाद पेइ-चिक के मुख्य द्रष्टव्य स्थानों में से है। बुद्ध-परिमल-स्तम्भ नामक चार भूमि ऊंचा मन्दिर है। पहले इसमें नौ भूमियां थीं।

ग्रीष्म-प्रासाद का साम्यवादी शासन ने जीर्णोद्धार किया है। बुद्ध की प्रभास्वर मूर्तियां, जो हेमवर्ण से चमक दमक रही हैं, यहाँ का विशेष आकर्षण हैं। पक्षि-कूजन सुनने के लिए विशेष भवन बना है। मन्दिरों को छोड़ कर अन्य स्थानों पर पक्षी देखने में नहीं आते। ऐसा प्रतीत होता है कि जनता मार कर खा जाती है। इस देश में मांस-भक्षण की पराकाष्ठा है। जहाँ मनुष्य बसता है वहाँ कोई पशु पक्षी कैसे बस सकता है। केवल गधे, घोड़े, खरपर, भेड़, बकरी, बैल, गाय तथा कहीं कहीं ऊंट मनुष्य की सेवा करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनका जीवन भी मनुष्य के सेवाकाल तक सीमित है।

ग्रीष्म-प्रासाद का रंगमण्डप त्रिभूमि है। नाटक मध्यभूमि में होता था। पाताल-लोक के दृश्य अधोभूमि में और स्वर्गलोक के उपरि-भूमि में होते थे। पाताल और स्वर्ग के निवासी नीचे और ऊपर की भूमि से मध्यभूमि में आया करते थे।

तुन्-ह्लाक की आठ सहस्र बलिता-पुस्तकों (rolls) को देखने के लिए आज फिर पेइ-चिक पुस्तकालय में गए। वे अन्य अधिकांश बाक काल के हैं। इनमें बहुसंख्या बौद्ध सूत्रों की हैं। इनकी छः भागों में सूची छप चुकी है। इस सूची को प्राप्त करने के लिए हमको दो मास से अधिक निरन्तर प्रयत्न करना पड़ा। अन्त में शाक-हाइ में जाकर एक व्यक्ति से ३२ रुपये में मिली। इसका वास्तविक मूल्य २, ३ रुपये से अधिक नहीं है।

तुन्-ह्लाक के बतिरिक्त आज शो-स्या भाषा के भी २० हस्तों का अबलोकन किया। चीन में जीवित व्यक्तियों में से अब केवल श्री वाक-चिक-क हैं जिन्हें शो-स्या के सम्बन्ध में कुछ जानकारी है।

इस सम्बन्ध में एक दो पुस्तकें भी चीन से १९३५ में प्रकाशित हुई थीं। वे पुस्तकें

अब चीन में अप्राप्य हैं।

शी-श्या भाषा संसार से लुप्त हो चुकी है। इसका समस्त साहित्य बौद्ध था। भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों में शी-श्या भी एक सुवर्ण-शृंखला है।

शी-श्या ताङ्गुत् जाति की भाषा थी। १२ वीं, १३ वीं, १४ वीं शताब्दी में चीन के पश्चिमी भाग में ताङ्गुत् जाति का साम्राज्य रहा है। तभी शी-श्या साहित्य का सर्जन हुआ।

फू-तू स्स प्राचीन मन्दिर है। इसका वैभव समाप्त-प्राय है। यहां अब केवल चार लामा शेष हैं। इनमें से श्री ध्येन्-साङ्ग ने हमारा स्वागत किया। पेइ-चिङ्ग में यही एक मन्दिर है जहां मोंगोल कञ्जूर पढ़ा जाता है। चन्दन का बना हुआ सुमेरु नागफण के समान प्रतीत होता है। मक्खन तथा आटे के लाल स्तूपों के सामने दीप जलते रहते हैं। अष्टकोण परिक्रामी पुस्तकालय बहुत बड़े परिमाण का है। एक साथ सौ घण्टे बजाने के लिए लकड़ी का विशेष चौखटा है।

यह मन्दिर केवल बौद्ध मन्दिर ही नहीं किन्तु महाकाल-मन्दिर भी है। चीनी में भी इसका एक नाम महाकाल-म्याओ है। मुख्य मूर्तियां पांच हैं। ये रुद्रस्वरूप और नितान्त कृष्णवर्ण हैं। कृष्णवर्ण काक, कुत्ते और व्याघ्रों की संख्या बारह है। मूर्तियों के दाए बाएं दो कृष्णवर्ण भयानक व्यक्ति खड़े हैं। मूर्तियां सभी काष्ठ की बनी हुई हैं।

हमारा परिचय दो प्रसिद्ध महाकाल-मन्दिरों से हुआ है— एक भारतीय साहित्य में कालिदास-वर्णित उज्जयिनी-स्थित मन्दिर से और दूसरा इस पेइ-चिङ्ग मन्दिर से। यह भारत और चीन का सांस्कृतिक सखित्व है।

मन्दिर के सामने दो ध्वजा-स्तम्भ हैं। मन्दिर के सामने का भवन सहकारि-भवन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व यह मन्दिर का भाग था।

बहुत दिनों से यत्न था कि मैं और सुदर्शना चीनी परिवारों में जाएं। सो आज प्रबन्ध किया गया कि हम चीनी संस्कृति के उपमन्त्री माननीय श्री चन्-चङ्ग-तो के घर चलें और जाएं। श्री चन् अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं किन्तु इनकी पत्नी और बच्चे केवल चीनी ही जानते हैं। इनका निवासस्थान पुराना घर है जो इनकी अपनी सम्पत्ति है। इनके पास ५, ६ कोष्ठ हैं। बीच में छोटी फूलों की बाटिका है।

२०-५-५५

चीन में संस्कृत का अध्यापन बन्द है। जब हिन्दी का पर्याप्त अध्यापन हो चुकेगा तब संस्कृत प्रारम्भ करेंगे। संस्कृत के अध्यापक भारत-चीन-सम्बन्धों पर अनुसन्धान कर रहे हैं। आजकल उनके अनुसन्धान का विषय है— चीन की कौन कौन सी जातियां भारतवर्ष में आईं। यह अनुसन्धान राजनैतिक है।

मोंगोल बुद्ध-भक्त हैं। इनके साहित्य में संस्कृत के संकड़ों शब्दों का प्रयोग होता

है। इनके विहारों, मन्दिरों में अभी तक नैयायिक वाद-विवाद चलते हैं। मोंगोल देश में हम क्या कुछ देखना चाहते हैं इसकी हमने बहुत लम्बी सूची बनाई थी। वह सूची कटते कटते सर्वथा कट गई और अन्तिम निश्चय हुआ कि हम मोंगोल देश की राजधानी होहे-हौता चलें। यही एक स्थान है जहां सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। विदेशी मित्रों के निवास के लिए बड़ा सुन्दर नया विश्रान्तिगृह अभी पूरा हुआ है।

पेइ-चिङ्ग में २२ दिन रहने के पश्चात् जब शासन के साथ समस्त उपहारों का निश्चय हो चुका और द्रष्टव्य स्थान तथा वस्तुएं देख चुके तथा जब अगले ५० दिन का चीन-यात्रा का क्रम बन चुका तब बीस को प्रातः आठ बजे मोंगोल की यात्रा आरम्भ की। समाचारपत्रों से पहले ही सूचना मिल गई थी कि साइबेरिया से शीत की लहर मोंगोल देश में फैल रही है। भारतीय दूतावास के सज्जन मित्रों ने ऊनी वस्त्र दिए।

हमारे साथ तीन व्यक्ति थे। एक तो अनिवार्य द्विभाषिक, दूसरे प्राध्यापक ची और तीसरे केन्द्र-प्रान्त-सम्पर्काधिकारी श्री छाङ्ग-मिङ्ग-तान्। आज से २६ जुलाई तक जब भी हम पेइ-चिङ्ग से बाहर गए श्री छाङ्ग हमारे साथ गए। इनका कार्य हमको प्रान्तीय अधिकारियों से मिलाना था।

प्राध्यापक ची संस्कृतज्ञ हैं। आप विद्या-विभाग के चीनी भाषा और साहित्य के नव-निर्माण के अध्यक्ष हैं। प्राच्य भाषाओं के विद्यालय के भी आप अध्यक्ष हैं। जर्मन विद्वान् त्सीक् (Zieg) के विद्यार्थी हैं। तुषार भाषा का अध्ययन करते रहे हैं। आजकल आप एक लेख लिख रहे हैं कि बुद्ध, श्रमण, सुमेरु, श्रमणेर, गंगा, मैत्रेय आदि शब्द चीनी में तुषार भाषा द्वारा आए हैं।

आप का श्रमिक-संघ से विशेष सम्बन्ध है। आपने बतलाया कि यह श्रमिक-संघ अनेक कार्य करता है—

- (१) अपने सदस्यों की आर्थिक सहायता, उधार के रूप में अथवा दान के रूप में।
- (२) राजनैतिक शिक्षा। बिना साम्यवाद की शिक्षा के व्यक्ति ठीक काम नहीं कर सकते।
- (३) आदर्श श्रमिकों को समुद्र तथा पहाड़ों पर विश्राम और आनन्दप्रमोद के लिए ले जाता है। (चिङ्ग-ताओ जो पहले जर्मनी का उपनिवेश था और जिसको पूर्व का स्विट्जरलैण्ड मानते हैं वह अब श्रमिकों का स्वास्थ्याश्रम है)।
- (४) शासन, अधिकारियों के बेतन में से दो प्रतिशत अंश, श्रमिक-संघ को देता है।
- (५) चीन में केवल एक श्रमिक-संघ है। दूसरा श्रमिक-संघ बनना सम्भव नहीं।
- (६) इसका काम मार्क्सवाद पढ़ाना और फैलाना है।
- (७) विश्वविद्यालय में भी श्रमिक-संघ-गोष्ठी है। इसके पास सुन्दरतम कोष्ठ और उपस्कर (furniture) हैं।

(८) श्रमिक-संघों में किसान सम्मिलित नहीं हो सकते ।
 आज चीनी समाज के तीन अंग माने जाते हैं— श्रमिक, सैनिक तथा किसान ।



हमारी गाड़ी पेह-चिङ्ग से प्रातः ठीक आठ बजे चल पड़ी । मार्ग में कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं हुई । वे ही पुराने गधे और लख्खर, कहीं खेत और कहीं पहाड़ियां, साथ चलती रही । स्थात्रों में से दो प्रसिद्ध स्थात्र मार्ग में आए । पहला ता-नुङ्ग और दूसरा काल्-मान् ।

पेह-चिङ्ग से ता-नुङ्ग 天 天 तक १२ घण्टे की यात्रा रही । इन बारह घण्टों के लिए प्रत्येक व्यक्ति ने चाय के निमित्त २० शतिक (cent) दिए । बारंबार सेबक उष्ण जल दे जाता था । कितनी बार सो कोई गणना नहीं ।

मार्ग में चीन की प्रसिद्ध महाभित्ति पार करने के पश्चात् चीन के प्रसिद्ध संयान-अभियन्ता श्री छाङ्ग-त्येन्-योउ के दर्शन हुए । इन्होंने पहाड़ी संयानों के मार्ग बनाने में क्रान्तिकारी विचार दिया है । इनकी सहायिका इनकी लड़की है । संयान लगातार पहाड़ी पर गोल घूमता हुआ चढ़ता ही जाए यह सब पहाड़ियों पर सम्भव नहीं । गोल मार्ग के स्थान पर इन्होंने बक्रावक्र (zigzag) मार्ग की कल्पना तथा निर्मिति की है । पहले मार्ग एक पहाड़ी के शिखर तक पहुंचता है । फिर कुछ नीचे उतर कर दूसरी पहाड़ी के शिखर तक जाता है ।

ता-नुङ्ग के पश्चात् हमारा डिब्बा रिक्त हो गया । हमारे विस्तरे बहुत चौड़े और लम्बे बिछा दिए गए । यद्यपि गाड़ी के अन्दर विशेष शीत न था किन्तु बाहर शीत शून्य से भी नीचे था । शीत को रोकने के लिए खिड़कियों में दो दो कांच लगे हुए थे । इनके बीच में दो अंगुल वायु का स्तर ठण्ड को आगे न बढ़ने देता था ।

इस गाड़ी में एक डिब्बा बच्चों वाली स्त्रियों के लिए था । बच्चे चुपचाप थे । यह आश्चर्य की बात थी । रोने, चिल्लाने, मांगने आदि की कोई ध्वनि न थी । किन्तु विशेष प्रकार की दुर्गन्ध थी । भोजन-कोष्ठ की ओर जाते हुए चार बार इस कोष्ठ में से निकलना पड़ा । यद्यपि भोजन-कोष्ठ में हमारा पटल अलग था तथापि मत्स्य-मांस की गन्ध की लपटें चारों ओर नाक को बेरे हुए थीं । ऐसा अनुभव होता था कि जो भोजन हम कर रहे हैं उसकी यह गन्ध है । यथाकथञ्चित् रोटी के दो टुकड़े निगल कर इस गन्ध से छुटकारा पाने के लिए हम अपने कोष्ठ में आए ।

प्रातः ५ बजे गाड़ी होहे-हॉता में पहुँची। यह नगर मोंगोल देश की राजधानी है। जनसंख्या है १ लाख ६० सहस्र। नगर के दो भाग हैं नया और पुराना। नए बने हुए विशाल विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया। साढ़े पांच बजे धूप निकल आई किन्तु शीत शून्य से नीचे था। सब बस्त्र पहनने के पश्चात् भी हाथों और पाओं को शीत लगता ही रहा। पीने सात बजे ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे दस बज रहे हों। सूर्य आकाश में पर्याप्त ऊंचा उठ चुका था।

स्वात्र पर उतरते ही चारों ओर धूममार्ग (chimney) दिखाई पड़ने लगे। हमने समझा कि ये बड़ा भारी उद्योग-केन्द्र है। किन्तु पूछने पर पता चला कि ये धूममार्ग निर्माधियों के नहीं किन्तु बड़े भवनों के हैं। शीत के आधिक्य के कारण सब बड़े बड़े भवनों में बहुत सा कोयला चलाना पड़ता है और कोयले का धुआं नगर में न फैले इस-लिए धूममार्ग इतने ऊंचे बनाए गए हैं।

चुङ्ग ने आकर बतलाया कि प्रातराश आठ बजे होगा। यह सुनकर हम विश्रान्ति-गृह से बाहर निकले और नगर की पुरानी भित्ति की ओर चल पड़े। यहां पर ही प्रथम-बार डिककुद् ऊंटों की पंक्तियां दिखाई पड़ीं। अब शीतकाल का अन्त था इसलिए शरीर पर से लम्बी ऊन वाली त्बचा अलग होकर नीचे गिरती जा रही थी। ऊन से रहित त्बचा का भाग देखने में बहुत भद्दा लगता था। ऊंट की ऊन बहुत उष्ण, कोमल और महंगी होती है।

सबसे बड़ा भ्रमण करने के पश्चात् पूरे आठ बजे लौटे। भोजन-कोष्ठ में हमारे अतिरिक्त केवल तीन और व्यक्ति थे। दो चीनी और एक पाश्चात्य। हमारे लिए अलग पर्याप्त दूर पटक बिछाया गया, जिससे हम तक मत्स्य-मांस की गन्ध न पहुंच सके। अब तक हमारे मित्रों को पता लग चुका था कि मांस का दृष्टिगोचर होना ही हमारी मनो-ग्लानि का कारण बन जाता है।

होहे-हॉता में भीगोल प्रायः चोड़ी का दूध पीते हैं। चोड़ी के धन बालों से भरे होते हैं। अतः दूध में छोटे छोटे बाल मिल जाते हैं। कहते हैं कि चोड़ी का दूध पीने से पहली बार मला पक जाता है। स्वाद भी बड़ा विचित्र होता है। तात्पर्य यह कि हमारे मित्रों ने चोड़ी और ऊंटनी के दूध की इतनी निन्दा की कि हम इस चोड़े और ऊंटों के देश में आकर भी इनके दूध से पराक्रम्य हो गए। और हमने केवल गाय के दूध की मांग की। यहां गाय का दूध बहुत स्वादु मिला। मलाई की पपड़ियां भी बाने को मिलीं।

होहे-हॉता का अर्थ है नील-नगरी। सो नगर से बाहर निकल कर सड़कों के दाएं बाएं बास के नीले फूल नील-नगरी नाम के समर्बक प्रतीत हुए किन्तु वास्तव में नील-नगरी का अभिप्राय हरी भरी नगरी से है, इन फूलों से नहीं।

यद्यपि यह मोंगोल नगरी है तथापि यहां चीनी अन्तता बहुत पर्याप्त मात्रा में है।



आभ्यन्तर मोगोल देश की राजधानी होहे-हाँता (नीलनगरी) के समीप धर्मनन्दी विहार । इसका चीनी नाम फा-शी म्म है । यह मन्दिर भोट साहित्य के मुद्रण का विशाल केन्द्र रहा है । मन्दिर का शिखर काशी के ममीपवर्नी मृगदाव के दृश्य से सुशोभित है ।

Prof. Raghu Vira and his daughter with the monks at the lamasery at Hohhot (Inner Mongolia) where the *opera omnia* (*gsun-hbum*) of Sum-pa mkhan-po Ye-és-dpal-hbyor (*ज्ञानश्रीभूति) were printed.



धर्मनन्दी विहार में ५,००० से ऊपर मुद्रण-काष्ठफलक हैं, जिनसे भूगोल, मोंगोल इतिहास, पञ्चबांग, आयुर्वेद आदि की पुस्तकों का प्रकाशन होता है ।

The printery of the Hohehot lamasery which has over five thousand xylographic plates for various texts including the collected works of Sum-pa mkhan-po Ye-*tsé-dpal-hbyor*.

चारों ओर चीनी भाषा का प्रयोग होता है। पाठशालाओं में केवल मोंगोल बच्चे ही मोंगोल पढ़ते हैं और ये भी १०, ११ वर्ष की आयु में चीनी पढ़ने लगते हैं।

होहे-हाँता में दो तीन मोंगोल मन्दिर हैं। प्रातः साढ़े नौ बजे हम श्री-स्त्री-बू-बाओ श्री-बुडे 'འཇགས་འབྲས་ལྷོ་མ་' में गए। मुख्य लामा श्री साम्थान् 'མཚན་མཚན་མཚན་' हैं। हमने इनको चन्दन की मृग-मूर्ति दी। मूर्ति को लामा ने हृदय से लगाया और मन्दिर की छत के ऊपर बने हुए धर्मचक्र तथा उसके दाएं बाएं सड़े हुए दो मृगों की ओर संकेत किया। मोंगोल मन्दिरों के ऊपर सर्वत्र ही धर्मचक्र और दो मृग मिलेंगे। ये बुद्ध के प्रथम धर्म-प्रवर्तन के प्रतीक हैं। श्री साम्थान् ने भी हमको चित्र उपहार में दिए। बन्द और खुलने वाले लकड़ी के चौखटे में लगे हुए २५ चित्र थे। वर्षों तक इनके सामने घूप जली है और घूप के घूम से ये काले हो चुके हैं। चित्रों का चित्रत्व आधा लोप हो चुका है किन्तु जो भक्ति का घुमा इनमें प्रवेश हुआ है वह अमूल्य है।

विहार विशाल और वैभवपूर्ण है। लकड़ी के स्तम्भों पर आरोही नाग वाले ऊन के कम्बल लगाए हुए हैं। यहां भोट का सम्पूर्ण रक्त-वर्ण कञ्जूर और तञ्जूर है। लामाओं की संख्या बीस है। इनमें से एक लामा सुन्दर चित्रकार है। उसने अपना बनाया हुआ शाक्यमुनि का चित्र उपहार में दिया।

इस विहार में यद्यपि सभी लामा मोंगोल हैं किन्तु पठन पाठन प्रायः भोट कञ्जूर का करते हैं। प्रतिवर्ष समस्त कञ्जूर का पारायण कर लेते हैं। तञ्जूर के तो यत्र तत्र स्वबिद् अंश ही पढ़ते हैं।

होहे-हाँता में हमने प्राथमिक पाठशाला, माध्यमिक शालाएं, अध्यापक-शिक्षणालय और शिशु-शालाएं देखीं। शिशु-शाला में केवल अधिकारियों के बच्चे थे। यहां विशाल चिकित्सालय है। अधिकारियों और साम्यवाद-पक्ष के सदस्यों को छोड़ कर अन्यो से शुल्क लिया जाता है।

रात्रि को हमारे स्वागत में सबसे बड़े रंग-मण्डप में गान और नृत्य हुए। पचास से ऊपर अभिनेता और अभिनेत्रियां थीं। जनता से भवन भरा हुआ था। गान और नृत्य की समाप्ति पर हमने अभिनेता अभिनेत्रियों से हाथ मिलाया। भारत और चीन की मैत्री के घोषणादों से भवन गूँज उठा।

२२-५-५५

होहे-हाँता से एक चप्टा बूल उड़ाते हुए हमारी गाड़ियां ख-बी स्त पहुंचीं। यह चीनी नाम है। इसका अल्प मोंगोल नाम भी है। चीनी नाम का अर्थ है धर्मोन्मी-विहार। यहां बीस कामा निवास करते हैं। भोट कञ्जूर तञ्जूर के वैद-पिङ और नार्बाङ संस्करण पूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त यहां ५,००० से ऊपर यद्ग-काष्ठ-फलक हैं। चिन्हों

भूगोल, मॉंगोल इतिहास, पञ्चांग, आयुर्वेद आदि पुस्तकों का प्रकाशन होता है।

मॉंगोल कामा शाकाहारी नहीं होते। शाकाहार केवल चीनी भिक्षुओं में प्रचलित है। मॉंगोल का यहाँ केवल कञ्जूर है।

कामा कञ्जूर का पाठ करते हैं। कञ्जूर के भी केवल कुछ अंशों का। श्रेयस्वगुरु का विशेष मान है। इससे उतर कर हृदय-पारमिता का। अवतंसक-सूत्र का भी पाठ चलता रहता है।

जीवित बुद्ध के उपदेश के लिए अलग भवन बना हुआ है। इस भवन में चारों ओर चीनी सूत्रों के उद्धरण हैं। चलते समय इन्होंने हमको चोङ्-ख-प उँ-प-य की पीतल की मूर्ति, महाकाल का पत्र पर चित्र तथा एक सूत्र-पुस्तिका उपहार में दी।

आज मध्याह्न चार बजे आठ लामाओं का प्रतिपदा-पाठ सुना। पाठ प्रायः स्मरण था। कभी कभी पुस्तक से भी पढ़ते थे। पुस्तक का नाम— आर्य-तथागत • सितातपत्रे अपराजित-महाप्रस्थंग • पारमी-सिद्ध नाम धारणी।

हम भी लामाओं के साथ बैठ गए और पढ़ने लगे—

वज्रपाणि फट् ।

ओम् अनले अनले । लसमे लसमे ।

बेरे बेरे । सौमे सौमे । शान्ते शान्ते ।

दान्ते दान्ते । विषदे विषदे । बीरे बीरे ।

देवि वज्रधारि । बन्धबन्धनि ।

वज्रपाणि हुं फट् । ओं हुं हुं हुं • फट् स्वाहा । हुं हुं बन्ध फट् ।

हुं हुं बन्ध फट् स्वाहा ॥

यहाँ से एक और मन्दिर में गए जिसका चीनी नाम ता-बाओ-बु-ग्वाङ् स्त है और बोट नाम द्वाग्-मे-ग्वाङ् है। यहाँ हमको बोधिसत्त्वचर्यावतार उपहार में मिला। हमसे कहा गया कि हम पहले भारतीय हैं जो वर्तमान मॉंगोल देश में आए हैं। एक एक व्यक्ति का प्रेम, चाहे वह बौद्ध हो चाहे साम्यवादी, उमड़ा नहीं समाता था।

यह पास-बूमि है। यहाँ बड़े बृक्ष अथवा कांटे वाली झाड़ियाँ बहुत बड़ी हैं। गाय और बैल बिना ककूद् के हैं। बोड़े और ऊँट छोटे छोटे हैं। बोड़े, नये और लखर के रूप में बोड़ा ही अन्तर है। यहाँ के स्मारक उद्यान में एक नया प्राणी भी देखा। इसका नाम है स्त-पु-ख-बाङ्। स्त का अर्थ चार, पु-ख का अर्थ नास्ति, बाङ् का अर्थ क्षमान। अर्थात् चारों के समान नहीं है। चारों से अतिप्राय गाय, नया, जेड़ और हरिण से है। परिमाण में यह हरिण जैसा है। जेड़ जैसे इसके सींग हैं। मुक्त की आकृति कुछ गाय और नर्ब से मिलती है।



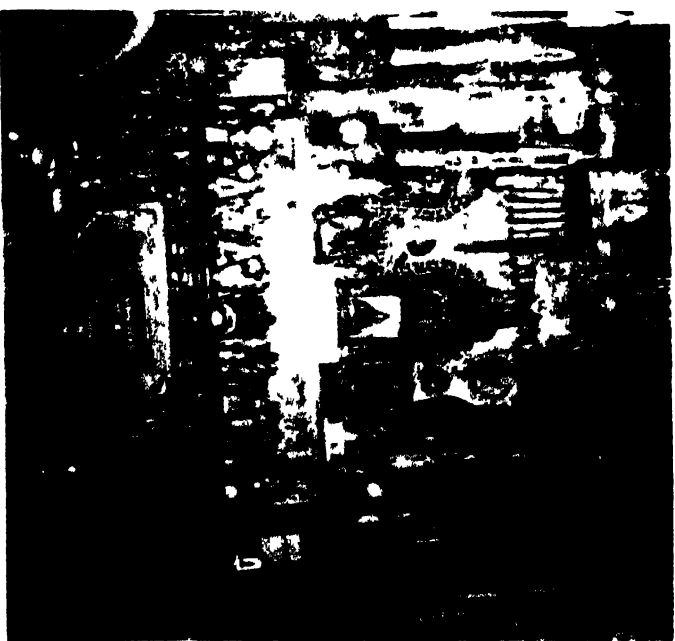
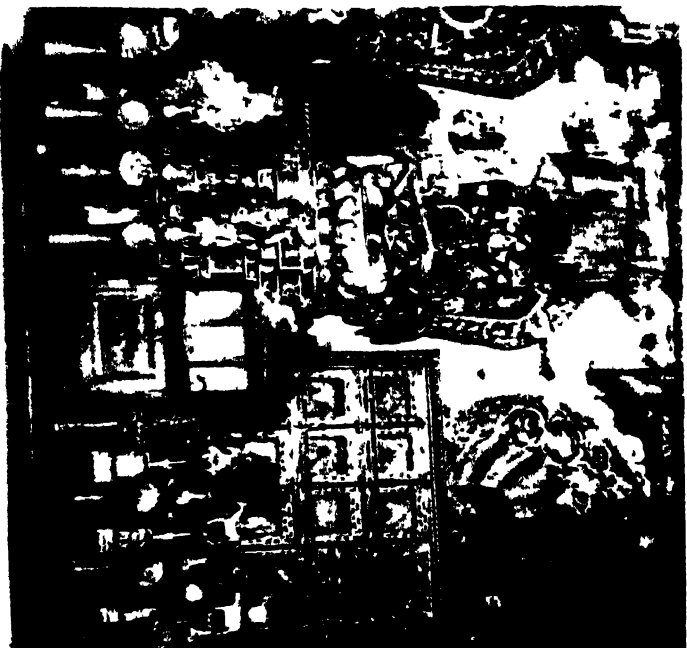
धर्मनन्दी विहार में महाकाल की मूर्ति के सम्मुख रखी पूजा सामग्री का निरीक्षण करते हुए विहार के अध्यक्ष एवं आचार्य रघुवीर ।

Prof. Raghu Vira and his daughter accompanied by the Abbot viewing the altar at a Hohehot lamasery where offerings are laid out before Mahakala.



होहेहॉता-स्थित गील-धू-चाओ विहार में आठ लामा 'आर्य-नथागत-सितानपत्रे-अपराजित-महाप्रत्यंगिरा-पारमी-मिद्ध नाम धारणी' से प्रतिपदा-पाठ कर रहे हैं ।

Prof. Raghu Vira noting down the San-krit recitation at a Hohehot lamasery.



होहेहोंना के अभिताम-महाविहार ता-बाओ-बू-त्याऊ स्स के मुख्य भवन में प्रवेश करते ही अष्टाष्टु इत भव्य दृश्यों को देखकर आश्चर्यचकित
 मुग्ध रह जाता है ।

The central altar of the Dpag-med-glin monastery at Hohchot.

हुतात्म-स्मारक-स्तम्भ पर राष्ट्रपात माओ के हस्तलेख में एक ओर चीनी अक्षरों में और दूसरी ओर मोंगोल अक्षरों में लिखा था— हुतात्म अमर होते हैं।

बिहारों में घूमते हुए हमको कहीं भी नई मूर्तियां नहीं मिली। कुछ वर्षों से नई मूर्तियों का बनाना बन्द हो गया है। पहले बिहारों में नई मूर्तियां बनाई जाती थीं। पीतल, ताम्बा, चांदी, सोना आदि के ढालने का प्रबन्ध तथा तन्निष्णात कर्मकार बिहारों में हुआ करते थे। अब केवल एक एक दो दो चित्रकार रह गए हैं।

छोटी छोटी, “चतुर्थी की चन्द्रकला” के सदृश आंखों वाली जनता हमको चारों ओर घेरे खड़ी है। मार्ग निर्वाध करने के लिए आरक्षी (police) आए हैं। अनेक स्थानों पर हमारे लिए सड़क के दोनों ओर आरक्षियों का प्रबन्ध है।

मोंगोल भाषा का चीनी भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। हमारे समान इसमें भी प्रत्येक शब्द अनेकाक्षरी होता है। मोंगोल का व्याकरण संस्कृत के समान रूपों से भरा हुआ है। अनेक कृत् और तद्धित प्रत्यय हैं। चीनी के समान अक्षों का स्वरों से सम्बन्ध नहीं। पाठको के मनोरञ्जन के लिए दो, चार मोंगोल शब्द तथा वाक्य देते हैं—

स्येन् प्येना	आप अच्छे हैं
पी स्येना	में अच्छा हू
शिन्-ह्वा-यह-चिकलि	नव-चीन-राजमार्ग (यह नई बनी सड़क का नाम है)
होहे-होंता चोंछिलाहों काशिर्	नील-नगरी-विभ्रान्तिगृहस्थान (यह विदेशी मित्रों के ठहरने का स्थान है)
पाका-सोंकाकॉलि	छोटी पाठशाला
पशिन्-अंहिन्-सोंकाकॉलि	अध्यापक-आदर्श-पाठशाला
अम्बिन्-हौरियन्ना	औषध-स्थान अर्थात् चिकित्सालय
आरतोंन्-छिछिलक्	जनता-बाटिका
कारा-होंता	मृत-नगरी

कारा-होंता पुराना नगर है, जहां से क्षी-स्या भाषा के अनेक बौद्ध सूत्र मिले हैं। एक क्षीस्या-कोष भी उपलब्ध हुआ है।

२३-५-५५

आज प्रातः सा-सुङ् * ११ पहुंचे। यह शान्-सी प्रान्त की राजधानी है। सा-सुङ् का प्राचीन नाम फिङ्-छङ् * १२ था। फिङ्-छङ् उत्तर बेइ 11 22 की पुरानी राजधानी रह चुका है। शान्-सी हम विदेशी मित्रों के लिए विशेष रूप से निर्मित विभ्रान्तिगृह में ठहराए गए। शान्-सी शासन के अधिकारियों ने हमारा आतिथ्य किया।

विश्व-विख्यात युन्-काङ्ग ३३ गुहाओं के दर्शनार्थ बिना विलम्ब किए हुए, अर्थात् तानुक्त पहुंचते ही, हम लोग बड़ी चाड़ी में बैठ कर चल दिए।

युन्-काङ्ग का बर्चन दो चार पुष्टों में करना असम्भव है।

युन्-काङ्ग तानुक्त से पश्चिम की ओर ३० ली दूरी पर है। यू-चाओ ३३ ॥ नदी के साथ साथ भित्ति के समान ६० हाथ ऊंचा पर्वत-कूट है, जो रेतिले पत्थर का बना है। पत्थर के स्तर क्षैतिज हैं। इस कारण इसमें खुदाई करना बहुत सरल है। यू-चाओ नदी बहुत छोटी है। इसके पाट में लोग खेती करते हैं।

हमको युन्-काङ्ग की गुहाओं के निर्माण की तिथियों का पता है। अनेक मूर्तियां विशिष्ट रूप से मौलिक हैं। उन पर कभी जीर्णोद्धारकों के हाथ नहीं लगे और वे इतनी अच्छी दसा में हैं कि स्वयं अपनी कहानी बता सकती हैं।

इन गुहाओं के बनाने वाले कौन थे। ऐसी कौनसी क्रान्तिकारी घटनाएं थीं जो बुद्धधर्म को चीन की उत्तर-पश्चिम सीमाओं तक बहा कर ले गईं। केवल अनुभवही इतिहास-अनुसन्धाता ही इन मूर्तियों की कहानी को सुन सकता है और सेंकड़ों कोसों घूमते हुए अशिक्षित घुड़सवारों तथा यायावर जातियों और विशाल मरुप्रदेश में बालघस्त नगरों की कहानी को इस कहानी के साथ मिला सकता है। अभी तक शक, हूण, मोंगोल और तुर्क जातियों के सम्पूर्ण इतिहास उपलब्ध नहीं जिनसे यह पता चल सके कि आज से दो सहस्र वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म इनके हृदयों में आरूढ़ होकर किस प्रकार चीन में पहुंचा और यहां अपना घर बनाया। अभी तक सब से अधिक ऐतिहासिक ग्रन्थ चीनी भाषा में मिले हैं किन्तु चीनी ऐतिहासिकों ने कहां तक अपने पाश्चात्य विजेताओं के सच्चे और सम्पूर्ण विवरण लिखे हैं यह कहना कठिन है।

ली-उक-बिङ्ग ने अपने चीन के इतिहास में लिखा है कि वेइ वंश में कोई भी कन्या तब तक महाराणी नहीं बन सकती थी जब तक वह बुद्ध की सर्व-सुन्दर मूर्ति न डाल सके।

जब वेइ वंश का प्रभाव जापान में फैला तब वहां भी चातुमयी मूर्तियों के निर्माण का महत्त्व राजकुलों में फैला। सुइ-को युग में राजकुमार सौतोकु प्रसिद्ध मूर्तिकारों में से थे। सार्तार् जातियों में पीतल की मूर्तियां और आभूषण डालने की पहले ही से प्रथा विद्यमान थी।

अफगानिस्तान की सीमा पर बामियान् की गुहाओं में तथा युन्-काङ्ग की खेती में पर्याप्त साधुत्व है। बामियान् की गुहाएं कमिष्क के समय की मावी जाती हैं। बामियान् से, तुर्क प्रदेशों से होते हुए, भारत की कला चीन तक पहुंची इसने सब ऐतिहासिकों का श्रेकमत्त है।

युन्-काङ्ग मांका का मध्यस्थ मणि है। युन्-काङ्ग से कोरिया और कोरिया से जापान। चीनी ऐतिहासिकों की सूचना है कि बो-वा नाम की सार्तार् जाति ने ४४३



आचार्य रघुवीर और उनके अभियान-सदस्य युन्-काङ्ग के बुद्ध की विराट् प्रतिमा की छत्रछाया में ।

Prof. Raghu Vira and the members of his expedition standing near the Great Buddha at Yun-kang.



युन्-काङ्ग की गुहाओ में तथागत की विशाल प्रतिमा
Another gigantic image of Lord Buddha at Yün-kang.

विक्रम में बेकाल झील से लेकर उत्तर-पश्चिम सीमा तक चीन पर विजय पाई। उन्होंने वेइ नाम का वंश स्थापित किया और फिङ्ग-छङ्ग को अपनी राजधानी बनाया। फिङ्ग-छङ्ग ल्याओ 姓 वंश की भी पाश्चात्य राजधानी रहा है।

वेइ काल में चीन में सात साम्राज्य थे। जिनमें से छः पर तार्तार् जातियों का राज्य था। इन्हीं दिनों में अतिला यूरोप की सेनाओं और राज्यों का ध्वंस कर रहा था। तार्तार् लोग शक्तिशाली और क्रूर थे। उनका आदिकाल से बारंबार चीन पर आक्रमण करने का प्रयोजन और उद्देश्य स्थायी सभ्यता के मीठे फल भोगना था। चीनी विद्वानों, राजसभ्यों, कलाकारों आदि के साहाय्य से उन्होंने चीन में राज्य स्थापित किया।

चीन के इतिहास में प्रथम बार थो-पा सम्राट् ह्येन्-वन्-ती ने (५२३ से ५२७ विक्रम तक) बुद्धधर्म को समस्त राज्य का धर्म घोषित किया।

पर्वत स्थायी है। इसको उठा कर ले जाना असम्भव है। सामान्य रूप से इसके किसी बड़े अंश को तोड़ना भी सरल नहीं। इस विचार से सम्राट् वन्-ती ने अपने पूर्वज सम्राट् के बौद्ध मन्दिर और मूर्तियों के सहार को दृष्टि में रखते हुए युन्-काङ्ग का कार्य आरम्भ किया था। मूर्तियों की सख्या असंख्य बनाने का भी यही प्रयोजन था कि विकराल काल की गति में कुछ तो बचेगी ही।

युन्-काङ्ग की गुहाएँ और उनकी मूर्तिकला इस बात की साक्षी है कि एक शक्तिशाली धर्म ने एक भावुक और श्रद्धालु जाति के हृदय में गहरी छाप लगाई। यह कला महती जागृति का प्रतीक है। केवल राजकुल ही नहीं किन्तु समस्त राष्ट्र इस कला से अभिभूत हुआ। युन्-काङ्ग उज्ज्वल तथा कम्पायमान ज्वालाओं का सन्देश है जो अति-प्राचीन काल से अपना प्रकाश आठों दिशाओं में फैलाता आ रहा है। ये आध्यात्मिक ज्वालाएँ प्रचण्ड और शुद्ध श्वेतवर्ण की हैं। इनकी कीर्ति और गरिमा केवल यहां तक ही सीमित नहीं। यह कला प्रभूत भूमिखण्डों को पार करती हुई, ज्ञान और भक्ति के अजेय बल द्वारा, व्यक्तियों तथा राष्ट्रों को नए प्राणों से अभिविक्त करती गई। जीवन में सर्जनशीलता आई। प्रगति हुई और राष्ट्रों ने नया रूप धारण किया।

जब हमने अपनी यात्रा प्रारम्भ की तो एकमात्र ध्येय था कि इतिहास के पन्ने जाग उठें। इतिहास जीवित बन जाए और हम उसका अंग होकर उसमें प्रविष्ट हों। हम स्नान करें उस जीवन-गंगा में जो भूत और वर्तमान को मिलाती है। हमारी यही भावना जावा और बाली द्वीप में थी। जो जानन्द और सन्तोष इस गंगा के प्रवाह में डुबकी लगाने का हुआ था उसने चीन की यात्रा के प्रारम्भ को और भी उत्सुकतामय बना दिया था।

युन्-काङ्ग की गुहाओं की कहानी बुद्ध-धर्म के विजय और प्रकर्ष की कहानी है। बुद्ध-धर्म से खीजी जितिय की सीमाएं फट गईं। दर्शन के नए स्वर्य और प्राणों के नए वातप्रवाह प्रकट हुए। सामान्य मानव जीवन भूमि के स्तर से ऊपर उठा।

युन्-काङ्ग में, प्रारम्भ में, मूर्तियां पत्थर में ही खोदी गई थीं। पीछे जाकर जब पत्थर मुरने और टूटने लगा, तरेहें और बरार पड़ने लगे, तब गारा लीप कर उद्धार किया गया। गारे की प्रथा तुन्-ह्लाङ्ग की प्रथा है। गारे से जीर्णोद्धार करने में समय और परिश्रम न्यूनतम लगता है। इन सूखे प्रदेशों में गारा सैंकड़ों वर्षों तक स्थायी रहता है।

पूर्व काल में दस बड़ी बड़ी गुहाओं के सामने उनकी रक्षा करने के लिए चार भूमि ऊंचे मन्दिर बने हुए थे। इनमें से अब अधिकांश का कुछ शेष नहीं बचा, केवल पहाड़ी में छिद्र रह गए हैं, जिनमें लकड़ी के स्तम्भ गड़े हुए थे। जो कुछ अब बचा हुआ है उसका शासन उद्धार कर रहा है। एक तल से दूसरे तल पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। यद्यपि इन भवनों के कारण अन्दर की गुहाओं में अन्धेरा छाया हुआ है, तथापि इनका मूक उद्देश्य, रेत और आंधी से रक्षा, अवश्य सफल हुआ है। यह प्रदेश सूखा और रेतीला है। जब आंधी चलती है तो मोटे बालू के कण आंधी के वेग से मूर्तियों को रगड़ते और घिसते हैं।

आज से कुछ वर्ष पहले इन गुहाओं में गाड़ियां, खच्चरों और गधे बांधे जाते थे। कई गुहाएं भूसा भरने के काम में आती थी। युद्ध के दिनों में यहां सैनिक रहते थे। पास के बने हुए भवन में कभी पाठशाला भी रह चुकी है। किन्तु आज नए शासन के अधीन गुहाओं में केवल जीर्णोद्धार करने वाले श्रमिक तथा पुरावशेष-विभाग के अधिकारी दिखलाई पड़ते हैं।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि युन्-काङ्ग में जहां कहीं भी भवनों का चित्रण है वह चीनी शैली का है, यद्यपि मनुष्यों की रूपाकृति सर्वथा एकमात्र चीनी नहीं। जिस समय गीतम नगर-यात्रा के लिए जाते हैं और घर से सदा के लिए पृथक् होते हैं, उस समय का राजप्रासाद एक छोटे से चीनी घर के रूप में बनाया गया है। चार देव बहुत अधिक शक्ति लगा कर गीतम के छोड़े कण्ठक के चारों पांव अपने हाथों पर उठाए हुए हैं। प्रयोजन यह है कि छोड़े की टाप की ध्वनि न हो और पहरे वाले जाग न जाएं। कुछ सत्ताब्दियों पूर्व इस दृश्य का चित्रण सांची स्तूप के पूर्व द्वार पर हुआ था किन्तु उसमें छोड़े पर गीतम नहीं है। उस समय तक बुद्ध का चित्रण नहीं किया जाता था। लाहौर के अशोकस्तूप में गीतम और छोड़े का चित्र है किन्तु इसमें युन्-काङ्ग वाली शक्ति, प्रगति और जीवन नहीं। जीवन और शक्ति का संचार युन्-काङ्ग की विशेषता है। एक और बड़ी विशेषता है कि यहां आभूषणों का अभाव है। उपासकों के मुख पर श्रद्धा की अनाद्य भावना अंकित है। ये मूर्तियां पूजा, आत्मसमर्पण और सीमनस्य के अनुपम प्रतिबिम्ब हैं। शान्ति और आध्यात्मिक आनन्द के मिश्रण से कलाकार ने अपने को अमर बना दिया है। उपासक बुद्ध की ओर नतनेत्र हैं। कहीं कहीं छोड़े से स्थान में अतिभाव संख्या में मूर्तियों का एक दूसरे से सट कर बनाना भी चौथाकार है। चाहे



स्वी वंश के अन्तिम राजा याङ् ने पिता की पुण्य स्मृति में युन्-काङ् गुहाओं की बुद्ध-त्रिमूर्ति का निर्माण कराया ।

Emperor Yang of Sui dedicated the Buddha Trinity to the memory of his father Wên towards the end of the sixth century or early in the seventh.



सम्राट् श्येन्-वन्-नी (५२३ से ५२७ विक्रम) ने युन्-काङ्ग गुहाओं का निर्माणकार्य प्रारम्भ किया । युन्-काङ्ग की गुहाओं का समस्त संसार ही पूजा और भक्ति से परिपूर्ण है । सत्य और मौन्दर्य, कला और निष्ठा, समाधि और परिधान, आसन और मुद्राएं सभी एक मूत्र में पिरोए हुए हैं ।

The interior of Cave 22 of Yün-kang wherein is the gigantic Buddha Trinity, magnificently carved. To the west of this Buddha, hundreds of caves and niches of various magnitudes are exposed.

उपासक हों चाहे बोधिसत्त्व, इनमें जीवन और प्राण हैं। एक ही मूर्ति अनेक बार बनी, अतः वह निःसत्त्व और फीकी पड़ जाए, सो बात नहीं।

चीनी कवि ने सच लिखा है कि शिलाएं भी स्वयं बुद्ध की पदवी तक पहुंच गईं और संसार के जीवन को सुखमय बनाने में सिद्ध हुईं।

प्रायः मूर्तियां मन्मपाद हैं। किन्तु एक दो स्थान पर उपासक चीनी जूते पहिने हुए हैं। ये जूते भारतीय जूतों के सदृश हैं।

अनेक आले जिनमें मूर्तियां बनी हुई हैं कमलदल रूप के हैं। यह प्राचीन भारतीय विहारों का रूप है।

युन्-काङ्ग की गुहाओं का समस्त संसार ही पूजा और भक्ति से परिपूर्ण है। सत्य और सौन्दर्य, कला और निष्ठा, समाधि तथा परिधान, आसन और मुद्राएं, सभी एक मूत्र में पिरोए हुए हैं। श-ब्द्या-क्रो गुहा में भित्ति के उपरितम भाग में ऊर्ध्वस्थायी बुद्धों के ऊपर पद्मासनस्थ बुद्धों की पंक्ति है। प्रत्येक बुद्ध का अपना अलग आला है। सब की हस्त-मुद्राएं विभिन्न हैं। दो दो बुद्ध-मूर्तियों के बीच में छोटे परिमाण में उत्कीर्ण राजा उपासक के रूप में हस्तबद्ध नमन कर रहे हैं। आलों के बीच के कोनों पर प्रभामण्डल-युक्त उपासकों की नामितः ऊर्ध्व भाग की मूर्तियां बनी हैं। इन सब के ऊपर आलों के शिखरों को लगभग छूती हुई मुक्तामालाएं हैं जिनको देवताओं ने अपने अञ्जलिबद्ध हाथों में लिया हुआ है। इनके ऊपर गन्धर्व और अप्सराओं के आलों की एक और पंक्ति आरम्भ होती है। इनके हाथ में वीणा, मुरली आदि अनेक वाद्य हैं। एक वीणा तो आधुनिक चीनी पी-पा के सदृश है। चित्रों में मनुष्य घण्टों तक व्यग्र और मग्न रह सकता है। इनमें विभिन्नता और प्राणदायिनी शक्ति इतनी विशिष्ट है कि मनुष्य थक जाए अथवा दो चार मास में सब कुछ जान जाए पहचान जाए सो सम्भव नहीं। आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के लिए जिन विचारों और साधनों को यूरोप में इटली के कलाकारों ने १६वीं १७वीं शताब्दी में आत्मसात् किया था उनका प्रारम्भ युन्-काङ्ग में एक सहस्र वर्ष पूर्व हो चुका था।

ऊंची भित्तियों को सजाने और मूर्तियों से सुसोभित करने के लिए कई समस्याएं उपस्थित हुई होंगी। उनको कलाकारों ने सफलतापूर्वक पूरा किया। नीचे के भाग की चातक-कथाओं से लेकर छत के पास के उच्चतम भागों तक, तथा छत के प्रान्तों और मध्य में उत्कीर्ण मूर्तियों की गहराई और चौड़ाई इस प्रकार से अनुपात में हैं कि नीचे से देखने वाला उपासक पूर्ण आनन्द और पुण्य लाभ कर सके। श-ब्द्या-क्रो गुहा में ऐसा दिखाई पड़ रहा है कि जैसे चूष्टि की अप्रमेय उर्वरता और प्रचुरता यहाँ फूट पड़ी है।

क्रो-काङ्ग गुहा में जीर्णोद्धार बहुत निम्न स्तर के कलाकारों का किया हुआ है। इनके पास मूल भारतीय मूर्तियां नहीं जिनके सहारे वे उद्धार का कार्य ठीक निभा

सकते। गुहा में घुसते ही पञ्चमुख विष्णु की मूर्ति है जो गरुड पर आरूढ़ है। मूर्ति के चार हाथों में सूर्य और चन्द्रमा, धनुष् और पक्षी बड़े स्पष्ट दृष्टिगोचर हैं। एक बाहु टूट चुका। उसमें निश्चित रूप से बाण रहा होगा। इसी प्रकार की एक पञ्चमुख मूर्ति तुरुष्क देश के लोचो स्थान में भित्ति-चित्रों में मिली है।

भगवान् विष्णु की मूर्ति के सामने ही वृषभारूढ़ त्रिमूर्ति शिव शोभायमान हैं। तुन्-ह्लाङ्ग से भी ऐसी मूर्ति उपलब्ध हुई है। अवलोकितेश्वर भी तो शिव के ही अवतार हैं। युन्-काङ्क-में यही दो मूर्तियां हैं जिनके अनेक सिर और बाहु हैं। अन्य सब देव और बुद्ध एक-शीर्ष और द्वि-बाहु हैं। उनमें अनेकविध प्रज्ञा तथा अनेकविध आयुषधारिता का चित्रण अनेक शीर्ष तथा बाहुओं द्वारा नहीं किया गया। शिव की मूर्ति के नीचे एक लोकपाल हैं जिनके जटाजूट अथवा उष्णीषधारी सिर पर पंख लगे हैं। यह त्रिशूलधारी शिव और उनके वृषभ का भार सहार रहे हैं।

वू-ता-नुऊ पांच बड़ी गुहाओं का नाम है। पहले इनके सामने भवन बने हुए थे। अब केवल पहाड़ी में छिद्र रह गए हैं जिनमें कभी भवनों की छतों आदि की कड़ियां फंसी हुई थीं।

इन भवनों के अभाव में गुहाओं के अन्दर अधिक प्रकाश है। ऊपर की खिड़कियां ऐसे स्थान पर बनाई हैं कि अन्दर की मुख्य बुद्ध की मूर्तियों के मुख पर प्रकाश पड़ता रहे। इन गुहाओं में जीर्णोद्धार अधिक हुआ है, इससे मूर्तियों की शोभा बढ़ी नहीं किन्तु घट गई है और मूल रूप भी विकृत हो गए हैं। यत्न यह किया गया है कि गारे के लेप से मूर्तियों को अन्य मन्दिरों जैसा आधुनिक रूप दिया जाए। भित्तियों पर नई मूर्तियां तथा चित्र भी बनाए गए हैं।

गुहाओं के बाहर की मूर्तियां प्रायः घिस चुकी हैं। यहां वहां किसी मूर्ति का शीर्षादि कोई भाग बच रहा है। इन पर जो रंग का लेप था वह लगभग उड़ गया है।

बुद्ध की आंखें हल्की निमीलित हैं। और आप्यात्मिक ज्योति का अनुभव कर रही हैं। किन्तु जो कुछ आंखें देख रही हैं, हल्के से धीरे से बन्द किए हुए ओष्ठ, उसका वर्णन न करके ही मुग्ध हैं। यह जीवित निर्वाण का दृश्य है जो जीवन के स्रोतों का अनुभव करता है किन्तु जीवन के राम और द्वेष से पृथक् है।

रूडि और मूर्तिकार की प्रतिभा का स्थान स्थान पर संघर्ष है। प्रायः बैठे हुए बुद्ध और हस्त-बद्ध उपासक रूडि के अनुसार बनाए गए हैं। जीवन और द्रुतगति का अद्भुत निदर्शन अप्सराओं के उद्भयन में है। प्रत्येक अप्सरा का चित्रण इस प्रकार से किया गया है कि पत्थर पर कोई स्थान रिक्त न रह जाए। फिर भी प्रत्येक रेखा सजीव है। गति की सीधता के कारण उड़ते हुए परिधान की बन्ध रेखाएं सीधी ही गई हैं। शरीर के अंग वेध के समान लीकामत हो गए हैं।

प्रभूतरत्न न शाक्यमान का अपन आधं राजासन पर बिठाया और पुण्डरीक सूत्र का उपदेश करने के लिए प्रार्थना की— इसका चित्रण अद्भूत है।

युन्-काङ्क की सहस्रों मूर्तियों का मन पर अविस्मरणीय तथा अमिट सस्कार पड़ता है। जब शिला में जीवित जागृत प्राणवान् गुण डालना असाधारण सृष्टिकारी कला-विचारदों का चमत्कार है। इस चमत्कार के घटने में हथौड़ी और छेनी पाथिव साधन के अतिरिक्त कोई जटिल यन्त्र उनके पास न थे। इन मूर्तियों का घष्टों तक नेत्रों द्वारा पान करते करते मन प्रश्नों से भरपूर हो उठता है। आश्चर्य और गम्भीर भावनाएं एक दूसरे के पीछे और साथ साथ निरन्तर चलती रहती हैं। मूर्तिकार जो बताना चाहता था वह सुनाई देने लगता है। उसमें अनुपम आनन्द का आभास होने लगता है। उनका आध्यात्मिक संसार हमारा ही तो ससार था। फिर कैसे हम उनकी बात न समझते। समय का व्यवधान बाधक नहीं। जिन मूर्तिकारों ने पाषाण में प्राण डाले वे गम्भीर धार्मिक अनुभूति और जीवनलीला के प्रेम से भरे थे। प्रत्येक मूर्ति के निर्माण में मूर्तिकार ने नई साधना की है। मानव रूप को यद्यपि अलंकार के लिए प्रयोग किया गया है फिर भी मानव रूप में जडता नहीं आने पाई। चेतनता और जागरूकता का आभास अङ्ग अङ्ग से होता है।

जिन वामनो ने अपने बाहुओं पर छत्र उठाया हुआ है उनकी मांसपेशियां भार के सम्भालने में तनी हुई हैं। इसी प्रकार स्तूपों को उठाती हुई मूर्तियां भार से दब कर फँल गई हैं। उपासक ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे उन्होंने अभी अभी घुटने टेके हों। उनके परिधान पीछे की ओर उड़े जा रहे हैं, अभी नीचे नहीं बैठे। पयासनस्य बोधिसत्त्व ऐसे लगते हैं जैसे अभी उठने वाले हो। खडो हुई मूर्तियों ने भी अभी अभी पाव आगे बढ़ाए हैं। थकावट से, कुछ एक ओर को, श्रोणीभाग झुका हुआ है। हाथ जोड़ने में आराधना की भावना भरी है। गन्धर्व और अप्सराएं बिना पंखों के उड़ रही हैं जैसे उनके शरीरों में भार ही नहीं। किन्तु इस शक्ति से आगे आ रही है कि वे निर्जीव नहीं किन्तु अति सबल और सजीव हैं। प्रभामण्डल के प्रान्तों में अथवा छतों में अप्सराएं और उनके परिधान एक दूसरे का पीछा करते हुए अपने उद्वयन-नैपुण्य से क्षिप्रकारी ऊंचे नीचे उड़ते हुए कलबिच्छों के समान शोभायमान हैं।

युन्-काङ्क की कला में जापान की सुइको कला का मूल है। जिस प्रकार वर्षा ऋतु में सूखी भूमि से हरे अक्षुर उमड़ पड़ते हैं उसी प्रकार युन्-काङ्क की पहाड़ी में से उष्णतम और उदात्त भावनाएं, मानव के देवता और दैनिक जीवन फूट पड़े हैं। शिला में से क्षील का उद्भव हुआ है।

बड़ी बड़ी मूर्तियों पर आवस्ती के महान् चमत्कारों का निरूपण है। विरोधी और संशयात्मक विद्वानों को ध्यामूढ करने के लिए बुद्ध ने अपने शरीर को क्षतगुणित, सहस्र-

गुप्त कर दिया है ।

निरन्तर युद्ध की छोटी छोटी मूर्तियां केवल भित्ति-तलों पर ही नहीं किन्तु परिधान पर भी बनी हुई मिलती हैं । एक ही मूर्ति को बारंबार बनाना विकराल काल और मानवपिशाचों की विध्वंसकारिणी वृत्ति के साथ युद्ध करना है । जब सहस्रों लाखों मूर्तियां बनीं तभी तो अनेक शताब्दियों के पश्चात्, और मनुष्यों की उपेक्षा तथा जान बूझकर तोड़ने फोड़ने हरण करने के पश्चात् भी लंका से जापान तक और स्थान स्थान पर मन्दिरों में, पहाड़ियों में, अथवा खेतों और मरुभूमि की गोदी में आज भी कुछ मूर्तियां विद्यमान हैं ।

मूर्ति निर्माण कराने वालों और मूर्ति निर्माण करने वालों को यह पुण्य तो अवश्य मिला है कि आज हम उनको स्मरण करते हैं और उनके आभारी हैं ।

युन्-काङ्ग की कला में बीभत्स, रुद्र अथवा भयावह का अभाव है । चार लोकपाल, जो पीछे जाकर अन्य स्थानों पर इतने भयंकर रूप में चित्रित किए गए कि उनको असुर-राज और दानवराज कहा गया, वे युन्-काङ्ग में शक्तिशाली और आवश्यकतानुसार रुद्रकर्म के लिए उद्यत तो हैं, किन्तु उन्होंने अभी स्वयं रुद्ररूप धारण नहीं किया ।

फूल-वृष्टियों की सजावट में कमल का विशेष स्थान है । कमल की डण्डी, जड़, कलियां, फूल और पत्ते लहलहाती हुई बेलों का भी काम दे रहे हैं और मालाओं का भी ।

चीन के सम्राटों का प्रसिद्ध चिह्न सपाद और सदंष्ट्र नख युन्-काङ्ग में नहीं मिलता ।

वाराणसी के मृगदाव का धर्मचक्र और उसके दोनों पाश्वों में खड़े हुए मृग भोट और मोंगोल में प्रत्येक मन्दिर के प्रवेश-द्वार के ऊपर उपासक और यात्री का स्वागत करते हैं । वे भी युन्-काङ्ग में दृष्टिगोचर नहीं ।

बौद्धकला में मनुष्य की मूर्ति को भोग और विलास के स्तर से ऊंचा उठा कर आध्यात्मिक रूप दिया गया है ।

यदि हम युन्-काङ्ग की मूर्तियों को किसी अद्भुतागार में ले चलें तो वहां तद्रूपता और तल्लीनता नहीं आ सकती । अद्भुतागारों का वातावरण संकीर्ण और संकुचित रहता है । अपने मूल से हट जाने के कारण वातावरण में कृत्रिमता आ जाती है । मनुष्य सिला के दीर्घ जीवन का अनुमान नहीं कर पाता । धरती में से उभरती हुई चट्टानें पृथ्वी माता के अंग हैं । सहस्राक्षः मूर्तियां इन अंगों में प्राण संचार करती हैं । अद्भुतागार पर्वत के काय में प्राणसंचार कैसे दिखलाएगा । चारों ओर उड़ती हुई रैत और छँटी सी नदी युन्-काङ्ग के साथी हैं । युन्-काङ्ग अपने सक्ताओं सहित ही अपनी वास्तविक कहानी कह सकता है । युन्-काङ्ग तक पहुंचने का श्रम और समय यात्री को दर्शनों का

पान्न बनाता है ।

युन्-काङ्ग को विश्वविख्यात बनाने का श्रेय तोक्यो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक चूता इतो को है । यह यहाँ १९०२ में आए थे । उससे पूर्व युन्-काङ्ग अन्धकार में था ।

युन्-काङ्ग पहाड़ी के तीन भाग हैं । पहला भाग पूर्व में है । इसमें प्रथम और द्वितीय संख्या वाली दो गुहाएं हैं । पश्चिम में दो और गुहाएं हैं । संख्या तीन और चार । ये महत्त्वपूर्ण गुहाएं हैं ।

दूसरे भाग में नौ गुहाएं हैं । ये श-फो स्स 石佛龕 विहार के अंग हैं । इनकी संख्या पांच से तेरह तक है । पांचवीं और छठी गुहा के सामने चार तल ऊंचे भवन पहाड़ी के साथ ही लगे हुए हैं । सातवी गुहा के सामने भी तीन भूमि ऊंचा भवन है ।

तीसरे भाग में जो और आगे जाकर पश्चिम में है सात गुहाएं हैं । इनकी संख्या १४ से २० तक है । २० वीं गुहा का अग्रिम भाग टूट गया है । और इसके टूटने से सुविशाल बुद्ध मूर्ति सामने से दिखाई पड़ती है । इस विशाल बुद्ध के पश्चिम में सैंकड़ों छोटी छोटी गुहाएं और आले बने हैं । किन्तु ये विकृत रूप में हैं ।

युन्-काङ्ग गुहाओं का कार्य उत्तर वेइ वंश के सम्राट् वन्-छङ्ग 文成帝 के समय में आरम्भ हुआ । वेइ वंश के इतिहास 魏書卷之九十四 के अनुसार थान्-याओ 檀曜 भिक्षु को सम्राट् ने राजधानी में बुलाया और पहली बार पांच गुहाएं खोदी गईं । वन्-छङ्ग के पूर्ववर्ती सम्राट् थाइ-वू 高祖 चीनी इतिहास में बुद्ध-धर्म के उत्पीडन और उन्मूलन के लिए सुप्रसिद्ध हैं । ५०३ विक्रम में इन्होंने आदेश दिया कि समस्त बौद्ध मूर्तियां और साहित्य जला दिया जाए तथा समस्त बौद्ध भिक्षुओं का, चाहे वे बाल, युवा अथवा वृद्ध हों, वध कर दिया जाए । इस आदेश का बड़े कठोर रूप से निष्पादन हुआ । किन्तु थाइ-वू की मृत्यु के पश्चात्, उनके उत्तराधिकारी पौत्र वन्-छङ्ग ने गद्दी पर बैठते ही ५०९ विक्रम में इस आदेश का निराकरण किया । थान्-याओ को उच्चतम अधिकारि-वद दिया गया और ५१७ विक्रम में युन्-काङ्ग की गुहाओं का कार्य आरम्भ हुआ ।

युन्-काङ्ग की खुदाई के तीन प्रयोजन हैं—

(१) थाइ-वू के अत्याचारों का प्रायश्चित्त ।

(२) वेइ वंश के पिछले पांच सम्राटों के कल्याण की कामना ।

और (३) थान्-याओ का धर्म प्रसार तथा धर्म रक्षा के लिए महान् प्रयत्न तथा अभ्यर्चना ।

युन्-काङ्ग की गुहाओं में प्रायः मध्य में बर्गाकार स्तम्भ होता है, इसके चारों ओर मूर्तियां । मध्य-स्तम्भ और उसके चारों ओर मूर्तियों का होना युन्-काङ्ग की विशेषता है । पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए चीन, कोरिया और जापान में सुवर्ण-प्रभास-सूत्र का प्रयोग होता रहा है । सुवर्ण-प्रभास-सूत्र का अनुसरण करके ही युन्-काङ्ग की गुहाओं की

खुदाई हुई थी।

सम्राट् वन्-छाङ्ग ने प्रावर्षिचत्त के रूप में गद्दी पर बैठने के दो वर्ष पश्चात् ही लखे हुए शाक्यमुनि की पांच मूर्तियां ताम्बे में ढलवाई थीं। और अपने पांच पूर्वजों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए पहली पांच गुहाएं खुदवाई थीं। ये पहली गुहाएं १६, १७, १८, १९ और २० होनी चाहिए।

फ़ेइ-चाङ्ग-फ़ाङ्ग 魏 世 宗 ने उत्तरोत्तर युगों में त्रिरत्नविवरण 魏 代 三 寶 記 नामक ग्रन्थ लिखा है। इसमें उसने थान्-याओ के धर्मप्रचार सम्बन्धी चार खण्डों वाले ग्रन्थ तथा युन्-काङ्ग की गुहाओं की खुदाई का वर्णन किया है। युन्-काङ्ग की गुहाओं में बुद्ध की जीवनी, सद्धर्मपुष्करिक, विमलकीर्ति तथा सुवर्णप्रभास के आधार पर चित्र, मूर्ति आदि कार्य किया गया है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि गुहाओं के आरम्भ होने से पांच वर्ष पूर्व कुछ भारतीय भिक्षु यहां आए थे। ये अपने साथ तीन बुद्ध मूर्तियां लाए थे। इनका युन्-काङ्ग की मूर्तियों पर प्रभाव पड़ा है। ११ वीं गुहा में ५४० विक्रम, और १७ वीं गुहा में ५४६ विक्रम के शिलालेख हैं। ५१७ विक्रम से आरम्भ कर के ३३ वर्ष तक अर्थात् जब तक राजधानी उठा कर लो-याङ्ग 洛 陽 ले जाई गई अर्थात् ५५० विक्रम तक, मुख्य रूप से इन गुहाओं का निर्माण हुआ। ५५० विक्रम के पश्चात् भी कुछ वर्षों तक कार्य होता रहा। यह ५५२ विक्रम तिथि वाले एक और शिलालेख से सिद्ध होता है।

युन्-काङ्ग की बुद्ध-मूर्तियों की, जो प्रथम पांच गुहाओं में बनी हैं, ऊंचाई २० से २४ हाथ तक की है। ५ वीं गुहा की प्रधान मूर्ति ३४ हाथ ऊंची है। वर्तमान मूर्तियों में से यह विशालतम मूर्तियों में से है। १३ वीं गुहा में बैठे हुए मंत्रेय ३० हाथ ऊंचे हैं। अनुमान कीजिए इन गुहाओं की विशालता का। इन बड़ी बड़ी गुहाओं में चारों भित्तियां और अन्दर की छत सहस्र-बुद्ध मूर्तियों, उड़ती हुई अप्सराओं और फूल-बूटों से भरपूर हैं। ये गुहाएं सौन्दर्य की निधि हैं। ६ठी गुहा का कला-कौशल निम्न्येय है। ७ वीं, ८ वीं, ९ वीं, १० वीं, ११ वीं, १२ वीं, १३ वीं गुहाओं में बंभव कुछ थोड़ा हो गया है। विचारों की सम्पन्नता, विभिन्नता और कलाकौशल में युन्-काङ्ग की गुहाएं उत्तर वेइ वंश के कलाकारों की प्रतिभा की प्रतिनिधि और निधि हैं।

इस प्रकार का गुहा-निर्माण-कार्य चीन में पहली बार हुआ है। यहां सैंकड़ों कलाकारों ने सहयोग दिया होगा। उनमें इतनी प्रवीणता कहाँ से आई, इस प्रश्न का उत्तर पूर्णतः सप्रमाण नहीं दिया जा सकता। किन्तु यह निश्चित है कि मगध और लंका के भिक्षु कलाकार यहां आए थे और उन्होंने चीन में गुप्त कला का प्रवेश कराया था।

चीनी ऐतिहासिक ग्रन्थों और शिलालेखों के अनुसार चीन की सीमा पर तुन्-झाङ्ग में मिङ्ग-शा-सान् 明 少 山 पहाड़ी पर भिक्षु लो-स्तुन् 洛 陽 ने मूर्तियों 魏 世 宗 के

ध्येन्-येन् 卍 के द्वितीय वर्ष में अर्थात् ४२३ विक्रम में गुफाएं आरम्भ कीं। तत्पश्चात् उत्तर ल्याङ्ग 北 嶺 के निवासी चू-छू-मङ्ग-शुन् 沮 渠 宗 繼 ने सान्-वेइ-शान् 三 皇 山 जो मिङ्ग-शा-शान् के पूर्व में था दूसरी गुहाओं का आरम्भ किया। चू-छू-मङ्ग-शुन् का काल ४५९ से ५०० विक्रम तक है।

तुन्-ह्लाङ्ग में शिव, विष्णु और विनायक भारत की समीपता के अभिव्यञ्जक हैं। अनेक बुद्धों बोधिसत्त्वों की मुखमुद्रा और वेशभूषा में भारतीय शैली की झलक है।

चू-छू-मङ्ग-शुन् उत्तर वेइ के महाराज थाइ-वू का मित्र था। वेइ और ल्याङ्ग वंश का विवाह-सम्बन्ध भी था। दोनों में ४९६ विक्रम में युद्ध हुआ जिसमें थाइ-वू की विजय हुई और ल्याङ्ग प्रान्त 嶺 州 के तीस सहस्र परिवार थाइ-वू की राजधानी फिङ्ग-छङ्ग 平 城 में लाकर बसाए गए। इससे स्पष्ट है कि युन्-काङ्ग के निर्माण में तुन्-ह्लाङ्ग के कलाकारों का हाथ है।

श-श्येन् 善 旆 जो काश्मीर के राजकुमार थे और बौद्ध भिक्षु के रूप में ल्याङ्ग में रहा करते थे, उत्तर वेइ की विजय के पश्चात् फिङ्ग-छङ्ग में आए। जब तक बौद्ध धर्म पर सकट रहा तब तक वे भिक्षु-वैश छोड़ कर चिकित्सक का कार्य करते रहे। किन्तु नया युग आरम्भ होते ही उनको राज्य में उच्च स्थान मिला और उनके उत्तराधिकारी भिक्षु थान्-याओ ने युन्-काङ्ग गुहाओं का निर्माण आरम्भ किया। इन्ही दिनों में पांच भिक्षु बुद्ध मूर्तियां लेकर लका से चीन आए। इन मूर्तियों की कला और विभूति से सब चमत्कृत हुए।

१ ली गुहा— तुङ्ग-था-नुङ्ग 窟 塔 洞

२ री गुहा— श-था-नुङ्ग 善 旆 洞। इस गुहा का त्रिभूमि-स्तूप सुम्भवतः सद्धर्म-पुण्डरीकसूत्र में वर्णित प्रभातरत्नस्तूप का प्रतिबिम्ब है और प्रथम भूमि के मध्य में साथ साथ बैठे हुए दो बुद्ध शाक्यमुनि और प्रभातरत्न हैं।

३ री गुहा— स्वी-ता-फो-नुङ्ग 窟 大 佛 洞। इस गुहा में बहुत बड़े परिमाण पर कार्य आरम्भ किया गया था, पर काम अधूरा छोड़ दिया गया। यदि काम कहीं पूरा हो जाता तो इसका बौद्ध कला के इतिहास में अद्भुत स्थान होता। ६० हाथ ऊंची पहाड़ी को खोद कर गुहा के आगे एक अद्भुत आंगन बनाया गया। दाईं और बाईं ओर दो द्वार। इनके ऊपर खिड़कियां। दोनों ओर दो सुविशाल बुद्ध मूर्तियां बननी थीं किन्तु इनमें से केवल एक ही पूरी हो सकी।

गुहा में दो कोष्ठ हैं। अन्दर के भाग में ४८ हाथ चौड़ा विशाल स्तम्भ है। इसके पश्चिम में सुविशाल बुद्ध मूर्ति उत्कीर्ण है। मुख्य मूर्ति बैठे हुए बुद्ध की है। पांच से ऊपर इसकी ऊंचाई १८ हाथ है। ओजस्विता और महत्ता इसके विशिष्ट गुण हैं। युन्-काङ्ग की अन्य मूर्तियों से यह विशिष्ट है। उत्तरीय से दोनों कंधे ढके हुए हैं। परिधान की रेखाएं प्रवाही और बलसम्पक हैं।

दोनों उपासक बोधिसत्त्व दस हाथ ऊंचे हैं। इनकी मुखमुद्रा मुख्य मूर्ति के सदृश है। इन्होंने मुकुट और कर्णाभूषण पहिने हुए हैं। मूर्तियां सम-विभक्तांग हैं और इनके परिधानों में शोभा है। प्रभामण्डल मणि-रूप में है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट् याज्ञिक इस गुहा को अपने माता पिता की पुण्य स्मृति में अर्पण करना चाहते थे। वे आधा ही काम पूरा कर पाए थे अर्थात् अभी मातृ-कल्याण के लिए दूसरी त्रिमूर्ति का प्रारम्भ न कर पाए थे कि उनकी हत्या की गई और महत् कार्य अधूरा रह गया।

इस गुहा के आभ्यन्तर कोष्ठ का अगला भाग ८० हाथ के लगभग चौड़ा है। इस समय छत २४ हाथ ऊंची है किन्तु सम्भावना है कि मूल कुट्टिम दो चार हाथ नीचा रहा होगा।

५ वीं गुहा— ता-फ्रो-नुऊ। जैसा कि हम पूर्व कह आए हैं इस गुहा के आगे चतुर्भूमि भवन बना हुआ है, जिससे पहाड़ी के बाहर के तल की रक्षा हुई है। गुहा कुछ अण्डाकार है। पूर्व से पश्चिम की ओर की चौड़ाई ४४ हाथ है और उत्तर से दक्षिण की ओर ३४ हाथ। बंठे हुए शाक्यमुनि की ३३ हाथ की मूर्ति पर्वत में से उत्कीर्ण है। घुटनों के बीच का अन्तराय ३१ हाथ और अनामिका ५ हाथ लम्बी है। यह मूर्ति केवल युन्-काऊ में नहीं किन्तु सभी पर्वत में से उत्कीर्ण बुद्ध-मूर्तियों में से विशालतमा है। इतना बड़ा आकार होते हुए भी अंगों का समविभाजन है। कई बार जीर्णोद्धार होने पर भी मुख की गरिमा, गाम्भीर्य और प्रभुता अभी तक शेष हैं। उत्तमांग के पीछे विशाल प्रभामण्डल है, जो अर्ध-चन्द्राकार छस तक पहुंचता है। किन्तु यह अधिकांश विकृत हो चुका है और उत्तरकालीन जीर्णोद्धार तथा रंग-लेपों के कारण इसका मूल स्वरूप अब दिखाई नहीं पड़ता।

दो उपासक जो साथ सड़े हैं और दो उपासक जो बुद्ध के दोनों ओर सड़े हैं वे भी पहाड़ी में से ही उत्कीर्ण हैं।

इस गुहा का उत्खनन सम्राट् श्याओ-बन् ने अपने पिता स्येन्-बन् के कल्याण के लिए किया था। इस गुहा की कला उत्तर वेद की कला का शिखर है।

६ वीं गुहा— हम इस गुहा के केवल एक दृश्य का वर्णन करेंगे। शाक्यमुनि भवन में बंठे हैं। बाईं ओर मञ्जुश्री, दाईं ओर विमलकीर्ति, नीचे धूपधानी तथा अनेक बोधिसत्त्व। विमलकीर्ति मञ्जुश्री का धर्मोपदेश सुन रहे हैं। विमलकीर्ति के दाएं हाथ में चमरी है और बायां हाथ भूमि पर टिका हुआ है। मञ्जुश्री का दायां हाथ ऊपर उठा हुआ है जिसकी दो अंगुलियां द्रव्यों के द्वैत के प्रतीक रूप में बाहर निकली हुई हैं। मञ्जुश्री का मुख खुला है और इसमें से नन्दीर एकता के विचार चाराप्रवाह में निकल रहे हैं। पीछे सड़े हुए चार बोधिसत्त्व उपदेश से साक्षात् प्रभावित हैं और स्तुति में उन्होंने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

८ वीं गुहा— इस गुहा में विशेष द्रष्टव्य शिव और विष्णु की मूर्तियां हैं। मूर्तियां

स्पष्ट और सुन्दर हैं ।

१० वीं गुहा— शाक्य-बुद्ध 𑖀𑖩𑖪𑖫 । नौवीं गुहा में श्यावो-शी-ध्येन् लिखा है । श्यावो का अर्थ छोटा, शी का अर्थ पश्चिम, और ध्येन् का अर्थ स्वर्गभूमि, अर्थात् यह गुफा लघु भारत है । ये अक्षर छिद्र वंश के हैं और भारतवर्ष के प्रति अगाध श्रद्धा के व्यञ्जक हैं ।

११ वीं गुहा— पूर्वभित्ति के ऊपर के भाग में थाइ-हो 𑖀𑖩𑖪𑖫 के सप्तम वर्ष अर्थात् ५४० विक्रम तिथि वाला शिलालेख है । इस शिलालेख में महास्थामप्राप्त 𑖀𑖩𑖪𑖫 और अवलोकितेश्वर 𑖀𑖩𑖪𑖫 के अक्षर स्पष्ट और सुपाठ्य हैं । इस शिलालेख में सूचना है कि फ्रा-त्सुङ्ग 𑖀𑖩𑖪𑖫 ग्रामोपाध्याय और अन्य ५४ ग्रामनिवासियों ने ९५ बुद्ध और बोधिसत्त्वों की मूर्तियां स्थापित कीं और प्रार्थना की कि सम्राट् और सम्राज्ञी, राजकुमार तथा सात पीढ़ियों के भूतपूर्व उपाध्याय और पितृगण का कल्याण हो ।

१७ वीं गुहा— मुख्य मूर्ति मंत्रेय बोधिसत्त्व वर्गाकार आसन पर बैठी हुई है । इसका सिर छत तक पहुँचना है । इसकी ऊँचाई २८ हाथ है । भाव सौम्य और ओजस्वी है ।

पूर्वीय पादर्व-भित्ति के ऊपरी भाग पर गुहा-कुट्टिम से २२ हाथ ऊँचे ५४६ विक्रम का शिलालेख है । इस शिलालेख के अनुसार भिक्षुणी ह्वी-तिङ्ग 𑖀𑖩𑖪𑖫 की कामना से शाक्यमुनि, प्रभातरत्न और मंत्रेय की मूर्तियों की स्थापना की गई । भिक्षुणी भयंकर रोग में ग्रस्त थी । इस रोग से मुक्ति पाने के लिए, आध्यात्मिक कल्याण के लिए, तथा माता पिता गुरुजन और सब प्राणियों की पुण्याप्ति के लिए मूर्तियों की स्थापना की गई ।

इस शिलालेख में प्रभातरत्न के उल्लेख से सिद्ध होता है कि युन्-काङ्ग का आधार सद्धमंपुण्डरीक-सूत्र है ।

सा-बुद्ध नगर में पूर्व द्वार के भीतर दो विहार हैं । ये एक दूसरे के साथ लगे हुए हैं । इनमें से एक ऊँचे स्थान पर है दूसरा नीचे स्थान पर । इनके नाम हैं उपरि ह्वी-यन् स्स 𑖀𑖩𑖪𑖫 और अधो ह्वी-यन् स्स 𑖀𑖩𑖪𑖫 ।

उपरि ह्वी-यन् स्स विहार सम्भवतः चिङ्ग-मिङ्ग 𑖀𑖩𑖪𑖫 के अष्टम वर्ष अर्थात् १११९ विक्रम में बना था । यदि यह अनुमान सत्य हो, तो यह चीन के विद्यमान काष्ठ-भवनों में से प्राचीनतम है । बुद्ध-भवन एक तल ऊँचा है । सामने तीन बड़े बड़े फाटक हैं । मन्दिर में वैरोचन-बुद्ध के आसपास अक्षोभ्य, अमोघसिद्धि 𑖀𑖩𑖪𑖫, अमिताभ 𑖀𑖩𑖪𑖫, और रत्नसम्भय 𑖀𑖩𑖪𑖫 हैं । मूर्तियों, उनके आसनों और श्रमाम्बुजलों में, लामा प्रभाव स्पष्ट है । दोनों पादर्वों पर दस देव खड़े हैं । भित्तियों पर बनी हुई मूर्तियां नई हैं ।

इनका उद्धार १९३२ से १९६८ विक्रम तक हुआ था ।

प्रभामण्डल के शिखर पर गरुड नाग-कन्याओं को पकड़ रहा है । यह भी लामा-प्रभाव है ।

अषो ह्ला-यन् स्स विहार में भागवत पुस्तकालय मुख्य भवन है । पहले दोनों विहारों, उपरि ह्ला-यन् स्स और अषो ह्ला-यन् स्स को, महा ह्ला-यन् स्स कहा जाता था । शाक्यमुनि के दोनों ओर मेषज्यगुरु ॐ ॐ और अमिताभ की मूर्तियां हैं । वास्तु-कला की दृष्टि से यह भवन त्याओ ॐ युग का है । तीन भित्तियों के साथ साथ त्रिपिटक-संग्रह रखा हुआ है ।

२४-५-५५

आज ता-नुङ्ग की कोयले की खान संख्या तीन में गए । यथाविधि स्वागत-कोष्ठ में उष्ण जल और चाए मिली । खान के अध्यक्ष और युवक-संघ के नेता उपस्थित थे । खान के सम्बन्ध में बहुत सी सूचनाएं इनसे मिलीं । ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्थान साम्यवादियों को पर्याप्त संघर्ष के पश्चात् मिला । जाते समय दूसरे पक्ष के लोग खान को बिगाड़ गए । पानी भर गया और काम बन्द हो गया । थोड़े से श्रमिक रह गए जो अपने हाथों से कोयला खोद कर अपनी पीठ पर लाद कर बाहर बेच आया करते थे ।

पिछले छः वर्षों में खान अपनी पूर्वावस्था से भी आगे बढ़ गई है । हमको बतलाया गया कि अब अन्दर बाहर ३६०० व्यक्ति काम करते हैं और प्रतिदिन ३००० प्रवर्त (ton) कोयला निकलता है । कुछ श्रमिकों के लिए नए घर बनाए गए हैं । छोटे परिवारों को एक कोष्ठ और बड़े परिवारों को दो कोष्ठ मिले हैं । खान के अध्यक्ष भी दो कोष्ठों में रहते हैं । उपस्कर (furniture) बहुत साधारण है ।

बेतन की आठ श्रेणियां हैं । प्रवेश करते ही नए व्यक्ति को २४ युवान् प्रतिमास मिलते हैं । सबसे ऊंचा बेतन मुख्य अभियन्ता (engineer) का है जो १९२ युवान् है ।

प्रबन्धादि के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछने के पश्चात् हम लोग खान में घुसने के लिए सज्ज हुए । पहले तो अध्यक्ष ने कहा सुदर्शना को कठिनाई होगी । अन्दर कीचड़ है, अन्धेरा है, बहुत दूर चलना पड़ेगा । किन्तु सुदर्शना ने कहा कि मैं पीछे रह कर भी क्या करूंगी ।

धुंध के नए जूते पहने पहने । अपने जूते उतार दिए । केवल पाद्या रहने दी । कोरी पतलून और कोय कोट पहना । कोट को पतलून के अन्दर किया और ऊपर चमड़े की पेटी बांधी । इस पेटी में अजय-दीप की विद्युत्-समूहा (battery) लगाई जाती है जिसका भार पर्याप्त था । दो सेर के लगभग होगा । पतलून के पांच के समीप बटन लगाए और पतलून के ऊपर दोनों टांगों पर पट्टियां बांधीं । अग्निबन्ध पर कोट के भी

बटन लगाए। गले में कोट के नीचे एक मोटा प्रोजेक्ट लपेटा जिससे कोयले की धूल ग्रीवा पर न जाए। सिर पर कपड़े की टोपी माथे पर आगे बढ़ी हुई और उसके ऊपर बहुत मही किन्तु परमावश्यक बीरा (willow) की दृढ़ किन्तु हलकी रस्मार्थ टोपी। हमारी आकृति सर्वथा श्रमिकों के समान बन गई। हम अपना रूपित्र (camera) साथ नहीं लाए थे क्योंकि खान में रूपित्र नहीं ले जाया जा सकता। न ही किसी और के पास रूपित्र था। सुदर्शना का चित्र तो विशेष रूप से स्मारक-चित्र होता।

खान में उतरने के लिए बिजली का प्रबन्ध नहीं। १६ प्रति शत ढलान है। श्रमिक गाड़ियों से नीचे जाते हैं। यह गाड़ियां हमने बाहर रखी हुई देखीं। आजकल ये गाड़ियां काम में नहीं आ रही थीं नहीं तो हमें पैदल क्यों ले जाया जाता। खान का मार्ग आठ नौ पाद चौड़ा होगा। बीच में लोहे की पट्टी है। कोयले के छोटे डिब्बों के लिए। नीचे उतरने में आरम्भ में कठिनाई होती है किन्तु धीरे धीरे अभ्यास पड़ जाता है। पहली बार की उतराई आदि से अन्त तक सावधानी और आशका तथा भय से पूर्ण रहती है। कहीं पानी रिस रहा है, कहीं बह रहा है। कहीं छोटे जलप्रपातों की ध्वनि हो रही है। इतनी अच्छी बात है कि कहीं फिसलन नहीं। कोयले की भरी अथवा रिक्त गाड़ियां चलने की सूचना तार की घरघर ध्वनि से मिल जाती है। तार गाड़ियों को खींचता है। इस तार के चलने के लिए पट्टियों के बीच में घर्घरिया बनी हुई है। निर्जन में यह ध्वनि कुछ डरावनी सी लगती है। न जाने किस ओर से और कब कोयले की गाड़िया हमारे ऊपर आ पड़े। कई स्थानों पर मार्ग बहुत ही छोटा है। किन्तु कहीं कहीं अपेक्षा-दृष्टि से राजमार्ग प्रतीत होता है। यहाँ दुहरी पट्टी बिछी है। दोनों पाइलों और छन पर मोटे मोटे चीड़ के स्तम्भ शोभायमान हैं। दूर दूर बिजली के दीप लगे हैं। चलने की भूमि पर्याप्त समतल है। किन्तु इस राजमार्ग पर चलते हुए तो कोयला खुदने वाले स्थान तक नहीं पहुंच सकेंगे। कभी दाएँ कभी बाएँ छोटी छोटी गलियों में मुड़ते हैं। ये सुरंगें सर्वथा कोयले के बीच में से बनी हुई हैं। यहाँ लोहे की पट्टी भी नहीं। छत इतनी नीची है कि नम्र-भाव से पीठ को दोहरी किए हुए, साढ़े पांच पाद की ऊंचाई को तीन पाद की नीचाई तक लाकर ही प्रगति करना सम्भव है। कहीं भूल हुई और पीठ कुछ ऊंची उठी तो टोपी छन में जाकर लगती है और पीठ फिर दुहरी हो जाती है। पेटों में बंधा हुआ दीप हमारा नेतृत्व कर रहा है। जहाँ भूमि बहुत विषम है वहाँ आगे पीछे दो व्यक्ति हाथ पकड़ कर सहारा देते हैं। अब फिर बड़े मार्ग पर आ गए। सामने से कोयले के भरे हुए डिब्बे लिखे आ रहे हैं। हम एक ओर हट गए। डिब्बे पास से निकल गए। उनको खींचने वाला तार भी और उसकी घरघर ध्वनि दोनों समाप्त हुए। ये गाड़ियां हमको अपने तीन चष्टे के खनि-निवास में कई बार मिलीं।

जिधर से क्रेनका कट कट कर आ रहा था जब उधर पहुंचे, तब कोयला कटना

बन्द था। जो कोयला कट चुका था उसको १५, २० श्रमिक एक लोहे की खुली नाली में डाल रहे थे। इस नाली की चौड़ाई दो पाद के लगभग होगी। गहराई एक पाद से अधिक न थी। इस नाली के बीच में लोहे का पटा लगातार चल रहा था।

इस आशा में कि काटने वाला यन्त्र शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ करेगा हमने प्रतीक्षा की। एक बज चुका था। लकड़ी के खम्भों पर बैठ गए। उष्ण जल, विक्षार जल और बिस्कुट खाने लगे। इस अल्पाहार के पश्चात् एक घण्टा और ठहरने के लिए हमसे कहा गया। अब दो बज चुके थे। हमने प्रतीक्षा करना आवश्यक न समझा। धीरे धीरे चलते चलते ४० कला में ऊपर आ पहुँचे। ऊपर का प्रकाश अन्धा करने वाला प्रतीत हुआ। प्रकाश की चम्पता का प्रकाश में रहते हुए अनुमान करना सम्भव नहीं।

२७-५-५५

जब से हम चीन आए तब से तुम्-हवाइ जाने का प्रबन्ध आरम्भ हुआ। एक मास की सज्जा और प्रतीक्षा के पश्चात् आज २७ को प्रातः ३ बजे उठ कर सम्भार बांध कर ५ बजे प्रातराश करके साढ़े पांच बजे विमान-पत्तन पर जा पहुँचे। इस बार हमारे साथ भाचित्रक (photographer) भी चला। भाचित्रक को साथ लेने के लिए बड़ा यत्न करना पड़ा। आज तक किसी भी अतिथि ने भाचित्रक की मांग न की थी। हम पहले विचित्र अतिथि थे जिन्होंने शासन से यह मांग की। अनुभवी भाचित्रक बूढ़ने और निश्चय करने के लिए कई सप्ताह लगे। भाचित्रक अपने साथ क्या सामग्री ले चले अथवा कौनसी सामग्री पेइ-चिङ्ग में मिल सकती है और कितनी मात्रा में, यह बहुत गम्भीर चिन्ता का प्रश्न बना रहा। अन्त में जो कुछ सामग्री हम भारतवर्ष और हॉङ्ग-कॉङ्ग से लाए थे उसी को साथ लेकर चलना पड़ा। रंगीन चित्रपट्टियां चीन में नहीं मिलीं। हॉङ्ग-कॉङ्ग से भी मंगाने का कोई प्रबन्ध न हो सका। भारतीय दूतावास ने बड़ी कठिनाई से दो रंगीन चित्रपट्टियां बूढ़ कर दीं और भारतीय दूतावास के भाचित्रक ने अपना स्फुर-दीप (flash lamp) दिया। भाचित्रक अपने साथ अपना लाइका और रोलीफ्लेक्स रूपित्र ले चला।

वर्षा बड़ाघड़ हो रही थी। श्री गोवर्धन ने तो कल ही कहा था कि ऋतु अच्छा नहीं है, किन्तु विमानपत्तन-अधिकारी ने कहा कि वर्षा पेइ-चिङ्ग में हो रही है, आगे जाकर ऋतु निर्मोच है।

धूसरवर्ण, २१ आसन वाला, द्विगन्त्रयुक्त, स्त्री चालक चालित स्त्री विमान १३ यात्रियों को लेकर मन्द मन्द उड़ने लगा। लगातार पीने दो घण्टे तक विमान ऊंचा नीचा डोलता रहा। शान्-सी प्रान्त की राजधानी में उतरे। आधा घण्टा ठहरे। पीने नी पर फिर उड़े। पूरे पीने म्यारह प्रसिद्ध शी-आन् नगरी में उतरे। हमारा स्वागत करने

के लिए विदेश-विभाग, संस्कृति-विभाग, विज्ञान-विभाग और शिक्षा-विभाग के चार सज्जन उपस्थित थे । विमान-पत्तन पर ही भोजन का प्रबन्ध था । ग्लास नामक फल (cherries) और संतरे तथा चाए से हमने उदरपूर्ति की । साढ़े ग्यारह आगे चलने का समय हुआ । शी-आन् की जनसंख्या दस लाख के लगभग है । पिछले १५०० वर्षों से यह नगर बौद्ध केन्द्र रहा है ।

ठीक डेढ़ बजे डोलते डोलते, हिलते जुलते मिट्टी की पहाड़ियों को पार करते हुए कान्-सू प्रान्त की राजधानी लान्-चाओ में हमारे विमान ने अपनी आज की यात्रा समाप्त की । चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ लान्-चाओ सुन्दर दृश्य है । पहाड़ियाँ रेत और मिट्टी की बनी हुई हैं । नगर के चारों ओर बहुत मोटी भित्ति है । यहां मुसलमानों की अच्छी बस्ती है । फिर भी चीनियों की अधिक संख्या है । लिखने और पढ़ने के लिए चीनी ही एकमात्र भाषा है । नगर की भित्ति के साथ साथ मटियाले रंग की पीत-नदी बहती है । नदी के पार उच्चतम शिखर पर सप्तभूमि बौद्ध स्तूप विराजमान है । उसके नीचे गुफा-रूप में घर भी बने हुए हैं । आज इन घरों में वीगूर और सिन्-क्याङ्ग के मुसलमान रहते हैं । वीगूर मुसलमान कई रंगों से निकली हुई टोपी पहनते हैं, किन्तु सिन्-क्याङ्ग के मुसलमान केवल श्वेत टोपी ।

पौने चार बजे हम लोगो ने दोपहर का भोजन किया । चीनी प्रतिवार हमको नया निरामिष भोजन देते हैं । किन्तु स्वाद में सदा रुचिकर नहीं होता । उबले हुए चावल और मक्खन में भुने हुए आलू यही दो पदार्थ हैं जो हम स्वयं कह कर अपने लिए बनवाते हैं, और जो हमारे लिए रुचिकर होते हैं । जिह्वारस भी प्रत्येक जाति का विभिन्न है । चीनी भोजन के पीछे महसूस वर्षों का इतिहास है । उसी प्रकार से हमारा भोजन भी हमारे इतिहास का अंग है । हम तो भला शाकाहारी ठहरे, मांसाहारी भी कष्ट अनुभव करते हैं । हमारे प्रधान मन्त्री को तो साप का रस पिलाया गया था । उस रस का आस्वादन हमारे राजदूत श्री राघवन् और परामर्शदाता श्री गोवर्धन ने भी किया था किन्तु बिना जाने हुए ।

लान्-चाओ की सड़कों पर गाड़ी पीत-नदी का मटियाला पानी बांटती फिरती है । इसी पानी को तपा कर लोग पीते हैं । मिट्टी नीचे बिछाने के लिए सम्भवतः फटकरी का प्रयोग करते हैं ।

चीन में ठण्डा पानी नहीं पिया जाता । प्रातः से सायं तक दो चार चाए की पत्तियाँ डाल कर सभी लोग उष्ण जल का सेवन करते हैं ।

लान्-चाओ के अधिकारियों ने सुवर्षना के लिए एक सखी भेजी । मार्ग में शीत का निवारण करने के लिए नीले स्विटर (sweater) तथा लम्बे बालों वाले दो कपड़े भेजे ।

आज प्रातः कुछ विलम्ब से उठे। साढ़े छः बजे होंगे। स्वागत-मण्डल के तीन सज्जन और एक महिला आठ बजे प्रातराश में हमारे साथ सम्मिलित हुए। प्रातराश के लिए सूखी जलेबियों जैसी मिठाई बनाई गई।

लान्-चाओ में कोमल नाख और सुगन्धित सेब बहुत अच्छे होते हैं। यहां के कालिन्ध और दशांगुल भी प्रसिद्ध हैं। किन्तु आजकल उनका ऋतु नहीं। श्रीमती गोवर्धन ने चलते समय विशेष रूप से कहा था कि यदि भार अधिक न हो तो मेरे लिए लान्-चाओ से दशांगुल लाइएगा। विपणि में हरे रंग की सूखी द्राक्षा स्थान स्थान पर मिल रही थीं। सेब के रस के पापड़ भी।

प्रातः ६ बजे कर १० कला पर चू-व्यान् से विमान चला था। हमको सूचना मिली कि यही विमान लौट कर जाएगा। हम साढ़े आठ बजे विमानक्षेत्र पर पहुंच गए। चू-व्यान् से विमान पीने नौ बजे आया और तब पता लगा कि यह विमान आज लौट कर न जाएगा। दूसरा विमान पूर्व की ओर से ९ बजे पहुंचा। सवा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। सवा दस पर विमान उड़ा। और ढाई घण्टे में चू-व्यान् पहुंचा। मार्ग में दृश्य सुन्दर था। मिट्टी की पहाड़ियां और उन पहाड़ियों पर यत्र तत्र गेहूं के हरे खेत। कहीं पर घर भूमि पर बने हुए थे और कहीं पर केवल भूमि में छिद्र थे। पूछने पर पता लगा कि शीत से बचने के लिए यहां लोग भूमि के अन्दर रहते हैं ऊपर घर बना कर नहीं।

हमारे बाईं ओर अर्थात् दक्षिण में हिमाच्छादित पर्वत की चोटियां बहुत दूर तक दिखाई पड़ती रहीं।

दृश्य की दृष्टि से यह यात्रा जितनी रमणीय थी उतनी ही कष्टकारी भी रही। लान्-चाओ से कुछ दूर चण्डवात चलने लगा और विमान तथा वायु के संघर्ष से घरघर की ध्वनि लगातार डेढ़ घण्टे तक होती रही। विमान का डोलना और ऊंचे नीचे होना अति-कष्टदायी था। विमान में हम केवल १२ यात्री थे। यदि वास्तव में गणना की जाए तो हम ही दो यात्री थे। शेष तो कुछ हमारे साथ और कुछ शासन की डाक आदि लेकर जा रहे थे। इस विमान में आसन्दियां न थीं केवल फट्टे लगे हुए थे। १२ में से ६ बैठ गए और ६ खेत गए। दो तो नीचे भूमि पर ही। भूमि पर केवल दरी बिछी हुई थी। विमान के गन्ध-कोष्ठ में चार रूसी बालक थे। चीनियों के सामने उनका मुखवर्ण पीला और फीका दिखाई पड़ता था।

चीन में विमान के यात्रियों को खाने पीने के लिए कुछ नहीं मिलता। वास्तव में जहाँ दो दो तीन तीन घण्टे की यात्रा हो वहाँ भोजन के प्रबन्ध की विशेष आवश्यकता भी नहीं। चू-व्यान् पर जब विमान उतरा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि विमान का अग्रभाग भूमि पर गिर रहा है किन्तु सौभाग्य से कुछ दुर्घटना न हुई। विमानपतन की भूमि

सर्वथा प्राकृतिक है। मिट्टी और घास। और कुछ नहीं। तीव्र वायु चल रही थी। यहां भी हमारा स्वागत करने के लिए विदेश-विभाग के कान्-सू प्रान्त के उपाध्यक्ष हमारा प्रबन्ध करने के लिए कई दिन से आए हुए हैं। इनके साथ अनेक कार्यकर्ता हैं। चार गाड़ियां आई हैं। चारों गाड़ियां रूसी हैं। तीन जीप हैं और एक सामान्य सुन्दर बहित्र (motor)। कार्यकर्ताओं की एक मण्डली चू-च्यान् से आगे आन्-शान् और तुन्-ह्लाङ्क गई हुई है। शासन का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। चू-च्यान् से आए हुए कार्यकर्ताओं में सुदर्शना के लिए चार सखियां भी हैं।

विमान-पत्तन से चू-च्यान् नगर तक आने में सवा घण्टा लगा। मार्ग में भूमि पथ-रीली मरुस्थली है। धूल के बादल उड़ते रहते हैं। इनसे जी घबराता है। कपड़े, सम्भार और विशेष कर बाल धूल से भर जाते हैं। हमारी गाड़ी के तीन कांच सर्वथा बन्द थे। एक कांच चालक ने थोड़ा सा खोला हुआ था।

पिघली हुई हिम के कुछ नाले चू-च्यान् के आसपास आते हैं। उन्हीं के सहारे यहां गेहूं और एक प्रकार के राजमाष की खेती होती है।

चू-च्यान् में कोई विश्रान्तिगृह नहीं। हमको पाठशाला में ठहराया गया। बीच में बड़ा प्रकोष्ठ और उसके दोनों ओर पांच साधारण कोष्ठ अच्छी प्रकार सजाए हुए थे। नाना सुन्दर दरियां, गह्रों वाली आसन्दियां, पटल, बिजली। बारह अंगुल मोटे गद्दे बिस्तरों पर बिछे हुए थे। वैसे कोष्ठ सब कच्चे बने हुए थे। पहला काम हाथ मुंह धोना, कपड़े झाड़ना था। वायु में सर्वत्र छोटे छोटे श्वेत रोम वाले बीज उड़ रहे थे। इनको उतारना समस्या बन गई।

भोजन और कुछ विश्राम के पश्चात् पांच बजे हम फिर निकल पड़े। मदिरानिर्झर नामक स्थान पर चारों ओर हरियावल ही हरियावल थी। डेढ़ घण्टे तक आसपास के खेतों में घूमने के पश्चात् हम लोग लौटे। मार्ग में छिङ्क-कालीन भवन का निरीक्षण किया। इस पर तीन छतें थीं। सुन्दर गोल पूर्ण वृक्ष-स्तम्भों के स्तम्भ लगे हुए थे। पहले इसमें क्या था सो पता न लगा। अब यहां वाचनालय है। रूसी और चीनी नेताओं के चित्र टंगे हैं। ऊपर के कोष्ठ में नए भवनों की नींव खोदते समय निकली प्राचीन वस्तुएं रखी हैं। इनमें बौद्ध मूर्तियां प्रमुख हैं। मूर्तियां मिट्टी, पत्थर और घातु की बनी हुई हैं।

छिङ्क-राजा भवनों और मन्दिरों के निर्माता रहे हैं। उनके शिलालेख और अन्य कृतियां स्थान स्थान पर विद्यमान हैं।

चू-च्यान् की जनसंख्या १५ सहस्र है। लिखने पढ़ने की भाषा यहां भी केवलघाच चीनी बोलने में आई। यहां मुसलमानों की संख्या पर्याप्त है। मुसलमान स्त्रियां अपने सिर को श्वेत कपड़े से ढाँके रखती हैं।

आज रात्रि को श्री छात्र लान्-बाओ से आए। पहले तो पता न चला कि आप कौन हैं। किन्तु कुछ समय के बातलाप के पश्चात् आभास हुआ कि आप तुन्-ह्वाङ की अनुसंधान-संस्था के अध्यक्ष होंगे। पूछने से निश्चय हो गया। आप हमारी मण्डली में सम्मिलित होने के लिए और हमारा पत्र-प्रदर्शन करने के लिए आए हैं।

कार्यक्रम के अनुसार हमको सात बजे प्रस्थान कर देना चाहिए था। किन्तु अब सवा आठ बज गए हैं। चार जीप, एक बड़ी रूसी गाड़ी और एक भारी यान हमारे साथ चलेगा। हमारी मण्डली की जनसंख्या २९ हो गई है। बिस्तरे, पलंग, भोजन बनाने और खाने का पात्र, मृत्यु, कान्-सू प्रान्त के अधिकारी, एक बैद्य और एक परिचारिका, चाए बनाने वाले और भोजन पकाने वाले, आवश्यकता पड़ने पर गाड़ी को ठीक करने के लिए यान्त्रिक, तथा रक्षक आदि।

सत्तर अस्सी कोस तक हिमाबत पर्वत-माला साथ चलती रही। हमारी गाड़ियों ने प्रसिद्ध गोबी मरुस्थल में प्रवेश किया। प्रारम्भ में मोटे पत्थरों और कंकरों का प्राधान्य रहा। आगे जाकर पत्थर और कंकर छोटे हो गए। कहीं कहीं पर बहुत छोटी झाड़ियां और नीले फूल वाला घास। किसी बन्ध पशु अथवा पक्षी के दर्शन कहीं पर न हुए। १५०, २०० कोस में छः सात से अधिक ग्राम न मिले। जहां कहीं थोड़ा सा पानी मिलता है वहां खेती और ग्राम खड़े हो जाते हैं। सड़क के दोनों ओर कहीं प्राचीन खण्ड भी देखने में नहीं आए। चू-भ्यान् से बाहर निकल कर थोड़े समय के पश्चात् ही प्राचीन भित्ति के पश्चिम द्वार के दर्शन हुए। किन्तु हमारी सड़क इस द्वार के भीतर से न निकलती थी। महाभित्ति को बड़ी निर्दयता से तोड़ कर सड़क के लिए मार्ग बनाया हुआ था। महाभित्ति के साथ यह दुर्ब्यबहार देख कर शोच हुआ।

मार्ग में पर्याप्त ठण्ड थी। कई लोगों ने तो अन्दर लम्बे बालों के अस्तर वाले कोट पहन लिए। किन्तु हमने आवश्यकता न समझी। धूप निकली हुई थी। हमारे बहिष् की सब जिड़कियां सबैसा बन्द थीं। रात्रि को वर्षा हो चुकी थी, अतः मार्ग में हम धूल से बचे रहे। हम पेइ-चिङ से चलते समय वर्षा अपने साथ लेकर चले थे किन्तु किसी को यह आशा न थी कि लान्-बाओ से आगे भी वर्षा साथ चलेगी। चू-भ्यान् में यह इस वर्ष का प्रथम वर्षापात था।

जब मार्ग में कहीं कहीं धूल उड़ने लगी, तो इन्द्र देवता ने अपने जलकुम्भ दूर दूर तक छिड़क दिए। सार्वकाल को आन्-शी के समीप जाकर बाएं बाएं दूर दूर तक भ्रमगरी-चिका के जीवन में प्रथम बार दर्शन हुए। यहां बादल तो थे पर वर्षा न हुई थी इसलिए २०, २५ कोस तक धूल के मेघ साथ चलते रहे। आन्-शी में हमको बताया गया कि यहां वर्ष में केवल एक वायु चलती है। जब हमने प्रश्न किया कब, तो उत्तर मिला पहली जनवरी से ३१ दिसम्बर तक। यह स्थान वायुप्रवाह के लिए प्राचीन समय से प्रसिद्ध



तुन्-ह्वाङ्ग की मुख्य गुहा के सम्मुख भव्य नवभूमिक काष्ठमण्डप । तुन्-ह्वाङ्ग की ४६६ गुहाएँ विश्व की प्राचीनतम कला-वीथि हैं जिनमें शतियों तक कलामय हाथों ने अन्तर्हृदय की श्रद्धा को भित्तिचित्रों के वर्णवैभव और मृण्मय मूर्तियों में साकार कर दिया ।

The main wooden façade leading to the gigantic Buddha at the Tun-huang Caves (220-1367 A.D.).

है। इवेत्-ब्याक भी आन्-शी हो कर भारत गए थे। वे जाते समय तुन्-ह्लाक न ठहरे थे। केवल आते समय ठहरे थे।

आन्-शी से पूर्व दोपहर का भोजन हमने युऊ-मन् में किया था। यह स्थान पहले कभी मन्दिर रहा था। कितने वर्ष पूर्व यह पूछने का हमने साहस नहीं किया।

आन्-शी में हम सायंकाल को साढ़े छः बजे पहुंचे। यह छोटा सा ग्राम है। आजानुदग्ध धूलि का चारों दिशाओं में पूर्ण साम्राज्य है। पानी में तेल का स्वाद अथवा दुःस्वाद है। सुन्दरतम स्थान में हमको ठहराया गया। लान्-बाओ, चू-ब्यान् और आन्-शी तथा मार्ग में युऊ-मन्, इन सभी स्थानों में और इन्हीं भवनों में और इन भवनों के इन ही कोष्ठों में जिनमें मैं और सुदर्शना ठहरते आए हैं कुछ मास पूर्व भारत के राजदूत श्री राघवन् और उनकी पत्नी तथा श्रीमती गोवर्धन ठहरी थी। आन्-शी में आकर सुदर्शना रुग्ण हो गई। दो दिन की शरीर को हिला देने वाली विमान-यात्रा और आज की सारे दिन की वहिन्न-यात्रा उसके लिए कुछ कठिन रही। तुरन्त ही अपने सार्यवाह के बैद्य और परिचारिका आ गए। समस्त सायं और रात्रि उन्होंने देखभाल की।

३०-५-५५

यहां दिन १६ घण्टे का है। सायंकाल के दस बजे तक प्रकाश रहता है। कल सायंकाल विलम्ब से सोए। मार्ग की थकान भी थी इसलिए आज प्रातः ६ बजे सूर्योदय के साथ न उठ कर हम लीग आठ बजे उठे। केवल हम ही नहीं किन्तु समस्त मण्डली ही को अधिक विश्राम की आवश्यकता थी। कार्यक्रम के अनुसार ९ बजे न चल कर हमारा प्रस्थान १० बजे आरम्भ हुआ। अब तुन्-ह्लाक पहुंचने में केवल ११९ क्रोशक (kilometer) शेष थे। ३ घण्टे का मार्ग था। पर चार बार हमारी गाड़ी ठहरी और दो बार अमरीका की बनी हुई जीप। हमारी गाड़ी वारसाबा (पोल्लंड) की बनी M20 थी। इस का गन्त्र बारंबार तप जाता था। और जीप को बारंबार प्यास लगती थी। इस लिए छः बार ठहरना पड़ा। तीन बजे हम तुन्-ह्लाक पहुंचे।

३१-५-५५

तुन्-ह्लाक म ४७६ गुहाएं हैं। ये नई संख्या के अनुसार हैं। इनमें से आज प्रातः साढ़े नौ बजे कुछ गुहाओं का सामान्य निरीक्षण किया। अनेक गुहाओं में किबाड़ और ताले लगे हुए हैं। किबाड़ और ताले गुहाओं के चित्रों और मूर्तियों की रक्षा करने के लिए हैं। किबाड़ रेत से रक्षा करते हैं और ताले मनुष्यों से। असंख्य मनुष्यों का गुहाओं के अन्दर आना जाना भी उनके जीवन को छोटा कर देगा। इस आशंका से जहां जहां सम्भव हो सका है वहां वहां ताले लगाए गए हैं। केवल विशेष अतिथियों के लिए तुन्-ह्लाक-मन्वेचनार्थक के रक्षी ताले कोचते हैं।

समीप ही बहता हुआ छोटा सा नाला इस स्थान की रमणीयता और शोभा को द्विगुणित कर देता है। प्राचीन काल में यह महती नदी रही होगी। आधे दिन में हम पहाड़ी के दक्षिण सिरे से आरम्भ करके मध्य तक पहुंचे। ९ भूमि ऊंचे मन्दिर के शिखर तक पहुंचते हुए पहाड़ी शिखर आ गया। वायु में मन्दिर की घण्टियां मधुर गान कर रही थीं। पास ही विमान उतरने के लिए प्राकृतिक समतल स्थान बना हुआ है। पहाड़ी से उतरते हुए पञ्चवंश-काल का स्तूप और उसके भीतर की मूर्तियां देखीं। हमारे देश में तो यह स्तूप दो चार वर्षाएं भी न काट सके। और यहां पर यह शताब्दियों से सड़ा हुआ है। इस प्रकार के २६ स्तूप हैं। इनमें से चार टूट फूट चुके हैं। २२ सड़े हैं। चार पांच के अन्दर भित्ति-चित्र है। सामने ताओ मतावलम्बी वाहक का समाधि-स्तूप है। २२ मिट्टी के स्तूपों में से हम एक में गए। यह भी पञ्चवंश के समय का है। इसके अन्दर ४, ५ जन सड़े हो सकते हैं। मिट्टी की मूर्तियां अभी तक विद्यमान हैं। मुख्य मूर्ति के सामने भारतीय प्रकार का मिट्टी का दीप है।

आज हमारा काम सब गुहाओं पर सामान्य दृष्टिपात करना और यह निश्चय करना है कि किन गुहाओं में भित्ति और छत के किन किन चित्रों तथा मूर्तियों के रंगीन चित्र लिए जाएं। दो भाचित्रक हमारे साथ हैं। वे भाचित्रण की दृष्टि से हमारे निश्चय तक पहुंचने में सहायक हैं।

तुन्-ह्लाह की पहाड़ी बजरी और रेत की बनी हुई है। इस पहाड़ी में से कोई मूर्ति काटी नहीं जा सकती थी। इसके तीन परिणाम हुए।

- (१) छोटी और बड़ी गुफाएं बिना विशेष कष्ट के भारी संख्या में लोदी गईं।
- (२) छतों और भित्तियों पर गारे का लेप करके भारी संख्या में चित्र बनाए गए।
- (३) मूर्तियां पत्थर की न बनाई गईं। लकड़ी और फूस के ऊपर गारा लीप कर उन पर रंग कर दिया गया।

एक बजे लौट कर भोजन और विश्राम मिला और फिर साढ़े ३ से ६ बजे तक कुछ गुहाओं का निरीक्षण किया।

गुहा-संख्या ३४२- ताओ सम्प्रदायी वाहक यहां रहा करता था। गुहा खुएं से काली हो गई है।

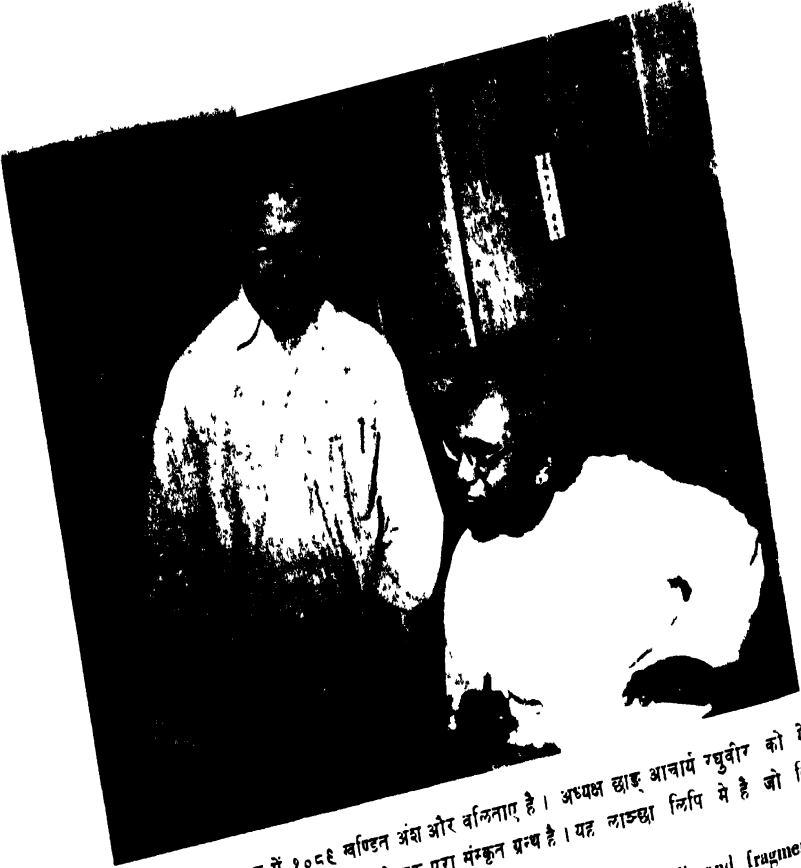
गुहा १७- छोटा सा कोष्ठ है। इसमें गवेषणालय के चित्रकारों ने अपना सम्भार फैलाया हुआ है। वे इस गुहा के भित्ति-चित्र की अनुकृति कर रहे हैं। विजली का चञ्च प्रकाश सूर्य का कार्य कर रहा है।

यह गुहा तुन्-ह्लाह की अद्भुत निधि है। इसमें एक सहस्र वर्ष-तक अथवा उस से भी अधिक ३०,००० बलिस्ताएं अर्थात् गोल लपेटी हुई पत्रमयी फुल्लकें बन्नी थीं। एक खिन पास बहती हुई छोटी सी नदी का पानी इस गुहा तक पहुंच गया। भित्ति में तैड़ आ



तुन्-ह्वाङ् की मुख्य गुहा की विशालता और ऊचाई का अनुमान उमके मम्मुख बने नवभूमिक मण्डप मे लगाया जा सकता है । यह दृश्य नवमी भूमि के शिखर का है । भीतर भगवान् ब्द की मूर्ति है जिनका चरणस्पर्श पहली भूमि मे और मुखारविन्द के दर्शन नवमी भूमि से होते हैं ।

Prof Raghu Vira on top of the roof of the Nine-storeyed building at Tun-huang enshrining the Great Buddha. Here he is at the end of his architectonic ascension of the nine *bhumis* envisioning the flown centuries with their humming of mantras and consubstantiation with the Supreme.



सुन्-त्वाङ् गवेषणालय में १०८६ खण्डित अंश और बलिनाए है। अध्यक्ष झाङ् आनायें रघुवीर को ये प्राचीन लिपिया दिखा रहे है। इनमे एक पूरा संस्कृत ग्रन्थ है। यह लाञ्छा लिपि से है जो कि भारतीय रञ्जना लिपि है।
Mr. Chang -howing to Prof. Raghu Vira the newly discovered rolls and fragments in Chinese, Tibetan, Uigur and other Central Asian languages. Prof. Raghu Vira filmed a complete Sanskrit manuscript in the Lantscha script containing over a hundred folios.

गई। ताओ सम्प्रदायी वाङ्ग को कुतूहल हुआ। उसने तेड़ में छड़ी डाली। छड़ी खन्दर घुसती चली गई। प्रतीत हुआ कि यह पहले द्वार था पीछे बन्द कर दिया गया। वहाँ चीनी बान्द्र पञ्चांग के पञ्चम मास की २६ वीं तिथि थी। विक्रम संवत् १९५७ था। वाङ्ग ने धीरे धीरे ईंटें निकालीं। डरते डरते १० बलिताएं बाहर निकाल कर कोष्ठ बन्द कर दिया। इनमें से एक बलिता सिन्-क्याङ्ग के आंगरू ब्यापार-दूत के पास पहुंच गई। उन्हीं स्टाइन (Sir Aurel Stein) को दिखाई। स्टाइन वहाँ पहुंचा। गुहा के बाहर बने हुए एवेन्-ब्याङ्ग के चित्र की ओर संकेत कर के स्टाइन ने वाङ्ग को कहा यह मेरे गुरु हैं। मैं इनका शिष्य हूँ। मुझे बलिताएं दो। डरते डरते वाङ्ग ने स्टाइन का दिया हुआ धन स्वीकार किया और उसकी मांग को बहुत अंश तक पूरा किया। 'स्टाइन चित्रमयी तथा अन्य सहस्रों बलिताएं छंट कर ले गया। पश्चिम देशों के विद्वानों में हलचल मच गई। पेरिस से प्राध्यापक पेलियो (P. Pelliot) आए और छः मास यहाँ ठहरे। बलिताओं का बहुत बड़ा अंश वे ले गए। जब सूचना पेइ-चिङ्ग पहुंची तब हाहाकार मच गया। बची खुबी आठ सहस्र बलिताएं पेइ-चिङ्ग पुस्तकालय में गईं। वे आठ दस बड़े लकड़ी के डिब्बों में सुरक्षित हैं। चीनी में इनका सूचीपत्र भी छप चुका है किन्तु यह सूचीपत्र केवल चीनी विद्वान् ही प्रयोग कर सकते हैं। यह सूचीपत्र हिन्दी में छपना चाहिए। ग्रन्थों के नाम चीनी के साथ साथ मूल संस्कृत में देने चाहिए।

बलिताएं थाङ्ग काल की हैं।

तुन्-ह्वाङ्ग गवेषणालय में अब केवल कुछ खण्डित अंश शेष हैं। ये इन्होंने आस पास की जनता से इकट्ठे किए हैं। इन खण्डित अंशों की संख्या १०८९ है। इनमें से हमने ४०० से अधिक पत्रों का भाचित्रण किया है। इनमें से कुछ अर्बाचीन भोट के ग्रन्थ भी हैं।

वाङ्ग के आने से पूर्व तुन्-ह्वाङ्ग की गुफाओं में एक और चीनी भिक्षु निवास करता था। वाङ्ग का देहान्त हो चुका, किन्तु यह चीनी भिक्षु अभी तक जीवित है— यी-छान्-चू। इसकी आयु ८३ वर्ष है। इसके साथ एक और चीनी भिक्षु तथा भिक्षुणी हैं। भिक्षुणी का नाम सोउ-चिन्-स्येन् है। आयु ६७ वर्ष। तीसरे भिक्षु चू-हान्-चिन् हैं। इनकी आयु ५५ वर्ष है।

भिक्षु यी के पास कुछ भोट धारणियां और सूत्र भी हैं। ये अब गुहाओं में नहीं रहते। इनको गवेषणालय की ओर से गुहाओं के सामने ही कार्यालय के समीप स्वतन्त्र भवन दे दिया गया है जहाँ वे यथासमय पूजा पाठ करते हैं। इनकी आजीविका का आधारा साकभाषी उगाना और गेहूँ आदि की खेती करना है। तुन्-ह्वाङ्ग का छोटा सा नाला इनकी कृषि का आधार है।

गुहा १७— इसमें कैसयुक्त शिला थी। यह शिला बाहर निकाल दी गई है।

गुहा १६- इसे के अन्दर १७वीं गुहा है। १६वीं गुहा का भूमिस्तर नीचा है। १७वीं गुहा में प्रवेश करने के लिए नई सीढ़ी बनाई गई है। इस गुहा के मूल चित्र पञ्च-लोक के काल में बनाए गए थे किन्तु जो चित्र अब विद्यमान हैं वे सुक बंस के हैं।

गुहा ३- यही एक गुहा है जिसमें गीले गारे के लेप पर चित्र बनाए गए। रंग बहुत हल्के हैं। सहस्र-हस्त अवलोकितेश्वर का अनुमम चित्र है। प्रत्येक हथेली पर एक अक्षि है। विश्व में जहां कहीं किसी को कष्ट हो उसके पास एक हाथ पहुंच जाता है और आंस के द्वारा कष्ट स्थान को पहचान कर समुचित निवारण करता है।

गुहाओं में मूर्तियां अधिकांश छिद्र वंश की हैं। इनका ढांचा लकड़ी का है। गारे में भूसा और घोड़े के बाल आदि मिले हुए हैं।

गुहा ३५१- यह छिद्र वंश की गुहा है। वाक ने इस गुहा में घूमने वाले दो निधाय बनाए थे। स्टार्ल्न् आदि को बलिताएं देने के पश्चात् कुछ बची खुबी बलिताओं के रखने के लिए उसने ये घूमने वाले निधाय बनाए थे। किन्तु धीरे धीरे एक एक कर के ये बलिताएं भी बेच दी गईं। चीन के अनेक पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों, मन्दिरों और व्यक्तियों के पास तुन्-ह्लाक के ग्रन्थ हैं। हम चीन में जहां कहीं भी प्रसिद्ध स्थानों पर गए हैं वहां प्रायः तुन्-ह्लाक की बलिताएं देखने को मिली हैं। कहीं एक कहीं दो। लान्-चाओ से अन्तिम बार चलते समय हमको पता चला कि यहां अभी तक तुन्-ह्लाक की बलिताएं किसी न किसी व्यक्ति के पास मिलती रहती हैं। किन्तु शासन जागरूक है। इसलिए यह सम्भव नहीं कि वे व्यक्ति किसी विदेशी के साथ सम्पर्क कर सकें और बलिताएं बेच सकें।

चीन देश के बाहर ८० वर्ष से पुरानी ऐतिहासिक अबबा कलात्मक वस्तुएं नहीं जा सकतीं। नियम कठोर है। इसका उल्लंघन करना किसी स्वदेशी अबबा विदेशी के लिए न ही उचित है और न ही भय से रहित है।

गुहा ३४६- यह गुहा रेत से ढकी थी। इसका पता १९४९ में लगा।

गुहा ३३५- अमरीकी विद्वान् डा. बार्नर् (Warner) ने तुन्-ह्लाक के अनेक मूर्तिचित्रों को बिगाड़ा है। आज भी २६ स्थान ऐसे हैं जहां उसके बिगाड़े हुए चित्र विद्यमान हैं। उसकी पद्धति यह थी कि विशेष गोंद लने हुए कपड़े से मूर्ति का चित्र-मय लेप उतार लेता था। किन्तु अधिकांश स्थानों पर गोंद के सूख जाने से सफलता न हुई और मूर्तिचित्र सदा के लिए बिगड़ गए। चीनी जनता और चीनी शासन, चीनी विद्वान् और चीनी कलाकार बार्नर् से बहुत खिन्न हैं, उष्ट हैं और उसको गालियां देते हैं। बार्नर् का यह कार्य अविस्मरणीय और अज्ञान्य है।

गुहा ३३२- तुन्-ह्लाक गुहाओं के प्रथम निर्माण का शिलालेख इस गुहा में है।

गुहा ३२९ और ३२८- इन दोनों गुहाओं में भी बार्नर् द्वारा विच्छिन्न चित्रों को



तुन्-ह्वाङ् की गुहा संख्या २८८ में चित्रानुकृति सम्भार पडा है । कोई भी ऐसी आवश्यक गुहा नहीं है जिसका पूरे परिमाण में चित्र न बनाया जायगा । भाचित्र बड़ करने पर भी मूल की अपेक्षा बहुत छोटे रहते हैं । हाथ में पत्र पर अनुकृति करने से चित्र की मूल विशालता जनता के सम्मुख आती है । तुन्-ह्वाङ् आधुनिक चीन की राष्ट्रीय कला का प्रतीक बन गया है ।

Prof. Raghu Vira with an artist in Cave no. 288, where precise copying of the murals was in progress in their imposing original sizes.



तुन्-ह्वाङ् की गुहा २८५ में चित्रकार अनुकृत कर रहा है ।
Prof. Raghu Vira and his daughter look at an artist engaged in copying a mural in Tun-huang Cave no. 285. Meticulous care is taken to retain the original colour tones with their aging patina, for which the artists go to the length of sometimes preparing more than two dozens of colour combinations. The dimension of the minutest segment of a mural corresponds to the original.

देखा । दोनों गुहाओं में चित्रकार लगे हुए थे और बड़े परिश्रम से समान परिमाण के पत्र पर चित्र बना रहे थे । ये चित्र प्रदर्शनों के लिए बनाए जाते हैं । प्रदर्शनी साम्यवादी शासन के जनता-विश्वकर्मा का प्रिय साधन है । तुन्-ह्वाङ्ग चीनी जनता को प्रिय है । राष्ट्रीय कला की निधि है ।

गुहा ३२८— इसमें बाक काल की सुन्दरतम मूर्तियाँ हैं ।

गुहा ३२७— इसमें उन्मन्गार्द्र वेष्ट का अच्छा निदर्शन है । (जलनेमज्जनवस्त्रकला-शैली—चीनी में चाओ-बुङ्ग-त-चाओ-इ-धु-दवी) प्राचीन काल में सचैल स्नान अर्थात् सम्पूर्ण वस्त्र पहन कर स्नान की प्रथा थी और जब नदी में डुबकी लगाने के पश्चात् कपड़ों सहित मनुष्य बाहर निकलता था तब वस्त्र शरीर के साथ चिपके हुए होते थे । इस प्रकार के वस्त्रों के चित्रण को चीनी भाषा में उन्मन्गार्द्र वेष्ट कहा जाता है ।

गुहा ३२३— इसमें भी चित्रानुकृति-कार्य चल रहा है । महाराज बू-ती के स्वप्न का अमूल्य चित्र, भारत और चीन के प्रथम सम्बन्धों का अनुपम चित्र, वानेर ले गया । अब वह तुन्-ह्वाङ्ग में नहीं रहा ।

गुहा ३१४— यह बहुत प्राचीन गुहा है । यह स्वी वंश में बनी । गारे के लेप पर रक्तवर्ण पृष्ठभूमि बनाई गई और उस पर काले और नीले रंग से चित्रों का आलेखन किया गया ।

गुहा ३१०— यह १२वीं, १३वीं शताब्दी की शी-स्या गुहा है ।

गुहा ३०३— यह स्वी वंश की गुहा है ।

गुहा २९४— घुएँ से सब काली हो चुकी है ।

गुहा २८८ और २८५— यहाँ चित्रानुकृति-सम्भार पड़ा हुआ था । कोई भी ऐसी आवश्यक गुहा नहीं जिसका पूरे परिमाण में चित्र न बनाया जाएगा । भाचित्र बहुत छोटे छोटे होते हैं । बड़े करने पर भी उनका आकार मूल की अपेक्षा बहुत छोटा रहता है । हाथ से पूरे परिमाण के पत्र पर अनुकृति करने से चित्र की मूल विशालता जनता के सम्मुख आती है । जहाँ मूल चित्र अस्पष्ट और हलका पड़ गया है, छोटे मोटे चम्बे लगा गए हैं अथवा लेप उखड़ गया है उसके स्थान में अनुकर्ता चित्रकार सरलता से ही पूर्ति कर देता है । वैज्ञानिक दृष्टि से यह उचित न हो किन्तु जनता के लिए यह अधिक सचि-कर और प्राणवान् चित्र बन जाता है ।

तुन्-ह्वाङ्ग के वापुनिक अनुकर्ता चित्रकारों का दृष्टिकोण मुख्यतया जनता का दृष्टिकोण है ।

प्राध्यापक वानेर ने गुहा २८५ से भी चित्र उतारने की चेष्टा की थी । सफल न हुआ । अमेरिका के अन्वेषक भी वानेर ने बतलाया कि अन्वेषण की कसरत में उसके क्या चित्र ।

इस गुहा में तिब्बि दी हुई है, जो ५९२ विक्रम के तुल्य है।

गुहा ५०— यह ऊँची है। भित्तिचित्र बहुत अच्छी प्रकार से सुरक्षित हैं। इस गुहा का काल पञ्चमंडल और सुक है।

गुहा ६१— इस गुहा में भी अनुकृति का कार्य चल रहा है। एक चित्र में गालों पर फूलों की पंखड़ियाँ बनी हुई हैं।

इसमें दू-बाइ पर्वत के दृश्य चित्रित है।

अनेक अन्य गुहाओं के समान यहाँ की मूर्तियाँ भी उठाई जा चुकी हैं।

गुहा २५४— यह उत्तर वेद ५६ काल की है। इसमें गान्धार प्रभाव स्पष्ट है। यहाँ की मूर्ति में कला की पराकाष्ठा है। तीन बोधिसत्व, तीन मूले व्याघ्रों के लिए आत्मसमर्पण कर रहे हैं। इसमें बुद्धोदन-जातक भी है।

चीन की पुरातनतम वास्तुकला अर्थात् पांचवी, छठी शताब्दी की काष्ठ-वास्तुकला अन्यत्र कहीं मिलेगी।

उत्तर वेद कला की एक विशेषता नेत्र, नासिका और ऊर्ध्वा का श्वेत वर्ण है। चीनी कलाकार नेत्र और नासिका में श्यामो ५. अक्षर की कल्पना करते हैं।

गुफाओं के बीच के मार्ग बहुत छोटे और संकीर्ण हैं। एक गुहा से दूसरी गुहा में जाने के लिए अधिकतम झुकना पड़ता है।

गुहा २५७— यह भी उत्तर वेद की गुहा है।

गुहा २७५— यह बहुत प्राचीन गुहा है किन्तु इसकी मूर्तियाँ छिन्न वंश की हैं। एक स्त्री अपनी दाहिने बच्चे के पाँव से नाप रही है। बच्चा बाएँ घुटने पर सड़ा किया हुआ है और बच्चे के पाँव के पास अपना दाहिना पाँव रखा हुआ है। यह उस समय का आदर्श था। अपनी चीन-यात्रा में हमने भी बूढ़ा स्त्रियों के पाँव देखे हैं और बच्चों के पाँव से नापे हैं। इनके पाँव बच्चे के पाँव जितने अथवा कुछ ही बड़े होते हैं।

गुहा ४४५ तथा ४६१— इनमें भी चित्रों की अनुकृति की जा रही है।

तुन-ह्लाक जनता की भाँसों से कभी बोझल नहीं हुआ। प्रति वर्ष बुद्ध-जन्म के उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक सहस्रों की संख्या में यात्री जाते हैं। इस वर्ष भी हमारे जाने से दो तीन दिन पूर्व एक सप्ताह तक १० सहस्र के लगभग यात्री जाए थे।

गुहा ४२८— डा. छाक का कहना है कि उनको आज तक बाक काल से पूर्व छाप द्वारा बनाए हुए चित्र किसी मिति पर नहीं मिले।

गुहा ६७२— इस गुहा में से भी मिति के एक भाग का चित्र बर्नार्ड के गया।

तुन-ह्लाक से मिले हुए बीमूर के पाँव काष्ठमूर्त (type) कौकिलमंडल में रखे हुए हैं। इनका चित्र आजादी पृष्ठ पर दिया गया है।



तुन्-ह्वाङ् की गुहा २७५ में छिड़् वंश की मूर्ति । एक स्त्री अपना पाँव बच्चे के पाँव से नाप रही है । उस समय का आदर्श था कि नारी के पाँव शिशु की भाँति छोटे-छोटे रहें जिसे कि वह लीलागमना हो ।

In Tun-huang cave no. 275 of the Ch'ing Dynasty, where a lady measures the smallness of her feet with those of an infant.

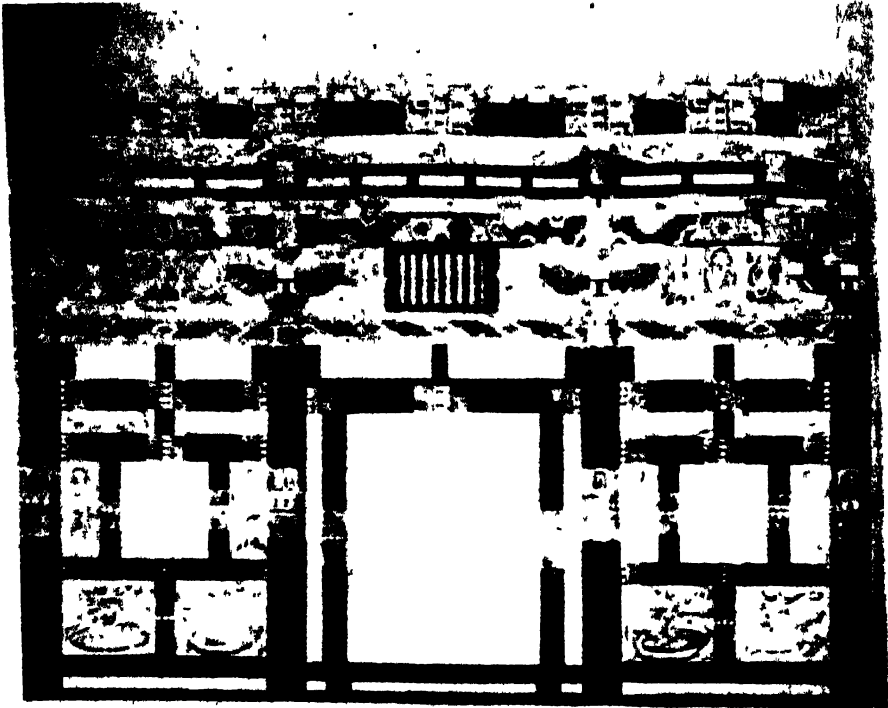


圖 1 新加坡的三一堂前門 (Tun-huang Institute Gate)

तुन्-ह्वाङ् आधुनिक चीन का परम प्रेरणा-स्रोत है। छत्रों के चित्रों का प्रयाग नए भवनों में किया जा रहा है। शी-आन् के विंगल विश्वविद्यालय की छत्रों पर तुन्-ह्वाङ् के बेलबूटों और आमराजों का अनुकरण बहुत सुन्दर रूप में किया गया है।

The use of Tun-huang art motifs in modern China, as illustrated by a sketch kept at the Tun-huang Institute.



तुन्-ह्लाह से प्राप्त बीगर के पांच काष्ठसूत्रों का चित्र
(प्रत्येक सूत्र चार चार बार चित्रित है)

गुहाओं वाली पहाड़ी लगभग भित्ति के समान है। जहां से भी यह टूटती है वहां से गुहाएं नष्ट होती हैं। पिछले दस वर्षों में ही इस प्रकार से बहुत सी गुहाओं का नाश हुआ है। सीभाग्यवश इनमें चित्र तथा मूर्तियां न थीं। ये प्राचीन गुहाकारों और चित्रकारों की निवास-गुहाएं थीं।

प्राध्यापक पेलियो ने तुन्-ह्लाह के सब से अधिक चित्र प्रकाशित किए हैं। पेलियो ने छत और मूर्तियों के चित्र छोड़ दिए। पेलियो के पश्चात् और भी कई नई गुफाएं मिली हैं। इनके चित्र आज तक प्रकाशित नहीं हुए। पेलियो के चित्र छोटे छोटे हैं और सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन के लिए अपर्याप्त हैं। पेलियो ने काले रंग में चित्र प्रकाशित किए इससे भी उनका महत्त्व बहुत अधिक नहीं रहा।

तुन्-ह्लाह आधुनिक चीन का परमप्रिय पात्र है। छतों के चित्रों का प्रयोग नए भवनों में किया जा रहा है। हन घी-आन् १७५ में गए। वहां के विशाल विश्रान्तिगृह की छतों और भित्तियों पर तुन्-ह्लाह के बेल-बूटों और अप्सराओं का अनुकरण बहुत सुन्दर रूप से किया गया है।

तुन्-ह्लाह ने आधुनिक चीनी कला में क्रान्ति उत्पन्न की है।

मिङ ११ के पश्चात् चीनी राज्य तुन्-ह्लाह में नहीं रहा, फिर भी तुन्-ह्लाह चीन की अज्ञा का स्वप्न बना रहा। प्राचीन स्थानों का संरक्षण और संचारण ही नहीं

星
東
方
文
化
學
院
東
京
研
究
所

燉
煌
畫
の
研
究
著

किन्तु पुनर्निर्माण चीन की विशेषता है। इसी कारण आज चीन में इतने प्राचीन स्थल अवशिष्ट हैं। भारत में भी ऐसा होना चाहिए। केवल पुरावशेष-विभाग यह कार्य नहीं कर सकता। उसका उद्देश्य संरक्षण और संधारण अवश्य है परन्तु पुनर्निर्माण नहीं। इस सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है किन्तु यह सर्वथा निश्चित है कि पुनर्निर्माण के बिना प्राचीन वस्तुएं बहुत काल तक नहीं बच सकती।

चीनी साहित्य में तुन्-ह्वाङ्ग का वर्णन नहीं मिलता। दो चार उद्धरण भले ही इधर उधर मिल जाएं किन्तु अन्य धार्मिक स्थानों के समान यहां के विस्तृत और विशद ऐतिहासिक विवरण नहीं मिलते। स्टाइन और पेलियो के पश्चात् चीनी, और चीनी से भी अधिक जापानी में, आधुनिक पुस्तकें लिखी गई हैं। इनमें से सब से बड़ी पुस्तक जापानी भाषा में है।

पहाड़ी की उत्तर दिशा में अनेक छोटी बड़ी गुहाएं हैं। यहां चित्रकार रहते थे। १९४७ में इस ओर से पहाड़ी का कुछ भाग नीचे गिरा और उसमें अनेक गुहाएं भी नष्ट हो गईं। यहां ख्येन् ऋ वंश में कुछ लामा रहते रहे हैं। यहां ख्येन् वंश का शिलालेख भी है। ख्येन् वंश की प्रिय चारों भाषाएं भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी में लिखे हुए मन्त्र अभी सुरक्षित हैं। इतना ही नहीं, संस्कृत भी यहां सर्वोपरि रूप से विद्यमान है। ४६५ सख्या की गुहा भोट और तान्त्रिक है। तुन्-ह्वाङ्ग गवेषणालय ने अभी तक इस पर काम आरम्भ नहीं किया।

पिछले वर्ष छः नई गुहाएं मिलीं। इनकी संख्याएं ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४ और ४७५ हैं।

तुन्-ह्वाङ्ग में अन्तिम चित्र १९२९ में बने।

गुहा १४४- इसमें भोट, ची-क्या और मोंगोल के लेख हैं।

तुन्-ह्वाङ्ग में बारंबार जीर्णोद्धार होता रहा। कोई भी ऐसा युग नहीं जिसमें ढोड़ा बहुत जीर्णोद्धार न हुआ हो। इसके परिणामस्वरूप अनेक लेख अवशिष्ट हैं। उदाहरण के रूप में १९१६ का सूचना-फलक है जिस पर जीर्णोद्धारकों के नाम दिए हैं।

गुहा १४८- इसमें नवीं शताब्दी का शिलालेख है। इसमें दास्तावों के नाम तथा



मस्कृत, भोट, मोगोल, फाम्पा, शीष्या और चीनी—छः लिपियों में ॐ मणिपद्मे ह्रीं का शिलाचित्र । यह शिलालिपि मो-गाओ-कू नामक गुहा में है जोकि गान्धार-स्थित बामियान की विराट् प्रतिमाओं की प्रेरणा से ३६६ ख्रिष्टाब्द में एक भारतीय भिक्षु ने बनाई थी । पाइ-कालीन शिलालेख के अनुसार यह तुन्-त्वाङ् के गुहा-कलाप की प्रथम गुहा थी । *Om mani-padme hūm* in six scripts, namely, Lantsha, Tibetan, Mongolian, Hphags-pa, Hsi-hsia, and Chinese at the 'Cave of Unequalled Height' or *Moa Kao K'u*, which was the earliest chapel to be constructed in 366 A. D. by an Indian bhikṣu whose name is preserved as *Lo-ts'un* in the stone inscription of the T'ang Dynasty.



आचार्य रघुवीर म्वी वंग की मूर्तिकला में नेत्रों को आयायित करते हुए। म्वी वंग (५८९ से ६१८
 सृष्टाब्द) के समय तुन्-ह्वाङ्ग की गुहाओं में बहुत कार्य हुआ। तुन्-ह्वाङ्ग गवेषणालय के अनुमार ६५
 गुहाएँ इसी काल में कलाकारों द्वारा प्राणमयी हो गईं। इनमें उड़ती हुई अप्सराओं में गति और शान्ति का
 अनुपम चित्रण दर्शक को विभोर कर देता है।

Prof. Raghu Vira in a Tun-huang cave of the Sui dynasty (589-618 A. D.) which
 was the period of most prolific creativity: as many as 94 caves were executed.
 Some of the best work may be assigned to this age.

चित्रों का वर्णन है। सारी गुहा लेटे हुए बुद्ध से भरी हुई है। छत में ५०, ५० बुद्ध-मूर्तियों की २२ पंक्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त अमिताभ-बुद्ध का चित्रण भी सुन्दर है।

गुहा ४६८- वैलियों ने इस गुहा को नहीं देखा। यह उत्तर षाऊ काल की है।

गुहा १३०- यह पूर्व षाऊ काल की है। इसकी महती मूर्ति के निर्माण में २५ वर्ष लगे थे।

गुहा १५४- स्त्री सेना का यह निवास स्थान थी। धुएँ से चित्रों को बड़ी हानि पहुंची। मो-गाओ-कू का प्रसिद्ध पद्म-भाषा शिलालेख इस गुहा से मिला है। मो का अर्थ है "मरु", गाओ का "उष्ण", और कू का "गुहा"।

षाऊ काल तक धार्मिक विषयों का चित्रण ही चित्रकारों का प्रधान कार्य था। किन्तु षाऊ के पश्चात् जनता के सामान्य जीवन का भी चित्रण आरम्भ हुआ।

गुहा १५८- यहां भी लेटे हुए बुद्ध हैं। विभिन्न जातियाँ बुद्ध-चरणों से अपने मस्तक का स्पर्श करके अपने को धन्य मान रही हैं।

गुहा १७२ और १७३- ये सातवीं, आठवीं शताब्दी की गुहाएँ हैं। इनका महत्त्व वास्तु की दृष्टि से है। प्रभामण्डल पारदर्शी है। यहां प्राचीन परिदृशा (perspective) का भी निदर्शन है। बोधिसत्व अति सुन्दर है।

गुहा १८०- यहां छोटे छोटे चित्र छाप से बनाए गए हैं, चित्रण से नहीं।

गुहा १९६- जब हम पहुंचे तो श्रीमती छऊ सीढ़ी पर चढ़ी हुई चित्रों का अनुकरण कर रही थीं।

गुहा १९७- बुद्ध की प्रत्येक डाली पर फलों के स्थान में बुद्ध बैठे हैं।

तुन्-ह्वाऊ में गान्धार के समान संचूर्ण (stucco) अर्थात् चूने और रेत की कोई मूर्ति नहीं मिली।

गुहा १११- यहां स्वेन्-ष्वाऊ का चित्र है। यह छिऊ काल में बना।

गुहा २१७ और २२०- यहां चित्रानुकरण हो रहा है। अबलोकितेश्वर कण्ठों का निवारण करने के लिए ऊपर से नीचे आ रहे हैं। २२०वीं गुहा का निचला भाग रेत में दबा हुआ था। इसमें एक लेख है जिसमें तिथि दी हुई है।

गुहा ११२- इसमें मुख तथा शरीर के उत्तर भाग पर सिप्पी का इबेत रंग जग-मगा रहा है।

गुहा ९८- इसमें भी चित्रानुकृति हो रही है। चित्राली के बड़े बड़े दीप लगे हैं। इस गुहा का निर्माण पञ्चम-श-काल में "होता" के राजा ने किया था। गुहा बहुत बड़ी है। गायी छोटे आदि के मनोहर चित्र हैं। रंग अभी तक स्पष्ट हैं।

गुहा ९६- यैति हुई बुद्ध की मूर्ति पर्वत के नीचे से ऊपर तक बनी है। इसकी ऊंचाई ६६ हाथ है। चारों ओर की विविधा चित्रों से हीन है। इस पर ९ मूर्ति ऊंचा

कम्बुजी का स्तूप बना है। १९२८ से १९३५ तक नी की नी भूमियों का निर्माण तुन्-ह्लाक के एक बड़ी ने किया था। उसके अनेक सहायक थे। इस युद्ध में जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में १९३६ का शिलालेख है।

तुन्-ह्लाक की गुहाओं के सामने नदी के पार ज्येन् काल के मिट्टी के २२ स्तूप हैं। चार स्तूप नाश हो चुके हैं। २२ में से ३ के अन्दर रंगीन मित्तिचित्र हैं। स्टाइन के मित्र वाक की समाधि भी अलग बनी है।

युद्ध १८- यहां महती मूर्ति में श्रीवा मे तीन रेखाएं बड़ी स्पष्ट और आकर्षक हैं। कम्बु-श्रीवा वाक वंश में आरम्भ हुई और सुक वंश तक चली। ज्येन् में यह नहीं मिलती।

इस पहाड़ी के साथ ही देतीली और बजरीमय विस्तृत समभूमि है। यह प्राकृतिक विमानपत्तन है। इससे आगे रेत की बड़ी पहाड़ी है। थोड़ीसी भी वायु चलने पर मनो रेत गुहाओं की पहाड़ी पर आता है। रेत को रोकने के लिए पहाड़ी पर खाई बनाई हुई है। खाई कुछ समय के पश्चात् भर जाती है। रेत को रोकने और आए हुए रेत को हटाने का कार्य आसानुमास और वर्षानुवर्ष करने का है। गुफाओं के सामने यदि चौड़ी पक्की सड़क बन जाए तो नीचे की गुहाओं में रेत का प्रवेश थोड़ा हो जाए।

गुहाओं से कुछ दूर तुन्-ह्लाक नगर है। गुहाओं की पहाड़ी से यह हरा भरा प्रतीत होता है किन्तु वास आकर मरुभूमि का भाग ही दिखाई पड़ता है। हरियाबल इतनी थोड़ी है कि रेत की तुलना में वह अगण्य हो जाती है।

तुन्-ह्लाक के नवेषनालय में ३९ कर्मचारी हैं। इनमें से १० प्रशासक, १५ चित्रकार, एक वास्तु-विशेषज्ञ, एक बिजली वाला, एक बहिर्न-वालक और शेष श्रमिक हैं। अध्यक्ष श्री क्राक का वेतन २१० युजान् प्रतिमास है। वास्तु-विशेषज्ञ का १३० युजान् प्रतिमास। चित्रकारी और बहिर्न-वालक का १०० युजान् तथा सामान्य श्रमिकों का ६० युजान् प्रतिमास है। चित्रकारों को रुजवग १२० युजान् प्रतिमास मिलते हैं। वर्ष में वेतन के अतिरिक्त संरक्षण संभारन आदि पर डेढ़ लाख युजान् खर्च हो जाता है। इस प्रकार इस नवेषना-लय का वृत्त खर्च दो लाख युजान् प्रतिवर्ष है।

नवेषनालय का मुख्य कार्य चित्रों की अनुकृति है। पिछले साठ वर्षों में १५०० चित्रों की अनुकृति हुई है। आचित्रण का कार्य सितम्बर १९५४ से आरम्भ किया गया है। पहले छः मास में १००० आचित्रण किए गए हैं। चित्रों का संरक्षण ६ वर्ग सतिमीन (sq. cm.) है। चित्र सामान्य रूपि से किए जाते हैं। विस्तृत कोण (wide angle)



तुन्-ह्वाङ् की कला के श्रेष्ठतम निदर्शन स्वी-कानीन है। सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध तुन्-ह्वाङ् कला का मुर्वणिम युग था। इस गुहा की छत का केन्द्रबिन्दु पद्यालकृत है। चारो ओर चार पक्षियों में सहस्र-बुद्ध है। गुहा में मुख्य मूर्ति भगवान् बुद्ध की है।

Prof. Raghu Vira in Tun-huang cave no. 319 which belongs to the Sui dynasty, the golden period of Tun-huang art.



तुन्-ह्वाङ् की गुहा २३८ में आचार्य रघुवीर को श्री छाद् भित्तिचित्रों के आधुनिक पुनरालेखनों की विशेषताओं से परिचित करा रहे हैं। वास्तविक भित्तिचित्रों के मुख्य कथाशो को कलाकार ठीक उमी परिमाण और सर्वथा उन्ही रंगों में चित्रित कर रहे हैं। फलतः जातकों का प्रत्येक प्रकरण स्पष्ट और सुबोध हो जाता है। तुन्-ह्वाङ् गुहाओं की भित्तियों पर साधक कलाकारों ने मूर्तों को कला रूप में परिवर्तित कर दिया है और दर्शनशास्त्र बुद्धि एवं हृदय तक ही सीमित न रह कर दृश्य रूप में जनमानस पर अंकित हो जाता है।

Prof. Raghu Vira studying the reproductions of Tun-huang murals with the Director Mr. Ts'ang, while his interpreter and daughter look on.

का प्रयोग नहीं किया जाता। न ही विश्वतोमुख रूपित्र (panorama camera) का प्रयोग किया जाता है। चीन में प्रतिवर्ष नए बनते हुए भवनों को सजाने के लिए तुन्-ह्वाङ्क आदर्श माना जाता है। इस कारण सजावट के लिए जिन भी चित्रों का प्रयोग हो सकता है उनका भाषित्रण पहले किया जा रहा है। जाधुनिक राष्ट्रीय निर्माण के लिए नृत्य और वाद्य के चित्रों का भी प्रथम स्थान है।

गुहाओं की रक्षा करना गवेषणालय का परम कर्तव्य है। गवेषणालय इस दिशा में अच्छा कार्य कर रहा है। केवल चित्रों और मूर्तियों की रक्षा ही नहीं किन्तु गुहा की छतों और भित्तियों की रक्षा करना भी आवश्यक है। पहाड़ी में दराङ्क न पड़ें। पहाड़ी सुगठित रहे इसके लिए थोड़े से स्थान पर बज्जलेप (cement) का प्रयोग किया गया है। गुहाओं और भिन्न भूमियों के बीच में सीढ़ी आदि मार्ग बनाना भी गवेषणालय का कार्य है।

पानी का बिजलीघर बनाने की योजना है जिससे पीने के लिए शुद्ध पानी तथा अधिक बिजली मिल सके। अब भी छोटासा बिजलीघर है, परन्तु शुद्ध पानी का प्रबन्ध नहीं। जितने दिन हम तुन्-ह्वाङ्क में ठहरे, हमने स्नान का नाम तक न लिया। नदी का पानी न पीने के लिए उपयुक्त है, न स्नान के लिए। नदी क्या है— २ पाद चौड़ा और १०, १२ अंगुल गहरा पानी का नाला है। इसके सहारे दक्षिण भाग की गुहाओं के सामने कुछ वृक्ष तथा कुछ एकड़ खेती होती है। कुछ फलों के वृक्ष भी लगे हैं। मरुभूमि के छोटे से अंश को स्वर्गभूमि बना दिया है। इन वृक्षों और खेती के कारण गुहाओं की भी रक्षा होती है। आंधी के समय रेत रुकता तो नहीं किन्तु थोड़ा अवश्य हो जाता है।

ऐतिहासिक और कलात्मक गवेषणा के लिए अभी तक इस संस्था में विशेष प्रबन्ध नहीं। इस दिशा में थोड़ा बहुत काम अवश्य हुआ है किन्तु वह अभी अन्तिम रूप में नहीं आया। इसको अन्तिम रूप देने और प्रकाशित करने के लिए अनेक वर्ष लगेंगे।

सर्वप्रथम हम गवेषणालय की गुहा रेखाचित्र पञ्जिका का उल्लेख करेंगे। यह पञ्जिका हाथ से लिखी हुई है। प्रत्येक गुहा की रूपरेखा के एक दो अथवा अधिक चित्र बनाए हुए हैं। ये चित्र नाप कर नहीं बनाए गए। केवल स्मृति और आंख के सहायक हैं। उदाहरण-स्वरूप हम १५४वीं गुहा को लेते हैं। इसमें ११ रेखाचित्र हैं।

प्रथम रेखाचित्र ... द्वार, पूर्वाभिमुख (आभ्यन्तर रूप), भित्तिचित्र।

द्वितीय रेखाचित्र ... दक्षिणाभिमुख भित्ति (आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।

तृतीय रेखाचित्र ... पश्चिमाभिमुख भित्ति (मूर्त्यालय आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।

चतुर्थ रेखाचित्र ... उत्तराभिमुख भित्ति (आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।

पञ्चम रेखाचित्र ... गुहा-मुख (façade), कोई भित्तिचित्र नहीं।

षष्ठ रेखाचित्र ... मूर्त्यालय— उत्तर, पश्चिम, दक्षिण।

सप्तम रेखाचित्र . . . मूर्त्यालय की अन्दर की छत ।

अष्टम रेखाचित्र . . . सामान्य अन्दर की छत, इसमें बहुत कुछ विकार हो चुका है ।

नवम, दशम, एकादशम रेखाचित्र . . . द्वार के तीन पार्श्व— इन सब में कुछ न कुछ विकार हुआ है । जहां जहां आवश्यकता समझी गई है वहां वहां माप दिया गया है ।

जहां जहां भित्तिचित्र शब्द लिखा गया है वहां रेखाचित्र में भित्तिचित्र नहीं दिए गए किन्तु केवल निर्देश किया गया है कि यहां भित्तिचित्र है ।

गुहाओं के रेखाचित्रों की दो पञ्जिकाएं हैं ।

प्रत्येक गुहा का वर्णन प्रायः एक दो पृष्ठ में समा जाता है ।

यह वर्णन-पञ्जिका अभी प्रारम्भिक अवस्था में है । इसमें बहुत कुछ विस्तार और आवृत्ति की आवश्यकता है ।

गुहाओं में लेख— लेखों की भी दो पञ्जिकाएं हैं । लेखों की अनुकृति आंश से की गई है रूपित्र से नहीं । लेखों का क्रम वंशानुसार है ।

गुहाओं के चित्रों और मूर्तियों का वर्णन— यह पञ्जिका भी प्रारम्भिक रूप में है ।

गुहाओं की अन्तर्बास्तु-पञ्जिका— इस पञ्जिका में गुहाओं की तीनों संख्याएं (पेलियो की, छाह की और अन्तिम गवेषणालय की संख्या), गुहा के परिमाण का निर्देश (छोटा परिमाण, मध्य परिमाण, बड़ा परिमाण), गुहा के बनने तथा जीर्णोद्धार का समय, गुहा में क्या क्या है (कितनी मूर्तियां और कहां कहां पर कितने चित्र और किस किस भित्ति, छत, पार्श्व, मूर्त्यालय, द्वार के अन्दर बाहर आदि किस स्थान पर), क्या इस गुहा में कोई लेख है तथा अन्य विशेषताएं (वास्तु-कला, धर्म तथा इतिहासादि की दृष्टि से) । पिछले दस वर्षों में इस पञ्जिका की दो बार आवृत्ति हो चुकी है । अब भी यह पञ्जिका प्रकाश्य रूप में नहीं ।

सिलोसोफीर्ष लेखों की पञ्जिका

तुम्-ह्वाह गुहाओं के सम्बन्ध में आज तक की समालोचनाएं— यह कार्य अभी प्रारम्भिक अवस्था में है ।

तुम्-ह्वाह में बौद्ध कला का आरम्भ और विकास— यह पुस्तक तुलनात्मक दृष्टि से लिखी जा रही है । यह भी पूर्वावस्था में है ।

तुम्-ह्वाह की गुहाओं की रक्षा के लिए पहाड़ी के उपरि स्तर पर मोटा बज्रलेप होना चाहिए । यदि यह लेप बजरी से संचित कर दिया जाए तो पहाड़ी की रूपाकृति में परिवर्तन न होगा, देखने में पहाड़ी प्राकृतिक प्रतीत होगी ।

गुहाओं में मिट्टी की बनी हुई बड़ी मूर्तियां, जो पहले भित्ति के साथ लगी हुई थीं, अब परे होती जा रही हैं । इन मूर्तियों को सहारा देने की आवश्यकता है ।

तुम्-ह्वाह में ४७६ गुहाएं हैं । और छोटे बड़े चित्रों की संख्या सहस्रों में है । यह



त्रि-हाई संस्था के अध्यक्ष श्री छाई आचार्य रघुवीर को थाई वंश (६१८-९०५ ख्रिस्टाब्द) के भित्तिचित्र दिखा रहे हैं। इनमें मुल्बावती स्वर्ग और राज्ञी वैदेही चित्रित है।

Prof. Raghu Vira inspecting murals in Cave 217 (P. 70) of the Tang dynasty (618-905 A. D.) which depict a paradise scene and the meditations of Queen Vaidehi.



तुन-ह्वाङ् की एक थाङ्-कालीन गुहा में आन्ध्रायं रघुवीर तथागत की प्रतिमा के विषय में टिप्पण कर रहे हैं।

Prof. Raghu Vira musing over a sculpture of the Tang dynasty in a Tun-huang cave.

आवश्यक है कि विद्वानों तथा जनता को प्रतिवर्ष तुन्-ह्वाङ्ग के सम्बन्ध में कोई न कोई विशेष-विषय-प्रतिपादक ग्रन्थ मिलता जाए। उदाहरण के लिए हम कुछ शीर्षक नीचे देते हैं—

- | | |
|---|---|
| (१) लिखित और उत्कीर्ण लेख— इन लेखों में कुछ ऐतिहासिक हैं किन्तु बहुत बड़ी संख्या दाताओं के नामों की है। | (१२) अप्सराएं |
| (२) वाद्य | (१३) देवगण |
| (३) हस्तमुद्राएं | (१४) बोधिसत्व |
| (४) वास्तुकला | (१५) अर्हन् |
| (५) जातक-कथाएं | (१६) बुद्ध |
| (६) वेष-भूषा | (१७) मञ्जुश्री |
| (७) विभिन्न रंग और उनका प्रयोग | (१८) समन्तभद्र |
| (८) गुहाएं कैसे खोदी गईं | (१९) अवलोकितेश्वर 卐 卐 |
| (९) प्रत्येक युग की विशेषताएं | (२०) दातृगण |
| (१०) फूल और बूटे | (२१) तुन्-ह्वाङ्ग का अन्य गुहाओं के साथ सम्बन्ध |
| (११) सामान्य जीवन के चित्र | (२२) मूर्तियां |
| | (२३) गुहाओं के जीर्णोद्धार का इतिहास। |

चीनी शासन तुन्-ह्वाङ्ग की कला को राष्ट्रीय कला मानता है और इस के द्वारा चीनी कला में नए जीवन के संचार के लिए यत्न कर रहा है।

हमने युन्-काङ्ग 卐 卐 में भी देखा कि उद्धार का कार्य चला हुआ है। पिछले शासनों में इन राष्ट्रीय कला-केन्द्रों की अवहेलना और उपेक्षा की गई। अब शासन जागरूक है। हम आशा करते हैं कि कुछ वर्षों में चीन का प्राचीन कलावैभव जनता के सामने आ सकेगा। व्यय की दृष्टि से केवल एक कठिनाई है कि ऐतिहासिक स्थान अत्यधिक हैं। सभी में उद्धार की आवश्यकता है। शासन की पद्धति यह है कि स्थानीय जनता के प्रतिनिधि केन्द्रीय शासन को सुझाव देते हैं और वहां से अनुमति मिलने पर उद्धार का कार्य आरम्भ करते हैं। बिहारों और मन्दिरों के उद्धार में पुजारियों के सुझाव के अनुसार कार्य होता है।

किन्तु एक बड़ी भारी न्यूनता है कि जीर्णोद्धारकों के हृदय में सौन्दर्य की भावना तो है किन्तु यह वैज्ञानिक भावना नहीं कि परिवर्तन न किया जाए, केवल मूल रूप को रखा जाए। वैज्ञानिक भावना के अभाव से जीर्णोद्धार में कितनी प्राचीन वस्तुएं नाश हो जायेंगी यह जानना संभव न होगा।

तुन्-ह्लाक के शिलालेख

सा-बाओ-कू ("बाह-महा-गुहा") का शिलालेख— च-चन् युग का आठवां वर्ष— १४०५ विक्रम। यह ध्वेन् वंश का लेख है। इस पर छः भाषाएं लिखी हुई हैं। सबसे ऊपर संस्कृत है। उसके नीचे और आसपास शेष पांच भाषाएं। ऊपर संस्कृत, उसके नीचे भोट। बाएं हाथ चीनी और धी-श्या, बाएं हाथ फाग्या और बीगूर।

दक्षिण पार्श्व में संरक्षकों के नाम दिए हैं। एक राजा, उसकी गणिका तथा पांच पुत्र। बायें पार्श्व में भिक्षुओं के नाम हैं।

बूछुरा शिलालेख— यह खण्डित है। ऊपर गान्धार शैली में कुछ मूर्तियां हैं और नीचे संस्कृत तथा चीनी में लेख हैं। कुछ पुरुषों के नाम भी दिए हैं।

सोसरा शिलालेख— यह भी खण्डित है। सातवीं शताब्दी के चौदह वंश के समय का है। इस काल में चन्द्रमा के लिए केवल गोल चक्र लिखा जाता था तथा सूर्य के लिए गोलचक्र के बीच में ३ के अंक जैसा चिह्न। इस लेख में गुहा के निर्माण का वर्णन है।

चीबा शिलालेख— तिथि ता-चुऊ का पञ्चम वर्ष पञ्चम मास— ९०८ विक्रम।

यह शिलालेख महाराज की ओर से है। महाराज ध्वेन्-चुऊ ने भिक्षु वू-जऊ को आदेश दिया कि तुम सा-बाओ मण्डल में (आधुनिक तुन्-ह्लाक) भिक्षुओं और मन्दिरों का नियन्त्रण करो। ध्वेन्-चुऊ के पिता ने बौद्धों पर बहुत अत्याचार किए थे। इसने बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया।

७-६-१५

आज प्रातः तुन्-ह्लाक की दर्शक-पञ्जिका में अपने स्नेह को हमने इन शब्दों में प्रकट किया—

“भारत तथा चीन अनेक सताब्दियों के आध्यात्मिक सखा हैं। अमितायु, अमिताभा, मैत्री, शान्ति, सर्वकल्याण हमारे ध्येय तथा लक्ष्य रहे हैं।

“मैं और सुदर्शना तुन्-ह्लाक आए। दर्शन पाकर अत्यन्त संतोष हुआ। जीवन, भारत-चीन का जीवन, यहाँ १६०० वर्षों से मूर्तिमय साझा है।

“पहाड़ी ने अपना अमरत्व मूर्तियों तथा चित्रों को दिया। मूर्तियों तथा चित्रों ने अपना मूक सन्देशवाहक पहाड़ी को बनाया। अन्योन्माध्य से भारत की कृप्त संस्कृति और चीन की अद्भुत तथा निरपम कला की रक्षा हुई।

“प्यासे मेघ के समान हम तुन्-ह्लाक की कला तथा सन्देशमयी तिथि में निमग्न करके, अपने को आप्यायित तथा तृप्त करके, अब भारत छोड़ रहे हैं कि अपनी भूखी



तुन-ह्वाङ्ग में ब्राह्मी का ध्वजस्तम्भ-लेख, जिसपर प्रतीत्यसमुत्पादसूत्र उत्कीर्ण है । यह सूत्र नालन्दा से प्राप्त इष्टकालेख से मिलता है ।

A dhvaja-stambha from Tun-huang with Gandhara sculptures and a Brāhmī inscription which may be assigned to the fifth century on palaeographic grounds. It is a fragment of the Pratityasamutpada-sūtra, identical with that on the Nālandā bricks [Epigraphia Indica 21(1932):193-204].

जनता, अनभिज्ञ जनता को भी इस सांस्कृतिक अमृतपान से मंगलमय बना सकें ।

“आतिथ्य के लिए हम श्रीमान् तथा श्रीमती छाऊ के आभारी हैं ।”

“India and China have been comrades in spirit from centuries. Immortal life (Amitāyu), brilliance and glory in unlimited measure (Amitabha), friendliness (Maitri), Peace (Śānti), Good to all (Sarva-Kalyāna) have been our goal and aspiration.

“I and my daughter Sudarshana wended our way to the hills of Tun-Huang. We have seen the sight, imbibed it, assimilated it, into our bloodstream, and that has ennobled us. Sixteen centuries have receded to give us an intimate view of how China and my country made a steel bond of love that has endured.

“The hill has imparted its immortality to the figures and paintings, while the latter have made the hill the silent but ever-active messenger of their sweetness, vividness, and a life that transcends itself in the service of truth and toleration, progress and realisation of visions.

“Here some of the last threads and strands of my own land's fabric are seen in their prime youth. Here is the proud treasure of the ancient Han and other races, commingled, convibrant, harmonious, symphonic, a marching together shoulder to shoulder.

“We two, the specks of a thirsty cloud, came to replenish ourselves at the ocean of plenty that is Tun-Huang. Replenished we return to our land, eager to shower on our compatriots, who are equally eager, the cultural sap of which we have drunk deep.

“We have had the hospitality of two unrivalled hosts Dr. and Mrs Chang, artists and scholars. To them goes our friendly warmth and gratitude”.

श्री छाऊ ने लगातार तीन दिन दो दो घण्टे बैठ कर सुदर्शना का तैलचित्र पूरा किया । यह अभी सूखा नहीं । इसको कैसे ले जाया जाए यह भी एक समस्या बन गई । पीछे से भेज देंगे सो हमको इचिकर नहीं । अन्त में तैलपत्र बीच में लगा कर चित्र लपेट कर बांध दिया गया । अभी सूखने में तीन चार दिन लगेंगे ।

आठ से पौने नौ तक पेंतालीस कला में श्री छाऊ ने मेरा अंकनी-चित्र बनाया ।

तत्पश्चात् इस बजे के लगभग ४६५ संख्या की तान्त्रिक गुफा देखने गए । यह गुफा पहाड़ी के उत्तर कोने के समीप है । इस गुफा के आसपास की गुफाओं पर भी बाहर लाल अक्षरों में—ओम् मणि पद्मे हू—अनेक भाषाओं में लिखा हुआ है । सदा ही सबसे ऊपर संस्कृत सिद्धम् अक्षरों में, फिर चीनी, भोट, तथा मोंगोल अक्षरों में । ४६५ संख्या की गुफा छोड़ कर अन्य में न चित्र हैं न मूर्तियाँ । इन गुफाओं की संख्या १०० के लगभग है । श्री छाऊ का कहना है कि ये गुफाएँ चित्रकारादि के लिए निवास-स्नान का काम देती रही थीं । इस कारण के लक्ष कुछ गुफाओं में मिले हैं । हमने स्वयं ये लेख नहीं देखे । इन लेखों में वास्तविक शब्दप्रयोग क्या है सो भी हमको नहीं बताया गया ।

४६५ संख्या की गुफा में चार बल्लियों की सीढ़ी बनी है। यह सीढ़ी सदा यहां पर ही लगी रहती है। एक एक करके हम लोग ऊपर चढ़े। गुफा का अग्रिम भाग बराण्डे के समान है। अन्दर के भाग में ऊंची बेदी बनी है। इस बेदी पर पहले मूर्तियां रखी हुई थीं पर आज कुछ नहीं। बेदी गोल है। वास्तव में चार बेदियां हैं जो एक दूसरे के ऊपर बनाई गई हैं। प्रत्येक ऊपर की बेदी, नीचे की बेदी से, डेढ़ पाद के लगभग छोटी है। मूर्तियां रखने के लिए ये सुन्दर पीठ का काम देनी होंगी।

पूर्व की ओर द्वार है। समस्त तुन्-ह्लाक की गुफाएं पूर्वाभिमुख हैं। सामने एक शैलशिखर है जिसके सम्बन्ध में यह सम्प्रदाय है कि सायंकाल अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में यह स्वर्ण के समान चमकता है। इस स्वर्णप्रभास को देख कर ही इसके सामने गुफाओं की रचना की गई थी।

४६५ की आभ्यन्तर गुफा की दक्षिण भित्ति पर यब्-युम् अथवा नट्टयुग शैली के बहुत से चित्र हैं। प्रत्येक देव के साथ उसकी शक्ति ने आलिंगन किया हुआ है। इनको अश्लील मान कर किसी ने स्थान स्थान पर खुरच दिया है।

प्रत्येक भित्ति के तीन भाग हैं। पूर्व भित्ति का एक भाग मध्य का द्वार है। दोनों ओर के दो भाग चित्रों से भरे हैं।

छत के पात्र भाग है। इनमें से पूर्व भित्ति का भाग सुन्दरतम और सुरक्षिततम है। अन्य गुफाओं में भी प्रायः यही स्थिति है। इसका कारण स्पष्ट है। यहां न आंधी का प्रकोप चित्रों को बिगाड़ता है और न ही मनुष्यों का प्रकोप। इस गुफा में हम बहुत से चित्र लेना चाहते थे किन्तु स्फुरदीपों के अभाव में केवल सात ही चित्र ले पाए।

यही एक गुफा है जिसमें भोट चित्र बने हैं। इस कारण इस गुफा का विशेष महत्त्व है।

तुन्-ह्लाक का प्रदेश सूखा और रुखा है। केवल थोड़े से भाग में (और यह भाग वह है जिसके सामने गुफाओं में चित्र बने हैं) पिछले ४०, ५० वर्षों में बहुत से वृक्ष लगाए गए हैं। गेहूं आदि की खेती भी होती है। यद्यपि इस ऋतु में नाला बहुत छोटा है किन्तु कभी कभी इस नाले में पर्याप्त पानी जाता है। आजकल यह पानी पहाड़ी से कुछ पग दूर बह रहा है किन्तु जब यह पानी पहाड़ी के साथ बहता है तो कुछ रेत और बजरी अपने साथ बहा ले जाता है। १९४७ में पहाड़ की भित्ति के सामने का कुछ भाग, जिसमें चित्रकारों के रहने की गुफाएं भी थीं, नीचे टूट कर गिर गया।

यहां यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि पूर्व की ओर से बह पहाड़ी भित्ति के समान है। इसलिए नीचे से बजरी का निकलना ऊपर तक की पहाड़ी को गिरा देता है।

शीत ऋतु में अधोभूमिगत जल ऊपर निकल आता है और जम कर हिम बन जाता है। यह वृक्ष अति रमणीय होता होगा।

पानी की धार ४६५ गुफा से बहुत आगे नहीं जाती। रेत में विलीन हो जाता है। रेत कितना पानी बूसता है इसका अनुमान इस बात से लग सकता है कि दो कोस ऊपर जाकर ही नाला पर्याप्त बड़ा दिखाई पड़ता है। इसकी घरघर ध्वनि पर्याप्त दूर तक गूँजती है। श्री छाऊ से बिलित हुआ कि २०, २५ कोस ऊपर जाकर बिजली का जनित्र लगाने की योजना है।

तुन्-ह्वाऊ में आकर हमने केवल एक बार ही बड़ी बड़ी गुफाओं का अवलोकन किया। इसमें हमको पूरा डेढ़ दिन लगा। डेढ़ दिन में हम केवल इतना ही निश्चय कर पाए कि किन किन का रंगीन भाचित्र लेबें। हमने पेलियो के चित्र देखे। ये काले रंग में हैं। परिमाण इतना छोटा है कि मूल चित्रों का अध्ययन इनके द्वारा नहीं किया जा सकता। इनमें सौन्दर्य भी नहीं और पूर्णता भी नहीं। पेलियो के ग्रन्थ प्रकाशित होने से लाभ यही हुआ कि संसार को तुन्-ह्वाऊ की सत्ता और महत्ता का भास हुआ।

आज तुन्-ह्वाऊ संस्था का मुख्य कार्य चित्रों की अनुकृति करना है। अनुकृति करने के लिए गुफाओं में बिजली का प्रकाश करते हैं। बिजली उत्पन्न करने के लिए विशेष जनित्र लगाया हुआ है। दस बारह गुफाओं में हमने चित्रकारों को अनुकृति करते हुए अथवा उनका सम्भार लगा हुआ देखा। यद्यपि घब्वे आदियों को अनुकृति नहीं करते किन्तु जहां पुराना रंग उड़ गया उसे उड़ा हुआ रहने देते हैं। अनेक चित्रों में मूल रूप के निर्माण का भी यत्न किया गया है। जिन चित्रकारों ने इन गुहाओं में वर्षों व्यतीत किए हैं वे ही मूल रूप का अनुमान कर सकते हैं।

काले चित्र सामान्य परिचय के लिए अच्छे हैं। इनकी अपेक्षा रंगीन भाचित्र कहीं अच्छे हैं। किन्तु इनकी भी अपेक्षा कुशल चित्रकारों द्वारा अनुकृत मूल परिमाण के चित्रों से ही गुफाओं की विशालता, रमणीयता और प्रभाव का ज्ञान हो सकता है।

हमारा विचार है कि हाथ से अनुकृति किए हुए मूल परिमाण के रंगीन चित्र और रंगीन छोटे परिमाण के भाचित्रों को साथ रख कर अध्ययन होना चाहिए।

रंगीन भाचित्र इतने स्पष्ट होने चाहिए कि उनमें कोई भी रेखा अस्पष्ट न हो और यथासम्भव रंगों की सब छटाएं भी जैसी की तैसी आई हुई हों।

चित्रों की परस्पर स्थिति दिखाने के लिए घूमने वाले रूपित्र से काले चित्र लेने चाहिए।

हमारी अपनी योजना के अनुसार २० भाचित्रक अवश्य होने चाहिए। ये दो तीन मास में अपना कार्य पूरा कर सकते हैं। प्रत्येक भाचित्रक के साथ एक वर्णन लिखने वाला व्यक्ति भी चाहिए। चित्रपट्टियां यदि साथ साथ बुल सकें तभी काम पूरा हो सकेगा। बुलने के लिए प्रतिस्प्ताह अथवा सप्ताह में दो बार विमान द्वारा चित्रपट्टियां बर्लिन, बम्बई अथवा पैरिस जानी चाहिए। अपने साथ प्रबन्ध हो सकें तो और भी उत्तम।

चित्र लेते समय एक पाद-शेपी (footscale) जबवा कोई अन्य वस्तु जिसकी निश्चित लम्बाई हो, तथा अनेक रंगछटाओं वाली पट्टी मूल चित्र के साथ रख देनी चाहिए। जब भाचित्र धूल जाए तब इस पट्टी की छटाओं के भाचित्रण को देख कर सरलता से और पूर्णरूप से निश्चय हो जाया करेवा कि हमारा भाचित्र कितना सफल हुआ है। रेखाओं की सूक्ष्मता मूल चित्र के परिमाण पर भी निर्भर रहेगी।

तुन्-ह्लाक में तीन लामा रहते हैं। इनमें से एक भिक्षुणी है। बड़े लामा प्रसिद्ध वाहक के समकालीन हैं। किन्तु इनसे बात करना और प्रश्नों का उत्तर लेना बहुत समय-पेसी है। भिक्षुणी बहुत श्रद्धालीला प्रतीत हुईं। अपने निर्वाह के लिए तीनों खेती का काम करते हैं। वर्ष में केवल एक बार बुद्ध जन्मदिवस पर यात्री दर्शन करने आते हैं। भेंट के रूप में वे रुपया नहीं लाते किन्तु छोटे मोटे प्राणी ले आते हैं सो भी सहस्रों में से एक दो।

इस वर्ष बुद्ध का जन्मोत्सव २७ मई को समाप्त हो चुका था। हमारे पहुंचने से दो दिन पूर्व। इस वर्ष दस सहस्र के लगभग दर्शक आए थे।

तुन्-ह्लाक में सीढ़ियां मिट्टी की कच्ची ईंटों की बनी हुई हैं। यदि सीढियों पर दस सहस्र व्यक्तित चढ़ने उतरने लगे और प्रत्येक दर्शक हस्तगम्य चित्रों को एक एक बार छूने लगे जबवा उनके कपड़े जित्तिचित्रों से रगड़ खाने लगे तो तुन्-ह्लाक का कितना ही नाश हो जाएगा। इसलिए यात्रियों का आना जाना बड़ी मूर्ति के दर्शनो और धूपादि जलाने तक ही सीमित है।

आज हम तुन्-ह्लाक से दोपहर दो बजे चले। आते समय हम अपने साथ पेह-चिह्न से बर्षा लाए थे, सो धूल का वैभव पता न चला था। इस बार हमारी यात्रा का आरम्भ-किन्तु तुन्-ह्लाक था। धूल और वायु अपने जीवन पर थे। यद्यपि हमारी गाड़ी चारों ओर से ढकी थी फिर भी धूल का अनुभव मुझ और नासिका कर रहे थे। सायं आन्-शी पहुंचे। यात्रा लगभग साढ़े तीन घण्टे रही। इस बार हमारी गाड़ियां आनन्द से चलती रहीं। शत्रु विरुद्ध दिसा से आ रही थी अतः गन्त्र शीघ्र उष्ण नहीं होता था। मार्ग में एक धूलरूप के समीप गाड़ियों को पानी पिला कर हम यथापूर्व अपने स्थान पर आ गए। इस रूप के साथ एक कथा सम्बद्ध है कि वहां एक बुद्ध भिक्षु भेड़ियों को पानी पिलाता है। इसी के समीप कुछ मिट्टी के लम्बेहर बड़े हैं। इनमें से एक में पांच मूर्तियां हैं, बिना स्त्रि की। ओम् मणि पद्मे हूं भोट भाषा में लिखा है।

५-२-५५

अतः आठ बजे आन्-शी से चले। १४० प्रोचक के पक्षेयान् एक छोटे से गांव में पहुंचे जहाँ थोकर थोकरनादि किया। लगभग दो घण्टे ठहर कर केड़ कच्चे हल फिर भागे बड़े।



तुन्-द्वाङ् के बड़े लामा, श्रद्धाशीला भिक्षुणी, एक और लामा, तुन्-
द्वाङ् गवेषणालय के अध्यक्ष श्री छाङ्, आचार्य रघुवीर, उनकी पुत्री
तथा अन्य लोग ।

Prof. Raghu Vira and the members of his expedition at
Tun-huang, with Mr. Ts'ang the Director of the Tun-
huang Institute, his wife, two Lamas and a Lamaist nun.



कान्-सू प्रान्त की राजधानी लान्-चाओ के रमणीय स्थान पञ्चोत्तम के मन्दिर के द्वारपट कालचक्र मन्त्र से अलंकृत हैं।

The normal and inverted monogrammatic Kālacakra bijas on the two doors of the Five Spring Temple at Lanchow.

इस बार हमें हिचकिचाहट नहीं दिखाई न पड़े। बड़ा आश्चर्य हुआ कि ५, ६ दिन में ही इतनी हिम लुप्त हो गई। सम्भवतः कोसों तक फैली हुई बृल की आंधी इसका कारण थी।

सायंकाल लगभग पांच बजे चीन की प्रसिद्ध महाभित्ति के पश्चिमी द्वार पर पहुंचे। धूप खिली थी। रंगीन त्रलचित्र साथ लिया और नाले के जलमय पांच स्थानों को पार कर हमारी चार गाड़ियां पश्चिमी द्वार पर पहुंचीं। भित्ति पर्याप्त ऊंची है। यह द्वार सेना के ठहरने अथवा रुकने के लिए बनाया गया है। बीच का स्थान दो पक्की भित्तियों और एक कच्ची भित्ति से घिरा है। समीप बसाए गए हरे भरे गांव ने इस स्थान को और भी रमणीय बना दिया है। यहाँ आध घण्टे तक हम लोग इधर उधर घूमते रहे और रंगीन चित्र लेते रहे।

सायंकाल साढ़े छः बजे २८० क्रोशक की दिनभर की यात्रा पूरी कर हम चू-च्यान् पहुंचे।

६-६-५५

आज प्रातः सात बजे उठे। नौ बजे रसोइए ने हमारे कथनानुसार खीर, और आलू एवं साग मिला कर भाजी बनाई। कई दिनों के पश्चात् आज पेटभर भोजन किया। चू-च्यान् से हमारे साथ जो व्यक्ति तुन्-ह्लाङ्ग गए थे उन सबका धन्यवाद किया। विमान साढ़े ग्यारह बजे चलेगा। इस सूचना के अनुसार हम दस बजे विश्राम-स्थान से चले। मार्ग कच्चे और संकीर्ण हैं। थोड़ा गाड़ियों का एक के पश्चात् एक तांता बंधा हुआ था। हम, लोगों के कुतूहल का केन्द्र, बने हुए थे। बच्चे उत्सुकता और आश्चर्य से हमें देख रहे थे। साढ़े ग्यारह हम विमानपतन पर पहुंचे। पता चला कि विमान पीने एक बजे आएगा और पीन घण्टा यहाँ ठहरने के पश्चात् लान्-चाओ जाएगा।

हम विमानपतन के विश्रामगृह में पहुंचे। यह एक क्रोशक की दूरी पर है। घण्टा भर विश्राम करने के पश्चात् हम प्रस्नान करेंगे। पूरे एक बजे विमान उड़ा। चार से दस कला पूर्व हमारा विमान भूमि पर उतरा। वहाँ चार सज्जन स्वागत के लिए उपस्थित थे। उनमें एक विदेश-विभाग के कान्-सू प्रान्त के अध्यक्ष थे। सुदर्शना के लिए कुमारी छाड़वाई हुई थी।

कान्-चाओ ह्लाङ्ग-हो अर्थात् पीत नदी के तट पर बसा हुआ है। हमारे विश्राम-स्थान के सर्वथा सम्मुख नदी के ऊंचे पर्वत-शिखर पर मिट्टी का स्तूप दृष्टिगोचर होता है।

यहाँ का सर्वाधिक रमणीय स्थान पञ्चोत्स है जो कभी कभी अथवा विशेषोत्सवों पर खुलता है। पहले यहाँ सभिर या अब जनता के लिए केवल इतनीय स्थान के रूप में इसका प्रयोग होता है।

कान्-चाओ कान्-सू प्रान्त की राजधानी है। यह स्थान फलों के लिए प्रसिद्ध है।

कालिन्द, द्राक्षा और बालू-बुखारा तथा सुगन्धि वाले सेब यहां की विशेषता हैं । अभी कालिन्द का ऋतु नहीं है । पर सुगन्धि वाले कोमल भुरभुरे सेब यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं ।

हम शाक-विपणि देखने गए । यहां सर्वप्रथम हमें स्वच्छ और धुला हुआ अदरक दिखाई पड़ा । मटर, मूली, गाजर और विभिन्न प्रकार के शाक थे । सरसों की गंदलें भी थीं । इस विपणि में बच्चों के खेलने के लिए कौशेय के कीड़े बिक रहे थे ।

७-३-५५

आज प्रातः साढ़े नौ बजे प्रातराश के पश्चान् दस बजे शी-निद्र के लिए चले । झांझ-हो के पुल को पार कर हम नदी के साथ साथ बढ़ने लगे । इस नदी का रंग पीला नहीं, मटमैला है । हम मिट्टी की पहाड़ियों पर से होते हुए आए । लान्-बाओ से शी-निद्र २०० क्रीशक से अधिक है । समस्त मार्ग में धूलि का अक्षय्य साम्राज्य है । दोनों ओर जहां कहीं भी बोड़ा सा समतल स्थान है हरी भरी खेती है । परन्तु हम इस सुन्दर दृश्य का आनन्द धूलि की अधिकता के कारण न ले सके । अधिकांश गेहूं के खेत हैं । मार्ग में बर्बा के दो चार छींटे भी पड़ गए पर उससे धूलि का शमन नहीं हुआ ।

कई स्थानों पर पत्थरों में खेती की गई है । पहले मिट्टी और फिर उस पर पत्थर के टुकड़े सर्वथा बिछा दिए गए हैं । यही एक मार्ग था जिसमें हमको पक्षी दिखाई दिए—कपोत, कौए और चिड़ियां ।

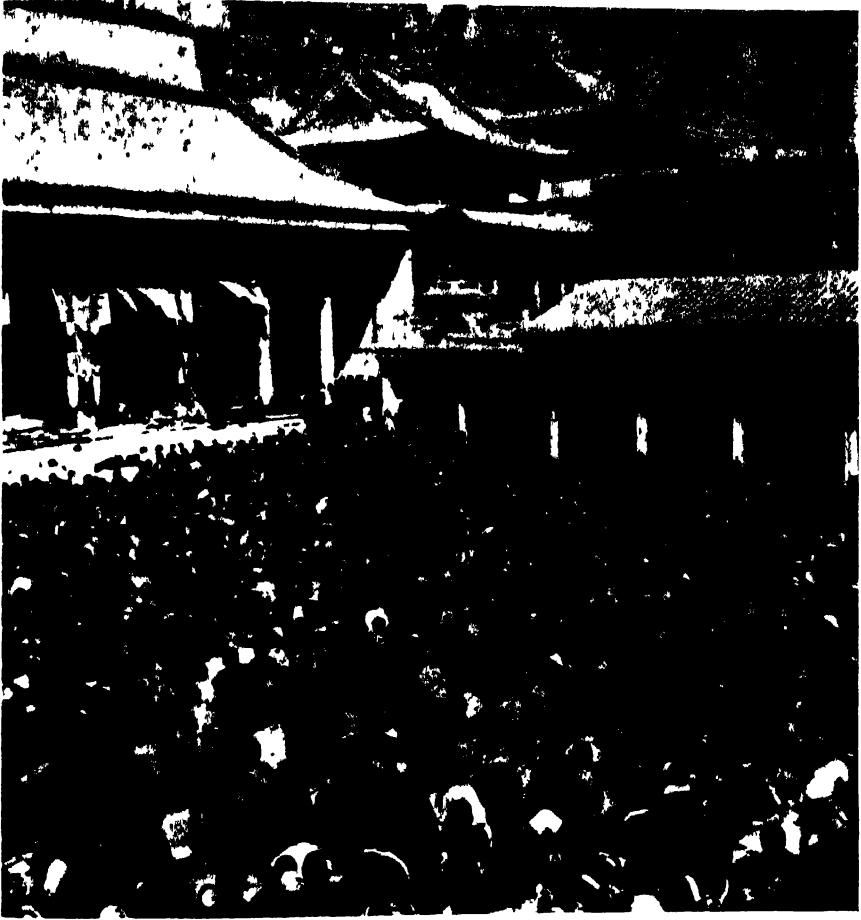
शी-निद्र चिद्र-हाइ प्रान्त की राजधानी है । चारों ओर घर मिट्टी के हैं । जिस स्थान पर हम ठहरे हैं वह सबसे बड़ा स्थान है । यहां विदेशी ठहराए जाते हैं ।

शी-निद्र से भोट-भाषा आरम्भ हो जाती है । भोट-लिपि भारतीय लिपि से निकली है । उसके १,२,३,५,९,१० संख्या के अङ्क अपने ही समान हैं ।

यहां बहुत धीत है । यद्यपि यह स्थान ३८ अक्षांश पर है पर यहां मॉंगोल-वेश की अपेक्षा भी कहीं अधिक धीत है । यहां से १०० क्रीशक की दूरी पर चासभूमियां हैं जहां धीत की अधिकता के कारण बूजों का उगना सम्भव नहीं । शी-निद्र की ऊंचाई ८००० पाद है ।

८-३-५५

रात्रि को इस बजे हमारा अभिनन्दन करने के लिए भोट और मॉंगोल नृत्य हुए । प्रथम नृत्य— हमारी प्रिय चास-भूमि । लड़कें लड़कियां धीरे धीरे पोके पोके पथ रखते हुए हाथ डेढ़ हाथ बाहर निकली हुई कुतों की बाहों को दिखाते हुए नृत्य करती और नाचते हैं । नीत का आशय है— घर का काम समाप्त करके चासभूमि से पशुओं को



कुम्-बुम् अर्थात् लक्ष-बुद्ध-मन्दिर आम्दो का सब से बड़ा और सर्वप्रथित विहार है। प्रसिद्धि है कि मन्दिर के मध्य में बोधिवृक्ष है जिसके प्रत्येक पत्ते पर बुद्ध की मूर्ति है। यह बोधिवृक्ष मन्दिर से पूर्णतः ढका हुआ है। यहां दो सहस्र लामा निवास करते हैं। यह मन्दिर पीतोष्णीष मम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य चोंखापा सुमतिकीर्ति की जन्मनगरी होने के कारण सब भोटयानियों के लिए विशेष रूप से पुण्यतीर्थ है।

A view of the congregation at the Kumbum Temple (Sku-ḥbum Byams-pa glin) in the birth-place of Tson-kha-pa, the founder of the Yellow School of Tibetan Buddhism.



कुम्-बुम् के जीवित बुद्धों के साथ आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री मुदरंता ।
Prof. Raghu Vira and his daughter with the two eminent Living Buddhas of
Kumbum.

लाना। सड़क नाचते हुए सीटियां बजाते हैं।

द्वितीय नृत्य— एक सैनिक की पत्नी अपने पति को पत्र लिखती है कि साम्यवादी राज्य में हम बहुत प्रसन्न हैं। चतुर्मुखी उन्नति हो रही है।

तृतीय नृत्य— काश्क जाति के लोग प्रसन्न हैं कि साम्यवादी शासन आया। बूढ़े भी युवकों के समान काम में लग गए हैं। मध्य में कुम्कुट का हास्यास्पद अभिनय था।

चतुर्थ नृत्य— माओ त्स-तुङ्ग की प्रशंसा में दू जाति के लोग गाते और नाचते हैं।

पञ्चम नृत्य— चिङ्ग-हाइ चीनी में चिङ्ग-हाइ प्रान्त की जनता गाती है कि १९५३ में हमने अपने प्रतिनिधि स्वयं चुने हैं।

षष्ठ नृत्य— पेइ-चिङ्ग राजधानी की प्रशंसा में भोटिए नाचते और गाते हैं— पेइ-चिङ्ग हमारी सुन्दर राजधानी है। गीत का नाम है— वाला पेइ-चिङ्ग।

९-६-५५

कुम्-बुम् कुम्-बुम् कुम्-बुम् कुम्-बुम् कुम्-बुम् अथवा ता-अर् स्स

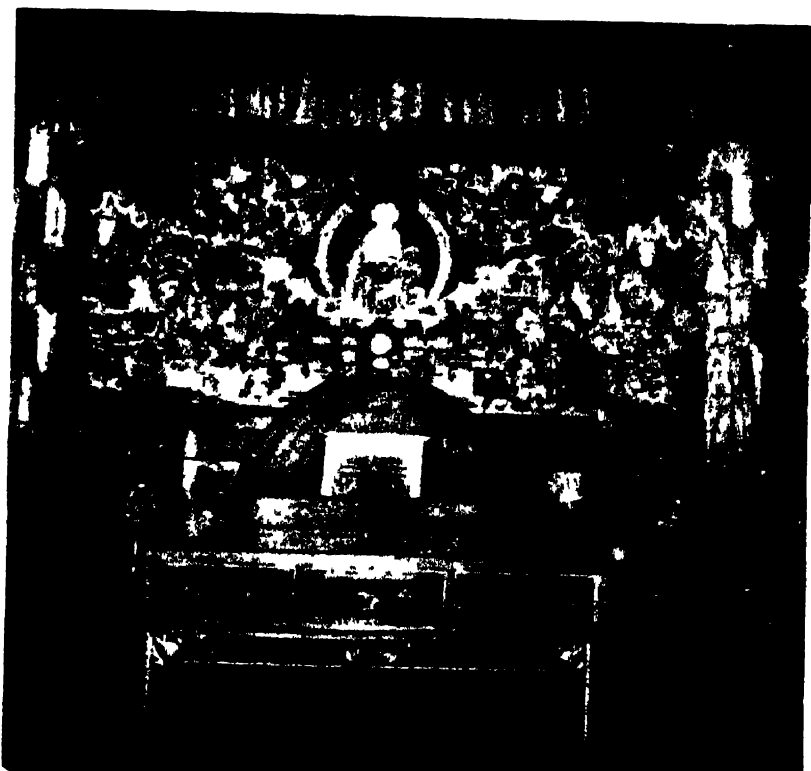
ता-अर् स्स चोङ्ग-स-प का जन्म-स्थान है। यह आम्-दो का सबसे बड़ा विहार है।

आधुनिक पञ्छेन्-लामा चोङ्ग-स-प उर्-म-प के १७वें उत्तराधिकारी हैं। इन्होंने यहां बहुत वर्ष व्यतीत किए हैं। साम्यवादी शासन के शक्ति-सम्पादन के पश्चात् पञ्छेन्-लामा और दलाइ-लामा इकडे भ्रमण करने लगे हैं। पहले दोनों में अनबन थी और पञ्छेन्-लामा ल्हा-सा न जाते थे।

ता-अर् स्स चीनी नाम है। इसका भोट नाम कुम्-बुम् अर्थात् 'लक्ष-बुद्ध-मन्दिर' है। प्रसिद्ध है कि मन्दिर के मध्य में बोधिवृक्ष है जिसके प्रत्येक पत्ते पर बुद्ध की मूर्ति है। यह बोधिवृक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता। सर्वथा मन्दिर से ढका हुआ है। यदि मन्दिर हो तोड़ा जाए तभी परीक्षा की जा सकती है कि अन्दर बोधिवृक्ष और उसके पत्तों पर काल बुद्ध मूर्तियां हैं अथवा नहीं।

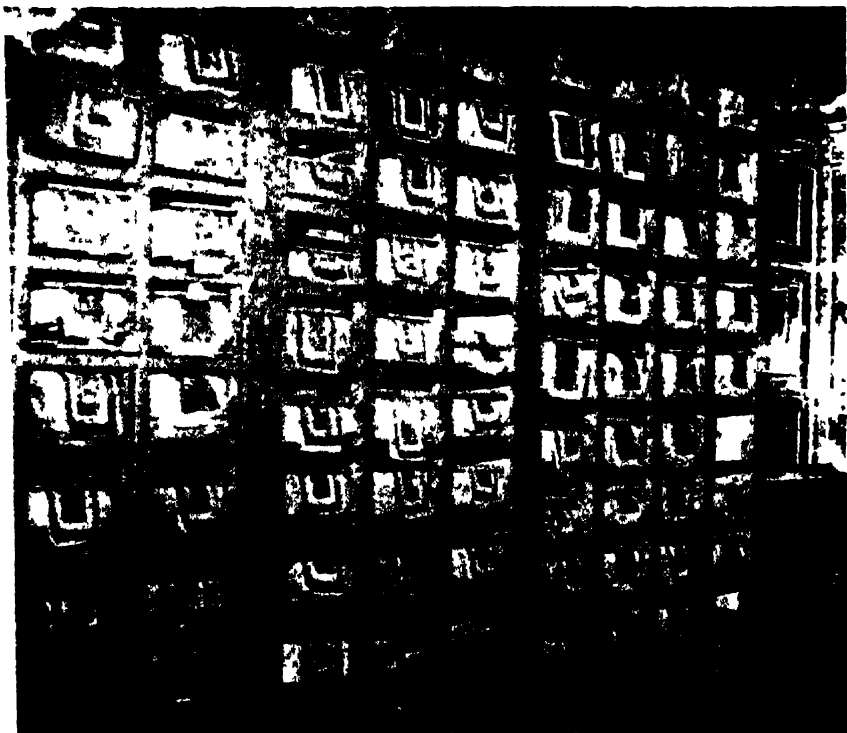
हमको बताया गया कि यहां दो सहस्र लामा निवास करते हैं। किन्तु जब हमने कहा कि हम इनको देखना चाहते हैं तो बताया गया कि केवल विशेष अवसरों पर सब लामा इकडे होते हैं। कुछ काल पूर्व दलाइ-लामा यहां आए थे। उनका उपदेश सुनने के लिए छः सार्स सहस्र लामा उपस्थित हुए थे।

हमारे साथ चिङ्ग-हाइ प्रान्त के संस्कृति और शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष सुङ्ग-रे-हाम्बो कुम्-बुम् आए। ये चीनी के अच्छे लेखक हैं किन्तु शासन की गति के अनुसार हमारे साथ दो दुभाषियों द्वारा बातचीत होती थी। चीनी न बोल कर केवल भोट बोलते थे। एक दुभाषिया भोट का अनुवाद चीनी में करता था, दूसरा चीनी से अर्थोक्ति देता था।



कुम्-बुम् का उपदेश भवन । व्यासपीठ के पीछे पीतोष्णीष सम्प्रदाय के अग्रणी आचार्यों की परम्परा चित्रित है ।

A view of the preaching throne at Kumbum monastery with a magnificent *tshogs-sin* at the back depicting the masters of the Yellow School of Lamaism.



कुम्-बुम् के जाम्याङ्-कुन्मिक्-खाङ् भवन में कञ्जूर तञ्जूर के ल्हामा, देर्गे, पेङ्-चिङ् और नार्थाङ् संस्करण हैं । कञ्जूर का चोने संस्करण भी है । यह कुम्-बुम् के अनेक भवनों में से है । विशेष बात यह है कि इन भवनों में अपना-अपना पुस्तकालय है । इनके पाम कञ्जूर और तञ्जूर के विभिन्न संस्करण हैं । कञ्जूर का वर्ष में आठ-नौ बार पाठ होना है और तञ्जूर का तीन बार ।

A view of the Hjam-dhyañs-kun-gzigs Hall at Kumbum, flanked by imposing stands of the Holy Kanjur and Tanjur.

घुमाने हैं। छोटे छोटे चार बने हैं जिनमें पुस्तकें चिनी हुई हैं। इनको घुमाने से पुस्तकें पढ़ने का सुख मिलता है। बाहर दो शिलालेख हैं। एक पर इतिहास और दूसरे पर दासाओं के नाम हैं।

२३५५-२३५६-२३५७-२३५८ । यह तीसरा भवन है। इसके मध्य में चोङ्क-स-प की मूर्ति है। दाहिनी ओर महाकाल की विकराल मूर्ति है। दाहिनी ओर ही हावों में सूत्र लिए बुद्ध धर्म के पांच प्रचारकों की मूर्तियां हैं। दूसरी ओर कालरब और तीन अन्य सूत्रहस्त मूर्तियां हैं। कालरब मूर्ति का मुख भयानक रूप से खुला हुआ है। इस भवन में ल्हा-सा, देगों, पेइ-चिङ्क और नार्थाङ्क संस्करण हैं। हमने यहां पहली बार कञ्जूर का चो-ने संस्करण देखा। ल्हा-सा से प्रकाशित नए कञ्जूर को लामा सर्वश्रेष्ठ और प्रामाणिक मानते हैं।

लोकेश्वर, मञ्जुश्री और वज्रपाणि की मनोहर मूर्तियां विशाल हैं। मञ्जुश्री के सम्मुख पांच घृतदीप जले हुए हैं। कालिन्दी अथवा कालिदेवी की मूर्ति के पीछे सरस्वती की मूर्ति है। सरस्वती के हाथ में वीणा है। दोनों मूर्तियां त्रिनेत्र हैं।

२३५९-२३६० में लाञ्छ और वर्तुल दोनों लिपियों का प्रयोग हो रहा है। मैत्रेय की विशाल मूर्ति के सामने मक्खन के बने हुए छोटे छोटे आठ स्तूप हैं।

२३६१-२३६२-२३६३ । यहां बोधिवृक्ष के ऊपर स्तूप बना है। बोधिवृक्ष सर्वथा अदृश्य है। इस स्तूप के सामने लामा दण्डवत् प्रणाम करते हैं।

इस भवन में हमने सबसे सुन्दर दीपपात्र देखे।

स्तूप के ऊपर चोङ्क-स-प की मूर्ति है। प्रसिद्धि है कि चोङ्क-स-प भारतवर्ष चले गए और माता ने उनके दर्शन की अभिलाषा की तो चोङ्क-स-प ने अपनी मूर्ति भेजी। यह मूर्ति कांच में रखी हुई है। इस भवन में नार्थाङ्क का कञ्जूर और ल्हा-सा का कञ्जूर दोनों हस्तलिखित हैं। इनके अतिरिक्त पेइ-चिङ्क का कञ्जूर भी है।

ये पुस्तकें स्तूप के तीन ओर रखी हुई हैं। पुस्तकालय नीचे की भूमि में है।

चोङ्क-स-प के तीन और पांच वर्ष की आयु के पाद-चिह्न बस्त्र पर बने हुए हैं।

हमने बोधिवृक्ष-स्तूप की प्रदक्षिणा की और दोनों भूमियों का निरीक्षण किया। यहां असंख्य कटोरियां हैं जिनमें पानी भर कर बुद्ध के सामने रखते हैं। दूसरी भूमि के किचाकों पर हज्जत-रुद्ध विराजमान है।

२३६४-२३६५ । इस भवन में मैत्रेय और शाक्यमुनि की मुख्य मूर्तियां हैं। शाक्यमुनि सुन्दर चिर-परिपक्व मुझे हैं।

२३६६-२३६७ । इस भवन में लापाओं की पांच बगती है। आठ दस पाद व्यास क लल

महापात्र हैं। चास से इन्धन का काम लेते हैं। भवन के बाहर खुले स्थान पर चास का भवनों से भी अधिक ऊंचा स्तूप बना है।

१५२२ | कुम्-बुम् का मुद्रणालय प्रसिद्ध है। चोङ्क-स-प की पुस्तकें यहाँ विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं। आयुर्वेद, ज्योतिष के ग्रन्थ भी।

एक लामा एक दिन में लगभग १००० पृष्ठ छाप लेता है। १५, २० लामा सदा इसी कार्य में लगे रहते हैं। काष्ठफलकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमने इनका सूचीपत्र माँगा तो बताया गया कि सूचीपत्र नहीं है।

१५२३ | यह आयुर्वेद-विद्यालय है। यहाँ भी नार्याङ्क और ल्हा-सा के कम्बूर के संस्करण हैं। आयुर्वेद की पाँच श्रेणियाँ हैं। चोङ्क-स-प तथा उनके शिष्यों ने भी आयुर्वेद के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है।

१५२४ | ज्योतिष की पुस्तकें अधिकांश ल्हा-सा से आती हैं। उष्णीष-धारणी कपड़े पर छपी हुई ऊँचे स्तम्भ पर ऊपर से नीचे तक लटकी हुई है।

१५२५ | इस भवन के द्वार पर निम्न संस्कृत श्लोक लिखा है—

शासनधृच्छभिकेन सुपन्तिः कामगवोऽमृतवीरपदश्रीः ।

आत्मधुनिमनसंविधपूजानुत्तरहर्म्यमनन्तं जयेयम् ॥

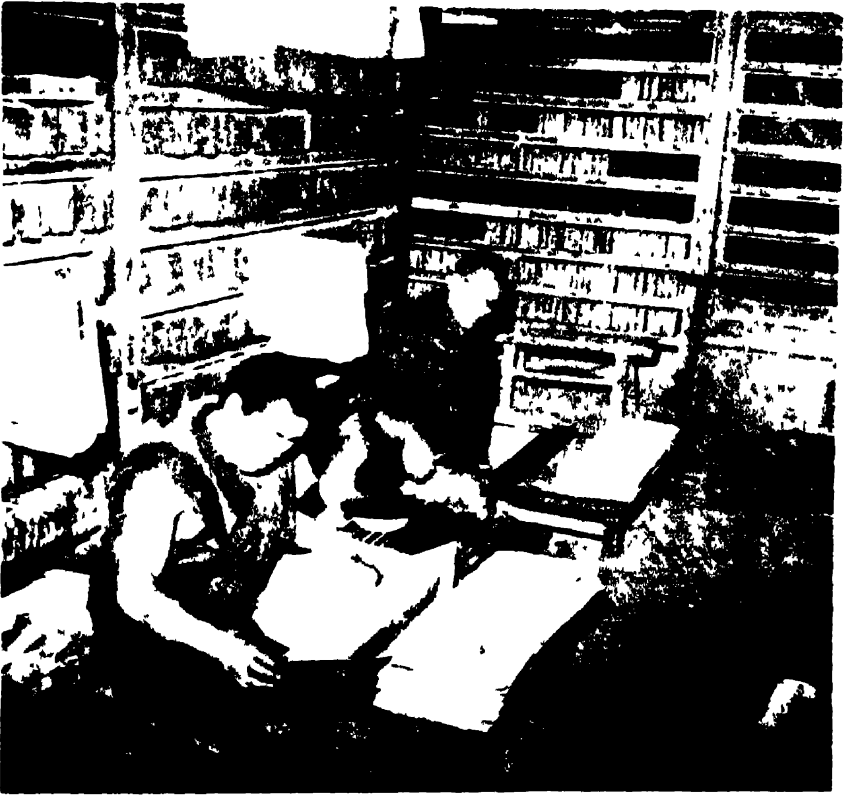
मध्य में शाङ्कर्यामिन, एक ओर आनन्द, दूसरी ओर काश्यप तथा १६ शिष्य हैं।

१५२६ | स्तम्भ सिंहचर्मावृत हैं। एक ओर मरे हुए पशु पड़े हैं। दूसरी ओर हथियार। ये मरे हुए पशु और हथियार आखेटक लोग यहाँ छोड़ गए हैं। यह उनके प्रायश्चित्त और व्रतरूप में है कि अब आगे प्राणिहिंसा न करेंगे। इस भवन में एक व्यक्ति 'मर्षोद्योग' नामक पुस्तक पाठ करता हुआ डोल तथा करताल बजा रहा था।

भवनों का निरीक्षण करने के पश्चात् हम स्वागत-कोष्ठ में आए। दोनों जीवित बुढ़ों ने हमारे लिए लवण तथा मक्खन वाली चाए मंगाई। इसके साथ भुने हुए जी के ससू और भारतीय प्रकार की मूरी शर्करा देकर परम आश्चर्य हुआ। चीन के मध्य में भारत से सैंकड़ों कोस दूर यह शुद्ध भारतीय भोजन भोट और मोंगोल लामाओं के जीवन का अंग है।

लामा बनने के लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं। कुम्-बुम् में प्रवेश करते ही बालक अथवा युवा लामा बन जाते हैं। यहाँ सब से छोटे लामा पाँच वर्ष की आयु के हैं। इनका हमने रंगीन चित्र लिया।

लामा बनने के पश्चात् जीवन भर अध्ययन करते हैं। शाङ्कर्यामि में प्रायः केने के लिए २५ वर्ष के अध्ययन की आवश्यकता है। २५ वर्ष के अध्ययन के पश्चात् गम्बीर्द शास्त्रार्थ होता है। इस शास्त्रार्थ में उत्तीर्ण भोष्ठ लामाओं को उपाधि दी जाती है। अब



कुम्-बुम् के मुद्रणालय में छपाई हो रही है। चोङ्-खा-पा सुमतिकीर्त्ति की पुस्तकें यहां विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं। आयुर्वेद और ज्योतिष के ग्रन्थ भी। १५, २० लामा सदा मुद्रण में लगे रहते हैं। एक लामा एक दिन में लगभग १००० पृष्ठ छाप लेता है। काष्ठफलकों को विशेष परिमाण के निधायों में सुरक्षित रखा जाता है।

The printery of Kum-bum which is famous for its xylographic edition of the Collected Works of Tson-kha-pa. The wood-blocks are stacked on shelves prepared to size. Two monks are seen xylographing the works of Tson-kha-pa.



कुम्-बुम् के वरिष्ठ जीविन बूद्ध आचार्य रघुवीर को आयुर्वेद का मन्त्र ग्रन्थ, चोङ्-खा-पा की ग्रन्थावली और उनके दो पट्टिशिष्यो की ग्रन्थावली का विद्योपहार देने हुए । तथा च, इस प्रेमोपहार को गद्गद हृदय से स्वीकार करते हुए आचार्य रघुवीर ।

Venerable An Chia-zu the Living Buddha of the Kumbum monastery presenting a volume of the works of Tson-kha-pa to Prof. Raghu Vira.

तक ४०० के लगभग लामाओं को यह उपाधि मिल चुकी है। भोट भाषा में इस उपाधि का नाम 'सो' (‘सो-वेस’ (‘कल्याणमित्र’) है। चीनी में इसको पो-श कहते हैं।

हमने ज्येष्ठ जीवित बुद्ध से प्रश्न किया कि क्या आपने शाक्यमुनि की आत्मा का साक्षात् किया है। उन्होंने उत्तर दिया— जब हम ध्यानमग्न होते हैं तब हमारी आत्मा का शाक्यमुनि की आत्मा से साक्षात् होता है। ऐसा हमारा विश्वास है। यह सम्भव है कि भिन्न जीवित बुद्धों की आत्माओं का साक्षात्कार भिन्न प्रकार से होता हो।

हमने दूसरा प्रश्न किया कि सूत्रों को समझने में जो सन्देह और कठिनाइयां पड़ती हैं, क्या उनका समाधान और व्याख्या जीवित बुद्ध शाक्यमुनि से साक्षात् नहीं पूछ सकते। उत्तर मिला— जब हम ध्यानमग्न होते हैं तो हमारी आत्मा इस शरीर से ऊपर उड़ जाती है। और शाक्यमुनि से साक्षात् करती है। फिर लौट कर नहीं आती। उसके स्थान में दूसरी आत्मा आती है। अतः प्रश्न का उत्तर शाक्यमुनि से प्राप्त नहीं होता। शास्त्रार्थ द्वारा ही उत्तर पाना सम्भव है।

दोनों जीवित बुद्धों का हमारे से बहुत स्नेह हो गया। उन्होंने चलते समय हमको घण्टी, बज्र और डमरू तथा प्रतिष्ठित लामाओं के परिधान प्रेमोपहार में दिए। चोङ्-ख-प और अमिताभ की मूर्तियां धर्मोपहार दीं। आयुर्वेद का सच्चित्र ग्रन्थ विद्योपहार दिया।

चोङ्-ख-प के १९ ग्रन्थ और उनके दो पट्टशिष्यों के २४ ग्रन्थ उनका महोपहार था। काले और रंगीन भाच्चित्र खींचने के पश्चात् हमने गद्गद् हृदय से कुम्-बुम् से प्रस्थान किया।

ज्येष्ठ जीवित बुद्ध का अन्तिम वाक्य था— आपका शुभागमन और हमारे प्रेमोपहार प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों का पुनरारम्भ है। ये फलें और फूलें, बड़ें और विकसित हों।

१०-६-५५

ता-अर् स्स की संस्मरणीय यात्रा पूरी कर लान्-बाओ पहुँचे। इच्छा हुई कि भारतीय नभोवाणी द्वारा भारतीय समाचार सुनें। उत्तर मिला— मार्ग में हिमालय पर्वत है, इसलिए सुनना सम्भव नहीं।

हमारे विश्रान्तिगृह में ठहरे हुए एवं भारत से लौटे हुए एक चीनी सज्जन ने कहा— “आप भारतीय स्वैन्-च्चाङ्ग हैं” (You are the Indian Hiuan-tsang)।

सी-मिङ्ग के विशेष-विभाग के अध्यक्ष ने भी कहा था कि आप पहले भारतीय हैं जो ता-अर् स्स आए हैं।

चीन में जहाँ कहीं निर्वाण-कार्य के लिए बुद्धाई की जाती है वहाँ पुरास्वयेंच-विभाग के व्यक्ति भी पहुँच जाते हैं और भूमि में से निकली हुई प्राचीन वस्तुओं का संग्रह कर लेते हैं। भारत में भी इस पद्धति का अनुकरण करना चाहिए।

११-६-५५

मेवों के कारण विमान चू-ध्यान से न आया। संयान के मार्ग में भी पहाड़ी गिर गई है। आज से लान्-बाओ में विमानपतन का उद्धार आरम्भ हुआ है। अब एक सप्ताह तक यहां न विमान आ सकता है और न जा सकता है। कितने दिन हमको लान्-बाओ में ठहरना पड़ेगा वह अनिश्चित है। पेइ-चिऊ को दूर भाग किया है। वे प्रबन्ध कर रहे हैं।

१२-६-५५

आज भी लान्-बाओ से न चल सके।

लान्-बाओ में पञ्चोत्स के स्थान पर बना बहुत पुराना मन्दिर देखने गए। पर्व दिनों पर धूपबत्ती जलाने के लिए एक भिक्षु रह गया है। हमको दिखाने के लिए मन्दिर विशेष रूप से खोला गया। मन्दिर पहाड़ी के नीचे से लेकर शिखर तक बना हुआ है। जब यहां पूर्ण रूप से पूजा पाठ होता होगा तब सैकड़ों भिक्षु निवास करते होंगे और सहस्रों जन उपासना के लिए आते होंगे।

प्राचीन वस्तुओं में से गजदन्त की छोटी सी मूर्ति है। सामने दो किबाड़ लगे हैं। बाहर हाथी और अन्दर शाक्यमुनि के जीवन-वृत्त का चित्रण है। यह मूर्ति एक सहस्र वर्ष प्राचीन है। इसमें गान्धार प्रभाव अभिव्यक्त है। कोई आश्चर्य नहीं यदि यह भारत से आई हो।

पञ्चधातु का बना २० पाद ऊंचा मंत्रेय। यह मिऊ-वंश का है। सुवर्ण, रजत, ताम्बे, लोहे और रंगे से बना है।

लान्-बाओ में बौद्ध सभा के ३०० के लगभग सदस्य हैं। २५० गृहस्थ तथा ५० कामा और भिक्षु। इनके पुस्तकालय में सम्पूर्ण मिऊ वंश का त्रिपिटक है।

लान्-बाओ में मन्दिरों की संख्या २० के लगभग है।

आज सायं २०, २२ कोस दूर बनावृत पर्वत के शिखर पर ताओ मन्दिर तथा स्वास्थ्याश्रम देखने गए। साम्यवादी शासन में सुन्दर स्थानों पर स्वास्थ्याश्रम बनाए जा रहे हैं।

१३-६-५५

आज प्रातः दस बजे गाड़ी में बैठे।

१४-६-५५

२६ घण्टे की यात्रा के पश्चात् दोपहर बारह बजे धी-जान् ज्ञ ५५ आएँ। लान्-बाओ के धूकि और मिट्टी के पहाड़ों के पश्चात् धी-जान् की हरी नदी घूमि देख कर



कुम्-बुम् के दिवंगत आचार्यों के सुरक्षित शरीर
Mummies of the Incarnate Lamas of Kumbum preserved in a hall of this vast
monastic complex.



शि-आन् में ता-यन्-था नामक मत्तभूमिक श्वेन्-न्वाङ् स्तूप । चीन-मन्नाट् ने धर्माचार्य श्वेन्-च्वाङ् की कामना-पूर्ति के लिए १०८ हाथ ऊचा स्तूप बनवाया । इसका उद्देश्य भारतीय मंत्रों और मूर्तियों को अग्नि और लूट में सुरक्षित रखना था । यह स्तूप भारतीय शैली का था और प्रत्येक भाग के मध्य में आचार्यों के शरीरावशेष रखने के लिए स्थान था । इसका नाम ता-यन्-था अर्थात् 'वनहंस महामन्दिर' है । यह नाम मगध की शक्रेन्द्र गुहा के पूर्ववर्ती मन्दिर से लिया गया था ।

The reconstructed Ta-yen t'a 'Great Wild Goose Pagoda' or the 108 cubit high stūpa which was erected by the Chinese Emperor to house the sūtras and images brought by the famous pilgrim Hsuan-chuang from India. It was modelled as well as named after the Wild Goose Pagoda, east of the Śakrendra Grotto in Magadha. It is popularly known as the 'Hsuan-chuang Stūpa'.

आंशों में ठण्डक पहुंची। शी-आन् में सूर्य चण्डता से तप रहा था। पसीना छूटने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ कि नागपुर के ग्रीष्म में पहुंच गए। तापमान अधिक न था। केवल ३७ शक्तिक (centigrade) था। किन्तु मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया सर्वथा नागपुर के ग्रीष्म के समान थी।

जिस विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया यह शो-आन् का सबसे बड़ा विश्रान्ति-गृह है। अभी आधा बन पाया है। तुन्-ह्लाक के चित्रों से पूर्ण है। शी-आन् को शिङ्क-आन् भी कहते हैं। इसका प्राचीन उच्चारण छाङ्क-आन् था। यह शेन्-सी 卅 卅 प्रान्त की राजधानी है।

शी-आन् के कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों का आज भ्रमण किया।

हुन्नुमि-भवन— यह १४३७ विक्रम में बना था। तीन वर्ष हुए इसका पुनरुद्धार किया गया। पुनरुद्धार के समय भवन के अन्दर भित्तियों और छतों में सर्वथा नए चित्र बना दिए गए हैं। उदाहरण के रूप में, छतों में शान्ति के दूत कपोत उड़ रहे हैं। यहां वहां तुन्-ह्लाक के बेलबूटे बने हैं। पहली भूमि पर अद्भुतागार है। विक्रम से १००, १५० वर्ष पूर्व की डेढ़ दो हाथ लम्बी ईंटे रखी हुई है। ये अन्दर से खोखली है। ऊपर उभरे हुए नाग और कश्यप बने हुए हैं। दूसरी भूमि पर सुन्दर उपस्करों का सग्रह है।

षष्ठा-भवन— इसका निर्माण भी मिङ्क वंश में हुआ था। पिछले वर्ष इस पर पुनः रंग किया गया। क्वो-मिन्-ताङ्क के समय सेनाओं ने इसका उपयोग किया था।

षस-अन् स्स 卅 卅 卅— यह विहार आधुनिक शी-आन् नगर से दक्षिण की ओर आठ ली की दूरी पर स्थित है। ७०५ विक्रम में सम्राट् काओ-त्सुङ्क 卅 卅 ने अपनी माता की स्मृति में इसका निर्माण किया था। इस विहार में दस बारह भवन-समूह थे। इनमें सब वैभव की सामग्री उपस्थित थी। भवनों की समाप्ति पर सम्राट् के आदेश से ३०० भिक्षुओं को दीक्षा दी गई और ५० विद्वान् आचार्य विशेष रूप से विहार में निवास करने के लिए आमन्त्रित किए गए।

प्रसिद्ध यात्री शेन्-ग्वाङ्क 卅 卅 के अर्धेन अनुवाद का कार्य आरम्भ किया गया और तब से षस-अन् स्स चीन के इतिहास में अमर हो गया।

विहार की भूमि में शेन्-ग्वाङ्क ने भारतीय आकार का विशाल मन्दिर बनवाया और इसमें भारत से लाए हुए संस्कृत ग्रन्थों को सुरक्षित रखा। वे स्वयं भी यहां दस वर्ष तक निवास करते रहे। यद्यपि पीछे जाकर शेन्-ग्वाङ्क शी-मिङ्क स्स 卅 卅 卅 विहार में तथा कुछ और दिनों के पीछे मू-ह्ला प्रान्त 卅 卅 卅 में चले गए, तब भी वे स्वयं षस-अन् स्स को स्मरण करते रहे। चीनी इतिहास में शेन्-ग्वाङ्क की "षस-अन् स्स के महान् विपिटक-वर्णनार्थ" 卅 卅 卅 卅 卅 की उपरिबि सुविख्यात है।

ता-यन्-था 大 卍 - आज यह मन्दिर सात भूमि का है किन्तु आरम्भ में केवल पांच भूमि थी। इस-अन् स्त के इतिहास भाग ७ के अनुसार इवेन्-व्याक की कामना थी कि १८० हाथ ऊंचा पत्थर का मन्दिर बनाया जाए जिसमें वे अपने साथ लाए हुए भारतीय सूत्रों और मूर्तियों को अग्नि और लूट से सुरक्षित रख सकें। जब यह बात सम्राट तक पहुंची तो उन्होंने अपने सम्य ली-ई-फू 卐 卐 को इवेन्-व्याक के पास भेजा और कहा कि पत्थर का मन्दिर बनाना अतिमहद्व और कष्टसाध्य है। ईंट से भी काम चल जाएगा। धर्माचार्य को चिन्ता और कष्ट से बचाने के लिए सम्राट ने मन्दिर के लिए स्वर्गास्तु सभ्यों की वेषभूषा दान में दी। इस प्रकार से जो मन्दिर निर्माण किया गया वह १०८ हाथ ऊंचा था। यह मन्दिर सर्वथा भारतीय प्रकार का था। प्रत्येक भूमि में, मध्य भाग में, से-ली 卐 卐 अर्थात् सन्तों के शरीरावशेष रखने का स्थान था। से-ली की संख्या दस सहस्र से अधिक कही जाती है। से-ली का अर्थ शरीर-दाह के पश्चात् बचे हुए अस्थि-खण्ड, केश, दन्त, नख आदि है।

उपरिष्ठतम भूमि में पत्थर का बना हुआ वेषम था और दक्षिण भित्ति के साथ सम्राटदेश से लिखे और उत्कीर्ण हुए लेखों की दो ऊर्ध्वस्थायी शिलाएं थीं।

जिस समय मन्दिर बन रहा था उस समय प्रतिदिन प्रातःकाल इवेन्-व्याक स्वयं सामान्य श्रमिक के सदृश गारा और ईंटें ढोकर ले जाया करते थे। वे स्वयं कुछ समय तक पत्थरों पर चित्र बनाते और श्रमिकों का साथ देते और तत्पश्चात् अपने अनुवाद-कार्य में रत होते। मन्दिर के पूरा होने में दो वर्ष लगे।

ता-यन्-था का प्रथम जीर्णोद्धार पञ्चवंश के काल में ९८८ से ९९० विक्रम तक हुआ। सुक वंश के राज्य में ची-निङ्ग युग में आग लगी। मिङ्ग वंश के ध्येन्-शुन् 天 卐 युग तथा छिङ्ग वंश के काङ्-सी 卐 卐 युग में मुख्य जीर्णोद्धार हुए।

ता-यन्-था का अर्थ है "वन्य हंस का महामन्दिर"। यह नाम मगध की सक्नेत्र-गुहा के पूर्ववर्ती मन्दिर से लिया गया था।

संस्कृत ग्रन्थों को सुरक्षित रखने के लिए बनाए गए स्तूप में आज एक भी संस्कृत ग्रन्थ नहीं। ये ग्रन्थ स्तूप के किस भाग में रखे गए थे यह भी लोग भूल चुके हैं।

इवेन्-व्याक के दो शिष्य कुछ सूत्र ले गए किन्तु कहां ले गए सो पता नहीं।

वहां आधुनिक चीनी शासन ने लिख कर बिक्रायत लगाया हुआ है कि यह सूत्र-रक्षा-मन्दिर भारत और चीन के सम्बन्धों का प्रतीक है। साथ में इवेन्-व्याक द्वारा अनुवित ग्रन्थों की सूची दी है। इस मन्दिर का उद्धार भी शासन ने इसी बर्ष किया है। प्राचीन शासन की प्रार्थना पर केन्द्रीय शासन ने इसके जीर्णोद्धार का आदेश दिया था। मन्दिर का जीर्णोद्धार द्वार के समीप दिए हुए चित्र के अनुसार किया गया है। मन्दिर की सातवीं भूमि पर छः मूर्तियां हैं। बीच में शैवज्यमुक् 卐 卐, बाईं ओर समन्तवद्म, और दाईं



ता-यन्-था नामक इवेन्-च्वाङ् के सप्तभूमिक स्तूप की उपरितम भूमि
 मे मूर्तियों के साथ आचार्य रघुवीर । मध्य में भैषज्यगुरु, बाईं ओर
 समन्तभद्र तथा दाईं ओर मञ्जुश्री है ।
 Image of Bhaiṣajyaguru with Samantabhadra on the left
 and Mañjuśrī on the right. It is on the topmost, i.e.
 the seventh storey, of the Ta-yen-t'a.



यह पञ्चदशभूमिक स्तूप 'श्याओ-यन्-था' प्रथित यात्री ई-चिङ् का मन्दिर है । यह स्तूप ता-च्येन्-फू म्स विहार के प्रागण मे है जहा ई-चिङ् की अध्यक्षता में अनुवाद कार्य होता रहा ।

The fifteen-storied pagoda Hsiao-yen-t'a which was erected in 707-709 A. D. in the premises of the Ta-chien-fu ssü Monastery, where the translations of Sanskrit texts were carried out under the supervision of I-tsing. It is also known as the Hsiao-yen-t'a 'Small Wild Goose Pagoda' in contradistinction to Ta-yen-t'a 'Great Wild Goose Pagoda' dedicated to Hsüan-chuang. Colloquially it is referred to as the 'I-tsing Stüpa'.

और मञ्जुश्री ५ ३ ३ ।

जीर्णोद्धार पर लगभग ७०,००० युवान् व्यय हुआ कहा जाता है। युद्ध के दिनों में यहां और अधिकांश मन्दिरों में सेनाएं निवास करती रही हैं। कई स्थानों पर सैनिकों ने बहुत अधिक नाश किया है। तुन्-ह्वाङ्ग गुफाओं में भी सेनाएं रह चुकी हैं।

ता-म्येन्-फू स्तं 大 卍 卍 卍 और श्याओ-यन्-था 小 卍 卍—शी-आन् नगर के याङ्ग-निङ्ग द्वार 卍 卍 卍 से तीन ली की दूरी पर म्येन्-फू विहार है। इसकी नींव सम्राट् काओ-त्सुङ्ग की मृत्यु के पूरे सौ वर्ष पश्चात् ७४१ विक्रम में पड़ी थी। २२ वर्ष के पश्चात् प्रसिद्ध यात्री ई-चिङ्ग 卍 卍 की अध्यक्षता में यहां अनुवाद-कार्य आरम्भ किया गया और एक राजसभ्य ने यहां पञ्चदश-भूमिक मन्दिर बनाया। ता-म्यन्-था 大 卍 卍 की तुलना में इसको श्याओ-यन्-था कहा जाता है। ता 大 का अर्थ बड़ा और श्याओ 小 का अर्थ छोटा। नीचे से ऊपर तक इस मन्दिर में दराइ पड़ा हुआ है। इसके ऊपर चढ़ना निषिद्ध है। १३ भूमियों में से ऊपर की दो भूमियां गिर चुकी हैं। शी-आन् के अधिकारी इसका उद्धार करने की चिन्ता में हैं। सम्भवतः एक दो वर्ष में उद्धार कार्य आरम्भ होगा किन्तु यदि न हुआ तो शीघ्र ही यह मन्दिर ऊपर से नीचे तक क्षीण और छिन्न भिन्न हो जाएगा। यहां पर छिङ्ग का शिलालेख है जिसमें स्तूप का इतिहास है।

शी-आन् विश्वविद्यालय—यह विद्यालय १८ वर्ष पूर्व बना। यहां १५०० विद्यार्थी हैं जिनमें से ३७५ लड़कियां हैं। श्री म्ये ने गर्व के साथ कहा कि हमारे यहां श्रमिक और किसान कुलों से आए हुए २०० विद्यार्थी हैं। अध्यापक संख्या २७० है। उनमें से ३५ स्त्रियां हैं।

विश्वविद्यालय में दस विभाग हैं। हमारे पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि राजनीति का कोई विभाग नहीं। राजनीति समस्त विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। प्रथम वर्ष में प्रत्येक विद्यार्थी सप्ताह में चार घण्टे राजनीति की शिक्षा प्राप्त करता है।

हमको बतलाया गया कि प्रयोगशालाएं १८ लाख रुपए के व्यय से बनाई गई हैं। अधिकांश यन्त्र साङ्ग-हाइ में बने हैं। केवल कुछ थोड़े से साम्यवादी भ्रातृदेशों से मंगाए गए हैं।

श्री म्ये वैज्ञानिक हैं। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष हैं। पेरिस में छः वर्ष शिक्षा प्राप्त की है। पेरिस में इन्होंने भारतीय वैज्ञानिक रमण के भाषण सुने थे। उनके संक्षेप अभी तक इनके पास हैं। भारतीय वैज्ञानिक श्री मेघनाद साहा को भी जानते हैं।

पुस्तकालय में २ लाख ७० सहस्र ग्रन्थ हैं। पुस्तकालय देख कर तो यह विश्वास नहीं होता कि वहां इतने ग्रन्थ होंगे किन्तु इनका कचन भी असत्य नहीं होना चाहिए। सम्भवतः मकानों की पद्धति भिन्न है। छोटी छोटी पुस्तकों की, विशेष कर साम्यवादी पुस्तिकाओं की, अनेक प्रतियां हैं। फिर भी २ लाख ७० सहस्र संख्या बड़ी है। इन्हें

सम्बन्ध में अधिक सन्देश प्रकट करना और बारंबार प्रश्न पूछना अशिष्ट होता ।

विश्वविद्यालय में रूसी भाषा का विशेष स्थान है । प्रत्येक विद्यार्थी को दो वर्ष तक इसका अध्ययन करना पड़ता है ।

प्राध्यापकों में से दस अध्यापक विदेशों में पढ़े हुए हैं । कुछ और भी आंग्ल, जर्मन अथवा फ्रांसीसी जानते हैं । कुछ अध्यापक जापानी पुस्तकों से विषय पढ़ाते हैं । किन्तु विद्यार्थियों को जापानी पढ़ने की सुविधा नहीं ।

रूसी पुस्तकों का उपयोग अध्यापक तथा विद्यार्थी सभी करते हैं । १९५२ तथा १९५३ में सब अध्यापकों ने रूसी भाषा पढ़ी । इनका कहना है कि रूसी पुस्तकों में विषय का प्रतिपादन और व्याख्या अधिक अच्छी होती है ।

पुस्तकालय में मञ्जु के भी कुछ ग्रन्थ हैं । तुन्-ह्वाङ्ग की छः बलिताएं देख कर हमको आश्चर्य हुआ । केवल हमको ही बलिताएं न मिल सकी । इसका हमको खेद है ।

यहां त्रिपिटक भी है । साम्यवादी शासन से पूर्व यहां भोट आदि बौद्ध साहित्य का अध्ययन होता था पर अब बन्द है । यहां के पुस्तकाध्यक्ष ने बतलाया कि तुन्-ह्वाङ्ग के चौथी शताब्दी की तिथि वाले ग्रन्थ जापान में प्रकाशित हुए हैं ।

भारतीय भाषा में प्रकाशित एक भी ग्रन्थ इस पुस्तकालय में नहीं है ।

विद्यार्थियों को भोजन और शिक्षा निःशुल्क मिलते हैं । श्रमिकों को, परिवार की सहायता के लिए, पृथक् धन मिलता है ।

चलने से पूर्व एक सज्जन बुद्ध की त्रिमय मूर्ति लाए । यह मिट्टी की मुद्रा पर बनी है । यह सातवीं शताब्दी की है । इसके पीछे लिखा है कि यह मूर्ति भारत से आई । बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में है । भारतीय मूर्तियों का चीन में विशेष आदर था ।

कून्-बो-शिङ्ग-ब्वाओ स्त- सवा चष्टा बहित्र में चल कर इस पर्वतस्थ मन्दिर में आए । मार्ग में सैनिक शिक्षालय भी देखा । यहां इबेन्-ब्वाङ्ग की पांच भूमि ऊंची समाधि है । सभीप ही दोनों ओर दो पट्टशिष्यों की त्रिमय समाधियां हैं । १९३१ में इनका जीर्णोद्धार किया गया । इबेन्-ब्वाङ्ग की मिट्टी की मूर्ति बहुत पुरानी नहीं ।

इबेन्-ब्वाङ्ग के समाधि-स्तूप की छाप लेने के लिए हमारे साथ बीस वर्ष का अनुभवी व्यक्ति आया था । उसने छाप हमारे सामने ली । पहले शिलालेख को कूर्च से धोया और कपड़े से पोंछा । तत्पश्चात् एक दिन पूर्व भिगाए हुए पतंग जैसे पतले पत्र को धीरे धीरे सावधानी से खोल कर शिलालेख पर थोके थोके कूर्च से लगाया । फिर पानी से छींटे दिए । छींटे देने के लिए भी कूर्च का प्रयोग किया । धीरे धीरे कठोर बालों वाले दूसरे कूर्च से पत्र को बपका । एक दो स्थान पर पत्र फट गया । ऊपर से दूसरा पत्र-खण्ड लगा दिया । लकड़ी के फलक पर काशी मसी लगाई और फिर चाकल के चुर्चों से भरे हुए कौशेय के ठण्डे से मसी-फलक को बपकाया । तत्पश्चात् वह मसी



श्वेन्-च्वाङ् समाधि के समीप का विहंगम दृश्य
A bird's-eyeview of the H-tan-chuang t'a or Pagoda enshrining the mortal
relics of the pilgrim.



फू-क्वो-शिङ् च्याओ स्स मे ट्वेन्-च्वाङ् को पञ्चभूमिक ममाधि ।

A close-up of the Hsuan-chuang Pa where the mortal remains of Hsuan-chuang were buried in 669 A. D. by Imperial Order, and a temple erected. The temple was named as Hsing-chiao -su by Emperor Su-tung as a homage to the pilgrim (*hsing* 'establisher of the' *Chiao* 'Doctrine').

पत्र पर बपबपाई गई। एक एक अक्षर पत्र पर स्पष्ट दिखाई देने लगा।

यही कार्य भारतवर्ष में भी होता है, किन्तु चीनी स्वच्छता दर्शनीय है और अनु-
करणीय भी।

सिलालेखों की छापें लेना प्राचीन कला है। तुन्-ह्वाङ्ग में एक सहस्र वर्ष प्राचीन
छापें मिली हैं। साम्यवादी शासन से पूर्व छाप लेने वाले प्रत्येक बड़े नगर में मिल जाया
करते थे। अब ये लोग दूसरे कामों में लग गए हैं। प्राचीन छापों का प्रयोग केवल ऐति-
हासिक अनुसन्धान के लिए ही नहीं किन्तु विद्यार्थी तथा विद्वान् अपने हस्तलेख को
सुधारने के लिए सुलेख-निदर्शन के रूप में भी करते थे।

श्वेन्-ज्वाङ्ग की समाधि के साथ पुस्तकालय है। यहां शून्यवाद के प्रसिद्ध प्रवक्ता
भिञ्जु रहते हैं। इन्होंने सर्वप्रथम तुन्-ह्वाङ्ग के दो बलिता-सूत्र दिखाए और तत्पश्चात्
चावलों में रखा हुआ श्वेन्-ज्वाङ्ग का मोती सदृश अस्त्र-अवशेष दिखाया।

बाहर निकलने पर लू चल रही थी।

कनेर और मोतिए के रमणीय पुष्प सर्वत्र शोभायमान थे।

तु-झू-ज्वाङ्ग— यह शान्-सी प्रान्त का पुस्तकालय है। पुस्तकाध्यक्ष ने बौद्ध त्रिपिटक
के विषय में कहा— यह हमारी प्राचीन बहुमूल्य निधि है।

इनके यहां भी तुन्-ह्वाङ्ग की तीन बलिताएं हैं। एक सम्पूर्ण है। दो अन्य खण्डित
हैं।

चीन में हस्तलिखित ग्रन्थ बहुत थोड़े हैं। दसवीं शताब्दी से ग्रन्थ-मुद्रण की प्रथा
सामान्य बन गई और विरले ही ग्रन्थ ऐसे छूटे होंगे जो मुद्रित न हुए हों। याङ्ग वंश के
कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ इस पुस्तकालय में हैं।

पुस्तकाध्यक्ष के अनुसार यहां त्रिपिटक के छः संस्करण हैं। उनमें से ची-सा सम्पूर्ण
है। इसके ७००० से अधिक खण्ड हैं। एक भिञ्जुनी ने काष्ठ-फलक खोदने आरम्भ किए
थे। अन्य भिञ्जुओं ने उसकी सहायता की। १३८ वर्ष में समस्त मुद्रण-काष्ठफलक पूरे
हुए। अन्तिम भाग में काष्ठ-मुद्रणफलक खोदने वालों की सूची दी हुई है।

भाषिजन द्वारा १९३५ में इसका प्रकाशन किया गया।

यहां दो भिङ्ग संस्करण हैं। एक के अक्षर बहुत मोटे और सुन्दर हैं। उसके लगभग
दो सहस्र खण्ड हैं।

ची-ज्वा का भी एक खिन्व यहां विद्यमान है। आषकल बौद्ध ग्रन्थों पर कोई अनु-
सन्धान नहीं हो रहा है। केवल पुस्तकें सुरक्षित हैं।

ची-सा संस्करण चार सुन्दर नाम-विहित निधियों में रखा हुआ है। इनमें से हस्ते
दो का रंगीन अक्षर किया है। पुस्तकालय में ५०० वर्ष पुरानी एक सुद्ध-मूर्ति भी है।
समस्त पुस्तकों की संख्या ३ काङ्ग ३० सहस्र कहीं जाती है।

अमूतागार- कडी सातवीं शताब्दी की बड़े बुद्धों की छः मूर्तियाँ हैं। इनमें भारतीय प्रभाव स्पष्ट है।

भाइ-बी-सान् बुद्धों की मूर्तियों के प्रतिकरूप इस अमूतागार में रखे हुए हैं। वहाँ की मूर्तियों में आम्बार का प्रभाव है।

चीन में तीन सहस्र वर्षों से लगातार कांस्य-पात्रों का प्रयोग मिलता है।

इस अमूतागार की विशेषता शिलालेख-संग्रह है। इनकी संख्या चार सहस्र से अधिक है। ये शिलाएँ प्राचीन काल में पुस्तकें छापने के काम आती थीं। इनमें से अधिकांश शिलाएँ पहले अन्य मन्दिर में थीं। उस मन्दिर के टूट जाने पर इनको यहाँ लाकर रखा गया।

फ्यान्-जन् स्स- दलाइ और पञ्छेन्-लामा यहाँ आ चुके हैं। शी-आन् में यही एक लामा मन्दिर है। तीन वर्ष हुए, २००० युवान् लगा कर शासन ने इस मन्दिर का पुनरुद्धार किया। मन्दिर में एक कोष्ठ आधुनिक साम्यवादी साहित्य के लिए है। यहाँ आधुनिक पत्र पत्रिकाएँ आती हैं। लामा तथा जनता दोनों ही इनको पढ़ते हैं।

छिङ्ग वंश में प्रकाशित भोट कञ्जूर के १०० भाग हैं। इस मन्दिर का नाम काङ्ग-शी राजा ने स्वयं लिखा था। शिल्पकार ने उसको पत्थर पर खोदा। काङ्ग वंश की चन्दनमय बुद्ध मूर्ति है। कांस्य की बुद्ध-मूर्ति भारतवर्ष से आई है किन्तु जाने की तिथि का पता नहीं। शंख भी भारतवर्ष से आए हैं। घूपपात्र सीसे के बने हैं।

मन्दिर के सामने छोटा सा अक्षय-दीप-गृह है। कुण्ड में २०, २५ सेर तेल भरा है। बीच में बत्ती जल रही है। ढाई सौ वर्ष से ज्योति सतत चली आ रही है।

आंगन में बुद्धों की टहनियों को काट छांट कर पञ्चभूमि स्तूप का रूप दिया गया है।

साम्यवादी शासन से पूर्व मन्दिरों के पास पर्याप्त घर और खेत हुआ करते थे। साम्यवादी शासन ने भूमि का बंटवारा किया। इसमें मन्दिरों की बहुत सी भूमि चली गई। इस मन्दिर के पास अब ४०४ भागो भूमि बची है। उपज का चौथाई भाग मन्दिर को विक्रता है और तीन चौथाई भाग किसानों को। पिछले वर्ष मन्दिर को १६ सहस्र कट्टी बेहूँ मिला। इसमें से दो सहस्र कट्टी कर के रूप में शासन को दिया गया। शेष से मन्दिर का निर्वाह चलावा गया (छः भागो का एक एकड़, तथा दो कट्टी का एक सेर होता है)।

फ्येन्-ग्वाङ्ग भारतवर्ष की लम्बी यात्रा के पश्चात् चन्-ग्वाङ्ग 卐 卐 के १९वें वर्ष अर्थात् ७०२ विक्रम में चीन छोटे। उस समय चीन की राजधानी शी-आन् थी। उसे ही यह बुद्ध-ज्ज स्स 卐 卐 卐 नामक बिहार में उठे। जब तीन वर्ष के पश्चात् योगेश्वर-भूमिशासन 卐 卐 卐 卐 के चीनी अनुवाद के श्री अक्षय-पुरे हो चुके तब अजादि-शास्त्र-स्तुत 卐 卐 卐 卐 ने स्वयं इसकी भूमिका लिखी जिसमें ७८१ अक्षर हैं। स्वयं



इवेन्-च्वाङ् के समाधि-लेख की छाप लेते हुए। यह समाधि-लेख शिङ्-च्याओ स्म (धर्मोद्धार विहार) में है।

A rubbing expert takes an estampage of the epitaph inscription of Hsüan-chuang at the Hsing-chiao ssü temple, while Prof. Raghu Vira studies the ancient art of estampaging. A thousand-year old estampages have been found at Tun-huang.



चीन-सम्राट् के भतीजे एवं श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य क्वि-चि

ही सुन्दर और स्वच्छ प्रति बनाई और राष्ट्र के मन्दिरों, सभ्यों और अधिकारियों को सुना कर श्वेन्-ज्याक के हाथ में सौंप दी। इस समय काबो-स्तुक राजकुमार था। उसने इस भूमिका के वर्णन रूप में उपभूमिका लिखी।

हुक-डू-स्त के अधिपति भिक्षु ज्येन्-तिक 卐 卐 तथा राजधानी के अन्य भिक्षुओं ने दोनों भूमिकाओं को शिलान्यस्त करने की अनुमति मांगी। यह अनुमति दे दी गई।

जब प्स-अन्-स्त का निर्वाण हुआ तब श्वेन्-ज्याक ने इन भूमिकाओं को शिलान्यस्त पर बुदबाया और मन्दिर की उपरिष्ठत भूमि में रखवाया। सम्राट् और राजकुमार की भूमिकाओं से चीन के विद्वानों में बुद्ध-धर्म की प्रगति बहुत बढ़ गई।

सम्राट् की भूमिका की शिला कृष्ण राजास्य की बनी है। यह वर्णिकार पीठ पर खड़ी है। इसके ऊपरी भाग पर बुद्ध शाक्यमुनि की मूर्ति है जिसके आसपास दो अर्हत, दो बोधिसत्व और दो द्वारपाल हैं। नीचे के भाग में तीन अप्सराएं हैं। दाएं बाएं प्रान्त फूलों से सुशोभित हैं। शिला का नाग-मण्डित शिखर-भाग, चाक कला का उत्कर्ष है। शिला के नीचे एक और पत्थर है जिस पर सामने की ओर उड़ती हुई अप्सराएं पुण्य स्तूप को उपहार के रूप में दे रही हैं। मन्दिर को नागों ने पकड़ा हुआ है। दो सिंह और द्वारपाल भी उत्कीर्ण हैं।

एक और भी शिला है जिस पर दोनों भूमिकाएं खुदी हैं। यह शिला पैइ-लिन 卐 卐 में सुरक्षित है। भूमिकाओं के अतिरिक्त इस शिला पर प्रज्ञा-पारमिता-हृदय-सूत्र 卐 卐 भी खुदा हुआ है।

मिङ-लुङ्ग भवन 卐 卐 卐 में एक तीसरी शिला विद्यमान है जिस पर दोनों भूमिकाएं खुदी हैं।

मिङ-ज्याको स्त 卐 卐 卐 - यहां ईंटों के तीन स्तूप हैं। एक श्वेन्-ज्याक का, दूसरा ची-कुङ्ग 卐 卐 का, तीसरा ज्येन्-स्त 卐 卐 का। इनमें तीनों की समाधिवां हैं। इनमें से दो भिक्षुमि स्तूप हैं और ११ हाथ ऊंचे हैं। पर श्वेन्-ज्याक का स्तूप पञ्चसमिक और ४० हाथ ऊंचा है। तीनों में शिलालेख हैं।

जिस समय श्वेन्-ज्याक ७२१ विक्रम में परलोक सिंघारे तब छान् नदी 卐 卐 के पूर्व में उनको बसाया गया। पांच वर्ष के पश्चात् सम्राट् के आदेश से यह मन्दिर बनाया गया और श्वेन्-ज्याक के अवलेख खोद गए।

ची-कुङ्ग संस्कृत के महापण्डित थे और श्वेन्-ज्याक के मुख्य अनुवाद-सहायकों में थे। वे योगाचार वर्णन में शिलान्यस्त थे और इन्होंने इसी विक्रम पर ली स्तूपों की सुप्रसिद्ध टीका लिखी है। ७३९ विक्रम में प्स-अन्-स्त के अनुवाद-धर्म में इनका शिलान्यस्त हुआ। ८८९ विक्रम में इनके एक अनुयायी ने इनके अधिवेशियों की शिलान्यस्त और धारणीय पद्धति के अनुसार शिलान्यस्त किया।

शिलालेख के अनुसार ज्येन्-सुत कोरिया के महाराज के पीव थे। ज्येन्-ज्याज कब
 मृत्यु के कीट कर बाइय तक थे उनके भक्तिमान् शिष्य बन गए और जो ग्रन्थ ज्येन्-ज्याज
 भारत से लाए थे उनके पीछी अनुवाद करने में अपना जीवन बिता दिया।

ज्येन्-सुत ने भारतीय पश्चित दिशाकर के साथ भी अनुवाद का काम किया था।
 ७५२ विक्रम में ८४ वर्ष की आयु में इनका देहान्त हुआ। इनके शरीर का दाह-संस्कार
 किया गया और शरीर-भस्म कई स्थानों पर बांटी गई।

शासुनिक मन्दिर सुक वंश में ११७२ विक्रम में बनाया गया।

ता-सिद्ध-कान् एव * ३३ * - इस विहार की स्थापना चिन् वंश के महाराज
 चू ३३ के दिनों में हुई थी। इस विहार का नाम समय समय पर परिवर्तन होता
 रहा। शासुनिक नाम स्वी वंश में पड़ा। जब नरेन्द्रवसु और शान्मुप्त भारत से आए
 और इस विहार को अपना निवास और कार्य-स्थान बनाया तब यह विहार बौद्ध विद्या का
 केन्द्र बन गया। चक्र वंश में जमोषवज्ज, जिनके नाम का चीनी अनुवाद पू-सुज ४३
 है, उनका भी यह निवासस्थान रहा है। जमोषवज्ज का नाम चीनी साहित्य और इतिहास
 में जमर है। इनकी मृत्यु के पश्चात् इनका समाधि-मन्दिर स्थापित किया गया। स्थापना की
 तिथि ता-की * ३३ का दसम वर्ष अर्थात् ८३१ विक्रम है। ७४ वर्ष के पश्चात् जमोषवज्ज
 के शिलालेख की स्थापना हुई। इस शिलालेख के अनुसार जमोषवज्ज पश्चिम भारत से
 आए थे और चक्र वंश के तीन सम्राटों का अभिषेक किया था। राजसभा में
 इनका बड़ा सम्मान था। मृत्यु से पूर्व सम्राट् जइ-सुज ५२ ने इनको विशेष सम्मानो-
 पाधि दी थी। मृत्यु पर सम्राट् ने तीन दिन तक शोक मनाया था। इनके से-ली अर्थात्
 शरीर के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए समाधि बनाई गई। यद्यपि शिला पर
 इनकी मृत्यु की तिथि मिट गई है तथापि जापानी शिवोन्-सम्प्रदाय के प्रवर्तक कुफुइ
 ३३ के ग्रन्थ से इसकी सूचना मिलती है कि इनकी मृत्यु ता-की के नवम वर्ष अर्थात्
 ८३१ विक्रम में हुई थी।

साह-ज्येन् एव ३३ * २ * - यह सी-जान् नगर की परिधि में ही है। यहां बाज
 समय के दो भारतीय-स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर जम्बीरविजय-भारणी ७३३-७३४
 है जो ९२१ विक्रम में कोटी गई। इनके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण शिलालेख १३७६
 विक्रम का है। शिवा पर गवत, दो नाथिन और पुष्पासंस्कार कया सेली के बने हुए हैं।
 पीछे सम्राट् ज्येन्-सुज तथा चर्वाचार्य चक्र-ज्याज के दिखने का चिह्न है। एक चिह्न के
 पीछे केन्द्र है। चर्वाचार्य चक्र-ज्याज का सम्राट् ज्येन्-सुज से निकला इतिहास की बड़ी
 महत्ताओं में से है। बुद्ध की कल्पना और बुद्धा के प्रति आश्रय बद्ध में अत्यंत महत्त्व में
 एक बौद्ध मन्दिर की स्थापना की जाए, देवी प्रार्थना चर्वाचार्य ने सम्राट् से की। इस
 शिलालेख के अनुसार और विवरणों का चिह्न है।



य्वेन्-त्स कोरिया के महाराज के पीत्र थे । ये श्वेन्-च्वाङ् के अनन्य भक्त शिष्य थे । इन्होंने श्वेन्-च्वाङ् द्वारा लाए भारतीय ग्रन्थों के चीनी अनुवाद करने में अपना मारा जीवन लगा दिया । भारतीय पण्डित दिवाकर के साथ भी इन्होंने अनुवाद किया । शिङ्-च्याओ स्स में श्वेन्-च्वाङ् के पञ्चभूमिक स्तूप के साथ इनका भी त्रिभूमिक स्तूप है ।

Yüan-t'sü, the outstanding disciple of Hsüan-chuang who took a leading part in the translation of Sanskrit texts brought back from India by his pilgrim Master. His memorial pagoda stands alongwith that of his guru Hsüan-chuang and his co-disciple Chi-kung in the precincts of the Hsing-chiao ssu temple, the three forming a triad.



वो-लुङ्ग स्म विहार में उत्कीर्ण बुद्ध-पाद । स्वेन्-च्वाङ्ग द्वारा पाटलिपुत्र से लाई बुद्ध-चरणों की प्रतिकृति को सम्राट् ताइ-त्सुङ्ग ने शिला पर उत्कीर्ण कराया—ऐसी परम्परा-श्रुति है ।

The stele in the Wo-lung ssu temple with Buddha's foot-prints. It was engraved in the 20th year of Hung-wu (1387 A. D.) of the Ming dynasty. These prints were copied in several places in China. According to tradition, these prints were copied by Hsüan-chuang from the original at Pataliputra in Magadha. When the Pilgrim presented them to Emperor Tai-tsung, he had them engraved on stone.

अवर्तसक-सूत्र की एक गाथा के सात चीनी अक्षर शीर्षक के रूप में दिए गए हैं। अवर्तसक-सूत्र में जो विश्व की कल्पना दी गई है उसका चित्रण इस शिला पर किया गया है। इसके अनुसार विश्व का आधार वायुमण्डल है जिसके ऊपर १६ मण्डल हैं। इसके ऊपर परिमल का विशाल सागर जिसमें एक महाकाय कमल तैर रहा है। इस कमल पर भवसागर उहारा हुआ है। इसके चारों ओर पुष्पालंकार बने हैं। कमल-स्थान बज्रमण्डल पर्वतों से घिरा है। परिमल की नदियां दश विशाओं में बह रही हैं। बुद्ध-अंशों के प्रतिनिधि छोटे छोटे बीस और कमल हैं। दस रत्ननिधि हैं। इनके समीप पुष्पवृक्ष है। बड़े कमल से छोटे छोटे कमलों का विकास हुआ है। इन छोटे कमलों पर बीस तल का स्थान है। प्रत्येक तल भिन्न रूप और एक बुद्धाधिष्ठित है। १३वां तल सहलोक है। यहाँ वैरोचन बुद्ध 卍 卐 卐 विराजमान है। जैसे जैसे हम ऊपर के तल पर जाते हैं वैसे वैसे तल की परिधि बढ़ती जाती है।

बो-लुङ्ग स्स 卍 卐 卐 - यह विहार भी शी-आन् नगर के अन्दर ही वर्तमान है। इस विहार में त्रिपिटक के मुद्रण और वष्टन का वर्णनात्मक ऐतिहासिक शिलालेख है।

इस विहार में एक और शिलालेख है जिस पर बुद्ध के चरण उत्कीर्ण हैं। इसकी छाप जो हम स्वयं लाए हैं सामने पृष्ठ पर पाठक देखेंगे। सम्प्रदाय यह है कि दवेन्-च्वाङ्ग मगध देश की राजधानी पाटलिपुत्र से बुद्ध-चरणों की प्रतिकृति लाए थे जो उन्होंने मन्नाट ताइ-स्तुङ्ग को भेंट की थी। उन्होंने इसको पत्थर पर खुदवा लिया था। इन बुद्ध-चरणों की अनुकृति जापान में नारा और कोन्दो आदि स्थानों में मिलती है। नारा के शिलालेख के अनुसार यह बुद्धचरणों की अनुकृति पू-च्वाङ्ग स्स 卍 光 卐 से लाई गई थी और ८०९ विक्रम में याकुशि-जी मन्दिर में लोदी गई थी।

वेह-लिन्ग् अर्थात् शिला-वन। शी-आन् के वन्-म्याओ 文 山 में अनेक ऐतिहासिक शिलालेखों का संग्रह है। कोष्ठ संकड़ों उत्कीर्ण शिलाओं से भरे हैं। इसका आरम्भ मुङ्ग बंश में हुआ। ऐतिहासिक लेखों की रक्षा करने के लिए समय समय पर यहाँ उत्कीर्ण शिलाएं इकट्ठी की गईं। हमने स्वयं ५०० से अधिक देखीं। इनमें प्रसिद्ध कलात्मक लेखकों की लिखित शिलाएं तथा बिहारों और बौद्ध आचार्यों के इतिहास सम्मिलित हैं। इनमें से हम दो-चार का उल्लेख करेंगे।

वर्णाचार्य लिन्ग् 卍 卐 卐 की शिला-दवेन्-च्वाङ्ग के चीनी अनुवाद की आवृत्ति करने के लिए बारह चोटी के विद्वान् थे। इनमें से ताओ-यिन्ग् 卍 卐 अग्रणी थे। इनका कार्य था कि बहिष्कृत की यथार्थता और अर्थ की शुद्धता में दोष न बाने पाए। ताओ-यिन्ग् सात वर्ष की आयु से काल्पो का अध्ययन करने लगे थे। ये योगाचार-वर्णन के परम विद्वान् थे।

ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्य ता-ब 大 光, पू-छी 卍 卐, आदि अनेक आचार्यों का वर्णन इन शिलालेखों में मिलता है। पू-छी अथवा ई-सू 卍 卐 के मुख लक्ष्मण-सम्प्रदाय के राजगुरु थे।

विक्रम की जाठवीं और नवीं सताब्दी ध्यान-सम्प्रदाय के उत्कर्ष का युग थी। ध्यान-सम्प्रदाय के प्रभाव से अध्ययन की प्रतिष्ठा कुछ नीची चकी गई थी। धर्माचार्य ता-ता * ने पुनरपि विद्या की प्रतिष्ठा को उठाया। वे स्वयं योगाचार, विनय और सुलावती के महापण्डित थे। इनका शिलालेख ८९८ विक्रम में प्रतिष्ठापित किया गया।

फन्-क्यो-कुङ्ग ३३ 公 - यह शिलालेख ८७९ विक्रम में प्रतिष्ठापित किया गया। फन्-क्यो-कुङ्ग श्रद्धालु बुद्धभक्त सेनापति थे। सम्राट् मू-स्तुङ्ग ३३ 皇 इन पर मुख थे। राष्ट्र और धर्म तथा जनता के लिए निःस्वार्थ भाव से लगे रहते थे।

ह्वा-गन् स्त ३३ 皇 - यह टूटा फूटा विहार है। यह अबतंसक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक तू-शुन् 皇 皇 की स्मृति है। ६९७ विक्रम में तू-शुन् ने अपने जीवन का कार्य इस लोक में समाप्त किया और परलोक सिधारे।

व्साओ-बाङ्ग स्त ३३ 皇 - व्सी-आन् नगर से दक्षिण दिशा में आठ ली की दूरी पर यह विहार स्थित है। कुमारजीव के अनुवाद-कार्य का यह मुख्य स्थान रहा है। कुमारजीव के कार्य के और भी अन्य स्थानों का ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णन है। इस विहार में ध्यानाचार्य क्वेइ-फ़ङ्ग-स्तुङ्ग-मी का शिलालेख विद्यमान है। क्वेइ-फ़ङ्ग ध्यान और अबतंसक-दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य थे। इन्होंने अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। इनका देहान्त ८९८ विक्रम में ध्यानावस्था में हुआ था। मृत्यु के पश्चात् इनको समाधि-प्रज्ञा-ध्यानाचार्य की उपाधि तिक-ह्सी-आन्-श 皇 皇 皇 दी गई।

१६-६-५५ की रात्रि को व्सी-आन् में चीनी छाया-नाटक देखा। यह छाया-नाटक जाबा के छाया-नाटक से बहुत भिन्न है। जाबा में अधिकांश रामायण और महाभारत के दृश्यों का अभिनय होता है। डालम् अर्थात् पुतलियों को चलाने वाला व्यक्ति जनता के सामने बैठता है। जनता पुतलियों को देखती है तथा पुतलियों की छाया को भी। जब १७ अगस्त १९५१ को हमने सुभद्राहरण नामक छाया-नाटक जयकर्ता के राष्ट्रपति-अवन में देखा था तब नाटक-अवन के दो भाग किए हुए थे। पुतलियों का रंगमंच अवन के मध्य में था। रंगमंच के एक ओर राष्ट्रपति तथा "अभियमन" बैठे हुए थे, दूसरी ओर "स्त्री और शूद्र"। अभिय, स्त्री और शूद्र इन तीनों शब्दों का प्रयोग अभी तक किया जाता है। अभियमन डालम् और पुतलियों को देखते थे और स्त्री-शूद्र-गण पुतलियों की छाया को देख सकते थे। पुतलियों की छाया दक्षेय यन्त्रिका पर पड़ती थी। मुझे तो स्त्री-शूद्रों की ओर से दृश्यमान छाया-नाटक कहीं अधिक सुन्दर लगा।

चीनी छाया-नाटक में पुतलियों को चलाने वाला व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ा। पुतलियों की संख्या भी आठ दस से अधिक न थी। नाटक बहुत द्रोणक था। चले हमको व्सी-आन् के अधिकारियों ने निदर्शन रूप में तीन पुतलियाँ भेंट कीं। पुतलियाँ भेंट के समय की व्सी हुई है



शो-आन् के अड्डुनागार में छठी-मातवी शताब्दी की खडे बुद्धो की छः मूर्तियां हैं । इनमें भारतीय प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है ।

Six Buddha images at the Hsi-an Museum, belonging to sixth-seventh centuries which bear conspicuous Indian influence.



१२४ विक्रम में चीन-सम्राट् मिङ्-ती के निमन्त्रण पर दो भारतीय धर्माचार्यों, काश्यप मातंग और धर्मरक्ष ने श्वेताश्व विहार में भारत-धर्म के बीज का रोपण किया। यह प्रथम बौद्ध विहार का प्रवेगद्वार है दोनों पार्श्वों में खड़े हुए श्वेत घोड़े उन अद्भुत क्षणों के स्मारक हैं जब धर्माचार्य श्वेताश्वों पर मूत्रग्रन्थ लाए थे। इसी कारण विहार का नाम पो-मा स्स अर्थात् श्वेताश्व विहार रखा गया।

The main entrance of Po-ma ssu near Loyang, founded in the eleventh year of Yang-ping, i.e. 67 A. D. It is the first Buddhist monastery where two Indian teachers Kaśyapa Maṭaṅga and Dharmarakṣa brought Sanskrit sūtras on white horses whence the monastery came to be known as the White (po) Horse (ma) Monastery (ssu). Stone images of two horses greet the visitor as he enters the precincts.

चीन में बौद्ध धर्म का विकास और प्रचार स्वी 卍 तथा थाऊ 卐 राजाओं के काल में विश्वर पर था। हमारे पास ऐतिहासिक सामग्री के दो महान् स्रोत हैं— चीनी साहित्य और पुरावशेष। चीनी साहित्य में वंशानुवश, स्थानानुस्थान, इतना ही नहीं, बिहारानुबिहार विशाल और विस्तृत वर्णन हैं कि किस प्रकार से और किन प्रयोजनों को दृष्टि में रखते हुए किन बिहारों का निर्माण हुआ। वहाँ पर किन किन विद्वानों ने बिद्या-सेवा में अपना जीवन बिताया, इत्यादि।

ऐतिहासिक साहित्य में सुकीर्तित स्थान नष्ट हो चुके। इसके विपरीत ऐसे स्थान विद्यमान हैं जिनका पुस्तकों में विशेष अथवा कोई भी वर्णन नहीं, पर वे अभी तक अच्छी दशा में हैं।

फिर भी ऐसे पुरावशेषों की न्यूनता नहीं जिनके सम्बन्ध में ऐतिहासिक सामग्री तथा अवशेष इतनी प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं कि दोनों का सम्बन्ध जोड़ा जा सके और बौद्ध धर्म के इतिहास की शृंखला संतत और अविच्छिन्न जीवित रूप में जानी जा सके।

राजवंशों का उदय और अस्त होता रहा। नाना प्रकार के परिवर्तन राष्ट्र ने देखे। अनुमान कीजिए कि पूर्व चिन् 卐 वंश के ह्वी-येन् 卐 के दिनों से लेकर आज तक लू-शान् 卐 卍 का तुङ्ग-लिन् 卐 卐 बिहार विद्यमान है। इसके नाम और स्थान वही हैं। उत्तर वेइ 卐 के राज्यकाल में भारत के महान् आचार्य बोधिधर्म चीन में आए और मुङ्ग-शान् 卐 卍 में जिस शाओ-लिन् 卐 卐 बिहार को अपना निवास और कार्यस्थान बनाया वह अब भी उसी भूमि पर खड़ा है।

महत्त्वपूर्ण अवशेष अधिकांश चौथी से बारवी शताब्दी तक के हैं। चाहे आठ सौ वर्ष व्यतीत हुए हों चाहे १५ सौ, और चाहे सन्त और महात्मा, विद्वान् और आचार्य, सम्प्रदाय-प्रवर्तक तथा शास्त्रों और सूत्रों के अनुवादक विचक्षण पण्डित इस संसार से चल बसे हों, ये स्मारक अभी तक उनके पुण्य कार्य की घोषणा कर रहे हैं। जब हम साक्षात् इन स्थानों पर लड़े होकर इनके वैभवकाल का चिन्तन करते हुए प्राचीन मूलचित्र अपने मन में निर्माण करते हैं तो श्रद्धा भक्ति का आप्लाव उमड़ आता है। बीच की बीती हुई शताब्दियाँ क्षणभर के लिए मूर्तिमती हो जाती हैं।

हमने जो स्थान और वस्तुएं देखी हैं उनका महत्त्व भारत और चीन के सम्बन्धों के लिए अपरिमित है। भारत का इतिहास इनके बिना अधूरा है।

पुरावशेष, पत्थर, ईंट, मिट्टी, लकड़ी, लोहे, ताम्बे और पीतल के हैं। सर्वप्रथम पहाड़ों में बनाई मुकाएं, शिलालों पर लिखे हुए सूत्रोद्धरण, दो तीन अंगुल से लेकर सौ हाथ तक की ऊंची विशाल और मनोभिभाषी मूर्तियाँ, प्राचीन सिद्धन् लिपि में लिखे हुए तथा समस्त देवों के चित्र हुए धारणी-स्तम्भ।

इनके अतिरिक्त ईंट के बने हुए स्तूप, छोटे से छोटे और बड़े से बड़े।

किन्तु कला की दृष्टि से अथवा इतिहास की साक्षिरूपता की दृष्टि से पर्वत-गुहाएं प्रथम श्रेणी में आनी चाहिएं । ४२३ विक्रम से इन गुहाओं का आरम्भ होता है । बंधा-मुंधा और प्रान्तानुप्रान्त बंधा-बा, वास्तु और चित्रकला, दर्शन और सम्प्रदाय में जो भेद होते गए उनका चित्रण इन गुहाओं में मिलता है । भारत में इन गुहाओं का आरम्भ हुआ, चीन में इनका विकास पराकाष्ठा तक पहुंचा । भारत से सम्बद्ध और प्रभावित किसी और देश में इतनी गुहाएं नहीं हैं और न ही उनमें इतनी कलाकृतियां विद्यमान हैं । यदि हम संसार के सभी देशों पर दृष्टिपात करें तब भी चीन की बौद्ध गुहाएं, प्राचीन कला और शिल्प की महत्तम गुहाएं हैं । बौद्ध धर्म ने किस प्रकार साम्राज्य-प्रवर्तकों और सामान्य जनता के जीवन को अनुप्राणित किया था इसका अनुमान इन पुरावशेषों तथा साहित्यानुशीलन दोनों के मिश्रण से ही यथार्थ रूप में हो सकता है ।

• चीन देश, जिसमें आज उत्तरपूर्व में मञ्जु प्रदेश और मोंगोल राष्ट्र तथा पश्चिम में बीमूर आदि तुर्क जातियों की भूमि, कुस्तन अथवा खोतान् और विशाल भोटभूमि (तिब्बत) सम्मिलित हैं, का एक एक प्रान्त और प्रदेश बौद्ध अवशेषों से समाकीर्ण है ।

लो-याङ्ग 洛陽 में आइए । यह आधुनिक हो-नान् 洛陽 प्रान्त में स्थित है । यह प्राचीन काल में चीन की राजधानी रहा है । आज १८८८ वर्ष व्यतीत हो चुके जब पो-मा स्स 白馬寺 की स्थापना याङ्ग-पिङ्ग 洛陽 के ११वें वर्ष में हुई थी । १२४ विक्रम से लेकर आज तक अनेक बार इस बिहार का जीर्णोद्धार हुआ ।

यह बिहार आधुनिक लो-याङ्ग नगर से २५ ली की दूरी पर है । मार्ग कच्चा है । घुल्लिपूर्ण है । चारों ओर ऊंची भित्ति बनी है । प्रवेश-द्वार के सामने दो पत्थर के घोड़े खड़े हुए हैं । यद्यपि ये बहुत पुराने नहीं तो भी इन घोड़ों का यहां खड़ा होना सार्थक है । ये घोड़े स्मारक हैं उस अद्भूत क्षण के जब भारत से पहले धर्मदूत चीन के महाराज ने निमन्त्रित किए थे और वे यहां आकर उतरे थे । जिस घोड़े पर वे अपने साथ सूत्रग्रन्थ लाए थे उस घोड़े का रंग श्वेत था । इसी कारण बिहार का नाम पो-मा स्स अर्थात् श्वेताश्व-बिहार रखा गया (पो=श्वेत, मा=अश्व, स्स=बिहार) ।

बिहार में प्रवेश करते ही दाईं ओर बाईं ओर प्रथम भारतीय धर्मदूतों की समाधियां हैं । इन समाधियों के साथ शिलालेख भी हैं । ये शिलालेख १२४ विक्रम के तो नहीं बहुत पीछे-के हैं किन्तु ऐतिहासिक सम्प्रदाय के अभिव्यञ्जक हैं ।

इन समाधियों के दर्शन करना और अपने अज्ञानपूर्ण स्वर्गिक आत्माओं को एक दो अञ्जलि भर कर दो चार मञ्जुओं के साथ अर्पण करना किस भारतीय का कर्तव्य नहीं । ये क्षुर और साहसी धर्मप्रचारक, शान्तिप्रचारक, धारक का पुनीत सम्बोध किए हुए पर्वतों, मार्गहीन पर्वतों, उनसे भी दुर्गम अलहीन दिग्भ्रामोहकारी, सततः कोकपर्वण विस्तारी और भूख एवं प्यास की असह्य बातनाओं से पूर्ण, साक्षात् धर्मप्रवेषनूत मन्दागों को पाद



श्वेताश्व विहार के प्रवेशद्वार पर श्वेत घोड़ा । भारतीय आचार्य
श्वेताश्व पर अपने साथ सूत्र ग्रन्थ लाए थे । यह घोड़ा उन ऐतिहासिक
क्षमों का स्मारक है ।

The image of the horse at the entrance of the Po-ma ssu
or White Horse Monastery is reminiscent of the historic
introduction of Buddhism in China.



पो-मा स्म विहार में प्रवेश करते ही भारती के प्रथम धर्माचार्य काश्यप
 मानंग और धर्मरक्ष की समाधिया हैं। इन समाधियों पर खुदे शिलालेख
 समसामयिक न होते हुए भी ऐतिहासिक घटना के अभिव्यञ्जक हैं।

The epitaph stele at Po-ma-su on the tomb of Dharmaraksā, one of the two acaryas who introduced the Dharma in the Celestial Empire.

करते हुए भारत के धर्म-बीजों को यहाँ लाए और उनका श्वेताश्व-विहार में रोपण किया। पो-भा स्त संकन-स्थान है। यहाँ के अध्यक्ष ने हमको बताया कि धर्मरक्ष की मूर्ति बाह्र काल की बनी है। धर्मरक्ष के सामने ही मातंग की मूर्ति है। दोनों के दोनों ओर चीनी शिष्य खड़े हैं। मातंग के पास खड़े हुए एक शिष्य के हाथ में संस्कृत का ग्रन्थ था। वह अब नष्ट-प्राय हो चुका है। मूर्तियों का काला रंग, नितान्त काला रंग क्या धर्मरक्ष और मातंग के वर्ण का चेतक है? क्या ये लोग सर्वथा कृष्णवर्ण के थे?

आज लो-याक में नौ भिक्षु रहते हैं। मन्दिर संख्या छः है। बाह्र राजाओं के काल में लो-याक में १८०० मन्दिर थे।

मातंग-मूर्ति वाले कोष्ठ के बाहर त्रितिलेख हैं जिसमें भारत से आए भिक्षुओं और ताओ-सम्प्रदाय के श्रद्धालुओं में हुए संघर्ष का वर्णन है। बौद्ध और ताओ में से कौन सत्य है एवं कौन अधिक प्रभावी बलशाली है इसकी परीक्षा करने के लिए दोनों के ग्रन्थों को अग्नि में डाल दिया गया। अग्नि बौद्ध सूत्रों को जलाने में समर्थ न हुई किन्तु ताओ-ग्रन्थों को उसने भस्मसात् कर दिया। इस अग्नि-परीक्षा के परिणाम-स्वरूप श्वेताश्व-विहार का निर्माण हुआ।

श्वेताश्व-विहार में बीस वर्ष हुए, राजाश्म की बुद्धमूर्ति बर्मा से शाङ्-हाइ द्वारा लाई गई। मस्तक के तिलक स्थान पर रत्न लगा है। बौद्ध परिभाषा में इसका ऊर्ण कहते हैं। मूर्ति कम्बुध्रीव है। कम्बु-रेखाओं पर सोने का पानी फिरा है। इससे मूर्ति की शोभा अद्वितीय हो गई है।

१२२ विक्रम में चीन के पूर्वीय हान्-वंश के सम्राट् मिङ्-ती को स्वप्न आया कि सुवर्ण-पुरुष प्रासाद में उड़ता हुआ आ रहा है। बुद्ध का स्वर्ण-वर्ण चीन में भी उस समय तक प्रसिद्ध हो चुका था। सम्राट् के पूछने पर राजसभा के व्यक्ति ने झट बतलाया कि ये तो बुद्ध हैं। राजा ने अपने दूत भारतवर्ष में बौद्ध सूत्र और भिक्षु लाने के लिए भेजे। परिणाम-स्वरूप धर्मरक्ष और काश्यप मातंग तथा अनेक सूत्र और मूर्तियाँ थोड़ों पर लाव कर लाई गईं। सूत्र-ग्रन्थ श्वेत थोड़े पर थे। इनके लिए राजधानी में सम्राट्वादेश से श्वेताश्व नामक प्रथम बौद्ध विहार बनाया गया। धर्मरक्ष और मातंग ने अपना समस्त जीवन चीन में बिता दिया। आजीवन संस्कृत ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद करते रहे और चीनी जनता को धर्मोपदेश देते रहे। इनके अनूदित ग्रन्थों में से केवल द्वाचत्वारिंशद्-अध्याय सूत्र बचा है। इसमें बौद्ध शब्दों की व्याख्या तथा विनय आदि के नियम दिए हुए हैं।

चीनी ग्रन्थों में धर्मरक्ष और मातंग के चीन आने की कथा का संक्षेप इस प्रकार है।

छा-विह्व और विह्व-विह्व की चीन के महाराज ने भारत भेजा। वे अपने साथ

४२ अध्याय का सूत्र ग्रन्थ तथा मातंग और धर्मरत्न को लाए। इनके साथ शाक्यमुनि की मूर्तियां भी थीं। सूत्रग्रन्थ क्षीतमण्डप अर्थात् जिस स्थान में अब मातंग और धर्मरत्न की मूर्तियां हैं लाकर रखे गए।

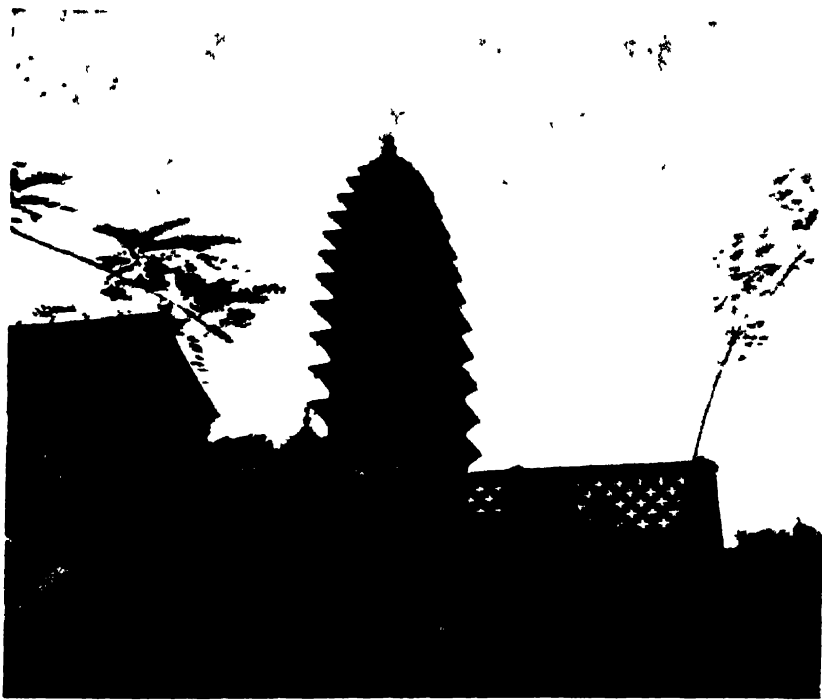
काश्यप और धर्मरत्न की मूर्तियों वाले फी-लू-को 卐 卐 卐 नामक द्विभूमिक भवन के बांगन में हमने यहां के मिश्रुओं के रंगीन चित्र लिए। सीभाग्यवश यहां दक्षिण प्रदेश से एक और चीनी मिश्रु आए हुए थे। वे तपस्वी हैं। इन्होंने १८ वर्ष की समाधि लगाई थी। अन्य मिश्रुओं के समान ये परिग्रहशील नहीं। इनके जूते और कपड़े फटे हुए थे। उपवास से इनका शरीर कृश है। ये बयोवृद्ध हैं। भारत से आए हुए दो व्यक्तियों को देख कर इनके हर्ष की सीमा न रही। हमारे वस्त्रों को इन्होंने बुद्ध के वस्त्र माना। आज एवेताश्व बिहार के अध्यक्ष मिश्रु ची-लू हैं। जो हमने चित्र लिए उनकी प्रति इनको भेजनी है। समाधि लगाने वाले मिश्रु भी चित्र चाहते हैं। वे बड़ी उत्सुकता से चित्र लिखाते समय हमारी पंक्ति में सम्मिलित हुए।

इस भवन में अनेक शिलालेख हैं। इनमें से दो चार की हमने छापें लीं।

समीप ही त्रयोदश-भूमिक स्तूप खड़ा है। इस स्थल को छी-युद्ध या 卐 卐 अथवा पूर्वीय पो-मा स्त 卐 卐 卐 कहते हैं। छी-युद्ध या का अर्थ है मेघ-चुम्बी स्तूप। सामने ही लेख-धारिणी शिला खड़ी है। इस शिला की स्थापना १२३२ विक्रम में हुई थी। इसके अनुसार उत्तर बाह्य बंस के सम्राट् च्वाङ्-स्तुङ् 卐 卐 ने इस स्तूप का निर्माण किया था। उस समय यह नौ भूमि ऊंचा था। लकड़ी का बना हुआ था और तीन सौ हाथ से अधिक ऊंचा था। सुङ्ग काल में चिङ्ग-हाङ्ग के प्रथम वर्ष (११८३ विक्रम) में यह स्तूप अग्नि-सात् हुआ और १२३२ विक्रम में ज्येन्-कुङ्ग नामक मिश्रु ने इसी स्थान पर ईंटों का त्रयोदश-भूमिक स्तूप बनवाया। ६२३ वर्ष के पश्चात् छिङ्ग काल में च्या-छिङ्ग 卐 卐 के तृतीय वर्ष में ज्येन्-लाङ्ग 卐 卐 ने इसका जीर्णोद्धार किया। इसके ऊपर चढ़ने के लिए जनसाधारण के लिए कोई प्रबन्ध नहीं।

स्तूप के चारों ओर पाठशाला के लड़के और लड़कियां खेल रहे थे। आसपास नेह्रू के खेत कट रहे थे। हमको देख कर किसान अपना काम छोड़ कर चले आए। लड़के लड़कियों ने भी खेल छोड़ा। चारों ओर अच्छी भीड़ इकट्ठी हो गई। हमने सोचा क्या कभी ये किसान और बच्चे अनुभव करते होंगे कि ये कितने महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान के निवासी हैं। पर इनको यह बात विशेष रूप से अनुभव करने की आवश्यकता कैसे प्रतीत हो सकती है। इनके तो रक्त और अस्थियों में ये बिहार और स्तूप समाए हुए हैं।

जब हम स्तूप पर पहली बार पहुंचे तो दोपहर ढल चुकी थी। ग्रन्थ समीर चल रहा था और एक ओर के कोनों की चट्टियां धीरे धीरे अलग अलग स्वर में मधुर ध्वनि बाधु की दिशा में फैला रही थीं। जिस ओर वायु चलती है उसी ओर की चट्टियां बजती



छी-युङ् था अर्थान् मेघचुम्बी स्तूप का निर्माण उत्तर थाङ् वंश के सम्राट् च्वाङ्-मुङ् ने किया था । आज भी कोनों पर लगी हुई घण्टियों की मनमोहक मधुर ध्वनि यात्री को आकृष्ट करती है ।

The Thirteen-storied Pagoda at Ch'i-yün ssü to the East of the main monastery of Po-ma ssü. The Ch'i-yün ssü Monastery was founded by Emperor Chuang-tsung, who also erected a nine-storied wooden pagoda. It was burnt in 1126 A. D. In 1175 the monk Yen-kung restored the monastery and erected a 13-storied brick pagoda instead. It was repaired by Yün-lang in 1798.

रहती हैं। यदि स्थान निर्जन हो तो इनकी ध्वनि और भी अधिक मनोमोहक और प्राचीन स्मृतिबोधक बन जाती है।

कुछ और दूर जाकर अष्टकोण स्तम्भ है। प्रसिद्धि है कि इस पर खुदे हुए अक्षर देवताओं के लिझे हुए हैं। पुरावशेष-विभाग के जो व्यक्ति हमारे साथ थे उन्होंने बताया कि इस स्तम्भ का लेख आज तक किसी ने नहीं पढ़ा और न ही इसका प्रकाशन हुआ है। हमने इसकी छाप ली है। १३ पंक्तियां हैं। चीनी के समान पंक्तियां ऊपर से नीचे तथा दाईं से बाईं ओर चलती हैं। अक्षर भारतीय हैं। हमको भी इनके पढ़ने में दो ढाई घण्टे लग गए।

धारणी से पूर्व चीनी भाषा में भूमिका है कि यह स्तम्भ ११६१ विक्रम में (चुङ्ग-निङ्ग के तृतीय वर्ष के अष्टम मास का १९ वां दिन) अपने निस्सन्तान चाचा के स्मारक के रूप में उपासक चङ्ग-कू ने लो-याङ्ग मण्डल के इवेन्-बू ग्राम में स्थापित किया था। चाचा का नाम णी-यन् था।

शिलालेख का चित्र और उसकी देवनागरी प्रतिलिपि इस प्रकार है—

- १ पंक्ति . . . नमो भगवते त्रैलोक्यप्रतिविशिष्टाय बुद्धाय भगव (ते त)
- २ पंक्ति . . . दद्या ओ विशोधय सम-सम-भाव-भास-स्फरण-गति गह (न)
- ३ पंक्ति . . . स्वभाव-शुद्धे अभिषिच मा सुगत वरवचनामृताभिवेकं
- ४ पंक्ति . . . आहर आहर आयुसन्धारणि शोधय गगनविशुद्ध उष्णी
- ५ पंक्ति . . . ष-विजय-विशुद्धे सहस्रारश्मि-सचोदिते सर्वतथागताधि-
- ६ पंक्ति . . . ष्ठानाधिष्ठितमुद्रे वज्रकायसंहत न शुद्धे सर्ववरण वि-
- ७ पंक्ति . . . शुद्धे प्रतिनिधते य आयु शुद्ध समयाधिष्ठिते मणिमणि-त-
- ८ पंक्ति . . . यता-भूतकोटि-परिशुद्धे विस्फुट-बुधि-शुद्धे जय जय विज-
- ९ पंक्ति . . . य विजय स्मर स्मर सर्वबुद्धाधिष्ठित-शुद्धे वज्रावजागर्भे
- १० पंक्ति . . . वज्राम्भबतु मम सर्वसत्वानां च कायविशुद्धे सर्वगति-
- ११ पंक्ति . . . परिशुद्धे सर्वतथागतसमाश्रवासाधिष्ठिते बुध्य बुध्य बोध-
- १२ पंक्ति . . . य बोधय समप्रपरिशुद्धे सर्वतथागताधिष्ठानाधिष्ठित
- १३ पंक्ति . . . महामुद्रे स्थाहा

हम पहले बयोबुद्ध भिक्षु का वर्णन कर आए हैं जिन्होंने १८ वर्ष तक समाधि लगाई थी। ये कभी दग्ध नहीं हुए और न ही कभी इनको पसीना आया। इन्होंने अपना उपाधिपत्र झोल कर दिखाया जिसका हमने चित्र लिखा। चीन में भिक्षुओं के अध्यापन का नियमित प्रबन्ध है। बिना पढ़ा लिखा कोई भिक्षु नहीं रह सकता। भारत में स्थिति उल्टी है कि जो साधु संन्यासी बनता है उसके लिए पढ़ना लिखना आवश्यक नहीं समझा जाता। बृहस्प से संन्यास लिया तो विद्या से भी संन्यास लिया।

लुङ्ग-मन् ॥ १७-१७ जून को हम लुङ्ग-मन् की प्रसिद्ध गुहाएं देखने के लिए गए। लो-याङ्ग से ये ४० ली दूर हैं। हमसे दो चार दिन पूर्व जर्मन विद्वान् एर्नस्ट और उनकी पत्नी यहां जा चुके थे। उन्होंने हमको डरा दिया था कि मार्ग बहुत ऊंचा नीचा और भूलिमय है किन्तु अन्तिम दो तीन ली छोड़ कर कोई विशेष भूल मार्ग में न मिली। लुङ्ग-मन् के समीप ही एक कोयले की खान खुद रही है। षोड़ागाड़ियां, सचचर और गधे कोयला ले जाते हुए मार्ग में मिलते रहे। पूछने पर यह निश्चय न हो सका कि कोयला खोदने वाले लुङ्ग-मन् की गुहाओं पर आक्रमण करने अवकाश नहीं।

दो सड़ी हुई पहाड़ियों के बीच में से छोटा सा नाला निकलता है। पहाड़ी अस्तित्वर्ष राजाश्रम की बनी है। मूर्तियां बनाने के लिए यह पत्थर सुन्दर है। उत्तर वेइ वंश के आरम्भ से यहां गुहाएं और मूर्तियां बनने लगीं और स्वी तथा थाङ्ग वंश में इनका विस्तार हुआ।

५५० विक्रम में जब राजधानी लो-याङ्ग बनी और उत्तर वेइ के महाराज तथा उनके सामन्त लो-याङ्ग में आए तो उन्होंने लुङ्ग-मन् में दूसरा युन्-काङ्ग ॥ १७ बनाया आरम्भ किया। इनके पश्चात् पूर्वी वेइ, उत्तरीय छी, स्वी और थाङ्ग राजाओं ने एक दूसरे से बढ कर गुहाएं और मूर्तियां बनवाईं। महाराज काओ-त्सुङ्ग ॥ ३३ तथा महाराणी वू ॥ ३३ के समय में कला पराकाष्ठा पर पहुंची।

महाराज श्वेन्-त्सुङ्ग ॥ ३३ के काल में ह्यास आरम्भ हुआ। ई-नदी ॥ ३३ के दोनों ओर की पहाड़ियां गुहाओं से भरी हैं किन्तु वाम तट पर ही लुङ्ग-मन् की कला का वैभव है। वाम तट की गुहाएं दो भागों में बांटी गई हैं उत्तर और दक्षिण। उत्तर भाग में प्रथम ६ गुहाएं हैं और दक्षिण में शेष १५।

युन्-काङ्ग गुहाओं में बहुत बड़े सिलालेख मिले हैं। इनसे केवल तीन तिथियों का निश्चय होता है। किन्तु लुङ्ग-मन् में अनेक गुहाओं की तिथि, दाताओं के नाम और उनकी खुदाई का वर्णन दिया हुआ है। इससे ऐतिहासिक अध्ययन में बहुत सहायता मिली है। सबसे पहली तिथि ५४० विक्रम है। जिसका अर्थ स्पष्ट है कि लो-याङ्ग को राजधानी बनाने से कुछ पूर्व ही गुहाओं का कार्य लुङ्ग-मन् में आरम्भ हो चुका था।

थाङ्ग वंश में खोदी हुई गुहाएं-सम्भवतः एक संख्याकित गुहा थाङ्ग वंश में ही बनी हो। यहां बैठे हुए बुद्ध की विशाल मूर्ति है।

गुहा २री, १५वीं और १८वीं की खुदाई का काम थाङ्ग वंश में पूरा हुआ था।

गुहा ५- विङ्ग-सान् त्स ॥ ३३ ॥

गुहा ६- बुद्ध विमूर्ति पर्वत में से ही खोदी गई है।

गुहा ७- इस गुहा में सर्वथा गोल प्रमाणमण्डल है। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है।



नील प्रान्त में ई नदी के तट पर असितवर्ण राजासम की पहाडियों में बनी गुहाओं में लुङ्-मन् की कला का वैभव विस्मरणीय है। उत्तर वेङ्ग वंश के सम्राट् ने ५४० विक्रम में इनका निर्माण प्रारम्भ करवाया। सम्राट् काओ-स्तुङ्ग के समय लुङ्-मन् की कला पराकाष्ठा पर पहुँच गई। थाङ्ग वंश के समय गुप्त-कला भोट द्वारा चीन को। फगतः लुङ्-मन् की थाङ्ग-वंशीय गुहाओं में भारत की गम्भीर कला से चीनी कला अनुप्राणित हुई।

of R. hu Vira entering the Lung-mên Caves in Honan province. They are situated to the south of the ancient metropolis of Lo-yang. The stone sculptures in the Caves range from the 1st to the 7th Tang dynasty, spread over twenty-one caves.



लुङ्-मन् मे बुद्ध त्रिमूर्ति के गिलाबित्र की छाप । प्रभामण्डल की अप्सराएँ
विशेष आकर्षक हैं ।

Estampage of a Buddha Trinity at the Lung-mên Caves, whose
halo is constituted by elegant *apsaras*'.

गुहा ८- छवेन्-को अर्थात् सहस्रबुद्ध-गुहा । इसमें एक भी सिर पूर्ण नहीं ।

गुहा ९- इसका सामान्य नाम अयुत-बुद्ध-गुहा 萬佛洞 है । इसमें ८१४० बुद्ध हैं । छत में सुन्दर रंग दूर से ही दिखाई पड़ने लगते हैं ।

गुहा १०- इसको नत-आनु-सिंह-गुफा 龍窟 कहते हैं ।

गुहा १२- इसका नाम महती गुहा 大洞 है ।

गुहा १६- इसका नाम खण्डित-गुहा 斷窟 पड़ गया है ।

गुहा १९- पर्वत में से महान् बुद्ध की मूर्तियां घड़ी हुई हैं । ये मूर्तियां अति विशाल और मनोरम हैं । मध्य बुद्ध की बंठी हुई मूर्ति ३६ हाथ ऊंची है । बुद्ध और उसके शिष्य कम्बुध्रीव हैं ।

वास्तव में यह गुहा नहीं है । ऊपर से खुली है । शासन मूर्तियों के ऊपर छत बनाने का विचार कर रहा है ।

छोटी बड़ी मिला कर लुङ्ग-मन् में एक सहस्र के लगभग गुहाएं हैं ।

वेइ वंश के इतिहास 魏書卷之九十九 के बुद्धधर्म सम्बन्धी अध्याय के अनुसार राजा खेन्-यू 宣武帝 ने पहले एक गुहा अपने माता पिता की स्मृति में खुदाई की और तत्पश्चात् एक और गुहा अपने लिए । खुदाई का कार्य ५५७ विक्रम में आरम्भ हुआ था और ५८० विक्रम में समाप्त हुआ था । आठ लाख शिल्पी और श्रमिक लगे थे ।

युन्-काङ्ग 周武帝 में पर्वतभित्ति की बनावट एक दूसरे पर सीके रखे हुए स्तरों की है । ये स्तर रेतीले पत्थर के बने हुए हैं । सभी स्तर क्षैतिज हैं । यहां बड़ी बड़ी गुहाएं खोदना कठिन नहीं । किन्तु लुङ्ग-मन् कठोर राजास्रम का बना हुआ है । पत्थर के स्तर क्षैतिज नहीं । किन्तु तीस अंश के प्रावण्य पर हैं । यहां गुहाओं का खोदना अत्यन्त कठिन है । अतः लुङ्ग-मन् की गुहाएं युन्-काङ्ग की अपेक्षा बहुत छोटी हैं । युन्-काङ्ग में छतें क्षैतिज हैं । युन्-काङ्ग में पत्थर कठोर नहीं । इसलिए टंककर्म सरल है । परन्तु साथ में कोमल होने के कारण पत्थर क्षीघ्रता और सरलता से ही विरूप और क्षीर्ण हो जाता है । लुङ्ग-मन् में पत्थर की कठोरता के कारण कला अधिक सूक्ष्म है । वर्षा और धूप मूर्तियों को उतना नहीं बिगाड़ पाई जितना युन्-काङ्ग में । मूर्तियों की रेखाएं गहरी और तट स्पष्ट हैं ।

विदेशियों ने चीन की कला में रुचि ली उसका अनिष्ट परिणाम यह हुआ कि व्यापारियों ने १९१२, १९१३ के लगभग से लुङ्ग-मन् की मूर्तियों के सिर काट कर विदेशियों के हाथ बेचना आरम्भ किया । आज लुङ्ग-मन् की मूर्तियों के सुन्दर ऐतिहासिक शीर्ष लुङ्ग-मन् में नहीं किन्तु यूरोप और अमेरिका के अङ्गुतागारों और कलाप्रिय समूह-बनों के गृहों की सोभा बने हुए हैं ।

केवल छवेन्-की त्स के आसपास की मूर्तियां इन लोहपु व्यापारियों के हाथ से बची हैं ।

जो मूर्तिकला उत्तर वेद में आरम्भ हुई, वह पूर्व वेद, उत्तर छी तथा स्त्री में चकती रही। चाङ्क वंश में महदन्तर उपस्थित हुआ। इसका कारण चीनी राज्य की समृद्धि है। चीन का राज्य पारस देश के समीप तक पहुंचा। भोट चीन के अधीन हुआ और भोट द्वारा चाङ्क कला और साहित्य का मगध से सम्बन्ध हुआ। समुद्र-मार्ग से लंका का प्रभाव चीन पर पड़ा। इन्हीं दिनों श्वेन्-च्वाङ्क 玄 奘 और ई-चिङ्क 玄 奘 जैसे बौद्ध यात्री और बान्-श्वेन्-घ्स 玄 奘 जैसे चीनी अधिकारी और दूत भारत में आते रहे। एवं भारत और चीन के सम्बन्ध बढ़ते गए।

गुप्तकला चीन में पहुंची। इन्हीं दिनों पारस देश की कला का भी चीन को ज्ञान हुआ।

परिणाम-स्वरूप भारत की उच्च और गम्भीर कला से चीनी कला अनुप्राणित हुई। उत्तर वेद से लेकर चाङ्क तक की कला के निदर्शन लुङ्ग-मन् में सुरक्षित हैं।

अब हम एक एक गुहा को लेंगे—

पहली गुहा— मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि की है। दोनों ओर काश्यप 迦 葉 और आनन्द 阿 難 हैं। उपासक रूप में बोधिसत्त्व दक्षिण उत्तर भित्ति पर खड़े हुए हैं। सब पद्यासनों पर आरूढ हैं। सामने दो देव पापात्माओं को कुचल कर उन पर खड़े हुए हैं।

इस गुहा की मूर्तियां अच्छे बड़े आकार की हैं। इनमें चाङ्क वंश के प्रारम्भिक काल की ओजस्विता भरी है। आज अन्दर की चारों भित्तियां सर्वथा अनावृत और कोरी हैं। किन्तु सम्भवतः इन पर रंगीन चित्र रहे होंगे।

दूसरी गुहा— पद्यासन लगाए हुए बुद्ध की १२ हाथ ऊंची मूर्ति है। शरीर सुठील है। रूपाकृति मनोमोहिनी और तेजस्विनी है। प्रभामण्डल नावाकार है। इस पर पद्म और अन्य पुष्प बने हैं। प्रभामण्डल के चारों ओर ज्वालाएं हैं। उपासक अर्हत् ग्यारह हाथ ऊंचे हैं। बोधिसत्त्वों की ऊंचाई भी १२ हाथ से ऊपर है। समी में स्त्री कला का चमत्कार है।

अन्दर की छत अर्धचन्द्राकार है। मध्य में पद्म। उसके चारों ओर उड़ती हुई अप्सराएं। छत और भित्तियों के बीच में पुष्पित यवनिकाएं। चारों भित्तियां छोटे छोटे बुद्धमूर्ति पूर्ण आलम्यों और स्तूपों से सज्जित हैं। उत्तर भित्ति पर चङ्क-बान् 玄 奘 के २२वें वर्ष का शिलालेख है (विक्रम संवत् ७०५)। इस लेख के अनुसार मैत्रेय की मूर्ति त्स-शुन् वीधि 慈 喜 तिवासी युवक और बुद्धों ने मिल कर जोड़ी थी। त्स-शुन् वीधि हो-नान् 何 南 नगर की वीधि थी। इस शिलालेख के नीचे ही आसन्धी पर मैत्रेय विराजमान हैं। उनके साथ दो अर्हत्, दो बोधिसत्त्व और दो वज्रबोद्धा हैं।

तीसरी गुहा— पिङ्ग-याङ्क-तुङ्क 平 康 堂 - इस गुहा में कोई लेख नहीं मिला। लुङ्ग-मन् की यह सबसे वैभवशाली गुहा है। गुहा में मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि की है। बक्षपि मूर्ति

समबिम्बतांगा है फिर भी औरों की अपेक्षा मुख कुछ लम्बा है और नेत्र पतली इन्दुकला के समान हैं ।

भित्ति पर महाराजा और महारानी तथा उनके अनुचर उपासक के रूप में खड़े हैं । उनका रूप वास्तविकता और उदात्तता से पूर्ण है । कुछ जातकों की कथाएं भी प्रदर्शित हैं । एक में आत्माह्वति करते हुए बोधिसत्त्व दिखाए गए हैं और दूसरे में सागर से चिन्तामणि की उपलब्धि का चित्रण है ।

अन्दर की छत कुछ अण्डाकार है । मध्य में बड़ा पद्म । उसके चारों ओर उड़ती हुई अप्सराएं और मेघ । छत की परिधि यवनिका रूपों से अलंकृत है । गुहा-कुट्टिम पर बड़े परिमाण के उत्पल कुसुम, और बीच-मालाएं उत्कीर्ण हैं । दर्शकों के पांव से कुट्टिम में उभरे हुए चित्र न घिस जाएं इसलिए चटाई बिछाई हुई है । शाक्यमुनि के चरणों पर सिह्युगम हैं ।

इस गुहा में से अमेरिका के सज्जन भित्ति का एक मूर्तिमय भाग काट कर ही ले गए । इस भाग का भाचित्र शासन ने गुहा के बाहर लगाया हुआ है ।

छिद्र वंश में इस गुहा के सामने द्वार बनाया गया ।

चौथी गुहा— इस गुहा का आरम्भ भी उत्तर वेद काल में हुआ प्रतीत होता है, किन्तु इसकी पूर्ति स्वी काल में हुई । भित्तियों के छोटे छोटे बुद्ध थाऊ वंश में बनाए गए । यह सर्वाधिक सुरक्षित गुहा है किन्तु रंग केवल प्रभामण्डलों पर ही दृष्टिगोचर होता है । बुद्धमूर्ति के निर्माण के विषय में थाऊ वंश का शिलालेख पूर्वं भित्ति पर अभी तक स्पष्ट और सुपाठ्य है । शाक्यमुनि कम्बुधीव हैं । कम्बुधीव मूर्तियां थाऊ के पश्चात् लुप्त सी हो गईं ।

तीसरी और चौथी गुहा के बीचमें शिलालेख है जो अब सुपाठ्य नहीं रहा । इसके अनुसार वेद के राजकुमार थाइ 王 泰 ने अपनी माता महाराणी वन्-त 文 泰 के कल्याण के लिए बुद्ध की मूर्ति निर्माण कराई थी । तिथि ६९८ विक्रम प्रतीत होती है ।

पाँचवीं गुहा— चिऊ-सान् स्स 王 泰 - सामने भित्ति पर ली-श्याओ-लुन् 李 泰 ने चिऊ-सान् स्स की मूर्तियों के खोदने का वर्णन दिया है किन्तु तिथि नहीं दी । इस लेख के अनुसार थाऊ वंश के राजा थाइ-सुऊ की महाराणी वेइ 王 泰 ने इस गुहा को खुदवाया था । और लेखों से तुलना करने पर यह निःसन्देह ७१५ विक्रम से पूर्व का लेख प्रतीत होता है ।

छठी गुहा— यहाँ कर्मातीक की चौड़ाई ३२ हाथ के लगभग है । इसको सम और मनुष्य बना कर बुद्ध भिमूर्ति पर्वत में से उत्कीर्ण की गई है ।

मूल बोधिसत्त्व के अनुसार बोधिसत्त्व-युग्म और बज्रदेव-युग्म खोदे जाने चाहियें थे । जो बोधिसत्त्वों में से बाएं बोधिसत्त्व का स्थिर ही पूरा हो सका । दायाँ बोधिसत्त्व भी

अपूर्ण ब्रह्मा में है। उसका सिर लुप्त हो चुका। बज्रदेवों की तो केवल रूपरेखा ही बनी है। तिथि का कोई निर्देश नहीं।

सातवीं गुहा— द्वार के दोनों ओर बज्रदेव खुदे हैं। और इनमें से दक्षिण बज्रदेव के पार्श्व पर शिव-मुकुट ॐ के तीसरे बर्ष के चौथे मास का शिलालेख है। विक्रम संवत् ७४४ में अथवा उससे पूर्व यह गुहा बनी थी।

अष्टवीं गुहा— बाईं और दाईं भित्ति पर एक सहस्र छोटी छोटी बुद्ध की मूर्तियां बनी हैं। द्वार के समीप दक्षिण भित्ति पर खुदे हुए शिलालेख पर ध्येन्-शोड २३ का द्वितीय बर्ष अर्थात् विक्रम संवत् ७४८ तिथि दी हुई है।

नवीं गुहा— सहस्र-बुद्ध-गुहा—वान्-क्रो-मुकुट— मध्य में शाक्यमुनि अष्टकोण आसन पर विराजमान हैं। दोनों ओर दो अर्हुत् और दो बोधिसत्त्व हैं। प्रत्येक बोधिसत्त्व से एक कोना भरा हुआ है। शाक्यमुनि और इनका आसन गुहा की पीछे की भित्ति में से खोदे गए हैं।

शाक्यमुनि के प्रभामण्डल में अनेक बोधिसत्त्व उत्कीर्ण हैं।

दाईं और बाईं ओर भित्तियों पर एक सहस्र बुद्ध की छोटी छोटी मूर्तियां बनी हैं। इनके उत्तमांग तोड़ दिए गए अथवा विनाश दिए गए हैं। छत में पद्मपुष्प की परिधि पर शिलालेख है कि मुकुट-मुकुट ॐ के प्रथम बर्ष में (७३७ विक्रम) भिक्षु च-युन् ३३ ने इस गुहा को बनवाया था।

बसवीं गुहा— स्तूप-गुहा। इसका प्रचलित नाम नत-जानु-सिंह-गुहा है।

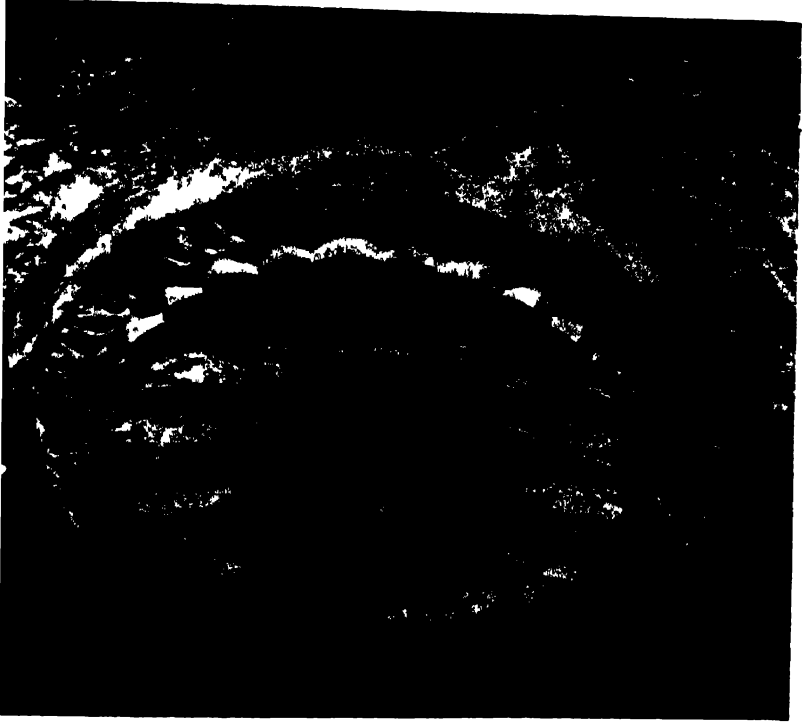
इस गुहा में बुद्ध और बोधिसत्त्वों के प्रभामण्डल चिन्तामणि आकार के हैं। यहां कई शिलालेख हैं जिनमें तिथियां दी हुई हैं। इनमें प्रथम तिथि ७३५ विक्रम है और अन्तिम ७४९ विक्रम है।

भित्तिस्व छोटे बुद्धों के समस्त उत्तमांग तोड़ दिए गए हैं। सीमान्तवक्ष नतजानु-सिंह अविकलांग बच गए हैं। इनकी अप्रतिम शोभा है। बाहर की भित्ति पर पञ्चभूमिक स्तूप खुदा हुआ है। इसकी ऊंचाई चार हाथ से ऊपर है।

आरवीं गुहा— इसकी तिथि ध्येन्-हृद १३ का चतुर्थ बर्ष अर्थात् ७३० विक्रम है।

बारवीं गुहा— इसका नाम ता-मुकुट अर्थात् महती गुहा है। इस गुहा का अथवा नाम नाश हो चुका है। बिचला भाग अपूर्ण छोड़ दिया गया है तथा बाहर की भित्ति अनगढ़ी रह गई है। गुहा की ऊंचाई १६ हाथ है। पिछली भित्ति के शिलालेख में तिथि ७४८ विक्रम तथा उत्तर की भित्ति पर ७१३ विक्रम तिथि उत्कीर्ण है। आरवीं में खुदे हुए बुद्ध छः हाथ तक ऊंचे हैं।

तेरवीं गुहा— ई-ध्ये-मुकुट ॐ का अथवा ध्येन्-हृद-मुकुट ॐ का अर्थात् नीलिने-त्पल-गुहा। इसकी छत अन्धरे से पथकथ है। अतः इसे पथ-गुहा कहते हैं। मध्यस्थित बुद्ध



लुङ्-मन् की १३वीं गुहा की छत में विराट् पद्म । इस गुहा का नाम ई-च्चे तुङ् अथवा ल्येन्-ह्वा तुङ् अर्थात् पद्म-गुहा है । इस गुहा की पूर्वतम तिथि ५४७ विक्रम है ।

The lotus in the ceiling of the I-chüeh Tung, the thirteenth cave at Lung-mên. It is popularly known as the Lien-hua Tung or Lotus Flower Cave because of its graceful lotus ceiling. It is one of the most important caves belonging to Northern Wei.



आचार्यं रघुवीर और उनकी पुत्री लुङ्-मन् गुहाओ की महाप्रतिमाओ
की अषिछाया में

Prof. Raghu Vira and his daughter in the interior of
the Lung-mên Caves with gigantic images overlooking
them.

का प्रभामण्डल भी पद्याकार है। पद्य के चारों ओर अप्सराएं हैं। यह गुहा उत्तर वेद के काल में आरम्भ की गई थी। इस गुहा में अनेक तिथियां दी गई हैं। इनमें से पूर्वतम तिथि ५४८ विक्रम और उत्तरतम ७७० विक्रम है। इस गुहा के अनेक उत्तमांग टूटे हुए हैं।

गुहा की मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि का मुख पूर्णचन्द्र के समान गोल न होकर कुछ लम्बा है जिससे उसकी शोभा बढ़ गई है। परिधान की रेखाएं भोजस्विनी हैं। यह मूर्ति उत्तर वेद की परिपक्वता, तेजस्विता, महत्ता और उदात्तता का सुन्दर निदर्शन है।

चौबचीं गुहा— इसमें दो शिलालेख हैं। एक ५८८ विक्रम का दूसरा ५९४ विक्रम का। प्रवेशद्वार पर सिंह-युग्म रक्षा कर रहे हैं। छत छः हाथ ऊंची है। छत में पद्मपुष्प सोदने का विचार था पर वह अधूरा ही रह गया है।

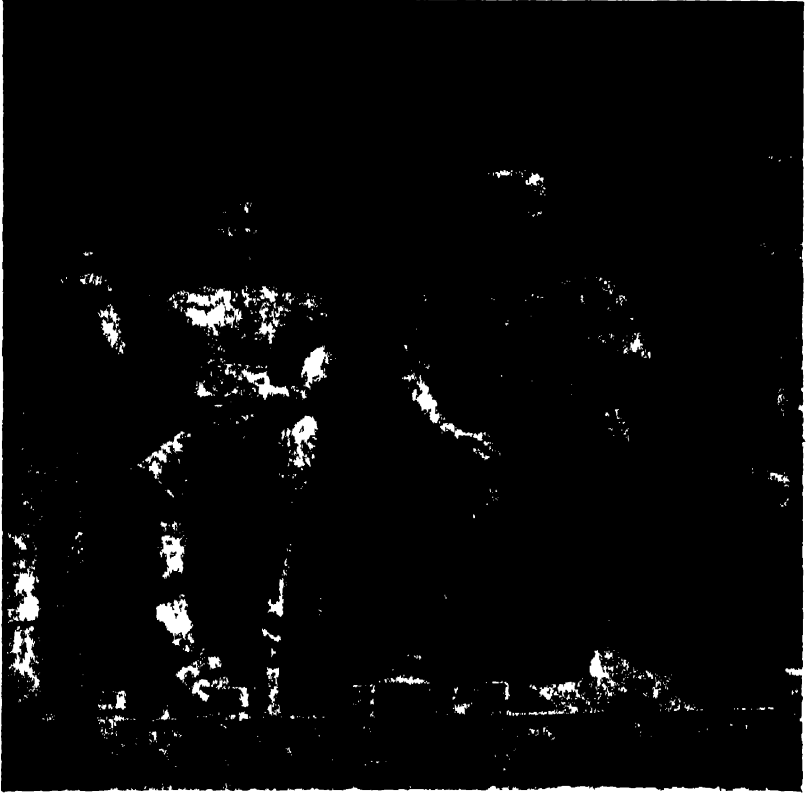
पन्द्रचीं गुहा— गुहा की पिछली भित्ति में से मुख्य मूर्ति अर्हत और दो बोधिसत्व उत्कीर्ण किए गए हैं। कला की दृष्टि से मूर्तियाँ शोचनीय हैं। बाईं और बाईं भित्ति पर बनी हुई बौद्ध पञ्चमूर्ति की तिथि शिलालेख में ७१७ विक्रम दी हुई है। इस गुहा के सामने का भाग अपूर्ण छोड़ा हुआ है।

सोलचीं गुहा— खण्डित गुहा। यह गुहा भी अपूर्ण ही बनी हुई है। मंत्रेय को छोड़ कर अन्य सब मूर्तियों के उत्तमांग नष्ट हो चुके हैं। छत और कुट्टिम ठीक प्रकार से नहीं बने। ऐसा प्रतीत होता है कि काम बीच में ही छोड़ दिया गया। भित्तियों पर तीन तिथियों के शिलालेख हैं। ७१६, ७१८, ७२६ विक्रम संवत्।

सतरचीं गुहा— वेद-अक्षर-गुहा 卐 卐 卐 — यद्यपि यह गुहा विशाल नहीं किन्तु उत्तर वेद की कला की सुन्दर प्रतिनिधि है। प्रभामण्डल अति हृदयंगम है। इस गुहा में भी अनेक तिथि वाले शिलालेख हैं। ५८०, ५८३ तथा ७३२ विक्रम।

अठारचीं गुहा— इस गुहा का निर्माण उत्तर वेद में हुआ और जोर्णोद्वार बाक काल में। गुहा कुछ लम्बी है। बुद्ध की मूर्ति का आसन अपूर्णचटित है। इस गुहा के शिलालेखों में तीन तिथियां हैं। ५९४, ७१८, ७३६ विक्रम। द्वार पर गण्ड की मूर्ति उत्कीर्ण है।

उत्तीसचीं गुहा— ऋक-श्लोक् स्त 卐 卐 卐 — वैरोचन बुद्ध की सुमहनी मूर्ति। इस गुहा के सम्बन्ध में शिलालेख का वर्णन है— बाक बंस के श्लोक्-हक के तृतीय वर्ष में (७२९ विक्रम) महाराज काञ्चो-सुक ने अर्हद्-युग्म, बोधिसत्व-युग्म, देव-युग्म और ब्रह्मचर-युग्म सहित सुविद्याक वैरोचन बुद्ध-मूर्ति के उत्कीर्ण करने का आदेश दिया। शाक्य-श्लोक् 卐 卐 के द्वितीय वर्ष में (७३२ विक्रम) द्वावत्त मास के ३०वें दिन यह महत्कार्य सम्पन्न हुआ। इसके लिए महाराज ने २० सहस्र-कमान् 卐 अपने पास से दान-किए। पांच वर्ष के पश्चात् महान् (सहस्र) ऋक-श्लोक् स्त 卐 卐 卐 की स्थापना हुई। इस विहार में १४ महा-पण्डित, धर्मकी प्रज्ञा बंधीर और शील उदात्त था, इस विहार में काए गए। शिलालेख



पृ. ११७ के समक्ष चित्रित लुङ्-मन् की गुहा के अभ्यन्तर में दो विशाल
प्रतिमाओं का समीप-चित्र

A close view of two gigantic images in the Lung-mên
Cave depicted opposite p. 117.



लुङ्-मन् की गुहाएं मूर्तियों और शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध हैं। ये शिलालेख तिथियों और ऐतिहासिक सूचनाओं के साथ-साथ लेख-सौष्ठव के लिए भी प्रथित हैं।

Prof. Raghu Vira admiring a Buddhist sculpture in the Lung-mên Caves.

औषधों के योग दिए हुए हैं। ये लेख उत्तर वेद के काल के हैं। हमने इन औषधयों की छापें लीं।

इचकीसर्षी गुहा— कू-याक-नुक 古 曷 隹 अथवा लाओ-चुन्-नुक 隹 隹 隹 । यह लुङ्-मन् की प्राचीनतम गुहा है। इस गुहा में अनेक शिलालेख हैं। प्राचीनतम लेख ५५२ विक्रम का है। दूसरी तिथियां ५५५, ५५९, ५६० विक्रम आदि हैं।

इस गुहा का निर्माण ५४० विक्रम में आरम्भ हो चुका था। और ५५२ विक्रम में लगभग खुदाई पूरी हो चुकी थी। शिलालेख के अनुसार राष्ट्र की समृद्धि के लिए इस गुहा का निर्माण किया गया था। इस गुहा में अन्तिम तिथि ६०६ विक्रम है। गुहा आयताकार है। छत २० हाथ ऊंची है। कुट्टिम पर दो हाथ मिट्टी भरी गई। चार हाथ ऊंचे आसन पर बैठे हुए शाक्यमुनि की रंगीन मूर्ति विराजमान है। आसन स्वयं भूमि से छ. हाथ ऊंचा है। आसन को सिंहों ने उठाया हुआ है। पुरानी मूर्ति का जीर्णोद्धार करते हुए इतना अधिक लेप और रंग चढ़ाया गया है कि इसकी मौलिक शोभा सर्वथा मारी गई। मुख्य बुद्ध की ऊंचाई नौ हाथ है। मुख और परिधान की रेखाओं में मौलिक शोभा है। यदि मिट्टी का लेप ऊपर न किया जाता और उस पर रंग न पोते जाते तो मूर्ति की आभा पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर हो सकती। पास दो बोधिसत्त्व खड़े हैं।

इस गुहा में उत्तर वेद कला का सुन्दर रूप उपस्थित है।

इस गुहा की भित्तियों में इतनी मूर्तियां और लेख हैं कि यहां उनका वर्णन करना असम्भव है।

इस गुहा के शिलालेख केवल तिथियों और अन्य ऐतिहासिक सूचना के लिए ही प्रसिद्ध नहीं किन्तु सुलेख के लिए भी प्रथित हैं। हमने परस्पर भिन्न सौन्दर्यमय सुलेख की दृष्टि से ही २० लेखों की छापें लीं हैं। चीनी लेख-सौन्दर्य-विचारदों की दृष्टि से इनका मूल्य बहुत अधिक है।

ब-बू स्त 石 窟 窟— यह गुहा पूर्वीय पहाड़ी में बनी है। बुद्ध आसन्वी में बैठे हैं। स्थाकृति भव्य है। यह मूर्ति धातु कला की उत्तम कृति मानी जाती है। बुद्ध की पीठ के पीछे एक यन्त्रिका बनी हुई है जिसमें भारत की गुप्त-कला की छाया झलक रही है। गुहा की भित्तियों पर ब्रह्मछेदिकासूत्र उत्कीर्ण है तथा एक सहस्र छोटी छोटी बुद्ध मूर्तियां बनी हुई हैं। छत में कनक, उड़ती हुई अप्सराएं और शेष शोभायमान हैं।

नीच, कला के शत्रु, व्यापारियों की लोभपटा से मूर्तियों के उत्तमांग लुप्त हैं। हमको लुङ्-मन् में जितना समय लगाना चाहिए था उतना तो न लगा सके किन्तु जो भी बड़ा सन्नयन मिला उसमें लुङ्-मन् की मनोरमता को नेत्रों द्वारा लयात्सार एकाग्रध्यान से पान करेते गए, और क्लृप्त में बहुरप्रतिष्ठ करते गए कि जीवन् के शेष वर्षों तक इस रक्षणीयता का परिमल साथ रहे। यद्यपि लुङ्-मन् चीन की भूमि पर स्थित है और

इसका श्रेयस् और गर्व चीनियों को है और होना चाहिए तथापि लुङ्ग-मन् भारत की आत्मा का ही तो सञ्च है । यहां चीनी प्रभाव और परिवर्तन अवश्य हैं किन्तु मूल और स्थूल दृष्टि से, आध्यात्मिक तथा कला की दृष्टि से, भारत का भी तो इसमें हाथ है । लुङ्ग-मन् में भारतीय वैभव के जो दर्शन हमको हुए उनसे हम कृतकृत्य होकर कोयले की खान की काली धूल से बचते हुए अपने निवासस्थान पर लौट आए ।

जिस रस और आनन्द का अनुभव, जिस प्राचीन और नवीन काल की एकता की भावना आज हुई वह पहले कभी न हुई थी । हमको ऐसे लगा जैसे कि हम पन्द्रह सौ वर्ष पार कर पार्थिव शरीर और नेत्रों सहित गुप्त काल में और गुप्त राष्ट्र में पदार्पण कर गए हों । यह अद्भुत और अविस्मरणीय है और रहेगा ।

२२-६-५५

आज नागपुर लोकेश को दूरभाष किया ।

प्रातः का समय पेङ्-चिङ्ग के प्रसिद्ध लामा मन्दिर में व्यतीत किया था ।

युङ्ग-हो-कुङ्ग में धारणियों का चार भाषाओं में विशाल ग्रन्थ देखा । इसके एक से दस तक भाग हैं जिनमें से आठवां लुप्त है । ग्रन्थ का भोट नाम इस प्रकार है—
 དབང་བར་འགོ་བཤེས་ལུ་བ་ཤེས་པ་ཚེ་ཤོ་འོ་མཛོ་བ་བས་འོ་ལུ་བ་བུ་མཚ་སོ།

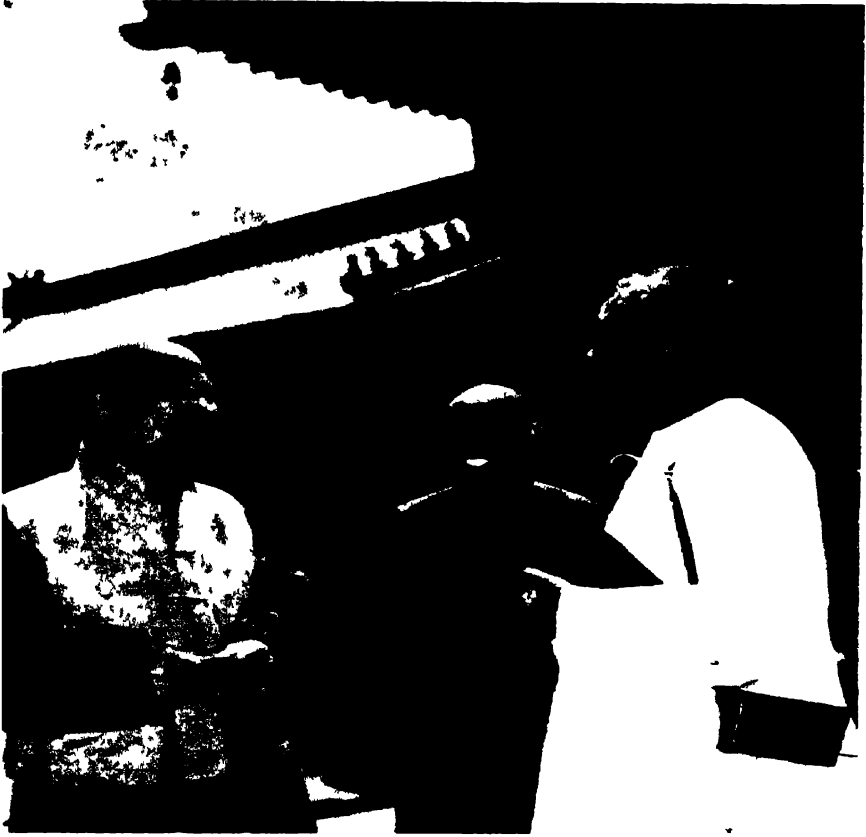
युङ्ग-हो-कुङ्ग में चार विद्यालय हैं । एक धर्मपाठ, द्वितीय तन्त्र, तृतीय आयुर्वेद और चतुर्थ ज्योतिष तथा भूगोल ।

युङ्ग-हो-कुङ्ग के बड़े लामा स्वयं अनुभवी वैद्य हैं । नाड़ी देख कर रोग को पहचान लेते हैं । मन्दिर में से हमको अपने घर ले गए और वहां आयुर्वेद के १३ मानचित्र दिखाए । इनमें शरीर के अंगों, वनस्पति तथा प्राणियों आदि के सुन्दर चित्र हैं । इनका अपना आयुर्वेद-ग्रन्थ-संग्रह है । अनेक ग्रन्थों के आरम्भ में संस्कृत दी हुई है । हम दो उदाहरण देते हैं ।

(१) उपदेश-गुणतन्त्रस्य गण्डूषिक-शाल्योष्णतापनान्त कृताकृत पाराकाल मृत-पाश्यच्छोदस्य ऋङ्ग विहरति स्म ॥

(२) श्रुद्धीषधि शक्ति विलोवाख्यात काशघेशनामलोर्क-बल्लरीनाम माररोगहः प्रतिभक्षं विहारं । नमो गुरुभैवज्याय । लक्षणं ध्यञ्जनः 'ध्यास्ति सम्मुद्ध्य चा । मेघदर्शीज-घ्नन्ति कृपेभिर्महा ॥ गुह्यं निश्चिन्त्य कायं विस्तुष्टस्त्रीभिः । स्त्रीपरोद्भिक् प्रभाकान्त ध्यास्ते नमः ॥

महन्त बहुत सौम्यप्रकृति हैं । इन्होंने अपने संग्रह में से कई ग्रन्थ भेंट किए । महन्त का नाम विशि-कावा ह्युम'प्ये'येस'दमा'व' है ।



युङ-हो-कुङ्ग के अध्यक्ष यिशिकावा सोम्यप्रकृति वयोवृद्ध अनुभवी वैद्य है । आचार्य रघुवीर उनसे भारतीय-भोट आयुर्वेद पर बातचीत कर रहे हैं । युङ-हो-कुङ्ग के चार विद्यालयों में से आयुर्वेद-विद्यालय एक है । श्री यिशिकावा का निजी आयुर्वेद-ग्रन्थसंग्रह अनुपम है । अनेक ग्रन्थों के आरम्भ में संस्कृत शीर्षक दिए हुए हैं ।

Prof. Raghu Vira conversing with Venerable Ye-śes-dgah-ba, Abbot of the Yung-ho-kung Monastery, who is a famous Mongol scholar and specialist in Indian medicine (*āyurveda*) as it was carried to Tibet and thence to the Mongols.

आज मुकदेन् के लिए प्रस्थान किया ।

मुकदेन् के समीप ता-चिऊ ग्राम में कृषि-उत्पादक-सहकारी मण्डल देखने गए । यह मुकदेन् से ३५ मील दूर है । यहाँ की भूमि उबरा नहीं मानी जाती । हमको बतलाया गया कि साम्यवादी शासन से पूर्व प्रत्येक कृषक की उपज का माध्य ११५५ सेर प्रतिवर्ष था । अब माध्य ४१५५ सेर प्रतिवर्ष हो गया है ।

ता-चिऊ ग्राम (अर्थात् महान् हरेभरे ग्राम) में १३४ परिवार हैं । इनमें से १०३ कृषक हैं । शेष श्रमिक हैं । १०३ में से ८३ सहकारी मण्डल के सदस्य हैं । इन्होंने ४०० सूअर पाले हुए हैं ।

साम्यवादी राज्य के आते ही भूमिपतियों की भूमि छीन ली गई । भूमिपति से अभि-प्राय उन लोगों का है जो हल स्वयं नहीं चलाते थे । पांच वर्ष तक भूमि खोकर भी इन लोगों को चुनाव में भाग लेने का अधिकार न होगा । प्रायः भूमिपति अपने ग्रामों से भाग गए हैं ।

भूमिपतियों के अतिरिक्त कुछ धनी किसान थे । ये अपनी भूमि और हल आदि देकर दूसरों से खेती कराते थे । ये भी समाप्त हो चुके हैं ।

तीसरी श्रेणी में मध्यम वर्ग के कृषक हैं । इनके पास निर्वाह के लिए पर्याप्त भूमि है और इस भूमि को स्वयं जोतते हैं ।

चौथी श्रेणी निर्धन किसानों की है । इनके पास भूमि पर्याप्त न थी । इनको दूसरों के लिए काम करना पड़ता था ।

अन्तिम श्रेणी भूमिहीन श्रमिकों की थी ।

साम्यवादी शासन ने निर्धनी किसानों और भूमिहीन श्रमिकों को भूमि दी है जिससे वे अपना निर्वाह कर सकें । खेती के लिए बीज तथा रुपया भी उधार दिया है । एक एक व्यक्ति को २.९ माबो भूमि मिली है । ६ माबो का एक एकड़ होता है । २.९ माबो का अर्ध हुआ लगभग आधा एकड़ । भूमि बच्चों और बूढ़ों को नहीं मिलती । केवल उन्हीं को जो स्वयं खेती करने में समर्थ हैं ।

पांच वर्ष पूर्व सहकारी मण्डल की स्थापना हुई । प्रतिवर्ष सदस्यों की संख्या बढ़ती जा रही है । शासन के अधिकारियों ने बतलाया कि किसानों को बलपूर्वक सहकारी मण्डल का सदस्य बनाने का बल नहीं किया जा रहा है ।

ग्राम की जनसंख्या ४५० है । इनमें से ११७ कार्यकर्ता हैं । ग्राम में भूमि की मात्रा १७८६.७ माबो है । ३५ हाथक पशु हैं । १३ गाड़ियाँ हैं । इनके पहिए बहिच (motor)

वाले हैं। गांव में गेहूं, मक्की, चावल, ज्वार, आलू, मूंगफली और चौड़ी सेम की उपज होती है। ज्वार से मदिरा भी बनाई जाती है। चीन में मदिरा का सर्वत्र प्रचार है।

१९५३ में बाढ़ आई थी। लोगों ने नाले खोद कर गांव को बचाया था।

सहकारी मण्डल बनने से पूर्व अत्योन्य-सहायता-वर्ग बने हुए थे। सहकारी मण्डल बनने पर ५७ परिवार पहले वर्ष में सम्मिलित हुए। आशा है अगले वर्ष तक सभी परिवार सम्मिलित हो जाएंगे। सहकारी मण्डलों को शासन नाना प्रकार की सहायता देता है। सर्वप्रथम श्रेणियां खोली जाती हैं। हमको बतलाया गया कि श्रेणियां-दिन के समय होती हैं। अतः सहकारी मण्डल के अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं आ सकते। इन श्रेणियों में नए उपकरणों का प्रयोग सिखाया जाता है।

हमको बताया गया कि साम्यवादी शासन से पूर्व जीवन-स्तर इतना नीचा था कि व्यक्ति अपना समस्त सम्भार पीठ पर उठा कर दूसरे स्थान पर ले जा सकता था। अब यह दशा नहीं रही।

गांव में १०० नए घर बने हैं। लगभग प्रत्येक व्यक्ति को एक एक सूअर दिया गया है।

दरिद्र लोग पहले बोरी के कपड़े पहनते थे। अब ऐसा कहीं देखने में नहीं आता। पहले छोटी सी पाठशाला थी। केवल एक अध्यापक था और ऊंचे घरों के ५० बच्चे। अब ९ अध्यापक हैं और सब घरों के मिला कर २३० बच्चे पाठशाला में जाते हैं। प्रौढ-शिक्षा का भी प्रारम्भ हो चुका है। बच्चे घरों में जाकर माता पिता को पढ़ाते हैं। ग्राम में पंचायत घर, वाचनालय और नाटक-मण्डप हैं। सहकारी विक्रयालय की स्थापना की गई है जिसमें खेती के उपकरण, खाद, औषधें, कपड़े तथा प्रतिदिन के प्रयोग की वस्तुएं मिलती हैं।

ग्राम में दाइयों का अच्छा प्रबन्ध है। जब विशेष काम नहीं होता तब वे खेती बाड़ी का काम करती हैं अथवा नगर में शिक्षा के लिए जाती हैं।

किसानों की सहायता के लिए उधार सहकारी मण्डल बन गया है। रुपया समस्त ग्राम का ही होता है। आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय अधिकोष से सहायता मिल जाती है। ब्याज एक मास में १.२ प्रतिशत देना पड़ता है अर्थात् वर्ष में १४.४ प्रतिशत।

स्वास्थ्य के लिए शासन विशेष रूप से जागरूक है। थोड़ों तथा सूअरों के लिए भी अलग रहने का स्थान निर्दिष्ट है। घरों में नए शौचगृह बनाए गए हैं।

२५-६-५५

मुम्बैन् में चार प्रसिद्ध मन्दिर हैं। इनमें से हमने दो मन्दिरों के दर्शन किए। पहले मन्दिर में चार बड़े भिक्षु और ५० साधारण भिक्षु हैं। लाछा लिपि में लिखा हुआ

लम्बा पत्र लटका हुआ है—

॥ आर्य उष्णीषविजयधारणी नमो ॥

इस मन्दिर के दर्शन के पश्चात् हम पीत मन्दिर में गए। पीली खपरैलों के कारण इसका ऐसा नाम पड़ा है। मन्दिर का वास्तविक नाम श-सङ्ग स्स है। यहां के अध्यक्ष पेद्-क्वाङ्-बू हैं। यहां २८ मोंगोल लामा रहते हैं।

३१८ वर्ष से इस मन्दिर में अद्भुत धारणी-ग्रन्थ की पूजा होती आई है। यहां अपूर्व घटना हुई। ज्योंही हमने इस धारणीग्रन्थ को देखा त्योंही यह हमको मिल गया। दृष्टं पृष्टं प्राप्तं च। हमने केवल मात्र पूछा ही था कि यह अद्भुत धारणी-संग्रह कहां मिलेगा कि लामा पाद्-शन्-बन् ने कहा— भारत और चीन की मैत्री को पुनः दृढ करने के लिए हम यह अपना महामान्य ऐतिहासिक धारणी-संग्रह आपको भेंट देते हैं।

ग्रन्थ को बाधा गया। ऊपर लकड़ी के फट्टों पर नीवार लपेटी गई और १०, १५ कला के दोनो ओर के औपचारिक भाषणों के पश्चात् विधिपूर्वक ग्रन्थ हमको भेंट में दिया गया। ग्रन्थ का भार इतना अधिक है कि उठाने के लिए तीन लामा लगे। इन्होंने स्नेह से हमारी गाडी में लाकर रखा। यह मुक्देन् की भेंट सदा के लिए अविस्मरणीय रहेगी।

छिद्-राजाओं के प्रासाद में— १६७३ विक्रम में पहले छिद् राजा ने इस प्रासाद का निर्माण कराया। प्रासाद में अष्टध्वज सेना का मुख्य कार्यालय था। एक ध्वज में १५०० सैनिक हुआ करते थे।

अब प्रासाद अद्भुतागार के रूप में है। छिद् राजाओं के सगीतवाद्य, घण्टे, ढोल, कुठार, मुद्राए, परिधान, आसन्दी, पटल, शय्या, कबच, खड्ग, चित्र, मूर्तिया सभी कुछ विद्यमान हैं। भिन्न भार के पत्थर के टुकड़े टंगे हुए हैं। आघात करने पर प्रत्येक में से भिन्न स्वर निकलता है। सगीत प्रारम्भ और अन्त करने के लिए बड़ा ढोल है। वाद्य सामान्य रूप से नहीं रखे हुए हैं। इनके स्वाम कलामय हैं। १६७३ से १६६८ विक्रम तक का छिद् इतिहास बहुत बड़े आकार के पत्रों पर लिखा हुआ सम्पूर्ण तथा सुरक्षित है। बुद्धों की टेढ़ी भेड़ी जड़ों से नाना मूर्तियां बनी हुई हैं। छिद् राजा आस्थावान् बौद्ध थे। अनेक बुद्ध, बोधिसत्त्वों की मूर्तियों से एक पूरा कोष्ठ सजा हुआ है। एक बुद्ध मूर्ति के बाहर भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी में ब्याख्या लिखी है। भारतवर्ष के सम्पर्क से बौद्धों में चन्दन-पात्रों और चन्दन-मूर्तियों का विशेष आदर था। सो यहां भी चन्दन के पात्र रखे हुए हैं। ताम्बे और अन्य धातुओं की रत्नसङ्घित तथा अरत्नसङ्घित मूर्तियां विद्यमान हैं। निवासकोष्ठों के ताप को बढ़ाने के लिए छिद् राजा हिममञ्जूषा का प्रयोग करते थे। बाह्य बंस के अन्त में त्याज्यो लिपि का शिलालेख जेहील् प्रान्त से काकर यहां रखा गया है। अभी तक यह कैलाश नहीं गया।

मंथर पुस्तकालय— २००५ विक्रम में इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। इसमें पुराने

पुस्तकालय सम्मिलित कर लिए गए। जापानी मुक्दम् में लगभग ६ लाख पुस्तकों का संग्रह छोड़ गए थे। वह भी इसमें सम्मिलित है। सुक्र और मित्र से लेकर आधुनिक काल तक का यह सुविशाल समुच्चय है। पुस्तकों की समस्त संख्या १२ लाख है। प्रतिवर्ष एक लाख के लगभग पुस्तकें जुड़ जाती हैं। एक एक साम्यवादी पुस्तक की सौ सौ प्रतियां ली जाती हैं। पुस्तकें प्रायः बहुत छोटे परिमाण की हैं। विदेशी पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या जापानी पुस्तकों की है। बौद्ध पुस्तकें अलग रखी हुई हैं। ये तथा अन्य प्राचीन पुस्तकें सामान्य जनता के लिए नहीं हैं। हम भी बौद्ध संग्रह न देख पाए। केवल २०, २५ बौद्ध पुस्तकें हमारे लिए निकाल कर लाई गईं और एक विशेष अलग कोष्ठ में हमको दिखाई गईं। हमको बतलाया गया कि सुक्र, ज्येन् तथा छिद्र त्रिपिटक के यहां बहुत से अंश हैं किन्तु सम्पूर्ण नहीं। त्रिपिटक के अनेक भाग नगरपालिका-पुस्तकालय में भी हैं। इस पुस्तकालय की कुछ प्राचीन पुस्तकें प्रासाद में हैं। तीस सहस्र भाग का एक विषयकोष है जो १७वीं शताब्दी में बना। इसका नाम है— स्स-कू-चुन्-सू। इसके बनने में दस वर्ष लगे थे। वास्तव में इसको उद्धरणों का संग्रह कहना चाहिए।

छिद्र महाराज ने आर्य अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता को विशेष प्रेम से काष्ठमुद्रण-फलकों पर खुदवा कर छपवाया था। प्रत्येक पृष्ठ की लम्बाई ३६ प्रांगुल है। पहले पृष्ठ पर कौशेय से ये अक्षर निकाले गए हैं—

॥ ओं स्वस्ति सिद्धम् ॥

पुस्तकालय में शिलालेखों की छापों का बहुत बड़ा संग्रह है। छापों की संख्या लाखों में है। चीन शिलालेखों का देश है। यह भी संग्रह हम देख न पाए।

जिस विश्रान्तिगृह में हम ठहरे हुए हैं उसमें ही भारतीय सगीत-मण्डली आकर ठहरी है। मण्डली में ५० के लगभग स्त्री पुरुष हैं। इस मण्डली के नेता श्री अनिल-कुमार चन्दा हैं। आप पहले कविसम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आत्मीय सचिव रहे हैं। आज आपने बतलाया कि कविसम्राट् हमारी कृति Vedic Mysticism के अनन्य अक्षत थे। अन्तिम समय तक उन्होंने इस पुस्तक को अपने साथ रखा।

२६-६-५५

आज हम आन्-सान् आए। यहां लोहे की सबसे बड़ी निर्माणियां हैं। एक निर्माणी में पिचके लोहे की बहती हुई नदी और संयानों के लिए प्रतिदिन ४००० पट्टियां बनती हुई देखीं। निर्माणियों का विस्तार एक दो दिन में नहीं देखा जा सकता। किन्तु जो कुछ भी हमने देखा उससे नए चीन की तीव्र प्रगति का अच्छा अनुमान हो सकता है। चीन में लोहा, पीतल, ताम्बा बहुत न्यून मात्रा में देखने में आता है। तार के जम्बे लकड़ी के हैं। कहीं लोहे के दिखाई नहीं पड़ते। कोई व्यापारी पीतल और ताम्बे आदि का प्रयोग



प्रस्तुत थंका में महाकाल के अनुचर क्षेत्रपाल का चित्रण है जो कभी युङ्-हो-कुङ् के विख्यात पेङ्-चिङ् स्थित मोंगोल विहार की भिन्नि को सुशोभित करता था । यह अब आचार्य रघुवीर के संग्रह में है ।

Silken scroll painting (*thangka*) of Kṣetrapāla who is one of the retinue of Mahākāla. It stems from Yung-ho-kung the famous lamasery of Peking.

वहीं कर सकता जब तक शासन से विशेष अनुमति न मिले । सोने चांदी का तो आभूषणों तक के लिए मिलना अशक्य है ।

मुक्वेन्, आन्-शान् और आसपास की निर्माणियों का प्रारम्भ जापानियों ने किया था । इनका अब विस्तार किया जा रहा है । नई निर्माणियां भी बनाई जा रही हैं । मुक्वेन् की यन्त्रोपकरण-निर्माणी में दो प्रवर्त (ton) भार की एक वर्तनी (lathe) बनाने का समय एक श्रमिक के २७० घण्टे हैं ।

२८-६-५५

आज मध्याह्न पेइ-चिऊ लीट आए । एक बार फिर युऊ-हो-कुऊ ने गए । वहां से चारों विशालियों का पाठ्यक्रम लिया । पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का युऊ-हो-कुऊ सबसे बड़ा केन्द्र था । अब पुस्तकों का छपना बन्द है । अमृत-हृदया-जूष्यगुह्योपदेश— यह ग्रन्थ हमने लेना चाहा किन्तु इसकी कोई प्रति न मिल सकी ।

२९-६-५५

आज साय महाभोज हुआ । चीन के प्रधान मन्त्री उसमें सम्मिलित हुए । यहां हमने विचित्र दृश्य देखा—भारत के प्रतिनिधि श्री चन्दा जी ने पहले हिन्दी में भाषण दिया फिर अग्रेजी में । इसका परिणाम यह हुआ कि चीनी भाषणों का अनुवाद केवल पहली बार हिन्दी में किया गया । तदनन्तर अग्रेजी चलती रही । भारतीय दूतावास के निमन्त्रण पत्र भी चीनी तथा अग्रेजी में जाते हैं हिन्दी में नहीं ।

३०-६-५५

आज पेइ-चिऊ के क्वान्-ची मन्दिर में आए । यहां तथा अन्य बौद्ध मन्दिरों में साम्यवाद के शान्तिप्रचार की पुष्टि के लिए—जन्-वाऊ-फू-क्वो-चिऊ का पाठ होता है । मन्दिर के महन्त कहने लगे यह संस्कृत से अनूदित प्रज्ञापारमिता का अंग है । अनुवादक का नाम पू-शुन् अर्थात् अ-सून्य है । यहां हमने देखा कि चीनी समाचारपत्रों पर चान्द्र मास तथा चान्द्र तिथि भी दी जा रही है ।

१-७-५५

आज पेइ-चिऊ पुस्तकालय में भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों की प्रदर्शनी देखने गए ।

आज पेइ-चिऊ में भारत-संगीत-मण्डल का विशेष कार्यक्रम था । राष्ट्रपति माओ-त्स-तुऊ, प्रधान मन्त्री चोङ्-लौ-लाइ तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति विशेष रूप से विमन्वित थे । हम लोग इनके समीप ही बैठे थे । श्री माओ और चोङ ने हम से हार्द निकटता और बड़े

ध्यान से भारत की कला का रसास्वादन करते रहे ।

देखते देखते अनेक विचार मन में उत्पन्न होते थे । भारतीयों को विदेश में जाकर अपने वाद्यों के लिए orchestra शब्द का उपयोग न करना चाहिए । इस शब्द के साथ जो अर्थ लोगों के मन में संयुक्त है वह वस्तु न देख कर उसका भारतीय रूप निराशाजनक प्रतीत होता है ।

चीन में पाश्चात्य गान का अथवा रूसी गान का बहुत प्रचार है । इस गान में गले और ध्वनि की विशेष शिक्षा दी जाती है । हमारे गायकाचार्यों में इसकी विशेष न्यूनता है । भारत के बाहर जाते समय हमको ध्यान रखना चाहिए कि हम उन गायकों को ले चलें जिनकी ध्वनि रसीली हो और गला स्वच्छ हो । ध्वनि मद्धम, मोटी अथवा खुरदरी न हो ।

हमारे संगीत-मण्डल को चाहिए था कि वह कोई न कोई चीनी गान अथवा नृत्य भी चीनी जनता को दिखाते । जब चीनी कलाकार भारत में आए थे तो उन्होंने भारतीय भीत गाकर भारतीय जनता को मुग्ध किया था । इतना ही नहीं जब से भारतीय संगीत-मण्डल चीन में आया है तब से उसके साथ १०, १२ चीनी कलाकार विद्यार्थी के रूप में लग गए हैं और भारतीय कला का प्रतिदिन अभ्यास करते हैं ।

इवेन्-च्वाङ्ग चीन में प्रसिद्ध हैं । इवेन्-च्वाङ्ग का ग्रन्थ "पश्चिम की यात्रा" चीन के राष्ट्रपति माओ का प्रिय ग्रन्थ है । यदि भारतीय संगीत-मण्डल इवेन्-च्वाङ्ग के जीवन का निरूपण करता तो चीनी आत्मा में प्राचीन दो सहस्र वर्षों का भारत-चीन-सम्बन्ध जागृत हो उठता । इसी प्रकार यदि बुद्ध के जीवन के किसी अंश को लेकर निरूपण किया जाता कि विश्व-शान्ति का विचार किस प्रकार भारत और चीन में प्राचीन समय में फैला था तो चीन की जनता गद्गद् हो उठती । एक नया उल्लास फैलता ।

कविसम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक छोटे से गान को ५, ६ कला तक सुना देने से चीनी जनता के पल्ले कुछ नहीं पड़ा । यदि रवीन्द्र के किसी नाटक को ले लेते तो जनता मुग्ध होती और उनकी भक्ति गहरी हो जाती ।

आज पता चला कि पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय में भी मञ्चु के कुछ ग्रन्थ हैं ।

२-७-५५

आज पेइ-चिङ्ग पुस्तकालय में धी-श्या सूत्रों के निरीक्षण के लिए गए । यह निङ्ग-श्या प्रान्त से आए हैं । वहाँ एक मन्दिर में सुरक्षित थे । कोनों पर ग्रन्थों के चीनी नाम लिखे हैं । ये ग्रन्थ ज्येन् 卅 युग में १४वीं, १५वीं शताब्दी में लिखे गए ।

प्रत्येक पृष्ठ में छः पंक्तियाँ हैं । चीनी के समान पंक्तियाँ ऊपर से नीचे की ओर आ रही हैं । प्रत्येक पंक्ति में १७ अक्षर हैं । इनके काष्ठ-मुद्रण-फलक हाङ्ग-चौड 卅 卅 में बने

बे। शी-स्या अक्षरों को पीतनदी के पश्चिम के अक्षर कहते हैं। यह विशेष सौभाग्य है कि कुछ पुस्तकों के अन्त में तिथि आदि की सूचना दी हुई है। शी-स्या अनुवाद सुझ-संस्करण से हुए हैं। आरम्भ में चित्र भी सुझ-संस्करण वाले हैं।

आज हमने दो शिरोधान मोल लिए। इन पर चार चीनी अक्षर हैं— कू-फू-कुन्-नान्। कू-फू का अर्थ पार करना और कुन्-नान् का अर्थ कठिनाइयां। जब दिन के परिश्रम और चिन्ताओं से थक कर मनुष्य शिरोधान पर सिर रखता है तो शिरोधान उसकी कठिनाइयां पार करने में सहायक हो। रात्रि का विश्राम मस्तिष्क को अभिनव शक्ति दे। नए सुझाव दे।

४-७-५५

साम्यवादी चीन में नवजात शिशुओं के लिए, विशेष कर जिनकी माताएं निर्मा-णियों में काम करती हैं, अनेक शिशुशालाएं हैं। हमको बताया गया कि अकेले पेइ-चिङ्ग नगर में ६०० शिशुशालाएं हैं। प्रत्येक में न्यूनतम ५० और अधिकतम ३०० शिशु हैं। जितने समय तक माताएं निर्माणियों में काम करती हैं उतने समय तक बच्चे इन शालाओं में रहते हैं। निर्माणी में कार्य समाप्त करके माताएं बच्चों को अपने साथ ले जाती हैं।

आज हम अपनी नाम-मुद्रा बनवाने के लिए अच्छा कलाकार ढूँढते ढूँढते गलियों में जा पहुंचे। वहां एक आपणिक अपनी छोटी सी आसन्दी पर बैठा हुआ घास की डबिया में बन्दी किए हुए हरे टिड्डे का गान सुनने में मग्न था। ये हरे टिड्डे पेइ-चिङ्ग की गलियों में प्रतिदिन बिकते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके क्रन्दन को गान की उपाधि देना चीन में ही सम्भव है। चीन की प्रतिभा और कला वैचित्र्यप्रिय है। जब उनको पक्षियों का कूजन नहीं मिलता तो उसके स्थान में टिड्डों का क्रन्दन ही उनके लिए पर्याप्त है।

जिस पेइ-चिङ्ग प्रासाद के विषय में एक अधिकारी ने हमको यह बतलाया था कि प्रासाद तो राजाओं के भोग-विलास का स्थान है, यहां पुस्तकों का क्या प्रयोजन, उसी प्रासाद में विशेष अनुमति मिलने पर आज दो लाख पुस्तकों के संग्रह के दर्शन हुए। प्रत्येक प्रकार के ग्रन्थों के लिए अलग अलग भवन हैं। ताओ सम्बन्धी ग्रन्थों का विशाल और उत्तम संग्रह है। लाख के रंग से रंगे हुए चमकते काले पत्रों पर सुनहरी मसी से बनाए हुए शतशः चित्र और उत्कृष्टोत्कृष्ट सुलेखकों के लिखे हुए धार्मिक ग्रन्थों का यह अमूल्य स्थान है। प्रायः इस पुस्तकालय में प्रवेश की आज्ञा नहीं मिलती।

५-७-५५

आज तीन कबे चीनी संसद् का सत्र आरम्भ हुआ। संसद् के लिए कोई विशिष्ट भवन नहीं है। जिस सभा-अनु-सभा भवन में भारतीय संघीत-मण्डल का कला-प्रदर्शन था

उसी में आज संसद् का सत्र है। १२२६ में से १०६४ सदस्य उपस्थित हैं। राष्ट्रपति भी उपस्थित हैं। सर्वप्रथम Presidium अर्थात् प्रधान-बर्ग के नामों की सूची संसद् के सामने रखी गई और मत लिए गए। एक भी मत विरोध में न था। सभी पक्ष में थे। सर्वसम्मति से सूची पारित हुई। तत्पश्चात् पंचवर्षीय योजना सामने रखी गई। आय-व्ययक के स्थान में पूर्व तथा आगामी वर्ष का वित्तीय विवरण रखा गया। जब पूछा गया कि क्या कोई विशेष में है तो यथापूर्व मेइ याउ, मेइ याउ की ध्वनि हुई अर्थात् कोई विरोध में नहीं।

पंचवर्षीय योजना में ७६ अरब रुपया लगेगा। इस काल में कितनी उन्नति करने की आशा और योजना है सो इससे कुछ पता लगेगा कि पांच वर्ष की सीमा पूरे होने से पहले प्रतिवर्ष ३० सहस्र बहिर बनने आरम्भ हो जाएंगे।

सत्र २९ जुलाई तक चलेगा। किन्तु अधिकांश दिन बर्ग-संवाद में लगेंगे, सत्र में नहीं। बर्ग-संवाद साम्यवादी शासन में विशेष महत्त्व की वस्तु है। छोटे छोटे बर्गों में सब बातों पर विचार किया जाता है। सदस्य अपने विचार इन बर्गों की बैठकों में प्रकट करते हैं। संसद् के सत्र में तो मुख्य वक्ता प्रस्तावों की पुष्टि ही करते हैं।

राजनैतिक जीवन का संचालन संयुक्त अग्रसंघ (United Front Organization) करता है। इसमें ९ राजनैतिक पक्ष हैं। इससे आगे चल कर जन-राजनैतिक-परामर्श-सम्मेलन है। इसमें देश का एक ही लक्ष्य तथा एक ही कार्यक्रम निश्चित किया गया है। साम्यवादी पक्ष के सिद्धान्त तथा उनकी योजनाएं इस सम्मेलन ने स्वीकार की हैं।

भारतवर्ष के लिए यह नई बात है कि आदर्श-श्रमिकों में से भी संसद चुने जाते हैं।

सायं छः बजे शासन-स्थापित पुरातन साहित्य विक्रय-शाला में गए। ६१ बन्धनों में ७११ सख्तों वाला २४ बंधीय इतिहास मोल लिया। यह इतिहास-माला चीनी इतिहास की आधारभूत वस्तु है। हमको एक ही दुःख रहा है कि इन ७११ सख्तों के लिए चीनी निषाय न मिला। कुछ दिन के पश्चात् जब हम साऊ-हाइ में पहुंचे तो वहां इतने ही मूल्य में सम्पूर्ण ७११ सख्तों में तथा ६ पाद ऊंचा, ४ पाद चौड़ा और १ पाद गहरा निषाय मिल रहा था। किन्तु इसको मोल लेना असम्भव हो गया था। हमारा सम्पूर्ण सम्भार बंध कर ब्याक-बोर्ड जा चुका था। यदि हमने साऊ-हाइ में दो दिन भी ठहरना होता तो हम अपने साथ ले चल सकते थे। इस प्रकार के निषायों की विशेषता यह है कि प्रत्येक बड़े बंस के इतिहास के लिए अलग डिब्बा बना हुआ है। डिब्बों पर बंसों के नाम खुदे हुए हैं। तथा खुदे हुए नामों में हरा रंग भरा है। प्रत्येक बंस के डिब्बे का परिमाण भिन्न है किन्तु फिर भी सब इस प्रकार से निषाय में रखे हुए हैं कि सुन्दर प्रतीत हों और अलग अलग निकल सकें।

बौद्ध विपिटक का चीनी परिशिष्ट १९८० विक्रम में साऊ-हाइ में प्रकाशित हुआ

था। इसमें १५१ बन्धन हैं। प्रत्येक में ५ खण्ड हैं। मूल्य १४०० युआन्। इस परिशिष्ट में चीनी आचार्यों के रचित ग्रन्थ हैं। चीन में जो सम्प्रदाय बने, इनमें जो संघर्ष हुए, उन सबका विवरण यहां पूर्णरूप में मिलता है।

७-७-५५

बोट कञ्जूर तञ्जूर का डिब्बों में डलना आरम्भ हो गया सो अत्यन्त सन्तोष हुआ। ३३० बन्धन हैं। प्रत्येक बन्धन का परिमाण ३० प्रांगुल के लगभग है। इनके लिए विशेष बड़े बड़े लकड़ी के डिब्बे बने हैं। सात आठ व्यक्ति डिब्बे भरने आए हैं। डिब्बों में जला-प्रवेश-पत्र लगाना, सावधानी पूर्वक एक एक ग्रन्थ को बिठाना, डिब्बों के बाहर अन्तर्निहित पुस्तकों की संख्याएं लिखना आदि पर्याप्त समयापेक्षी कार्य है। हमने अपने सामने कार्य आरम्भ कराया है। तीन चार दिन में पूरा हो जाएगा ऐसी आशा है। तत्पश्चात् मोंगोल कञ्जूर से डिब्बे भरने और बन्द करने होंगे।

दो तीन दिन से साम्यवादी मोंगोल सेना की संगीत-मण्डली आई हुई है। हमारे ही विश्रान्तिगृह में ठहरी हुई है। इसमें १५८ स्त्री पुरुष हैं। वेध सैनिक है। कल रात्रि को इनका प्रथम प्रदर्शन था। हम कार्यवश न जा सके थे। इसलिए आज गए। विशेष उल्लेखनीय चीन, मोंगोल और रूस को संयुक्त करने वाले सयान का स्वागत-गीत था। किस बल और उत्साह से गाया गया। नाटक-भवन गूज उठा। जनता का हृदय भी उल्लास से बल्लियों ऊंचे नाचने लगा। क्या भारतवर्ष में भी हम जनता में देश की एकता के गीतों को राष्ट्रीय नवनिर्माण के साधन नहीं बना सकते।

८-७-५५

चीन की आर्थिक स्थिति पर बातचीत करते हुए पता लगा कि अर्थपत्र (currency notes) का पृच्छपोषण स्वर्ण द्वारा किया गया है किन्तु स्वर्ण और अर्थपत्रों का कितना अनुपात है यह कुछ पता न लग सका। हमको बताया गया कि जब पण्डित नेहरू चीन में आए थे तब उनको अर्थसम्बन्धी सब समंज दिए गए थे। अंग्रेज समंकविद्यारदों का विचार है कि जब कभी चीनी शासन समंज देता है तो ठीक ही देता है। जहां तक भारत और पण्डित जवाहरलाल नेहरू का सम्बन्ध है इसमें सन्देह नहीं कि समंज ठीक ही दिए होंगे किन्तु वे प्रकाशित नहीं किए गए। श्री जोउ-अन्-लाइ ने पण्डित नेहरू से कहा था कि आपके और हमारे बीच में कोई रहस्य नहीं, जो आप जानना चाहेंगे सो आपको बताएंगे।

अर्थपत्र पोषण के अतिरिक्त अनुपूरक अर्थव्यवस्था (supplementary economy) पर चर्चा हुई। चीन में एक विचार ऐसा रहा है कि जब रूस और चीन आतु-सासन हैं तो इनकी अर्थव्यवस्था भी एक दूसरे की सहायक होनी चाहिए। अर्थात् जो

उद्योग रूस में चल रहे हैं उनको चीन में चलाने की आवश्यकता न होनी चाहिए। इसके विपरीत दूसरा विचार है कि औद्योगिक क्षेत्र में चीन को स्वतन्त्र होना चाहिए। रूस पर सदा के लिए निर्भर रहना उचित नहीं। दूसरा विचार सर्वसम्मत है। तदनुसार चीन में भारी उद्योगों का प्रारम्भ और विकास किया जा रहा है। एक ओर भी पक्ष है कि चीन के प्रत्येक प्रदेशमण्डल को भी स्वावलम्बी होना चाहिए। इस बात की चर्चा संसद् में भी हुई थी।

जैसा हम पहले कह आए हैं आजकल भारत का केवल एक विद्यार्थी पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा है। वह केवल एक वर्ष के लिए चीन में भेजा गया है। वह चाहता है कि चीन में अधिक रहे। चीन की शिक्षापद्धति भारतीय पद्धति से बहुत भिन्न है। विद्यालय में प्रवेश करते ही विद्यार्थी से प्रश्न किया जाता है कि तुम किस उद्देश्य से पढ़ने आए हो। भारतीय विद्यार्थी निरुत्तर हो जाता है। उसको पता नहीं कि दुभाषिया बनेगा, चीनी का अध्यापक बनेगा अथवा चीनी भाषा और साहित्य के अनुसन्धान-क्षेत्र में अपना जीवन व्यतीत करेगा। यदि विद्यार्थी को अपने भविष्य का स्पष्ट ज्ञान नहीं तो चीनी विद्यालय उसको उपयुक्त शिक्षा देने में असमर्थ है। केवल यह कहना कि चीनी पढ़ाई पर्याप्त नहीं। चीन में भारतीय विद्यार्थियों को छः वर्ष की छात्रवृत्ति देनी चाहिए। तथा चीन में आने से पूर्व विद्यार्थी को भारतीय साहित्य और दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति का सम्यग् ज्ञान होना चाहिए। चीन में हमारा विद्यार्थी हमारा प्रतिनिधि है। यदि वह अपने देश के साहित्य, दर्शन, अर्थनीति और राजनीति को ठीक प्रकार से नहीं समझता तो वह अपने देश के सम्बन्ध में बहुत कुछ भ्रम फैलाएगा। इतना ही नहीं वह लौट कर भारतवर्ष के आर्थिक और राजनैतिक तन्त्र में ठीक नहीं बैठेगा। चीन में प्रथम दो वर्ष प्रत्येक विद्यार्थी को मुख्यतया मार्क्सवाद की शिक्षा दी जाती है। नाना प्रकार के प्रश्न और उनके उत्तर सिखाए और रटाए जाते हैं। यदि भारतीय विद्यार्थी अपने देश की नीति से अनभिन्न है तो वह सरलता से ही प्रभाव में आ जाता है। यदि विद्यार्थी अपनी नीति से परिचित हो तो उसका चीनी विश्वविद्यालयों में मार्क्सवाद पढ़ना चीन की नीति को समझने के लिए लाभकारी हो सकता है।

प्रथम दो वर्ष के पश्चात् विद्यार्थी विशेष विद्या-विभाग में प्रवेश कर सकता है जैसे चीनी साहित्य, चीनी कला, चीनी इतिहास।

११-७-५५

चीन की महाभित्ति के उत्तर द्वार में विख्यात वहुभावालोक और मूर्तियाँ हैं। द्वार की दोनों भित्तियाँ और छत लेखों और मूर्तियों से भरी पड़ी हैं। इस द्वार का नाम यू-युङ्ग-क्वान् है। पेइ-चिङ्ग और चाङ्ग-प्या-कोउ 長沙 口 के मध्य में पा-सा-लिङ्ग 八達嶺 के

नीचे चू-मुङ्क-नवान् द्वार है ।

दक्षिण से उत्तर जाते हुए राजमार्ग पर सुदृढ अश्ममय चापरूप द्वार है । भित्ति की ऊंचाई १९ हाथ है । द्वार की चौड़ाई १८ हाथ और गहराई ७० हाथ है । द्वार के ऊपर गरुड और नागकन्याएं बनी हुई हैं । प्रत्येक नागकन्या के सिर पर सात सर्प हैं । इनकी पीठ सर्पाकृति है और प्रत्येक नागकन्या की एक टांग गरुड के पंज्जे के नीचे है । नागकन्याएं हाथ जोड़े खड़ी हैं । द्वार के ऊपर पुरातन काल में भोट स्तूप बना हुआ था । यह अब सर्वथा नष्ट हो चुका है ।

यह द्वार य्वेन् 元 काल का है और ऐतिहासिक दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है । द्वार की दोनों ओर की भित्तियां मूर्तियों से भरी हुई हैं । भित्तियों के दोनों कोनों पर एक एक लोकपाल की मूर्ति है । चारों कोनों के चार लोकपालों के बीच में छः भाषाओं में धारणियां उत्कीर्ण हैं ।

(१) सर्वप्रथम लांछा लिपि में संस्कृत (२) भोट (३) फग्स्य (मोंगोल) (४) बीगूर (तुर्की) (५) शी-श्या (ताइत्) (६) चीनी

फग्स्य, जिन्होंने लिपि बनाई थी, उनका सम्राट् यिङ्क-त्सुङ्क 英 宗 बहुत आदर करते थे । उनकी मृत्यु के ४१ वर्ष पश्चात् अर्थात् १३७८ विक्रम में सम्राट् ने अपने साम्राज्य के प्रत्येक प्रान्त में इनके स्मारक-भवन बनाने के लिए आदेश दिया ।

द्वार के अन्दर की छत में पांच विभिन्न प्रकार के मण्डल बने हुए हैं । भित्तियों पर, आमने सामने पांच पांच बुद्ध उत्कीर्ण हैं । आस पास और उनके ऊपर एक सहस्र छोटे छोटे बुद्ध बने हुए हैं ।

पश्चिम भित्ति पर उत्तर के लोकपाल वैश्रवण और दक्षिण के विरूपाक्ष । पूर्वी भित्ति के दक्षिण ओर विरूडक और उत्तर की ओर घृतराष्ट्र लोकपाल हैं ।

वैश्रवण के दाहिने हाथ में छत्र है । एक टांग को एक देवता सम्हाले हुए हैं । उनकी आगे की ओर पसरी हुई दूसरी टांग असुर को कुचल रही है ।

विरूपाक्ष के दक्षिण हस्त में सांप है । और उनका बायां पांव असुर के शरीर पर है ।

विरूडक के हाथ में तलवार है और घृतराष्ट्र बीणा बजा रहे हैं । विरूडक और घृतराष्ट्र के बाएं पांव असुरों के ऊपर हैं ।

चारों लोकपालों के दो दो उपासक हैं ।

विरूपाक्ष के बाईं ओर के शिलालेख में जीर्णोद्धार की तिथि १५०२ विक्रम दी है ।

सम्भवतः ये मूर्तियां १४०२ विक्रम में बनी हों ।

यह द्वार य्वेन् कला के उत्कर्ष का अवशेष है । चाप की विचित्र बनावट, द्वार की आन्वयस्तर भित्तियों पर कुशलता पूर्वक उत्कीर्ण मूर्तियां । वीरत्वपूर्ण लोकपाल, रीढ़ रूप

होते हुए भी ओजस्वी और कलात्मक है। आभ्यन्तर छत की मूर्तियां सौम्य होते हुए भी शक्तिशालिनी हैं। तथा प्रभामण्डलों के मुदुत्व आदि गुण इस द्वार को ऐतिहासिक द्वार बना देते हैं। चीनी भाषा में केवल धारणियां ही नहीं किन्तु उनके साथ सम्बद्ध कहानियां भी दी हुई हैं। पूर्व भित्ति पर सर्वदुर्गति-परिशोधनोष्णीष-विजय-धारणी है। और पश्चिमी भित्ति पर समन्तमुख-प्रवेश-रश्मि-विमलोष्णीष-प्रभा-सर्वतथागत-हृदय-समबिरोचन-धारणी है।

पूर्व भित्ति की धारणी नांजो की त्रिपिटक-सूची की संख्या ८७१ की धारणी है। इसका चीनी अनुवाद सुऊ वंश के फा-ध्येन् 旡 天 ने किया था। किन्तु द्वार पर दी हुई धारणी का त्रिपिटक से कुछ भेद है। धारणियों के पश्चात् आने वाला सूत्रभाग सुऊ-अनुवाद से सर्वथा भिन्न है। भित्तिलेख बहुत कुछ विकृत हो चुका है। भित्तिलेख में इसके उत्कीर्ण करने का उद्देश्य भी वर्णित है।

दूसरी धारणी के पश्चात् १४०२ विक्रम की तिथि दी है। चीनी त्रिपिटक में इस धारणी का अनुवाद सुऊ वंश के श-हू 旡 旡 का किया हुआ है। चीनी के दोनों अनुवाद य्नेन् वंश में किए गए हैं।

१२-७-५५

हमारी सरस्वती-विहार-ग्रन्थमाला के लिए फ्रान् गुलिक् ने चीन और जापान में सिद्धम् लिपि के प्रचार के सम्बन्ध में एक पूरा ग्रन्थ लिखा है। फ्रान् गुलिक् का मत है कि चीन में संस्कृत का कभी प्रचार नहीं रहा। जो चीनी भारतीय लिपि पढ़ जाता था वह यह मान लेता था कि मैं संस्कृत ही पढ़ गया हूँ। पेइ-चिङ्ग विश्वविद्यालय के संस्कृतज्ञ प्राध्यापक ची ने कहा कि यह मत धाऊ और सुऊ वंश के लिए तो सर्वथा अशुद्ध है। हाँ सम्भव है कि छिऊ वंश में इस मत के लिए कुछ स्थान हो। छिऊ काल अर्थात् १७वीं, १८वीं और १९वीं शताब्दियों में चीनियों का भारत आना जाना स्थगित हो चुका था। उससे पूर्व चीन में कई स्थान थे जहाँ भारतीय लिपि और संस्कृत भाषा दोनों का अध्ययन होता था और केवल बौद्ध भिक्षु ही नहीं किन्तु भारत से सम्पर्क रखने वाले राजनीति-विश्ारद तथा भारतगामी राजदूत भी संस्कृत अध्ययन करते थे।

क्वान्-ची मन्दिर में अनुसन्धान-कार्य हो रहा है कि जो बौद्ध सूत्र भारत से लुप्त हो गए किन्तु जिनके अनुवाद चीनी भाषा में बचे हुए हैं उनके अनुसार भारत की सामाजिक, राजनैतिक आदि स्थिति पूर्वकाल में किस प्रकार की थी। यह अध्ययन कई वर्षों में पूरा होगा। अभी इसका कोई सङ्घ प्रकाशित नहीं हुआ। यदि अनुसन्धान में वैज्ञानिक रीति का पालन किया गया तो क्वान्-ची मन्दिर के ये प्रकाशन हमारे लिए भी बहुमूल्य होंगे और हम इनका हिन्दी अनुवाद निकालेंगे। इसके लिए क्वान्-ची मन्दिर का पूर्ण सहयोग होगा।

पेइ-बिद्ध में केवल एक भारतीय व्यापारी है। यह २५ वर्ष से रह रहा है। इसने भयानक घटनाएं घटती देखी हैं। चोरों, डाकुओं और सेनापतियों के अत्याचार तथा शासनों के परिवर्तन देखे हैं। वर्तमान शासन से इसके अच्छे सम्बन्ध हैं। प्रतिमास ११०० रुपए भारतवर्ष भेजने की इसको अनुमति मिल चुकी है। कुछ मासों से जनता की क्रय-शक्ति बढ़ने लगी है ऐसा इसका अपना अनुभव है। पिछले वर्ष तक तो केवल रूसी सेना के अधिकारी तथा दूतावासों के नरनारी मंहगे कौशेय के कपड़े मोल लिया करते थे। अब चीनी अधिकारी भी आने लगे हैं। पहले रूसी सेना के अधिकारी सैनिक वेष में रहते थे। अब वे असैनिक वेष में ही आते जाते हैं।

चीन में अधिवक्ता (advocate) नहीं हैं। न्यायाधीश सीधा अभियुक्त से प्रश्न पूछता है। गुप्तचर अभियुक्त के सम्बन्ध में जांच पड़ताल करते हैं। अपराध का निश्चय करने के पश्चात् न्यायाधीश दण्डघोषणा करता है। कहीं लड़ाई झगड़ा नहीं होता। कोई एक दूसरे से गाली-गलौच नहीं करता। यदि कोई सड़क पर लड़ते झगड़ते दिखाई पड़ जाए तो उसको थाने में ले जाते हैं। समझा बुझा कर भेज देते हैं। कोई चोरी करने का साहस नहीं करता। सोने से लोग दूर भागते हैं। किसी चीनी घर में सोना नहीं मिलेगा। वह राष्ट्रनिधि में जा चुका है।

सायं ७ से १० बजे तक विद्यासभा की ओर से प्रस्थान-भोज हुआ। उपहार-सूची पढ़ी गई। भारत तथा चीन की मैत्री से संसार में शान्ति स्थापित हो रही है इस आशय के भाषण हुए। अन्त में हमने हिन्दी में अनियमित पद्य पढ़े। प्रत्येक पद्य का आंग्ल अनुवाद सुदर्शना देवी ने पढ़ कर सुनाया। इस आंग्ल अनुवाद का चीनी अनुवाद दुभाषिए ने किया। मूल हिन्दी तथा आंग्ल अनुवाद नीचे देते हैं—

कठोर अश्ममय पर्वतशिला को मूर्तिकार की कला ने स्मितमुखी बना दिया।
मूर्तिकार की कला शिला में आश्रय पाकर अमर हो गई।
पर्वत के नवरूपावतार में चित्रों का भी योगदान है,
और चित्रों के अमरत्व में शिला का अमरत्व है।
अब पत्थर जड़ नहीं रहा, चेतन बन गया।
पारलीकिक प्रकपक्ष की रश्मिमाला का उन्नासन-पिण्ड बन गया।
अनन्त, अक्षितायु, शान्ति और पारमिता प्रज्ञा का सन्देशवाहक बन गया ॥

२

हिंसे, क्रूर हिंसे, डाकिनि हिंसे,

क्या तू मानव-जीवन-जाल के एक एक सूत्र को छिन्न भिन्न करेगी ।
अथवा अहिंसा देवी के सामने साष्टांग नमन करके उसमें लीन हो जाएगी ।

हिंसे, अब तुम्हारी उपासना का युग समाप्त हो गया है ।

केवल भय अभी तक तुमको जातियों और राष्ट्रों के नेताओं के हृदय में
सुरक्षित सम्हाले हुए है ।

तुम्हारा सखा भी तो अब कोई नहीं रहा—

केवल द्वेष और घृणा ॥

३

आपके देश चीन में भावी मंत्रेय की कल्पना जनता में बढमूल है ।

जब विश्व में चारों ओर राक्षसी उत्पात मच रहा होगा,

तब सर्वकल्याण के लिए मंत्रेय प्रादुर्भूत होंगे ।

हमारी दीन हीन दशा में भारत में भी एक मंत्रेय आए थे ।

इनका प्रातःस्मरणीय नाम था गान्धी ।

इनके हृदय में भय का लेश न था ।

इनके हृदय में द्वेष का लेश न था ।

यथार्थनामा गान्धी ने सुगन्ध-परिमल की समीर बहाई,

और मानवजनों की विचारसरणी प्रबुद्ध तथा विशुद्ध हुई ॥

४

भाई भाई के रुधिर की पिपासा ने मानव की गरिमा को
धूलिसात् कर दिया ।

किन्तु अब ऐसा न होगा ।

हय सब भाई बन कर रहेंगे ।

दरिद्रता और अकिंचनता, व्याधि और अविद्या,

अब ये ही हमारे शत्रु रह गए हैं ।

मानव को इकट्ठे होकर इनका सामना करना है ।

एक एक जन समृद्ध होगा, स्वस्थ और गृहवान् होगा ।

यथेष्ट ज्ञान की प्रभा उसके हृदय और अस्तित्त्व को परिपूर्ण किए होगी ॥

५

सदाचार-सञ्छीलहीन बने अन्धकारमय,

मानस के आदिकालगत जंगलों में,

आलतायी मस्स्य-न्याय का अभी तक आधिपत्य है ।
 मैत्रेय का शुद्ध अवदात हासाट्टहास
 तथा गान्धी का सौम्य परिमल
 बुन्बले कोहरे के समान कुछ कुछ छा पाए हैं ।
 किन्तु प्रभात-बेला के दनदनाते हुए विजयाभियान को
 कौन रोकेगा अथवा बांधेगा ।
 काली रजनी की सर्वाच्छादिनी कम्बली भाग निकलेगी ।
 साथ कुछ न ले जा सकेगी ॥

६

हिंसा की परिधि संकीर्ण हो रही है ।
 भारत और चीन की पुनर्नवीभूता भ्रातृमत्ता का प्रथम फल पंचशील है ।
 घटनाचक्र का पथ प्रकृति की रचना है ।
 अनिच्छुकों को भी ये बहा ले जाता है ।
 हमारे और आपके पंचशील
 इस घटनाचक्र के नियामक और अग्रणी बनेंगे ।
 और प्रवेश करेगे
 राष्ट्रनेताओ के हृदयो में,
 उनके शूरवीरों और विद्याप्रवीणों के हृदयों में,
 हृदयशून्य, अन्तःकरणहीन, करुणामैत्रीवियुक्त
 मानवजाति के विध्वंसकारी वैज्ञानिकों के मन और बुद्धि में ॥
 तब,
 वह तब दूर नहीं,
 और तब वज्रचित्त, वज्रकाय, वज्रहस्त, वज्रवृत्ति नर
 वेत्रवृत्ति होकर नमन करेगे ।
 झुक कर दोहरे हो जाएंगे ।
 उनके पादपथ की दिशा परिवर्तित हो जाएगी
 और यम के महाप्रलम्बकारी अस्त्रायुध
 मंगल और कल्याण के परम ओजस्वी साधन बन जाएंगे ॥

७

स्वस्ति, बन्धुवर्ग, स्वस्ति ।
 प्रदीप्ति ह्यम्,

भाई भाई हम
 कन्धे से कन्धा लगाए सड़े हैं ।
 सुख हो दुख हो
 कष्ट हो वैभव हो
 हम शान्तिचक्र-प्रवर्तन करेंगे ।
 शान्ति बिना हमारा जीवन नहीं ।
 शान्ति बिना तुम्हारा निर्वाह नहीं ।
 शान्ति ही तो विश्व की मधुमत्तमा है ।
 विश्वशान्ति और विश्वविध्वंस,
 इन दोनों में से आप और हम वरण करते हैं
 शान्ति को, शान्ति को, शान्ति को ॥

॥ ओम् क्षम् ॥

I

The rock smiles with the sculptured art,
 The sculptured art attains the immortality of the rock.
 The paintings too have their share to receive,
 And their contribution to make to the rock's transformation.
 Lo ! the chiselled stone mass sheds effulgence
 And imparts wisdom of ageless peace.

II

Violence, diabolic violence
 Wilt thou shatter the fabric of human life,
 Or pay thy homage to peace
 And retire.
 Violence, thou art honoured no more.
 Fear alone keeps thee lodged in the hearts of leaders of
 Hatred is thy ally.

III

You in China have the foreknowledge of a Milofa,
 To come when the need be dire.
 We have just had our Milofa.
 His name was Gandhi.
 He feared none.
 He hated none.
 True to his name, he radiated a fragrance,
 That refreshed men's thinking processes.

IV

Man's dignity can no longer suffer one sucking his brother's blood.
And brothers we all must be.
Paucity and poverty,
Disease and ignorance—
These alone must man fight in unison,
And make prosperity the lot of all.
Health and homes for all,
Light of knowledge for all, in unstinted measure.

V

In the primeval jungles of moral laissez-faire,
Lorded over by sturdy and wily sharks,
The laughter of a Milofo
Or the fragrance of a Gandhi
Are yet dimly perceived.
But who will restrain the triumphant march of a dawn.
Sombre shades must flee.

VI

The perimeter of violence is already decreasing.
The five principles,
The triumph of our rejuvenated fraternity,
Shall perforce,
Through the compelling path of events,
Of nature's own device,
Enter into the hearts of controllers of men,
Of their guides,
Of their heroes,
Of heartless men of science
Who decree the destruction of the race.
And the men of steel shall bend,
And reverse their steps.
Death's ultimate missiles shall be converted
Into engines of benevolent production.

VII

Hail, Comrades, Hail.
Neighbours we
Brothers we
Stand shoulder to shoulder
In woe and weal
To advance Peace,
Which you need

Which we need
And which is also world's mead.
Peace ! Peace !! Peace !!!

१५-७-५५

भारतीय राजदूत श्री राघवन् ने हमारे प्रस्थान-प्रसंग में चाय का आयोजन किया। चीनी गण्यमान्य नरनारी उपस्थित हुए। भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर वार्तालाप चलता रहा। चाय के अन्त में श्री राघवन् ने समाचार दिया कि चीनी त्रिपिटक के परिशिष्ट के लिए भारतीय शासन से ५००० रुपए की स्वीकृति का तार आया है। यह अन्तिम घड़ी का चमत्कार है। हमारे जीवन में पहले भी इस प्रकार की अनेक घटनाएं हुई हैं। सायं के ६ बज गए थे। हम पुस्तक-विक्रेता के यहां गए, आदेश दिया कि परिशिष्ट हमारे पते पर क्वाड्र-चौड भेज दो।

कल प्रातः पेड़-चिड़ से चलना है। चीन के प्रधान मन्त्री ने जिस स्नेह से हमारा आतिथ्य किया है उसके प्रति अपनी भावनाओं का प्रकट करना आवश्यक है। भावनाएं हृदय में सीमित नहीं रह सकी हैं। शब्दों में फूट पड़ी है। हिन्दी और चीनी में इस भावनामयी शब्दशृंखला को वलिता पर लिख कर प्रधान मन्त्री को समर्पण किया। हिन्दी तथा उसका आंगलानुवाद इस प्रकार है—

१

श्रद्धेय और स्नेहमय बन्धुवर चौड-अन्-लाइ,
प्रस्थान-प्रभात सामने आया खड़ा है।
मेरी गोदी आपके अमूल्य रत्नोपहारों से भरी है।
और मेरा हृदय अपार हर्ष तथा कृतज्ञता से अभिभूत और समाप्नुत है।
मे प्रस्थान-नमस्कार लेकर प्रस्तुत हूँ।

२

भद्रता और सौम्यता, प्रज्ञा और दूरदक्षिता से
विश्वविश्वस्त और मानवमान्य
पण्डित जवाहरलाल नेहरू और आपने
सच्चे और शान्तिमय अन्ताराष्ट्रीय सहजीवन की नींव डाली।
आपने भारत और चीन के सांस्कृतिक आदान प्रदान के
पुनरपि प्रारम्भ का क्षेत्र खोला।
तभी तो मैंने अपने पग इस ओर उठाए
कि मैं उस संस्कृतिसरिता-प्रवाह की गवेषणा करूं
जिसने चीन और भारत के हृदयों को जोड़ा था

किन्तु हा ! जो प्रवाह भारत-भूमि पर सूख गया,
लुप्त हो गया, अदृश्य होकर अतीत के साथ जा मिला ।

३

भक्तिमय आत्मभाव से चीनी जनता ने
मुझे भारतीय श्वेन्-च्वाङ्क कह कर मेरा स्वागत किया है ।
बन्य है वह नाम वह मान ।

निःसन्देह जो प्रचण्ड ज्वाला श्वेन्-च्वाङ्क की आत्मा में प्रदीप्त थी
उसने मेरे अन्दर भी एक लम्बी लीख,
नहीं केवल लम्बी नहीं, किन्तु १३०० वर्ष लम्बी लीख
प्रज्वलित की है ।

४

इसके प्रकाश में मैंने पुरातन घटनाओं को घटते देखा है
और अद्भुत रसों का आचमन किया है ।
इसके सहारे १९ शताब्दियों के अतीत की यवनिका फट गई
आगे से हट गई ।
मैंने पहली शताब्दी में ऐतिहास्य-यात्रा प्रारम्भ की ।
और काल के साहचर्य में १९ शताब्दियों की जीवन-लीला का साक्षात् किया ।
अज्ञात और अज्ञेय ज्ञात और ज्ञेय बन गए ।
चीनी और तुर्क, तिब्बती और मोंगोल
तथा मञ्जु जातियों और राष्ट्रों ने
जो आध्यात्मिक बौद्धिक कलात्मक धनधान्य का धीरे धीरे संग्रह किया था
उस में से एक मुट्ठी, छोटी सी मुट्ठी,
किन्तु निश्चित रूप से उत्तमोत्तम तथा सारवान् रत्नों से भरी हुई मुट्ठी,
मैंने आपसे ली है ।
आपने स्निग्ध चित्त तथा उदार हस्त से दी है ।
मेरी यह जीवन-प्रिय निधि है ।

५

आज यह नव यात्रा की पुण्य षड़ी है ।
यह भारत-चीन के नवजीवन की संजीवनी है ।
आज गए वीथे का अफरोण है ।
आज से अधिक काल, काल से अधिक परसों

हम प्रयत्नशील रहेंगे
कि संसार में मैत्रीभाव फैले
कि संसार में सहिष्णुता हो
कि संसार में निरन्तर शान्ति रहे ।

६

स्वस्ति, बन्धुवर, स्वस्ति
पुनर्दर्शनाय, पुनर्दर्शनाय ।
अब मेरे पग नहीं ठहरते, आत्मा दो, अनुमति दो
में अपने देश को लौटूं, अविलम्ब लौटूं ।
मेरे देशवासी भी आपके उदार और विपुल उपहारों का दर्शन करें ।
और मेरे हृषं और कृतज्ञता में साधी बनें ।
स्वस्ति, बन्धुवर, स्वस्ति,
त्साइ च्येन् त्साइ च्येन् ।

I

Worthy and Loving Comrade,
Chou-En-lai,
On the morn of my departure
With my arms full of gifts of rich treasure,
I bow my greetings,
Laden with unspeakable joy and gratitude.

II

When with sagely wisdom,
You and Nehru,
Both trusted and honoured
By their own people
And by the world,
Laid the foundations
Of true and peaceful co-existence,
And the interflow of culture
Was once again assured,
I wended my way hither
In search of the flow,
That on Indian soil,
Had ceased to flow.



चीनी यात्री-सम्राट् एवं धर्माचार्य श्वेन्-च्वाङ् का शिलाचित्र । “भक्तिमय भ्रातृभाव से चीनी जनता ने मुझे भारतीय श्वेन्-च्वाङ् कह कर मेरा स्वागत किया है । घन्य है वह नाम वह मान । निःमन्देह जो प्रचण्ड ज्वाला श्वेन्-च्वाङ् की आत्मा में प्रदीप्त थी उसने मेरे अन्दर भी एक लम्बी ज्योति, नहीं केवल लम्बी ही नहीं, किन्तु १३०० वर्ष लम्बी ज्योति प्रज्वलित की है ।” रघुवीर

“Lovingly have your people
called me the Indian Hsuan Chuang.
All glory to that name !
Indeed the intense flame,
That burned in Hsuan Chuang's breast
Has blazed a trail, a long trail
of 1300 years
Within me.” Raghu Vira

III

Lovingly have your people
Called me the Indian Hsüan Chuang.
All glory to that name !
Indeed the intense flame,
That burned in Hsüan Chuang's breast
Has blazed a trail, a long trail
Of 1300 years
Within me.

IV

I have witnessed hoary sights
And have sipped wondrous saps.
Nineteen centuries have rolled back
And I have joined the marching caravan of time.
What the Han, the Uigur,
The Tibetan, the Mongol and the Manchu
Had garnered,
A part, a tiny part,
But withal a substantial part,
I carry as a cherished gift
Bestowed by your loving heart
And generous hands.

V

This day we have made a new start
We have cast a new ferment into Sino-Indian dough.
We have planted a sapling.
From day to day we shall strive harder
For a world of amity,
For a world of understanding,
For a world of ageless peace.

VI

Hail ! Comrade, Hail !
Tsai chian, Tsai chian.
Now I hurry back to my countrymen
To share with them the joy of your noble and ample gifts.
Hail ! Comrade, Hail !
Tsai chian, Tsai chian,
Adieu, revoir !

प्रातः ६-४० पर पेइ-चिङ्ग को अन्तिम नमस्कार किया। भारतीय दूतावास से श्री गोवर्धन स्थात्र पर पहुंचे हुए हैं। इन्होंने और इनकी पत्नी श्रीमती कमला जी ने हमारे पेइ-चिङ्ग निवास को सफल बनाने में अथक सहायता की है। इनका औपचारिक धन्यवाद करना तो विडम्बना होगा। चीनी शासन के अनेक भाषाविज्ञ और सांस्कृतिक सम्बन्धाधिकारी पेइ-चिङ्ग की शुभकामनाएं लेकर स्थात्र पर आए हैं। बिना सीटी बजाए ठीक ६-४० पर गाड़ी धीरे धीरे चल पड़ी। और हमारे साथ केवल दुभाषिया और श्री छाऊ रह गए। ये हमको चीन की सीमा तक पहुंचा कर आएंगे।

२८ घण्टे की यात्रा के पश्चात् हम दक्षिण चीन की राजधानी नान्-चिङ्ग 南 京 में (अंग्रेजी में इसको Nan-king लिखा जाता है किन्तु राष्ट्रभाषा का उच्चारण नान्-चिङ्ग है) पहुंचे। नान्-चिङ्ग पहुंचने से पहले याङ्ग-त्स नदी है। इस पर अभी पुल नहीं बना। पुल के स्थान पर बड़ी नौका है। पूरा संयान नौका में चला जाता है और नौका उसको लेकर नदी को पार करती है। यानी संयान में ही बैठे रहते हैं।

नान्-चिङ्ग में पहुंचते ही सम्राट्-युग के समाप्त करने वाले राष्ट्रनेता डा० सुन्-यात्-सन् की समाधि पर फूल चढ़ाने गए। ४०० सीढ़ियां चढ़ कर समाधि पर पहुंचे। यहां नागपुर जैसी प्रचण्ड झूप थी। चारों ओर नगर का विहंगम दृश्य दृष्टिगोचर हुआ। इस ऋतु में भी नान्-चिङ्ग हराभरा है।

नान्-चिङ्ग में अच्छा अद्भुतागार है। इसमें वस्तुओं का क्रम साम्यवाद की विचार-धारा के अनुकूल है। भूमिसेचन के लिए कुल्याएं खोदते हुए अथवा सार्वजनिक भवन बनाने के लिए गहरी नींव खोदते हुए प्राचीन वस्तुएं निकलती हैं। इनका संग्रह अद्भुतागारों में किया जा रहा है। हमारे देश में भी ऐसा ही होना चाहिए किन्तु खेद की बात है कि हमारे श्रमिक तथा भवन-निर्माता और उनके निरीक्षक इस दिशा में भावना और ज्ञान-भ्रूय हैं। उन्हें प्राचीन वस्तुओं से न प्रेम है और न ही वे जानते हैं कि ये देश की ऐतिहासिक निधि हैं।

देश में जहाँ कहीं भी खुदाई का काम हो और पुरानी वस्तुएं निकलने लगे तो वहाँ खुदाई रोक देनी चाहिए और पुरावशेष-विभाग के व्यक्तियों से परामर्श करने के पश्चात् उनके निरीक्षण में खुदाई करनी चाहिए जिससे ऐतिहासिक सामग्री नष्ट न होने पाए। कहीं पुरानी मूर्ति है अथवा केवल बड़े-बड़े के टुकड़े हैं मिलते हैं अथवा मूर्तियाँ और मूर्तियाँ अपनी लम्बी मित्रा से जगई जा रही हैं, सभी अवस्थाओं में पुरावशेष का वैधानिक आवश्यक है कि क्या ये किसी बड़े अथवा छोटे नगर, प्रासाद, मन्दिर, समाधि आदि के अवशेष

हैं। इस सावधानी के न होने के कारण भारतवर्ष में रेल बनाने वालों ने हड़प्पा की लाकड़ों मन अवशिष्ट भित्तियों और भवनों की ईंटों को तोड़ कर रेल की पट्टी के अर्पण कर दिया। इसी प्रकार अन्य स्थानों में भव्य मूर्तियां तोड़ कर कंकर बना दी गईं। भारतवर्ष में जो विध्वंस १९वीं और २०वीं शताब्दी में हुआ है वह आगे न हो, इसका राष्ट्रीय शासन और जनता को पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

अन्य अद्भुतागारों के समान यहां भी चीन के पुराकाल की नाना वस्तुएं संगृहीत हैं। उपाध्यक्षा ने हमको विशेष रूप से हान् वंश की मूर्ति दिखाई। यह मिट्टी की बनी हुई है। इसकी विशेषता यह है कि यह बौद्ध मूर्ति है। हान् वंश में अर्थात् आज से २२ सौ वर्ष पूर्व बुद्ध मूर्ति का मिलना भारत और चीन के सम्बन्धों को तीन शताब्दी पूर्व का सिद्ध करता है। अभी तक यह धारणा है कि बौद्ध धर्म चीन में पहली शताब्दी में पहुंचा। इस मूर्ति के मिलने से यह धारणा अशुद्ध निश्चित होती है। इस मूर्ति पर तो कोई तिथि नहीं किन्तु इसके साथ ही मिली हुई मिट्टी की ईंटें हैं जो निश्चित रूप से २२ सौ वर्ष पुरानी हैं। यह समाचार भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों में सर्वत्र भेजना चाहिए।

शी-आन् में श्वेन्-च्वाङ्ग की खोपड़ी का छोटा सा मोती जैसा अंश चावलों में सुरक्षित रखा हुआ था। १९४२ में जापानियों ने इसको ले जाने का यत्न किया। अब यह नान्-चिङ्ग के अद्भुतागार में है।

चीन में नाना प्रकार की ईंटे बनती रही है। यहां हमारा ध्यान कुछ सुवर्ण-मण्डित बुद्ध-चित्रित ईंटों पर गया। इन ईंटों से किसी समय पूरा मन्दिर बना हुआ था।

चीन में एक सहस्र वर्षों से अर्थपत्र (currency notes) चले आ रहे हैं। आज चीन में पैसों, आनों, रुपयों के लिए किसी प्रकार के धातु का प्रयोग नहीं होता।

चित्रों के संग्रह में बांस और उसके पत्ते, सुवर्ण के बने हुए सूर्य तथा सूर्यपक्षी (phoenix), चन्द्र तथा शश उल्लेखनीय हैं।

एक कोष्ठ जनता की क्रान्तियों के प्रमाणों से भरा हुआ है।

अद्भुतागार से मन्दिर में आए। यहां ३२ भिक्षु हैं। सब छान्-त्सुङ्ग अर्थात् ध्यान-सम्प्रदाय के हैं। दस सहस्र मृन्मय मूर्तियां हैं। इन पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है।

नान्-चिङ्ग में २०० भिक्षु और २५० भिक्षुणियां हैं।

मन्दिरों के बाहर हमने केवल एक बौद्धसूत्र-मुद्रणालय का निरीक्षण किया। इसका नाम चिङ्ग-लिङ्ग अर्थात् नान्-चिङ्ग-बौद्धसूत्र-मुद्रणालय है। इसकी स्थापना १९२३ विक्रम में हुई थी। यहां छपाई मशीनें के बने अक्षरों से नहीं होती किन्तु प्राचीन चीनी ढंग से बूदे हुए काष्ठमुद्रणफलकों से होती है। एक लकड़ी के फट्टे पर, जो लगभग एक अंगुल मोटा होता है, दोनों ओर एक एक पृष्ठ खोद दिया जाता है। इस मुद्रणालय में मुद्रणफलकों की संख्या ८८ सहस्र है। पिछले वर्ष नान्-चिङ्ग की नगरपालिका ने इस

मुद्रणालय के भवन का जीर्णोद्धार करने के लिए २० सहस्र युवान् की सहायता दी थी । जितनी प्रतियों की आवश्यकता होती है उतनी ही छाप लेते हैं । पुस्तकें छाप कर संग्रह नहीं करते । यदि आज किसी पुस्तक का आदेश आया तो दस, पन्द्रह दिन में छाप कर दे देते हैं । यदि आदेश अधिक पुस्तकों का हुआ तो छपाई में अधिक समय लगता है । केवल प्रतिदिन बिकने वाली कुछ पुस्तकों की प्रतियां पहले से छाप कर रखते हैं । दैनिक प्रार्थना, उपासना के सूत्र, बौद्ध भिक्षुओं के जीवनचरित्र आदि कुछ ग्रन्थ हमको यहां मिल सके । जिस दिन हम गए वह दिन छुट्टी का था । सो केवल ११ मनुष्य नए काष्ठफलकों पर चीनी अक्षर खोद रहे थे । एक पृष्ठ लिखने और खोदने के लिए १२ युवान् व्यय पड़ता है ।

एक कोष्ठ मसीकोष्ठ है । इसमें दो मसीकुण्ड हैं । इनमें मसी ४० वर्ष पुरानी है । मुद्रणालय के स्वामी ने कहा पुरानी मसी की गन्ध अच्छी रहती है । उसकी बात सच है । नई मसी में से तो दुर्गन्ध आती है ।

छी-क्या स्स 𑀓𑀣𑀭𑀮- यह नान्-चिङ्ग का प्रसिद्ध मन्दिर है । वहित्र में हमको एक घण्टा लगा । छोटी सी पहाड़ी है । पर्वत के अनेक शिखर हैं । इनमें से पूर्व और पश्चिम के नाग तथा व्याघ्र शिखरों के नीचे कोई गुहा नहीं । जहां मन्दिर हैं वहां गुहाएं ही गुहाएं बनी हैं । कई तो बहुत छोटी हैं जिनमें केवल एक छोटी सी मूर्ति बनी हुई है । समस्त मूर्तियों की संख्या ५४० है । ये सुङ्ग, मिङ्ग काल तक की हैं । इस मन्दिर की स्थापना दक्षिणी ची वंश में ५४० विक्रम में हुई थी ।

मन्दिर पर्वत-पाद पर बना हुआ है और नान्-चिङ्ग से ३० क़ोशक दूर है । नागार्जुन और उनके शिष्य आर्यदेव की कृतियों के आधार पर यहां नए सम्प्रदाय की स्थापना हुई थी । अतः यह चीन के इतिहास में सुविख्यात है ।

मन्दिर में पंचमूर्ति स्तूप है और सहस्रबुद्धगिरि है । इस मन्दिर का संस्थापक बौद्ध पण्डित मिङ्ग-सङ्ग-शाओ 𑀭𑀮𑀳𑀴 था । मिङ्ग की विद्वत्ता तथा प्रतिष्ठा और उसके कार्य की महत्ता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि स्वयं सम्राट् काओ-सुङ्ग 𑀓𑀣 (चाङ्ग वंश) ने मिङ्ग के कार्य की प्रशस्ति शिलालेख के रूप में यहां लगवाई थी ।

इस विहार का नाम कई बार परिवर्तन हो चुका है । किन्तु अधिकांश छी-क्या स्स ही इसका नाम रहा है । यह विहार चीन के चार प्रतिष्ठित विहारों 𑀭𑀮𑀳𑀴 में से एक है । दूसरे तीन विहार ये हैं- चिङ्ग-चोउ में यु-ह्वेन् 𑀮𑀴 𑀮𑀴, ची-नान् में लिङ्ग-यन् 𑀮𑀴 और ध्वेन्-फाई में क्वो-छिङ्ग ।

जिस सम्प्रदाय का इस विहार में प्रारम्भ हुआ उसके तीन आधार ग्रन्थ हैं । इनमें से नागार्जुन का माध्यमिक शास्त्र प्रमुख है । ये शास्त्र महायान के सूक्ष्मा-सिद्धान्त के

मूल हैं। सर्वप्रथम कुमारजीव ने माध्यमिक शास्त्रों का अनुवाद किया था।

पञ्चभूमि स्तूप का निर्माण स्वी वंश के सम्राट् वन् ने ६५८ विक्रम में किया था। यह पञ्चभूमि शरीरस्तूप अनुपम शोभापूर्ण है। सम्राट् वन् ने अपने साम्राज्य में ८३ स्तूप बनवाए थे। इस स्तूप का जीर्णोद्धार अथवा पुनर्निर्माण दक्षिण थाङ्क वंश के काल में हुआ था। स्तूप ३० हाथ ऊंचा है और अष्टपार्श्व है। आठों पार्श्वों पर शाक्यमुनि के जीवन की आठ घटनाओं का चित्रण है। कोनों पर मल्ल तथा नाग उमरे हुए खुदे हैं।

प्रथम भूमि कमल के ऊपर प्रतिष्ठित है। प्रत्येक कमलदल पर देवता और पुष्प उत्कीर्ण है। स्तूप बहुत सुन्दर बना है। इसके उत्कीर्णालंकार बड़ी सावधानी तथा कौशल से बनाए हुए हैं। स्तूप के साथ ही सहस्र-बुद्धगिरि है। ३०० के लगभग गुफाओं की संख्या है। एक शिलालेख के अनुसार प्रथम गुहा ५४६ विक्रम में बनाई गई थी। यह वही समय है जब उत्तर वेद के सम्राटों ने युन्-काङ्क 𑖀 𑖁 की छः महती गुहाएं बनवाई थी। सबसे बड़ी गुहा जो पहाड़ी में से काटी गई है सोलह हाथ ऊंची और तेरह हाथ चौड़ी है। द्वार छः हाथ का है। मुख्य बुद्ध की मूर्ति आठ हाथ ऊंची है। मूर्ति के आसन की ऊंचाई भी दो हाथ है। पास दो उपासक बोधिसत्त्व खड़े हैं। इस पहाड़ी का पत्थर युन्-काङ्क के समान सुदृढ़ नहीं। बहुत खुर गया है। इस मूर्ति और दूसरी गुहाओं की अन्य मूर्तियों का उद्धार मिट्टी के लेप द्वारा किया गया था। पीछे जाकर १९०८ तथा १९३१ में वज्रलेप से मूर्तियों का जीवन बढ़ गया और उनकी रूपाकृति सम्यग् रूपेण भक्तजनों की दृष्टि और मन को संतुष्ट करने में समर्थ हुई। किन्तु साथ में यह भी सच है कि अब ऐतिहासिक विद्वानों को मूर्तियों का प्राचीन रूप दृष्टिगोचर न होगा। पत्थर के कोमल होने के कारण और उसमें पानी का प्रवेश हो सकने के कारण मूर्तिकार इस पत्थर में उतना सुन्दर और सूक्ष्म चित्रण न कर सके जितना युन्-काङ्क और लुङ्ग-मन् में।

उत्तर चीन में सहस्रों पर्वतोत्कीर्ण बौद्ध मूर्तियां हैं। किन्तु दक्षिणी चीन में श-शान् 𑖀 𑖁 में ये गुहाएं और मूर्तियां मिलीं सो ही अत्यन्त सन्तोष की बात है। दूसरी गुहाएं और मूर्तियां बहुत छोटी हैं।

श-शान् में ऐसी कोई भी गुहा नहीं जहां भिक्षु आकर बैठ सकते और ध्यान लगा कर लीन हो जाते।

पर्वत का सान्निध्य, नगर से दूरस्थिति तथा मन्दिर में अहिंसा के पालन के कारण प्रवेश करते ही पक्षियों का बहुचहाना यात्री का स्वागत करता है। पक्षी यहां प्रसन्नता-पूर्वक निवास करते और गाते हैं।

हमारे जाने पर भिक्षुओं ने किबाड़ खोले, घूप और चन्दन के छोटे छोटे टुकड़े थलाए।

ताइ-पिङ्ग क्रान्ति में इस मन्दिर को बहुत हानि पहुंची थी। १९५२ और १९५४

में नान्-चिङ्ग की नगरपालिका के निर्माण-विभाग ने मन्दिर के जीर्णोद्धार में सहायता की। हमको बताया गया कि लगभग बीस सहस्र युवान् व्यय किए। गुहाओं की संख्या ३०० के लगभग है और मूर्तियों की संख्या ५४०। मूर्तियां प्रायः नई नहीं हैं। मिङ्ग काल के पश्चात् कोई मूर्ति नहीं बनी, ऐसा दिखाई पड़ता है।

उत्तर वेइ 北 極 के समान यहां की मूर्तियों में रत्नमालाओं, आभूषणों आदि का अभाव है।

कुछ गुहाएं पर्वतपाद पर पञ्चभूमि स्तूप के साथ हैं। और कुछ पर्वत शिखर पर। सब मूर्तियां पत्थर की हैं। मिट्टी गारे की नहीं।

यहां केवल एक ही बड़ी गुहा है जहां दो चार व्यक्ति खड़े हो सकते हैं। सामने की दो मूर्तियां मूल रूप में हैं। इसका नाम है अमिताभ-गुहा। इसका निर्माण ५४३ विक्रम में हुआ था।

मन्दिर के सामने दो छोटे धारणी-स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर उष्णीषविजय-धारणी चीनी अक्षरों में उत्कीर्ण है। स्तम्भ श्वेत पत्थर के हैं और १९३६ में खड़े किए गए हैं। इनके अतिरिक्त पुराने धारणी-स्तम्भ भी हैं जो अधिकांश विकृत हो चुके हैं।

मन्दिर में २२ मिङ्ग रहते हैं।

१८-७-५५

नान्-चिङ्ग से शाङ्ग-हाइ ६, ७ घण्टे का मार्ग है। दोपहर को ११-४५ पर चल कर सायं ६-२४ शाङ्ग-हाइ पहुंच गए। पहले शाङ्ग-हाइ में अंग्रेज, फ्रांसीसी, अमरीकी, जापानी आदि अनेक विदेशी जातियों का राज्य था। जिस भाग में हम ठहरे वह फ्रांसीसियों के अधीन था। इसमें Cathay Hotel सुप्रसिद्ध १४ भूमि ऊंचा भवन है। हम नहीं भूमि पर ९१५, ९१६ संख्या के कोष्ठों में ठहरे। यदि पैदल चढ़ना उतरना पड़ जाए तो फिर दिन भर और व्यायाम की आवश्यकता न रहे।

शाङ्ग-हाइ चीन का बृहत्तम और समृद्धतम नगर है। जनसंख्या ६० लाख कही जाती है। उद्योगों से भरपूर है। यहां जलियान भी बनते हैं। विदेशों के साथ समुद्र व्यापार लगभग स्थगित है। वेइ-क्रऊ तथा त्सु-सुङ्ग शाङ्ग-हाइ के प्रसिद्ध मिङ्ग हैं। वेइ-क्रऊ भारत बर्मा आदि होकर आए हुए हैं। इन्हीं के उद्योग से १९४५ में अक्षोक का प्रसिद्ध सिंहस्तम्भ इनके मन्दिर के सामने की सड़क के बीच में बनाया गया। इस पर हृदयसूत्र के वाक्य लिखे हैं।

मिङ्ग वेइ-क्रऊ ने बतलाया कि अभी तक चीन में संस्कृत ग्रन्थ मिल सकती हैं किन्तु सरलता से नहीं। घोर परिश्रम करना होगा। इनके मन्दिर का नाम चिन्-आन् स्स है। वे त्रिबंश के समय का है अर्थात् १६, १७ सौ वर्ष पूर्व का है। यहां ३० मिङ्ग रहते हैं।

ताइ-थो, शाङ्ग-हाइ और ची-सा ये तीनों चीनी त्रिपिटक के संस्करण यहां प्रयुक्त होते हैं ।

आज प्रतिपदा है सो सूत्रपाठ चल रहा है । उपासक और उपासिकाएं पूजार्थ आए हुए हैं ।

महाकाल की मूर्तियां हाथी की झाल को हाथों से ऊपर उठाए हुए हैं । सूंड लटक रही है । यह कृत्तिवासस का अद्वितीय निरूपण है । चतुर्मुख ब्रह्मा हंसों पर आरूढ हैं । इस मूर्ति की विशेषता यह है कि चतुर्थं मुख सिर के ऊपर है ।

त्रिशूलधारी शिव नन्दी पर आरूढ हैं ।

दूसरी भूमि पर जाने के लिए हमको अपने जूते उतार कर कपड़े के कोमल जूते पहनने पड़े । चीनी कला, स्वच्छता, गहरे और चमकते रंगों का प्रेम यहां पदे पदे मनुष्य का आकर्षण करता है । यह कृत्रिम सौन्दर्य किस प्रकार संसार की शून्यता में ध्यानावस्थित होने के लिए सहायक होता होगा अथवा हो सकता है सो विचारणीय है । जिस प्रासाद-विलास को, इन्द्रियों के मोहमाया-जाल को शाक्यमुनि ने त्याग कर जंगलों की शरण ली थी, वही संसार का मोहन रूप बौद्ध देशों के पूजा-स्थानों का गौरव है । जनता का आकर्षण है । महायान विद्वानों का कहना है कि अकिंचनता, दरिद्रता आदि नीचे स्तर की बातें हैं । ये हीनयान अथवा स्थविरवाद के अनुकूल हैं किन्तु महायान इनसे ऊपर है । पर महायान के विद्वानों का यह वचन हीनयान के देशों में भी लागू नहीं होता । वहां भी भिक्षु सुख सम्पदा का जीवन व्यतीत करते हैं ।

वेङ्ग-फ़ऊ ने बतलाया कि शाङ्ग-हाइ में २०० मन्दिर हैं जिनमें २४०० भिक्षु और ८०० भिक्षुणियां रहती हैं । तथा अब भी प्रतिवर्ष ४००, ५०० भिक्षु दीक्षित होते हैं । यह सूचना कहां तक ठीक है सो हमको सन्देह होता है । सम्भवतः उन्होंने हमारे प्रश्न को नहीं समझा अथवा हमने उनके उत्तर को ठीक नहीं समझा ।

चिन्-आन् स्त के पश्चात् हम एक और मन्दिर में गए । इसका नाम है यू-फू स्त । यहां दलाइ-लामा तथा पञ्छेन्-लामा के आसन रखे हुए हैं । यह मन्दिर है जहां ची-सा की मूलप्रति सुरक्षित है । अच्छा बड़ा पुस्तकालय है । इसमें तुन्-ह्वाऊ की भी दो बलिताएं हैं । एक ग्रन्थ भारतीय सिद्धम् तथा चीनी दोनों लिपियों में लिखा है ।

यहां ६० भिक्षु रहते हैं । मन्दिर के भवन विस्तीर्ण और ऊंचे हैं जिनका परिमाण ४०० कोष्ठों के समान बताया जाता है । एक कोष्ठ का परिमाण १४ × १२ चीनी पाद माना जाता है (एक चीनी पाद = लगभग १४ प्रांगुल inch) ।

बसपि हमारे पास समय का अभाव सा है तथापि एक आधी निर्माणी देखनी ही चाहिए । इस विचार से हम सूती कपड़ों की रंगने और छापने की निर्माणी संस्था एक में गए । इस निर्माणी का संचालन सासन स्वयं करता है ।

इसका प्रारम्भ १९३१ में जापानियों ने किया था। उनके समय में श्रमिकों को १२ घण्टे तक काम करना पड़ता था। अब केवल ८ घण्टे।

समस्त कर्मचारियों तथा श्रमिकों की संख्या १३३० है। इनमें १७३ स्त्रियां हैं।

प्रतिदिन ३ लाख ६० सहस्र मान (meter) कपड़े की रंगाई अथवा छपाई होती है। रंगाई २ लाख ३२ सहस्र मान की और छपाई १ लाख २८ सहस्र मान की। छपाई में तीन चार अथवा पांच रंगों का प्रयोग होता है। दो सहस्र प्रकार के विभिन्न चित्र हैं जो बानों पर छपते हैं। ये चित्र इसी निर्माणी में पीतल के बेलनों पर खोदे जाते हैं। हमने स्वयं इनको खूदते हुए देखा है। चित्रों में कुछ पुराने हैं, कुछ नए हैं। उदाहरणार्थ, सूर्यपत्नी किसानों के पारिवारिक सुख का स्रोतक है।

चीन में विभिन्न निर्माणियों में औद्योगिक अनुभवों का आदान-प्रदान किया जा रहा है। इससे देश के उत्पादन में वृद्धि हो रही है।

निर्माणी में आदर्श तथा अग्रिम कार्यकर्ताओं का बड़ा आदर है। पिछले वर्ष इनकी संख्या ९५ थी। श्री वाङ्ग-च्यू-सङ्ग इस निर्माणी के साधारण श्रमिक थे। अपने श्रम और बुद्धिमत्ता से ये मुख्य अभियन्ता तथा उपाध्यक्ष के पद तक पहुँच गए हैं। पिछले वर्ष ये राष्ट्रीय लोक-महासभा के सदस्य चुने गए। एक और श्रमिक ने समय तथा श्रम बचाने के लिए ३२ सुधार सुझाए। इनमें से २८ स्वीकार किए गए। अब इनको ऊंचा अधिकार दिया गया है।

श्रमिकों की रक्षा तथा स्वास्थ्य के लिए निर्माणी का अनेक बार निरीक्षण किया गया है। जिन भागों में तापमान अत्यधिक था उनमें ताप को थोड़ा करने के लिए यन्त्र लगाए गए हैं।

इस निर्माणी में नए श्रमिक का वेतन ४७ युवान् प्रतिमास होता है और उच्चतम वेतन १०५ युवान्। निर्माणी की अध्यक्षता को २०४ युवान् प्रतिमास मिलते हैं। इस महिला की आयु ३४ वर्ष है। उपाध्यक्ष महोदय को, जिनकी आयु २९ वर्ष है, १६५ युवान् मिलते हैं।

चीन की निर्माणियों में श्रमिकों की आयु का माध्य ३०, ३२ से ऊपर नहीं पड़ता। कइयों में तो २४, २५ ही पड़ता है। अनुभवी श्रमिक बहुत थोड़े हैं। १५, २० प्रतिशत हैं।

निर्माणी के साथ पाठशाला, चिकित्सालय, मोट्टी और विश्रामस्थान लगे हुए हैं।

निर्माणियों के पास नई बस्तियां बनाई जा रही हैं। इनमें से हम चाओ-याङ्ग नव-ग्राम में गए। यहां ६००० परिवार रहते हैं। तीन तीन भूमि ऊंचे भवन हैं। छोटा परिवार एक कोष्ठ में तथा बड़ा दो कोष्ठों में रहता है। जो माताएं निर्माणी में काम करती हैं उनके बच्चों के लिए विशेष प्रबन्ध है। १४ मास तक के बच्चों के लिए निर्माणी

में ही शिक्षालाएँ हैं। १४ मास से ४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए शिक्षालाएँ अल्प बनी हैं, निर्माणी में नहीं। जो महिला नवग्राम दिखा रही थी वह हमको अपने निवास कोष्ठ में ले गई। १४ × १२ पाद का कोष्ठ, छोटी सी रसोई और छोटा सा एक और कोष्ठ जिसमें ४ बच्चे दो चौड़े फट्टों पर सोते थे। फट्टे एक दूसरे के ऊपर लगे हुए थे। स्थानाभाव से चीन में ऐसा प्रबन्ध किया जाता है। चीनी प्रथा का ही अंग्रेजों ने संयानों और जलयानों में प्रयोग किया है। उसकी ही अनुकृति हमारे देश में हुई है। हमने महिला से पूछा क्या आपके लिए यह स्थान थोड़ा नहीं, क्या आप अधिक स्थान लेने के लिए यत्न नहीं करतीं। इनके देशप्रेमपूर्ण उत्तर को सुन कर हृदय पसीज उठा— “हमारा देश अभी स्वतन्त्र हुआ है। हम अधिक नहीं मांग सकते।” गाँव सुन्दर है। सभी प्रकार की सामान्य जीवन की वस्तुएँ मिल जाती हैं। वायु स्वच्छ खुली है। रहन सहन के निरीक्षण के लिए बंध आते हैं। इस प्रकार के गाँव भारत में भी बनने चाहिए। किन्तु भारत में अधिक उष्णता होने के कारण घर अधिक खुले होने अभीष्ट हैं। सामान्य परिवार को तीन चार कोष्ठ तो अवश्य मिलने चाहिए।

२०-७-५५

प्रातः ६ बजे शाङ्ग-हाइ से चल कर ५ घण्टे में हाङ्ग-चोउ 卹 卹 पहुँचे। हाङ्ग-चोउ चीन का सुन्दरतम नगर है। यदि यहाँ उष्णता न होती तो यह चीन की स्वर्गभूमि होता। श्वेत और रक्तवर्ण कमलों से भरी हुई झीलें तथा चारों ओर पर्वत-मेखला नगर के सौन्दर्य का मुख्य कारण हैं।

हमारा विश्रान्तिगृह छोटी सी पहाड़ी के ऊपर बना है। इसके समीप ही एक सेनापति का मन्दिर है। यहाँ जनता सेनापति के गुणों का स्मरण करने के लिए आती है और श्रद्धा में झूपवती जलाती है।

इसके साथ ही एक वास्तविक मन्दिर है जिसमें अनेक छोटे छोटे तडाग हैं। इनमें काली पीली मछलियाँ तैरती हैं। बच्चे और बूढ़े, स्त्री और पुरुष इनको सागभाजी खिलाते हैं। पुण्यार्जन की दृष्टि से कई लोग मछलियाँ मोल लेकर यहाँ छोड़ जाते हैं।

चीनी इतिहास में हाङ्ग-चोउ का पश्चिम सरोवर सुन्दर दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। भूमि और जल दोनों का ही दृश्य मनोहारी है।

हाङ्ग-चोउ के कासार विश्वविख्यात हैं। पश्चिम कासार में दो द्वीप हैं। द्वीप में भी छोटी झील है। इस झील में स्वस्तिकारूप मण्डप बना हुआ है। मण्डप के पास ही चीन चन्द्र-प्रतिबिम्बी स्तूप है। इन स्तूपों में से दीपक का प्रकाश जल में पड़ता है। दीपक स्तूप के अन्दर दृश्यते हैं। स्तूप के गोल छिद्रों पर रक्तवर्ण पत्र लगा देते हैं। पूर्णिमा के दिन जनता बड़ी संख्या में आती है। वन्तकथा है कि ये तीन स्तूप महाकाल झूपपात्र के

पांव थे। झूपपात्र जल में गिर गया और पांव बच गए।

हाङ्ग-चोउ दक्षिणी स्वी वंश की कुछ समय तक राजधानी रह चुका है। किन्तु उनके कोई विशेष स्मारक चिह्न नहीं बचे। हाङ्ग-चोउ बौद्ध धर्म का समृद्धतम नगर है। बाङ्ग वंश के अन्त में और पञ्चवंश की अवधि में यह प्रदेश लड़ाई झगड़ों से बचा रहा।

पङ्गवंश के काल से अब तक के बौद्ध स्तूपों और मन्दिरों के अवशेष बचे हुए हैं।

पञ्चवंश के अन्तिम दिनों के बू-य्ये 𑖀 𑖁 मण्डल का राजा ध्येन्-थाइ सम्प्रदाय का अनुयायी था। अतः हाङ्ग-चोउ के अवशेष अधिकांश ध्येन्-थाइ सम्प्रदाय के अवशेष हैं। ९९२ विक्रम में स्स-मिङ्ग 𑖂 𑖃 (निम्पो) के मिङ्ग त्स-लिन् 𑖄 𑖅 कोरिया गए और वहां से ध्येन्-थाइ दर्शन के ज्ञान को अपने साथ लाए। कोरिया के महाराज ने उनके साथ अपने विद्वान् दार्शनिक ली-जन्-ज को भेजा।

बू-य्ये के महाराज छ्येन् 𑖆 ने कोरिया के दार्शनिक और उनके साथियों के लिए विशेष भवन की स्थापना की।

यद्यपि ध्येन्-थाइ का दर्शन चीन, कोरिया और जापान में बहुत प्रसिद्ध और सफल हो चुका था किन्तु आचार्य ध्येन्-थाइ के ग्रन्थों का अभी तक त्रिपिटक में समावेश नहीं हुआ था। अनेक यत्न किए गए किन्तु विफल रहे। तब च बू 𑖇 𑖈 ने अवलोकितेश्वर 𑖉 𑖊 से प्रार्थना की और अपना बाहु जला छोड़ा जिससे कुछ दिनों के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। जब यह समाचार सम्राट् के पास पहुंचा तब १०८१ विक्रम में सम्राट् की अनुमति से आचार्य ध्येन्-थाइ के ग्रन्थों का समावेश त्रिपिटक में किया गया। ४२७ वर्षों के पश्चात् समावेश होना असाधारण यत्नों का फल था।

लेङ्ग-कङ्ग स्तूप 𑖋 𑖌 - यह स्तूप संसार के विशेष स्तूपों में से है। १०३२ विक्रम में बू-य्ये के राजा छ्येन्-यू 𑖍 𑖎 ने इसका निर्माण कराया था। ८४००० ईटों में सर्वतथा-गताधिष्ठान-हृदयगुह्यधातुकरण्डमुद्राधारणी 𑖏 𑖐 की एक एक प्रति रखी गई और भगवान् बुद्ध के प्रति समर्पण की गई। स्तूप पांच भूमि ऊंचा था। अष्टपाश्र्व था। पहली भूमि का प्रत्येक पार्श्व २४ हाथ था।




मिङ्ग 𑖑 वंश के अन्त में इस स्तूप में आग लगी। काष्ठमय सीढ़ी और छतों के अंश जल गए। ईटों में रखे हुए अनेक धारणी-लिखित पत्र भी अवश्य जले होंगे। जीर्णोद्धार के अभाव में स्तूप की दशा बहुत खीर्ण होती गई और अन्त में १९२४ में समस्त स्तूप नीचे गिर पड़ा। एक एक ईट बिखर गई और धारणी-लिखित पत्र दृष्टिविधर हुए। विद्वज्जगत् में सनसनी फैल गई।













जब हम २१-७-५५ को यहां पहुंचे तो बताया गया कि अब ये ईटें और सूत्र कहीं नहीं मिलते। फिर भी एक ईट और धारणी-लिखित पत्र की प्रति अद्भुतानगर में देखी।

ईंट भस्मवर्ण है। इसका परिमाण १५ × ६३६ × २५६ प्रांगुल है। ६३६ × २५६ पार्श्व में गोल छिद्र है जिसका व्यास १ प्रांगुल और गहराई ४५६ प्रांगुल है। धारणी-लिखित पत्र का परिमाण २३६ प्रांगुल चौड़ाई और ८२ प्रांगुल लम्बाई है।






इस स्तूप का कौशेय में बना हुआ चित्र हमने हाऊ-चोउ के प्रसिद्ध कौशेय आपण से लिया।

बू ज्ये के राजा छयेन्-शू की महाराणी ह्वाऊ ने इस स्तूप का वर्णन लिखा है। इस स्तूप में से अनेक शिलालेख मिले हैं। इनमें से एक अञ्जुतागार में है और शेष की छापे हमको एक पुराने आपण से मिली।

लिङ्ग-यिन्-स्स    - बू ज्ये मण्डल में पांच प्रसिद्ध विहार हैं-

- (१) चिङ्ग शान् स्स   
- (२) लिङ्ग-यिन् स्स
- (३) चिन्-त्सु स्स   
- (४) ध्येन्-थुङ्ग स्स   
- (५) आ-यू-वाङ्ग स्स   

लिङ्ग-यिन् विहार के महन्त ता-याइ ने बड़े प्रेम से इसको अपने विहार का पूर्ण इतिहास दिया।

भारतीय पण्डित ह्वी-ली   ने ३८३ विक्रम से ३९१ तक इस विहार की स्थापना की थी। लिङ्ग-यिन् का इतिहास १० पुस्तको में वर्णित है। समीप की पहाड़ियों और गुहादियों का भी इसमें वर्णन है। विहार के सामने की पहाड़ी का नाम फ्रेइ-लाइ-फ़ङ्ग    है। फ्रेइ का अर्थ उड़ना और लाइ का अर्थ आना। पहाड़ी की आकृति मगध देश के प्रसिद्ध गुध्रकूट के सदृश है। इसको देख कर ह्वी-ली ने आश्चर्य से कहा था—यहां गुध्रकूट कैसे उड़ कर आ गया। गुध्रकूट में दो बानर तपस्या करते थे एक कृष्णवर्ण का, दूसरा श्वेतवर्ण का। यह सचमुच गुध्रकूट है अबवा नहीं इसकी परीक्षा करने के लिए ह्वी-ली ने बानरों को बुलाया और वे सचमुच ही गुफाओं में से बाहर निकले। सो निश्चय हुआ कि यह गुध्रकूट ही है।

मन्दिर बहुत विशाल है। अब भी ३०, ४० भिक्षु यहां रहते हैं। महन्त ता-याइ जनता के प्रतिनिधि के रूप में प्रान्तीय राजनैतिक सभा के सदस्य हैं। नए साम्यवादी संविधान के पारण के अवसर पर इन्होंने माओ त्स-तुङ्ग को अपने बनाए हुए चित्र भेंट किए थे। हमको भी इन्होंने दो चित्र भेंट किए हैं जिनमें नए संविधान का स्वागत, उसके उद्देश्यों का अभिगन्धन और राष्ट्रपति माओ के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित की गई है। इन चित्रों से मन्दिरों तथा क्लब के अधिकारियों के सम्बन्धों का अच्छा परिचय होता है। चलने से पूर्व ता-याइ हमको उस मण्डप में ले गए जिसमें बैठ कर आपने भी नेहरू के साथ विश्व-

शान्ति पर बातचीत की थी ।

इसी विहार में पहले यन्-शोउ ५६ ३३ रहा करते थे । इन्होंने सौ लक्षणों में त्सुङ्-चिङ्-लू ३६ ३६ का संकलन किया था । यह समन्वय-ग्रन्थ है । इसमें ह्या-यन्, वेइ-शा ५६ ३६, ध्येन्-चाइ ५६ ३६ और अन्य बौद्ध सम्प्रदायों के दर्शनों का समन्वय किया गया है ।

यन्-शोउ समन्वय निम्न चार वाक्यों में संगृहीत है—

(१) यदि व्यक्ति केवल ध्यान सम्प्रदाय का अनुयायी हो और सुखावती सम्प्रदाय का नहीं तो ५६ उसका अधःपतन होगा । मानसिक आधियां उसका हरण कर ले जाएंगी ।

(२) यदि ध्यान सम्प्रदाय का अनुयायी न हो और केवल सुखावती का हो तो दस सहस्र में से प्रत्येक अमिताभ के सामने साक्षात् उपस्थित हो सकेगा ।

(३) यदि ध्यान और सुखावती दोनों का अनुयायी हो तब वह शृंगधारी व्याघ्र के समान होगा । इस जीवन में वह जनता का नेता होगा और भावी जीवन में महापुरुष अवस्था बृद्ध बनेगा ।

(४) यदि न ध्यान का और न सुखावती का अनुयायी हो तब अयोमयी शय्या और कांस्य स्तम्भ उसके भाग्य में होंगे । दस सहस्र कल्पों और एक सहस्र जन्मों तक उसको कोई शरण न देगा ।

इस प्रकार यन्-शोउ ने ध्यान और सुखावती का समन्वय किया । इसका अपना जीवन शान्तिमय था । युवावस्था में यह कर-समाहर्ता के पद पर था किन्तु जो कर इकट्ठा होता था उस कर से बन्दी पशुओं को छुड़ा कर स्वतन्त्र कर दिया करता था । जब इस अपराध में मृत्युदण्ड घोषित किया गया तब यह सर्वथा शान्त और अब्याकुलचित्त रहा । इमकी अब्याकुलता का समाचार सम्राट तक पहुंचा । उसने यन्-शोउ को दण्ड-विमुक्त कर दिया और तब से यन्-शोउ भिक्षु बन गया ।

फ्रेइ-लाइ-फ़ू के नीचे एक और ह्या-ध्येन्-चू स्स विहार है जो ध्यान के लिन्-ची सम्प्रदाय का सुविस्थात स्थान रहा है । यहां स्वी काल में चन्-न्वान् ५६ ३६ इस विहार के अध्यक्ष थे । ये सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र के प्रकाण्ड प्रवक्ता थे । दिनों और रातों तक दर्शन-वर्षा में व्यग्र रहते थे ।

चन्-न्वान् ने ६५२ विक्रम में ध्येन्-चू ५६ ३६ विहार का निर्माण किया था । ध्येन्-चू विहार के तीन स्थान हैं । एक नीचे, दूसरा मध्य में और तीसरा ऊपर । तीनों ही विहार ध्यान, समाधि, विनय आदि के विद्वानों, आचार्यों और साधकों के कारण सुप्रसिद्ध हैं ।

चाओ-निङ्-कू स्स— ९९३ विक्रम में इस विहार की स्थापना हुई । १०४७ से १०७८ तक यहां अवतंसक-सुद्ध-जीवन नाम का धार्मिक संघ स्थापित किया गया । इस संघ में साधारण जनता और उच्च कुलों के लोग सम्मिश्रित हुए । इन्होंने साकावों में

श्वेत कमल लगाए और अपने संघ को श्वेत-कमल-संघ का नाम दिया । शिलालेखों में इस संघ का पूरा वर्णन है ।

यह बिहार हाऊ-चोउ नगर में ही स्थित है ।

कामो-की स्तूप 𑀓 𑀣 𑀭 - इस बिहार की स्थापना ९८४ में की गई । चिङ्ग-खेन् 𑀓 𑀣 के कारण यह बिहार प्रसिद्ध हुआ । चिङ्ग-खेन् ने अबतंसक-सम्प्रदाय की स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की । कोरिया से ई-थ्येन् 𑀓 𑀣 विद्वान् पण्डित अबतंसक का अध्ययन करने के लिए इस बिहार में आए । ये नीले पत्र पर सुवर्ण-लिखित अबतंसक-सूत्र के साठों खण्डों की ३०० प्रतियां कोरिया को अपने साथ ले गए ।

सू-की स्तूप 𑀓 𑀣 𑀭 - इस बिहार की स्थापना यन्-शोउ ने की थी । इसमें बुद्ध-शरीर है ऐसा कहा जाता है । इसके सामने से छघेन्-थाऊनदी 𑀓 𑀣 बहती है । स्तूप की दो भित्तियां हैं एक अन्दर की, एक बाहर की । अन्दर की भित्ति में अनेक शिलालेख लगे हैं जिनमें ४२ अध्याय का सूत्र उत्कीर्ण है । प्रत्येक अध्याय की अनुकृति अलग अलग व्यक्ति ने की है । ११८९ विक्रम में वज्रच्छेदिका-सूत्र और क्वान्-यिन् की मूर्ति उत्कीर्ण की गई थी । स्तूप तेरह भूमि ऊंचा है और अष्टपाद्वर्ष है । इसके शिखर पर चिन्तामणि है । स्तूप विशाल और मनोहर है ।

हाऊ-चोउ के विख्यात विद्वानों में महान् आचार्य चू-हुङ्ग 𑀓 𑀣 भी हैं । इनका जन्म हाऊ-चोउ मण्डल में हुआ था । चू-हुङ्ग के जीवन में एक बूढ़ा स्त्री ने परिवर्तन किया । यह स्त्री प्रतिदिन सहस्रों बार बुद्ध का नाम जप करती थी । चू-हुङ्ग ने उससे जप का प्रयोजन पूछा । उसने कहा- मेरे पति सदा मन में बुद्ध के नाम का जप करते थे और जब उनका मृत्यु-समय आया तो अपने सब मित्रों को आदरपूर्वक नमस्कार किया और बिना किसी कष्ट के इस लोक से सिद्धार गए । तब से मैं भी बुद्ध के नाम का जप करती हूँ ।

यह सुन कर चू-हुङ्ग ने अपने पटल पर चार मोटे अक्षर लिखे- जन्म, मृत्यु, घटना, श्वाधि । और सुखावती की ओर अपना ध्यान लगाया । बीस वर्ष की आयु में चू-हुङ्ग का विवाह हुआ । एक पुत्र का जन्म भी हुआ किन्तु वह बहुत दिन न जिया । दो वर्ष के पश्चात् उसके पिता की मृत्यु हो गई और दो वर्ष पश्चात् पत्नी भी चल बसी । चू-हुङ्ग की पुनर्विवाह की इच्छा न थी, किन्तु कुल-विच्छेद के भय से माता ने आग्रह किया । दो वर्ष व्यतीत होने पर माता का देहान्त हो गया । आपत्तियों की परम्परा ने चू-हुङ्ग के मन को वैराग्यपूर्ण कर दिया । ३१ वर्ष की आयु में वह भिक्षु बन गया । अध्ययन और ध्यान में बहुत से वर्ष बिता कर उसने एक बिहार की स्थापना करनी चाही । जनता बहुत प्रसन्न हुई । जनता ने उसकी सहायता की और चू-युन्-कान् 𑀓 𑀣 पर्वत के नीचे युन्-छी स्तूप 𑀓 𑀣 बिहार की स्थापना हुई । चू-हुङ्ग की पत्नी भी ४७ वर्ष की आयु में

भिक्षुणी बन गई। चू-हुइ का घर भिक्षुणी-विहार बन गया। दूर-दूर से भिक्षुणियां धार्मिक शिक्षा के लिए आती थीं। ८१ वर्ष की आयु में १६७२ विक्रम में चू-हुइ का देहान्त हुआ। पश्चिमभूमिज होकर बुद्ध का नाम जपते हुए शान्तिपूर्वक प्राण-निष्क्रमण हुआ। उनकी पत्नी का देहान्त एक वर्ष पूर्व हो चुका था।

चू-हुइ की मुख्य शिक्षा सुखावती की थी। वे ध्यान-सम्प्रदाय के उच्छृंखल मार्ग के पक्ष में थे। ध्यान और सुखावती दोनों के सम्मिश्रण के पक्ष में थे। मन ध्यान में लगा हो और व्यवहार में सुखावती हो यह उनकी कामना थी। सुखावती-सूत्र का निर्वचन वे अवतंसक दर्शन के अनुसार करते थे। उनके अनुसार शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म सुखावती के प्रचार के लिए था। यह शील, ध्यान और प्रज्ञा तीनों का सम्यक् पालन तथा धारणियों का जप जीवन के लिए आवश्यक मानते थे। इस प्रकार उन्होंने समस्त बौद्ध सम्प्रदायों और उपदेशों को एकसूत्रबद्ध किया। व्यावहारिक जीवन में उन्होंने बुद्ध और क्खु-फू-त्स (Confucius) के सिद्धान्तों में भी समन्वय किया। चू-हुइ का प्रभाव अभी तक चीन के जीवन में विद्यमान है।

श-यू तुइ 石叢洲 - यह प्राकृतिक गुहा है। बारह हाथ चौड़ी और पांच हाथ गहरी। इसमें ५१६ अर्हतों के उत्कीर्ण होने का अभिलेख है। मध्य में शाक्यमुनि बैठे हैं। दोनों ओर दो अर्हत्, दो बोधिसत्त्व तथा दो वज्रदेव हैं। ऊपर की ओर दो उड़ती हुई अप्सराएं हैं। शिलालेखों के ऊपर लाख का लेप है। अधिकांश मूर्तियां पञ्चवंशायुग की हैं। एक अभिलेख के अनुसार मूर्तियों की संख्या ७०० से अधिक है।

अम्-स्या तुइ 庵山洲 - यह श-यू गुहा से लगभग चार ली की दूरी पर है। गुहा का नाम शिला पर लिखा हुआ है। गुहा प्राकृतिक है। अवलोकितेश्वर के साथ महास्थान-प्राप्त की मूर्ति भी उत्कीर्ण है। अवलोकितेश्वर के दाएं हाथ में नम्र-वृक्ष की शाखा और बाएं में पुण्यबलपूर्ण घट है। महास्थानप्राप्त ने मुकुट पहना हुआ है। मुकुट पर बुद्ध की मूर्ति है। महास्थानप्राप्त के बाईं ओर सप्तभूमि और अष्टपाशर्व स्तूप उत्कीर्ण हैं। स्तूप का नाम एकसहस्र-अधिकारी स्तूप है क्योंकि इस पर अनेक अधिकारियों की मूर्तियां, नाम और उपाधियां खुदी हैं। इस गुहा की यही सब से बड़ी विशेषता है। गुहा के अन्त में शाक्यमुनि के पास मायूरी-विद्या-राज 乳 乳 乳 王 की मूर्ति है।

फेइ-साइ-कऊ - इस पर्वत में अनेक प्राकृतिक गुहाएं हैं। इसके नाम की व्युत्पत्ति हम पहले कर आए हैं। मगध में स्थित गुध्रकूट के साथ इस गिरि का सादृश्य देखना कुछ कठिन नहीं।

यहां चार बड़ी गुहाएं हैं। गुहाओं के सामने से एक छोटी सी नदी निकलती है। नदी के साथ साथ पहाड़ी पर जहां कहीं भी स्थान मिला वहां ही बौद्ध मूर्तियां बना दी गई हैं। यह कार्य पञ्चवंश युग में आरम्भ हुआ और बुद्ध तथा ज्येष्ठ वंश तक चलता

रहा । शिलालों पर अनेक लेख हैं किन्तु अधिकांश घिस चुके हैं और पढ़े नहीं जा सकते ।
ये गुहाएं दक्षिणी चीन के इतिहास में विशेष महत्त्व रखती हैं ।

अब हम चारों गुहाओं का वर्णन करेंगे—

(१) छिङ्ग-लिन् तुङ्ग 青林洞

(२) लोहन्-तुङ्ग 羅漢洞

(३) लुङ्ग-हुङ्ग तुङ्ग 龍祖洞

(४) श-शू तुङ्ग 射旭洞

छिङ्ग-लिन् गुहा में उभरा हुआ वैरोचनमण्डल उत्कीर्ण है । इस गुहा में १००८ विक्रम तिथि मिलती है । यह तिथि फ्रेड-लाइ-फ़ङ्ग शिलालेखों में सबसे पुरानी है । इस गुहा की छत बहुत नीची है ।

लुङ्ग-हुङ्ग गुहा के द्वार के नीचे इस कथा का चित्रण है कि श्वेताश्वों पर भारत से बौद्ध सूत्र चीन लाए गए । गुहा की चौड़ाई बीस पाद के लगभग है । छत त्रिकोण है ।

इसके साथ ही एक छोटी गुहा है जिसका नाम श-शू गुहा है । छत में प्रकाश आने के लिए छिद्र है । इसी कारण इसका नाम श-शू पड़ा । श-शू का अर्थ है प्रातः-सूर्य का भेदन ।

गुहाओं के बाहर और आसपास सैकड़ों शाक्यमुनि, अमिताभ, मैत्रेय, सिंहासुद्ध वैश्रवण, अवलोकितेश्वर, देव उष्णीषविजय तथा वज्रपाणि आदि की मूर्तियां बनी हैं ।

अधिकांश मूर्तियां च-य्वेन् युग के २४वें और २९वें वर्ष के बीच की हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि य्वेन् के विजेताओं ने सुङ्ग की पुरानी राजधानी में असंख्य मूर्तियां बना कर नए वंश के लिए पुण्यार्जन किया है । (हाङ्ग-चोउ सुङ्ग वंश की राजधानी रह चुका है) । इन मूर्तियों में से कुछ को सेनापति पो-यन् 伯 賢 ने बनवाया था और कुछ को मोंगोल भिक्षु याङ्ग-त्येन्-चन्-च्या 楊 琮 賢 謙 ने । यह भिक्षु कयाङ्ग-नान् मण्डलों का अध्यक्ष था ।

सुङ्ग और य्वेन् की कला में बहुत अन्तर है । सुङ्ग-कला याङ्ग की उत्तराधिकारिणी है किन्तु य्वेन् शोट और मोंगोल कला है । यह आश्चर्य है कि इस समय के उत्तर चीन में य्वेन् कला की बहुत थोड़ी मूर्तियां मिलती हैं ।

इस प्रकार लिङ्ग-यिन् स्स के आसपास अनेक मूर्तियां पहाड़ी में से लोदी गई हैं । यहां गारे मिट्टी की मूर्तियां नहीं हैं । यहां हमने १०वीं, ११वीं शताब्दी की देवनागरी लिपि में ओं मणि पद्ये हूं लिखा देखा । इसका चित्र भी लिया है ।

उष्णीषविजय की मूर्ति 佛 頂 尊 像 — नदी के पर्वतानीक पर्व-स्तूप का रूप है । और इसके नीचे उष्णीषविजय की मूर्ति । मूर्ति और स्तूप के बीच में संस्कृत के अक्षर हैं । उड़ती हुई अप्सरारों बलि का उपहार दे रही हैं ।

फ्रेड-लाइ-फ़क कला की निम्न विशेषताएं हैं—

(१) पहली बार १८ अर्हतों का निरूपण ।

(२) पू-ताइ के रूप में मंत्रेय की अभिव्यक्ति । इससे पहले इस रूप में अभिव्यक्ति और किसी स्थान पर नहीं मिलती ।

(३) उष्णीषविजय और वज्रपाणि की, जो भोट और मोंगोल पूजा के विशेष पात्र हैं, प्रथम मूर्तियां ।

(४) ध्यान-सम्प्रदाय के छः आचार्यों की मूर्तियां ।

(५) शाक्यमुनि की मार-दमन-मुद्रा । सामान्यतः यह मुद्रा चीनी कला में नहीं मिलती ।

बिद्ध-शान् स्त 卐 卍 — ताइ-पिङ्ग क्रान्ति में यह विहार सर्वथा भस्मसात् कर दिया गया था । इसका पुनर्निर्माण हुआ पर पूर्णरूप से नहीं । भवन के मध्य में मुमेरु-वेदी है और इस पर बुद्ध-त्रिमूर्ति है । लोकपाल-भवन के बाईं ओर बहुत बड़ा घण्टा रखा है । यह घण्टा १४६० विक्रम में बना था । इसके खुले हुए भाग का व्यास चार हाथ है । इसके शिखर पर नाग है । कन्धों पर कमल उत्कीर्ण है । चारों पाश्वों पर लिखा है—

(१) साम्राज्य सदा के लिए सुस्थिर रहेगा 卐 卍 永 固

(२) धर्मचक्र सदा प्रवृत्त रहेगा 卐 卍 常 轉

(३) बुद्ध के सूर्य का प्रकाश बढ़ता रहेगा 卐 日 增 輝 इत्यादि ।

स-याङ्ग गिरि 卐 卍 卍 — बुद्धपाल उत्तरभारत के काबुल नगर का निवासी था । जब उसको पता लगा कि बू-थाइ पर्वत में छिद्ध-त्याङ्ग-शान् पर मञ्जुश्री 文殊 師 子 का निवास है तब वह काबुल से यहां आया । ७३३ विक्रम में बू-थाइ-शान् के दक्षिण में स्थित स-याङ्ग गिरि पर पहुंच कर वह बहुत प्रसन्न हुआ और पर्वत को नमस्कार करके कहने लगा— तबामत के निर्वाण के पश्चात् महान् बोधिसत्त्व मञ्जुश्री ही सत्त्वों की रक्षा कर रहे हैं । किन्तु आठ बाधाओं के कारण मैं उनके साक्षात् दर्शन नहीं कर सका । मद्दस्थल को पार करके आप को नमस्कार करने के लिए मैं यहां पहुंचा हूं । दया करो और मुझे अपने दिव्य रूप का दर्शन दो । जब नमस्कार करके भूमि से उठा तब उसने पहाड़ से उतरते हुए एक बूढ़े मनुष्य को देखा । इस बूढ़े पुरुष ने संस्कृत में कहा— मैं तुम्हारी श्रद्धा से प्रसन्न हूं किन्तु इस देश के लोग पापकर्मों का संग्रह कर रहे हैं, भिक्षु भी शील का उल्लंघन करते हैं । जम्बुद्वीप में उष्णीषविजयधारणी नाम का सूत्र है जो पापों का मार्जन करने में समर्थ है । क्या तुम इस सूत्र को साथ लाए हो । बुद्धपाल ने उत्तर दिया मेरी कामना तो मञ्जुश्री के साक्षात् दर्शन करने की थी इसलिए मैं सूत्र साथ नहीं लाया । बुद्ध पुरुष ने कहा— यदि तुम सूत्र नहीं लाए तो तुम्हारा यहां आना व्यर्थ है । तुम जम्बु-द्वीप लौट जाओ और उष्णीषविजयधारणी लेकर आओ । तभी मैं तुमको बतलाऊंगा कि

तुमको मञ्जुश्री के कहां दर्शन होंगे । बुद्धपाल को बड़ी प्रसन्नता हुई किन्तु जैसे ही उसने अपना सिर उठाया बुद्ध पुरुष लोप हो गया । बुद्धपाल भारत लौट आया और धारणी लेकर सात वर्ष के पीछे ७४० विक्रम में चीन लौटा । इस समय महाराज काओ-त्सुङ्ग राज्य करते थे । इन्होंने बुद्धपाल से सूत्र ग्रहण किया और भारतीय पण्डित दिवाकर तथा अन्यो से चीनी भाषा में अनुवाद कराया तथा बुद्धपाल को कौशेय के ३००० गोल धान दिए । बुद्धपाल के आंसू निकल आए और गद्गद् ध्वनि से उसने महाराज से प्रार्थना की—भगवन् सर्वकल्याण के लिए सस्कृत मूल लौटा दीजिए । महाराज ने अनुवाद अपने पास रख लिया और मूल लौटा दिया । बुद्धपाल मूल सूत्र साथ लेकर वू-थाइ-शान् की वज्रगुहा में प्रवेश करके लीन हो गया ।

तब से उष्णीप-विजय-धारणी समस्त चीन में फैल गई ।

वू-थाइ-शान्- शान्-शी प्रान्त में वू-थाइ-श्येन् के उत्तरपूर्व में १२० ली दूर वू-थाइ-शान् पर्वत है । इसके इतिहास के लिए चार आवश्यक ग्रन्थ हैं । इनमें से दो विशेष उल्लेखनीय हैं—

(१) छिङ्-त्याङ्ग के प्राचीन अभिलेख (दो खण्ड)

सकलनकर्ता— ह्वी-श्याङ्ग (थाङ्ग वंश का)

(२) छिङ्-त्याङ्ग के विस्तृत अभिलेख (तीन खण्ड)

सकलनकर्ता— यन्-ई (सुङ्ग वंश १११७ विक्रम)

इनके अतिरिक्त ९वीं और ११वीं शताब्दी के जापानी ग्रन्थ भी हैं ।

वू-थाइ-शान् का दूसरा नाम छिङ्-त्याङ्ग-शान् भी है ।

यहां ग्रीष्म ऋतु के यौवन में भी ठण्ड रहती है । इसका कारण युग युगान्तरों से संगृहीत हिम है ।

वू-थाइ का अर्थ पञ्च-शृंग है । छिङ्-त्याङ्ग नाम अवतंसकसूत्र की टीका से आया है । इस सूत्र के अनुसार यह मञ्जुश्री का निवास है ।

चीन में पू-थो-शान् अवलोकितेश्वर का निवास है । ओ-मी-शान् समन्तभद्र का, और वू-थाइ-शान् मञ्जुश्री का ।

मञ्जुश्री की उपासना का प्रारम्भ थाङ्ग काल में हुआ । वू-थाइ की प्रसिद्धि भारतवर्ष तक फैल गई । तुन्-झाङ्ग में भी वू-थाइ-शान् का चित्तिचित्र विद्यमान है । बुद्धपाल के ८५ वर्ष पश्चात् भारतीय आचार्य अमोषवज्र ने यहां आकर बिहारों की स्थापना की ।

बुद्धपाल के १०० वर्ष पश्चात् यहां अवतंसकसूत्र की महती टीका लिखी गई और तब से थ्येन्-थाइ-शान् के समान यह अवतंसक दर्शन का केन्द्र बन गया । यहां अनेक

जापानी विद्यार्थी और भिक्षु आते रहे हैं। उन्होंने भी इस पर्वत के वर्णन लिखे हैं।

अवतंसकसूत्र की टीका में इस पहाड़ का विस्तार ५०० ली दिया है। बखशेसर-सूत्र का अनुसरण करते हुए पांचों शांनों का निम्न प्रकार वर्णन है— प्रत्येक मृग एक तथायत का आसन है और मञ्जुश्री की पांच शिखाओं में से एक का प्रतिनिधि है।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	मध्य
अ	र	प	स	न
अशोभ्य	रत्नसम्भव	प्रमितायु	अमोघश्री	विरोचन

बू-बाइ-सान् में दो प्रकार के भिक्षु रहते हैं। एक नीलाम्बर और दूसरे पीताम्बर। नीलाम्बर भिक्षु सामान्य बौद्ध भिक्षु हैं किन्तु पीताम्बर लामा हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय के पास दस बड़े विहार हैं।

ता-बा-ध्वेन् स्स 大 佛 塔 寺 - प्रसिद्धि है कि यहां प्राचीन समय में भारत के सम्राट् अशोक का बनाया हुआ स्तूप था। यह स्तूप दशकों की दृष्टि से लुप्त होकर भूमि के नीचे चला गया। अशोक ने जो ८४००० स्तूप बनाए थे उनमें से यह एक था।

बू-बाइ-सान् की प्रसिद्धि के अनेक कारण हैं। इनमें से एक कारण यह भी है कि चाक काल के विद्वान् छङ्क-स्वान् 僧 徒 ने अवतंसकसूत्र पर एक महती टीका की रचना यहां की थी। अनेक स्वामी की यात्रा करके छङ्क-स्वान् ८३३ विक्रम में बू-बाइ-सान् में आ बसे थे और अपना शेष जीवन अवतंसक के अध्ययन और प्रवचन में लगा दिया था। उसकी टीका लिखने के लिए एकान्त स्थान की आवश्यकता थी जहां वे निर्बिघ्न संसार से अलग होकर दिनरात लगा कर यह काम पूरा कर सकें। ८४१ विक्रम में उनके लिए अलग भवन बनाया गया। प्रतिदिन प्रातः मञ्जुश्री को नमस्कार करके नई प्रतिमा से प्रेरित हो कर वे तुमिका हल में उठाते और किसी प्रकार की बाधा और बिघ्न, आलस्य अथवा लज्जा, शंका अथवा दुर्लभता के बिना सूत्र के जटिल और गम्भीर विचारों का स्पष्टीकरण लगातार तीन वर्षों तक करते गए। टीका की पूर्ति पर चारों ओर से श्रावकों और भिक्षुओं, उपासकों और आचार्यों की बधाइयां और उपहार आए। और उन्होंने छङ्क-स्वान् से प्रार्थना की— आप अपने प्रवचनों से हमारा उपकार करें।

बू-बाइ-सान् में दो प्रसिद्ध गुहाएं हैं—

(१) चिन्-काङ्क-बू 金 剛 窟 बखानुहा— प्रसिद्धि है कि इसकी महुराई को आवश्यक किसी ने नहीं माया। इसी गुहा में बुद्धपात्र लोप हुए थे। मञ्जुश्री का निवास इसी गुहा में है। यह गुहा लामाओं के अधिकार में है।

(२) नारायण गुहा 龍 窟 窟 - इसका स्वतन्त्र चीनी नाम कोई नहीं। यह नाम कैंचै पका यह अन्वेषणीय विषय है। बखानुहा के समान इस गुहा की भी मञ्जुश्री का निवास

स्थान माना जाता है। इन गुहाओं के सम्बन्ध में अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। एक दिन की कथा है कि ११८३ विक्रम में एक भिक्षु मञ्जुश्री की उपासना के लिए यहां आए। जब वे नारायण-गुहा पर पहुंचे तब उनके साथ अनेक शासन के अधिकारी तथा सौ से ऊपर भिक्षु यात्री के रूप में आए हुए थे। और तो सब नारायण-गुहा में चले गए किन्तु ये भिक्षु बाहर ही खड़े रह गए। इनको बाहर खड़ा देख कर एक अधिकारी ने पूछा आप अन्दर क्यों नहीं जा रहे, आपके मार्ग को किसने रोका है। नवागत भिक्षु ने मुख्य शासनाधिकारी, विहाराध्यक्ष आदि को नमस्कार किया और गुहा में घुस गए। जब अन्दर पहुंचे और मार्ग छोटा हो गया तब उन्होंने अपना वस्त्र ऊपर उठाया और पर्वत में ऐसे प्रवेश कर गए जैसे पर्वत विद्यमान ही न हो। लोगों ने उनको पुकारा पर कोई उत्तर न मिला। तब सबने समझा कि यह भिक्षु कोई सामान्य व्यक्ति न था। सबकी आंखों में आंसू आ गए। तब की चार पंक्तियां गुहा में उत्कीर्ण हैं। इन पंक्तियों के साथ भिक्षु की पीछे छोड़ी हुई बांस की टोपी भी उत्कीर्ण है।

हाइ-चोउ से यहां की प्रसिद्ध हरी चाय तथा छतरियां मोल लीं।

२१ की सायं को ५ बजे हाइ-चोउ से चले और ४१ घण्टे की यात्रा के पश्चात् २३ को दोपहर के ११ बजे कांटोन् पहुंचे। राष्ट्रभाषा चीनी का उच्चारण क्वाइ-चोउ है। क्वाइ-चोउ में पहुंचते ही हमको अपने पुस्तकों से भरे ७३ डिब्बे मिल गए। ये हमारे आने से तीन चार दिन पूर्व पहुंचे थे।

जब हम पहली बार क्वाइ-चोउ में आए थे तब हमने यहां बहुत थोड़े स्थान देखे थे। सर्व-प्रथम हम यहां की पत्र-निर्माणी में गए। इसका संचालन शासन करता है। इसका निर्माण १९३३ में हुआ था। १९३८ में जापानी आ गए और बहुत से यन्त्र उठा कर ले गए। यत्न करने पर १९४८ में ये यन्त्र जापान ने लौटा दिए। तीन वर्ष तक जीर्णोद्धार होता रहा। १९५१ से उत्पादन आरम्भ हुआ। इस निर्माणी को ५ गुणा बढ़ाया जा रहा है। इसमें केवल समाचार-पत्रों के पत्र का निर्माण होता है। मा-वेइ नाम के देवदाह-सदृश वृक्ष के लट्टों से पत्र बनाया जा रहा है। अब गन्ने के छिलकों और फोक का भी प्रयोग कर रहे हैं। गन्ने का रस निपीड़ने के पश्चात् जो फोक बच जाता है उसको यहां भेज देते हैं। भारतवर्ष में भी गन्ने के फोक का प्रयोग पत्र बनाने के लिए होना चाहिए। इस वर्ष का उत्पादन २० सहस्र प्रवर्त (ton) पत्र होने की आशा है। श्रमिक संख्या १७०० है। इसमें २०० स्त्रियां हैं। श्रमिक अधिकांश युवा और युवतियां हैं। वेतन का माध्य ५३ युवान् है। नवागतों को सीस और मुख्य अभियन्ता (engineer) को २४० युवान् मिलते हैं। निर्माणी के अध्यक्ष का वेतन १५० रुपए है। स्त्रियों को प्रसूति के लिए ५३ दिन की छुट्टी मिलती है। श्रमिकों के लिए निवासगृह बनाए जा रहे हैं। ७००-८०० के लिए बन चुके हैं। जल और बिजली निःशुल्क हैं। घर का भाड़ा नाममात्र है। पूर्ण परिवार के लिए ३३ युवान्

मासिक और अकेले व्यक्ति के लिए ३० शतिक (cent) मासिक अर्थात् कुछ आने । जिन व्यक्तियों का परिवार नहीं वे १०, १२, १५, २० की संख्या में एक कोष्ठ में रहते हैं ।

इस निर्माणी में प्रयुक्त यन्त्र स्वीडन और जर्मनी से आए है । कुछ चीन में बने हैं । यहां बना हुआ पत्र बीतनाम जा रहा है । इस वर्ष ११०० प्रवर्त पत्र जाएगा । निर्माणी में प्रतियोगिता के झण्डे टंगे है । जिस श्रमिक-वर्ग ने योजना से बढ़ कर कार्य किया है उनको सुनहरी ध्वजा, जिन्होंने केवल पूरा किया है उनको रक्त ध्वजा और जो पीछे रह गए है उनको हरी ध्वजा मिली है । झण्डे कुछ प्रतिदिन के लिए है कुछ प्रति-मास के लिए ।

२५-७-५५

बू-पाइ-लो-हन्-बा अर्थात् पञ्च-स्रत-अर्हत्-मन्दिर— यह १९० वर्ष पुराना है । यहां भिक्षु रहते हैं । मध्य में धातुमयी बुद्ध-मूर्ति है तथा ७५० सेर भार का अशोकस्तूप है । मन्दिर में ५०० अर्हत्तों की मृष्मयी मूर्तियां पंक्तियों में क्रमबद्ध शोभायमान है । मञ्जु वंश के सम्राट् छधेन्-लुऊ पूर्वं जन्म में अर्हत् के रूप में थे । इनका अर्हद्रूप इस मन्दिर में वनैमान है । चीन में अनेक स्थानों पर बू-पाइ-लो-हन्-बा मिलते है । किन्तु इस मन्दिर की विशेषता यह है कि यहां मार्को पोलो (Marco Polo) को भी अर्हत्तों में सम्मिलित किया गया है ।

मन्दिर नगर के बीच में है । प्रतिदिन प्रातः नौ दस बजे ८०, ९० उपासक उपा-सिकाएं नन्वो ओमितोफू (नमो ज्मिताभाय) का जप करने और बूपबत्ती जलाने आते हैं । बुद्ध-जन्मदिन पर सहस्रों की भीड़ लगती है ।

ता-कू स्स अर्थात् महा-बुद्ध-मन्दिर— यह मन्दिर ४०० वर्ष पुराना है । प्रवेश करते ही तीन बहुत बड़ी ताम्रमयी मूर्तियां है । ताम्बे पर मिट्टी का लेप है । इन मूर्तियों के पीछे अबलोकितेश्वर है । यह भी ताम्बे का । प्रभामण्डल का गोल बिम्ब तथा उसमें किरणरूप पीतल की पट्टियां है । इन की शोभा अपूर्व है । यहां दस भिक्षु रहते हैं । जब भी ये किसी के घर में पूजा पाठ करने जाते हैं तो बुद्ध की मूर्ति अपने साथ ले जाते हैं । इस प्रयोजन के लिए चार मूर्तियां अलग रखी हुई हैं । ये भी पीतल की हैं । इनकी ऊंचाई १५, १६ अंगुल होगी । आज लोगों के घर में मूर्तियां नहीं हैं इसलिए भिक्षुओं को मूर्तियां अपने साथ ले जानी पड़ती हैं ।

सुन्-वात्-सन्-विद्यवन्निजास्य— इसकी स्थापना १९८१ विक्रम में हुई थी । पाठ्यक्रम ४ वर्ष का है । स्वी भाषा के अध्ययन के लिए दो वर्ष का पाठ्यक्रम है । शिक्षापद्धति भी स्वी है । प्रत्येक विषय के अध्यापक इकट्ठे होकर प्रतिदिन के पाठ का निश्चय करते हैं ।

सप्ताह में कितने घण्टे किस विषय की पढ़ाई हो इसका निर्धारण शिक्षा-विभाग द्वारा होता है ।

विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में राजनीति का अध्ययन अनिवार्य है । पहले वर्ष में रूस के साम्यवादी पक्ष का पिछले ५० वर्षों का इतिहास पढ़ाया जाता है । दूसरे वर्ष में चीनी साम्यवादी पक्ष और क्रान्ति का ३५ वर्ष का इतिहास पढ़ाया जाता है । तीसरे वर्ष में मार्क्स और लेनिन् के सिद्धान्तों का परिचय, चौथे वर्ष में मार्क्स और लेनिन् का दर्शन किस प्रकार जीवन का आधार बनाया जाए यह शिक्षा दी जाती है । रूसी भाषा का अध्ययन भी प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है । विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए दो वर्ष तक और अन्यो के लिए तीन वर्ष तक । विश्वविद्यालय में १६०० विद्यार्थी हैं । ३२० अध्यापक हैं । विद्यार्थी और अध्यापक विश्वविद्यालय में ही निवास करते हैं ।

पुस्तकालय में तुन्-ह्लाङ्ग की तीन बलिताएँ हैं तथा अद्भुतागार में सुन्-यान्-सन् के जीवन का प्रदर्शन करने के लिए अलग कोष्ठ है ।

क्या विद्यार्थी, क्या बुद्धिजीवि-वर्ग, क्या श्रमिक-वर्ग, सभी प्रातः एक अथवा डेढ़ घण्टा दैनिक समाचारपत्र तथा साम्यवाद का अध्ययन करते हैं । शासन के कार्यकर्ताओं का तो यह कर्तव्य ही है ।

आज सुदर्शना के लिए चीनी की मुद्रा ढूढने निकले । चीन मुद्राओं का घर है । सब से सुन्दर मुद्राएँ हाथीदात पर बनती हैं । जो मुद्रा सुदर्शना ने छाँटी उस पर मृगराज व्याघ्र का रगीन और ओज-पूर्ण चित्रण किया हुआ है । प्रसिद्ध चित्रकार फ़ङ्ग-कुङ्ग-श ने १९५५ के ग्रीष्म में इस चित्र को मुद्रा पर खोदा था । दूसरे पार्श्व पर राष्ट्रपति माओ-त्स-तुङ्ग की कविता है ।

२६-७-५५

प्रातः सात बजे प्रस्थान किया । गाड़ी के दोनों ओर कोसों तक बाढ़ आई हुई थी । याँव तथा खेत बाढ़-में बह गए एवं निमग्न हो गए । समाचारपत्रों में सूचना आई । जनता और शासन ने यथासम्भव सहायता की, किन्तु किसी राजनैतिक पक्ष ने इसको आन्दोलन का साधन नहीं बनाया । यह चीन के तन्त्र की विशेषता है । किसी प्रकार की अशान्ति, असन्तोष, आन्दोलन अथवा विरोधसभाएँ कहीं देखने में नहीं आती । शासन ही सब योजनाएँ बनाता है । घर भी शासन ही बनाता है । धीरे धीरे जनता की सुविधाओं में वृद्धि होती है । ४, ५ वर्ष में जो सारे देश का स्तर ऊँचा नहीं उठ सकता । जनता धैर्यशील है । इस बात को समझती है और शासन का साथ देती है । शासन की योजनाएँ पूरा करने में जी नहीं कतराती । बड़े बड़े कार्यों में श्रमिकों को केवल चावल और मोहासा इन्ध मिल जाता है । वे उसी से सन्तुष्ट रहते हैं । सबको इसी बात की

चिन्ता है कि देश का उत्पादन और शक्ति बढ़ें। उत्पादन के बढ़ाने में सेना भी जुटी हुई है। वह केवल लड़ाई की प्रतीक्षा नहीं करती।

आज दोपहर के ग्यारह बजे चीन की सीमा पर पहुंचे। ७३ लकड़ी के बड़े डिब्बे क्वाङ्-चोउ से यहां हमारे साथ ही गाड़ी में आए हैं। इनके साथ दो डिब्बे और जुड़ गए हैं। इनमें कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं जो हमें क्वाङ्-चोउ से मिले। सीमा पर चीनी अधिकारियों ने हमारे किसी डिब्बे को नहीं खोला। हमारे साथ प्रतिदिन के प्रयोग के तेरह ट्रंक थे। इनको भी उन्होंने खोल कर नहीं देखा। यह चीनी अधिकारियों का विशेष अनुग्रह था। उनको पेइ-षिङ्ग से आदेश आ चुका था। वे जानते थे कि हमारे साथ जितनी भी सामग्री जा रही है वह विशेष और प्राचीन है। सामान्य चीनी नियमों के अनुसार ८० वर्ष से अधिक प्राचीन कोई भी वस्तु देश के बाहर ले जाना निषिद्ध है। हमारे तो ७५ के ७५ डिब्बे ८० वर्ष से अधिक प्राचीन सामग्री से भरे हुए हैं। १३ ट्रंकों में भी प्राचीन वस्तुएं ही हैं। चीनी सीमा को पार करते ही हॉङ्-काङ्ग का अंग्रेजी राज्य प्रारम्भ होता है। हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि अंग्रेजी अधिकारियों ने भी हमारी किसी वस्तु को देखने का यत्न नहीं किया। न ही उन्होंने कोई प्रपत्र भरवाया। समस्त सम्भार दो घण्टे में चीनी संयान से उतार कर अंग्रेजी संयान में रख दिया गया।

हॉङ्-काङ्ग में हमको दो दिन मिले। इनमें से एक दिन भावित्रों को घुलाने में लगा और दूसरा दिन चीनी मुद्रलिख बूढ़ने, मोल लेने और उसका प्रयोग समझने में लगा। चीनी मुद्रलिख जापानियों का आविष्कार है। अंग्रेजी मुद्रलिख में केवल १२ अक्षर छप सकते हैं। इसमें ४००० अक्षर छापने का प्रबन्ध है। हमको देवनागरी, बंगला, मलयालम, तथा भारत से गई हुई तिब्बत, लंका, बर्मा, थाई, कम्बोज, लाओस् देशों की लिपियों के लिए २००, ३०० अक्षरों वाले मुद्रलिख की आवश्यकता है। हमारे वैज्ञानिक उसको भी नहीं बना सके। वे लिपियों को ही परिवर्तन करना चाहते हैं। यह आविष्कार-युग है। लिपि के अनुकूल मुद्रलिख बनना चाहिए।

२९-७-५५ को प्रातः साढ़े ग्यारह बजे हम कार्बेज नाम के अंग्रेजी जलयान में सवार हुए। हमारा समस्त सम्भार भी जलयान में पहुंच गया। बारह बजे जलयान-प्रस्थान की घंटी बज्जि आरम्भ हुई। चीनी शासन के प्रतिनिधियों ने अन्तिम नमस्कार किया। हमारा चीन का भ्रमण समाप्त हुआ।



समुद्र सर्वथा शांत था। ऋतु भी सुहावना था। समय का सदुपयोग करने के लिए हमने तुन्-ह्लाक के रंगीन चित्रों को क्रम में लगाने का काम हाथ में लिया। तुन्-ह्लाक के चित्रों के हमने दो दो भाषित्र लिए थे। एक रंगीन और एक सितासित (काला और श्वेत)। सितासित चित्र तुन्-ह्लाक में ही धुल गए थे। उनके पीछे गुहा की संख्या और चित्र का संक्षिप्त नाम तथा युग डा० छाक ने लिख दिए थे। रंगीन चित्रों की धुलाई हॉक-कॉक में हुई थी। अब हमने रंगीन और सितासित चित्रों को एक क्रम में लगाया। इसमें पूरे दो दिन लग गए। जलयान के दूसरे यात्रियों की उत्सुकता और जिज्ञासा उत्कट थी। कइयों ने तो हमारे क्रम लगाने के कार्य में सहायता भी की। चित्रों का क्रम लग जाने पर हमको ठीक ठीक पता लगा कि हमारे पास कितनी कुछ सामग्री आई है। संतोष भी हुआ कि अब यह हमारी सम्पत्ति है।

जलयान पर खाने पीने के अतिरिक्त हमारे पास कोई और काम न था। खेल-कूद में हमारी रुचि न थी। चीन के निवास और भ्रमण के संस्मरणों को लिखना ही हमारा मनोरञ्जन बन गया। प्रतिदिन दस बारह घण्टे में लिखाता और सुदर्शना लिखती। बम्बई पहुंचने से पहले पहले हमने अपने संस्मरण पूरे किए। यही संस्मरण आपके सामने इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत हैं।

दो अगस्त को प्रातः सिंहपुर पहुंचे। यहां भारतीय दूतावास है। श्री टण्डन दूतावास के अध्यक्ष हैं। आपने हमारा बड़े प्रेम से स्वागत किया। हॉक-कॉक के समान सिंहपुर के पत्रकारों ने भी हमारी चीनयात्रा और वहां से एकत्र किए हुए सांस्कृतिक संग्रह का उल्लासपूर्वक समाचार प्रकाशित किया। यहां पर ही हमको लण्डन के प्रसिद्ध पत्र 'टाइम्स' के कतरन मिले जिससे पता चला कि हमारी यात्रा के साफल्य का पश्चिमी संसार में भी साश्चर्य अभिनन्दन हुआ है। सिंहपुर से अनेक सज्जन मिलने आए। सब की एकमात्र इच्छा यही थी कि हमारे संग्रह के विषय में और अधिक बातें सुनें और यदि सम्भव हो तो कुछ देखें भी।

सिंहपुर के चीनी निवासियों ने विशाल बौद्ध मन्दिर की स्थापना की है। रुपया बहुत व्यय किया है। किन्तु इसमें चीन के मन्दिरों का वैभव नहीं। कला भी बहुत नीचे स्तर की है।

सिंहपुर से चल कर हमारा जलयान पीनांग में ठहरा। पीनांग का अर्थ सुपारी है। यह सुपारी के निर्यात का महान् पत्तन है।

पीनांग के पश्चात् जलमान कुछ डोलने लगा। फिर भी हम अपना काम करते रहे। श्री अगस्त को श्री लंका की राजधानी कोलम्बो पहुंचे। कोलम्बो में भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्ती तथा कुराने मित्र शिवरावकुण्ज, मिश्र शिवली, स्फटेषातु के प्रसिद्ध व्यापारी श्री अट्टु बादि के साश्चर्य में दिन बड़ी सीधता से निकल गया। सिंहली तथा अंग्रेजी

के समाचारपत्रों ने श्रीलंका की बौद्ध जनता के लिए हमारी चीनयात्रा के विस्तृत विवरण प्रकाशित किए ।

म्यारह अगस्त को प्रातः आठ बजे बम्बई पत्तन पर कार्थेज् ने लंगर डाला । हमारे परमसखा श्री श्रेयांस प्रसाद जैन हमारे उतरने से पूर्व ही जलयान पर आ गए । आयात-निर्यात-विभाग के अधिकारी हमारे भारी सम्भार को बिना खोले ही पत्तन से बाहर निकलने दें और संयान में समस्त वस्तुएं आज ही हमारे साथ लद कर नागपुर पहुंच जाएं इत्यादि कामों में सहायता के लिए बम्बई प्रदेश के राज्यपाल और हमारे सुहृद्द्वर श्री हरिकृष्ण मेहताब ने अपने कर्मचारी जलयान पर भेजे ।

आज कुलियों की हड़ताल है । वर्षा भी मूसलाधार पड़ रही है । फिर भी अनभिन्न साम्यवाद-प्रभावित श्रमिकों ने हमारे सम्भार को जलयान से उतारना स्वीकार किया । यह सम्भार भारत और चीन के सम्बन्धों की सांस्कृतिक निधि है । भारत और चीन का गौरव है । इसका आमास पाकर श्रमिकों ने प्रेम और उत्साह से काम किया ।

सायंकाल छः बजे की गाड़ी पर सवार होकर हम अगले दिन प्रातः दस बजे नागपुर पहुंच गए । सम्भार से भरा हुआ संयान का पूरा एक डिब्बा अगले दिन पहुंचा । यद्यपि इस समय हमको १५०३ रुपए संयान का भाड़ा देना पड़ा तथापि पीछे जाकर भारतीय शासन ने हमको ये रुपए लौटा दिए ।

चीन की यात्रा समाप्त हो चुकी है तथापि इसके सम्बन्ध में और इसके कारण अभी बहुत कुछ करना शेष है । सर्वप्रथम भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी का अनुरोध है कि इस सामग्री का दिल्ली में प्रदर्शन हो । भारत की जनता को पता लगे कि भारत और चीन के भूतकाल में क्या सम्बन्ध थे ।

बेड़ मास की सज्जा के पश्चात् २९ सितम्बर को सायं ५॥ बजे डा. राधाकृष्णन्, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के राजदूत ने प्रदर्शनी के उद्घाटन में भाग लिया ।

चीन के राजदूत श्री युआन् चुङ्-शयेन् का भाषण साम्यवादी चीन की विचारधारा का द्योतक है । चीन की जनता तथा शासनाधिकारियों की हमारे प्रति क्या भावनाएं हैं उनका भी इनके भाषण से स्पष्ट भान होता है । इनके एक एक शब्द का महत्त्व है । मूल भाषण चीनी में और उसका अधिकृत अनवाद अंग्रेजी में हुआ । आंगलानवाद हम नीचे उद्धृत करते हैं—



चीन की यात्रा समाप्त हो चुकी । भारत के तत्कालीन प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुरोध से अभियान की सामग्री को दिल्ली में प्रदर्शनी हुई । डेढ़ मास की मज्जा के उपरान्त २६ सितम्बर १९५५ को सायं ५।। बजे डॉ. राधाकृष्णन् ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । चित्र में प. नेहरू, आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री डॉ. राधाकृष्णन् के साथ ।

On 29 September 1955, at New Delhi Dr. Radhakrishnan, the Vice-President of the Republic of India, inaugurated the exhibition of paintings, art objects and manuscripts brought back by Prof. Raghu Vira from his expedition to China.



प्रधान मन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू को आचार्य रघुवीर मोंगोल विहारो से लाए जी के मत्तू ओर गुड़ की शर्करा का प्रसाद चखा रहे हैं । यह भारतीय भोजन भारतीय आचार्यों द्वारा मोंगोल विहारो मे फैला ओर उनके जीवन का अङ्ग गया ।

At the exhibition, Prime Minister Pt. Jawahar Lal Nehru lovingly accepts the consecrated offering of barley flour and brown jaggery which Prof. Raghu Vira has brought from the Mongolian monasteries. Mongol tradition has it that this offering was introduced by Indian Ācaryas.

“His Excellency the Vice President, His Excellency the Prime Minister, Dr. Raghu Vira, ladies and gentlemen,

“It is with great pleasant and enthusiastic feeling that I am here to take part in this rather unique cultural exhibition organized by the Ministry of Education, Government of India.

“We all know that Dr. Raghu Vira, the famous Indian scholar, recently visited China and had a very extensive tour there.

“During his stay he was able to collect, under the patronage and cooperation of the Chinese Government and people, and through his desire, wisdom and endeavour, a large quantity of precious and rare ancient Buddhist literature, literary and linguistic works, paintings and copies of stone scripts, etc. They are valuable heritages of mankind, and real pieces of art that are not to be measured by time. Naturally everybody will be attracted and charmed by them. But here and now, we — we Chinese and Indians — must be having an additional proud feeling within us, that all that is displayed here, whether hand-written, printed, carved on stone, or flying on the walls, are unmistakably marvellous results of the cultural and art interflows between China and India in ancient times.

“Indeed, we are proud of the enduring relationship between our two countries — a relationship of peace, mutual influence, mutual inspiration and mutual help.

“Our great forefathers, Fa-Hsien, Hsüan Chwang, Dharma, Kāśyapa Mātanga, Gobharāṇa and numerous others, in a fearless and self-denying spirit, living through endless years and surviving the most hazardous journeys, trekked to India. They brought back with them the Buddhist literature and arts of India at that time, developed them and adopted them into Chinese tradition. And here they are as the invaluable treasures commonly held dear by the peoples of our two countries. They not only are indispensable material for the study of India’s ancient history, culture, religion and art, but also should be looked upon as historical basis upon which inspiration for the furtherance of friendship and cooperation between our two countries may be founded.

“A Chinese custom goes that a married girl will from time to time visit her parents. Now a girl, a richly dressed and smiling Indian girl,

after spending some one thousand or two thousand years in China, is returning to India and having family re-union. With great joy we all cheer her. She is beautiful and strong, because she stands for the great strength of 1000 million population of China and India.

“History testifies to the incessant development of relations between our two countries. In the past six years, mutual understanding, cultural and economic intercourse between our two countries have been increasing by each passing day. From their own experience the peoples of our two countries now realize more than ever that only the independence and prosperity of our two countries could safeguard our cultural heritage, our happy life and peace in Asia and the world, and that activities of cultural intercourse would promote advancement of relations among countries.

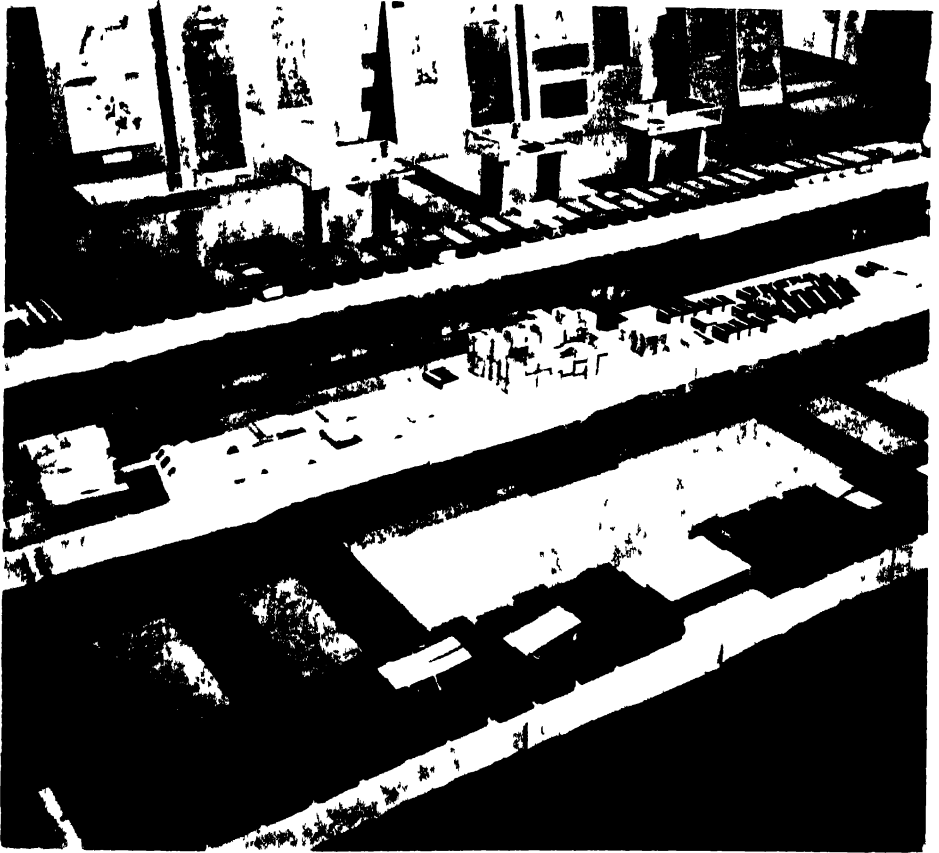
“The fact that Dr. Raghu Vira could collect during such a short time the valuable materials scattered through hundreds of years and over the vast territory of China and have them shipped to Delhi in perfect order, is in itself a great achievement and vivid manifestation of the keen desire for sincere friendship between our two countries.

“We must thank Dr. Raghu Vira for his hard work and respectful efforts. We must also congratulate the Ministry of Education, Government of India, and Dr. Raghu Vira for their inspiring contribution towards the cultural interflows and friendship between China and India by so successfully arranging this exhibition.”

General Yuan Chung-Hsien

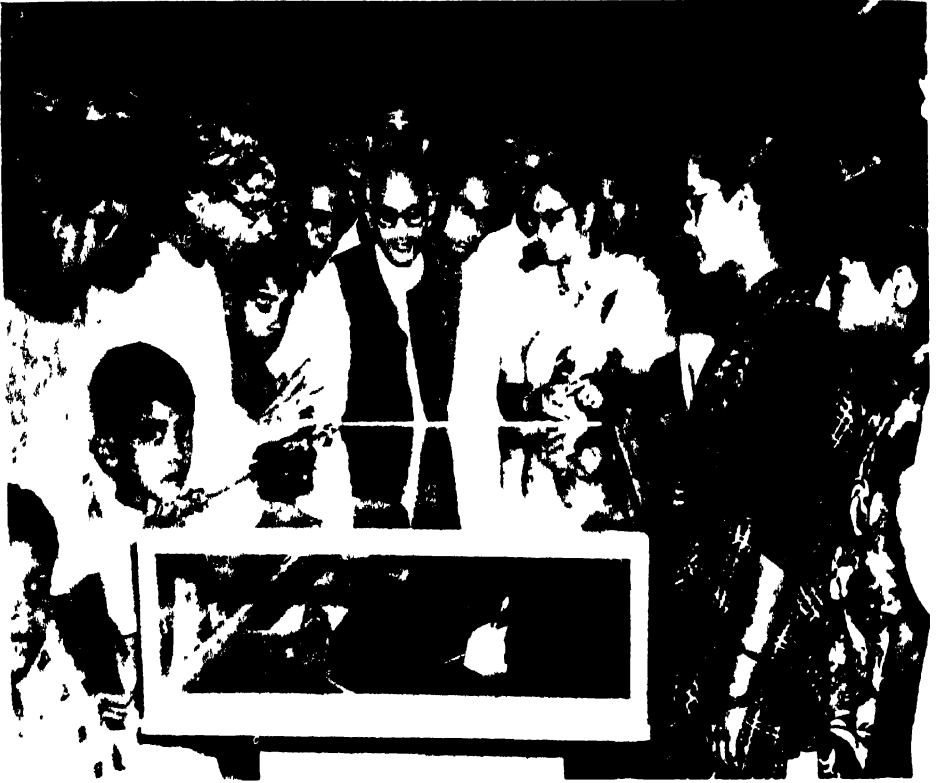
दिल्ली की जनता के लिए हमारी प्रदर्शनी अदृष्टपूर्व, अप्रत्याशित तथा वैचित्र्यपूर्ण थी। मोट, मोंगोल, चीनी बौद्ध तथा तान्त्रिक चित्रों से जनता की आंखें बिस्फारित हुईं। प्राचीन भारत का जाङ्गल्यमान स्वरूप विशेष आकर्षक बना। यम, यमान्तक, महाकाल के कलात्मक रीदरूप, भारतीय तथा चीनी आबायों और अर्हतों के ओजस्वी आलेख्य; चीन के कोने कोने से एकत्रित, पत्थरों पर खुदे हुए प्राचीन संस्कृत के शिलालेखों की बृहदाकार विज्ञान छापों के दर्शनों से जनता में आत्मगौरव भावना तथा तद्दर्शनजन्य तृप्ति क्षण क्षण में झलकती थी।

प्रदर्शनीमवन बढ़ा होते हुए भी हमारी सामग्री के लिए छोटा पड़ा। १३१ डिब्बों में से हम केवल ३० खोल पाए। मोट, मोंगोल, मञ्चू और चीनी साहित्य, जो २००० वर्षों में संस्कृत से अनुबाद किया गया, वह निदर्शनमात्र ही खोला गया।



चीन में आचार्य रघुवीर भारत-अनुप्राणित अपार सामग्री लाए। इनमें देवी देवताओं के चित्र, चीनी, भोट, मोंगोल, शीश्या साहित्य की पुस्तकें और कोष, बिलालेखों की छापें और मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं। दिल्ली में इन वस्तुओं की प्रदर्शनी हुई। प्रधान मंत्री से लेकर जनता तक यहां आई और उन्होंने सांस्कृतिक अमृतपान किया।

A general view of the exhibition of manuscripts, xylographs, paintings, thankas, rubbings of inscriptions, objects of art, etc. brought by Prof. Raghu Vira from his expedition to China



प्रदर्शनों के एक स्थान में रत्नजटित तान्त्रिक कपाल, कुवाङ्-चोउ के षड्बोधवृक्ष मन्दिर में प्राप्त घण्टा तथा आम्दो के प्रथिन कुम्-ब्रुम् विहार में चोङ्-खा-पा मुनिकीर्ति की प्राणप्रतिष्ठित मूर्ति दिखाई दे रही है। आचार्य रघुवीर श्री जयदयाल जी डालमिया और उनके परिवार को प्रदर्शनी में आयोजित विविध वस्तुओं की व्याख्या कर रहे हैं।

A stand at the exhibition showing the Tantric kapala, a wooden bell from the 'Temple of Six Bodhi Trees' at Kuang-chou, an ancient consecrated image of Tson-kha-pa Sumatikirti from his birth-place. Prof. Raghu Vira explaining the objects to Shri Jaidyalji Dalmia and the members of his family.

प्रदर्शनी की दर्शक-पञ्जिका से जनता की भावनाओं का अच्छा पता चलता है—

“डा. रघुवीर की चीन से लाए हुए दुर्लभ संग्रह को देख कर अपने प्राचीन गौरव का गर्व जागृत हो उठता है।”

श्रीमती रमा जैन

“Most remarkable exhibition I have ever seen. Dr. Raghu Vira's efforts in this direction alone will make him one of our profound scholars for all time.”



“Most fascinating a study and very beautiful.”

Mrs. W. J. Kaufman

“It was a great day for me to visit today the grand collections brought by Professor Dr. Raghu Vira from China. They represent our life for centuries— a concentrated cultural representation of Indo-Chinese relations. The magnitude of this representation has few parallels in the history of the country.”

Siddheshwar Varma

“ अत्याकर्षक तथा रोचक प्रदर्शनी । ”

हरिविष्णु कामत

“We enjoyed the exhibition tremendously.”

Mr. and Mrs. J. A. Murray
(American Embassy)

“श्री डाक्टर रघुवीर का यह संग्रह अद्भुत है। उन्होंने जो कार्य किया है वह बहुत मूल्यवान् है।”

पुरुषोत्तमदास टंडन

“La presentation de cette exposition est remarquable et est fait avec art.”

Pom Pottet
(of Geneva)

“After a thousand years of slavery India is coming out from the great slumber. So long she was not allowed to know her neighbouring brothers by the foreign usurper rulers. Now the children of the soil

have been freed from their prison house. How glad I am to see this exhibition which has given me a new life, and what shall I write, a new vision— how new India will take shape. I wish my countrymen will learn the languages of all her neighbours so that they can understand not only them but know and realize their inner self. English, French, German, Russian will not be able to give India her ancient past. To know India and her culture requires one to learn the Devabhāṣā, Sanskrit, and languages of the East.”

Binay Bhushan Datta

“ऐसी अपूर्व और खोजपूर्ण प्राचीन संग्रहों की प्रदर्शनी भारत में न कही देखी और न सुनी गई। इससे अधिक लिखना लेखनी की शक्ति के परे है— लेखनी बिनु नयन, नयन बिनु लेखनी।”

फणीन्द्र बाजपेयी

“It is very interesting exhibition, principally to the religious spirited. I hope this spirit will preserve it for ever in China, in Tibet and in India.”

Miguel Serrano

(Ambassador for Chile)

“A highly inspiring and impressive collection of great historical value. The service done to cause of Indo-China amity and the new horizons opened for research in all fields in the country is beyond praise.”

G. L. Nanda

(Minister for Planning)



चीन की यात्रा से भारत लौटते ही रूस तथा भारत के ऐतिहासिक सम्बन्धों की खोज करने के लिए रूसी शासन का निमन्त्रण आया था। ६ अक्टूबर का प्रदर्शना समाप्त हुई। सो रूस जाने की सज्जा आरम्भ की। चीन के समान रूस में भी भारतीय साहित्य, धर्म, कला, दर्शन तथा कथाकहानियों की अनन्त सामग्री है। जो वस्तुएं चीन में न मिल पाईं, वहां से लुप्त हो गईं, उनमें से अनेक के रूस में मिलने की आशा है ॥

॥ भारत-चीन-संस्कृतिविजयताम् ॥

अनुक्रमणिका

अ

अ (अक्षोभ्य) १५८
 अक्षयदीपगृह (कवान्-जन् स्स में) १०२
 अक्षोभ्य ६३, १५८
 अग्निक्रीडा २१
 अङ्गुष्ठमात्र कमण्डलु १०
 अद्भुतागार (कवाङ्-चोड में) ५, (मुक्देन् में) १२३
 अधो ह्वा-यन् स्स ६३ (ता-तुङ् नगर में विहार)
 अनुतरा सम्यक्मम्बोधि २८
 अनुसधान-विभाग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय ३५
 अन्ताराष्ट्रीय विद्यार्थि-सघ-म्वास्थ्याश्रम ३०
 अन्ताराष्ट्रीय यात्रि-केन्द्र १०
 अप्सराएं ५६, १०३, १५४, १५५
 अभिषर्ष की भोट और चीनी पारिभाषिक शब्दमाला २६
 अमिताभ ६३, ६४, ६५, १५२, १५५
 अमिताभ-गुहा (श-शान्) १४६
 अमिताभ-सूत्र (तुन्-ह्वाङ् में भिन्निचित्र) ७६
 अमितायु १५८
 अमृत-हृदयाङ्गाष्टगुह्योपदेश १२५
 अमोघवज्र (भारतीय आचार्य) १४, १०४ (ता-शिङ्-शान् स्स में), १०७
 अमोघवज्र-शिलालेख १०४
 अमोघवज्र-समाधि १०४

अमोघवज्र-समाधि-मन्दिर १०४
 अमोघवज्र-सम्मानोपाधि १०४
 अमोघवज्र से-ली १०४
 अमोघश्री १५८
 अमोघसिद्धि ६३
 अयुत-बुद्ध-गुहा (लुङ्-मन्) ११३
 अर्हत् ८ (अठारह अर्हत्), ६४, १०३, ११४, ११७, ११८, १५४, १५६
 ५१६ अर्हत्तों का उत्कीर्ण अभिलेख १५४
 ५०० अर्हत्तों का मन्दिर ४०
 ५०० अर्हत्तों की मृण्मयी मूर्तिया (वू-पाइ-लो-हन्-था मे) १६०
 अर्हद्-युग्म ११७
 अवतसक दर्शन १५४, १५७
 अवतसक-दर्शन के आचार्य क्वेइ-फुङ्-त्सुङ्-मी १०६
 अवतसक शुद्ध जीवन धार्मिक संघ (चाओ-छिङ्-लू स्स में) १५२
 अवतंसक सम्प्रदाय १५३
 अवतंसक-सूत्र ५०, १०५ (काइ-य्वेन् स्स में), १५३ (मुवर्णलिखित), १५७
 अवतसक-सूत्र-टीका १०७, १५८
 अवतसक-सूत्र-विष्वकल्पना-शिलाचित्र (काइ-य्वेन् स्स में) १०५
 अवलोकितेश्वर ६३ (युन्-काङ् में शिलालेख), ७० (तुन् ह्वाङ् में महस्रहस्त), १५०, १५५, १५७ (पू-थो-शान् में अब° का निवास), १६०

अशोक-सिंहस्तम्भ (शाङ्क-हाई में) १४६
 अशोक-स्तूप १५८ (ता-था-य्वेन् स्स में),
 १६० (वू-पाइ-लो-हन्-था में)
 अष्टकोण-आसन (लुङ्-मन्) ११६
 अष्टकोण-स्तम्भ-धारणी १११
 अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता १२४
 अहिंसा-पञ्चाशिका (अहिंसा पर चीनी
 कविताएं) ४१, ४३

आ

आंगल भारतीय बृहत्कोष ४१
 आदर्श श्रमिक २२
 आनन्द ९४, ११४, ११८
 आन्-शान् (नगर) ६८, १२४
 आन्-शी (नगर) ७०, ८८
 आम्-दो ६१
 आयुर्वेद २७ (युङ्-हो-कुङ् में अध्ययन
 अध्यापन), १२० (युङ्-हो-कुङ् में
 आयुर्वेद के ग्रन्थ)
 आयुर्वेद-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२, ६४
 आ-यू-वाङ् स्स (वू-य्वे मण्डल में) १५१
 आर्य से प्रारम्भ होने वाले ग्रन्थ और अन्य
 नाम अपने क्रम में दिए गए हैं।
 आर्यदेव १४४
 आलि-कालि ४१
 आसन (लुङ्-मन् में अष्टकोण आसन)
 ११६

इ

इन्द्र २४, ४० (अहंत्)
 इ-फू = पू-छी

इ

ईंट (लेइ-फ़ङ् स्तूप से प्राप्त सर्वतथा-
 गताधिष्ठानहृदयगुहाघातुकरणधारणी
 युक्त) १५०
 ई-चिङ् ६६ (ता-च्येन्-फू स्स), ११४
 ई-च्ये-नुङ् (= ल्येन्-ह्वा-नुङ्, लुङ्-मन्)
 ११६
 ई-ध्येन् (कोरिया का विद्वान्) १५३
 ई-नदी ११२

उ

उइगूर—देखिए वीगूर
 उत्तर वेद-कला (तुन्-ह्वाङ् में) ७६
 उत्तर वेद-कालीन गुहा (तुन्-ह्वाङ् में)
 ७६
 उपदेश-गुणतन्त्रस्य गण्डूषिकशान्योष्ण-
 तापनान्त कृनाकृन पाराकाल मृत-
 पाश्यच्छोदस्य खङ्ग विहरति म्म
 (युङ्-हो-कुङ् के भोट आयुर्वेद ग्रन्थ
 का संस्कृत शीर्षक) १२०
 उपरि ह्वा-यन् स्स (ता-नुङ् नगर में
 विहार) ६३
 उपाधिपत्र (भिङ्गुओं का) १११
 उपासना-कोष्ठ (मुस्लिम विद्यार्थियों के
 लिए राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय
 में) ३४
 उलान्-बातर में तञ्जूर का सूचीपत्र २८
 उष्णीषधारणी ६४
 उष्णीषविजय देव १५५
 उष्णीषविजय-धारणी १०४ (काइ-य्वेन्-
 स्स-धारणी-स्तम्भ), १२२, १४६
 (चीनी में), १५६, १५७ (संस्कृत
 मूल)

उष्णीषविजय-मूर्ति १५५, १५६

ए

एर्कस् (Eduard Erkes, लाइप्सिक विश्वविद्यालय में चीनी के अध्यापक)

२८, ११२

एकसहस्राधिकारी स्तूप (यन्-श्या तुङ्ग) १५४

ऐ

ऐतिहासिक ग्रन्थ (क्वाङ्-चोउ में) १६१

ओ

ओ-मी-शान् (समन्तभद्र का निवास) १५७
औषध-विद्यालय-आयुर्वेद-विद्यालय देखिए
ओं मणि पद्मे हं ८५ (तुन्-द्वाङ्ग की
तान्त्रिक गुहा में) ६०, १५५ (देव-
नागरी लिपि में)

क

कञ्जाक् भाषा (का राष्ट्रीय अल्पसंख्यक
विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन) ३४
कञ्जूर (भोट भाषा में) १४, ३८ (६,
७ हस्तलिखित भाग पेइ-चिङ्ग विश्व-
विद्यालय में हैं), ४९ (प्रतिवर्ष
पारायण) १२६ (देखिए चोने क°,
छिङ्ग क°, देगें क°, नार्पाङ्ग क°, पेइ-
चिङ्ग क°, ल्हासा क°)

कञ्जूर (मञ्जु भाषा में) १५

कञ्जूर (मोंगोल भाषा में) ४५, ५०
(फ्रा-शी स्स में), १२६

कम्फूसास मन्थिर ५

कमण्डलु १८ (अ-गुष्ठमात्र)

कमला (श्रीमती) १४२

करोटि-विद्या (दुल्वा में) ६२

कल्याणमित्र (शास्त्रार्थ में श्रेष्ठ के लिए
उपाधि) ६५

कांस्य मूर्तियां (शी-काङ्ग में) ६२

कांस्य-लेख ३७

काइ-ध्वेन् स्स (शी-आन् में) १०४

काओ-सुङ्ग सन्नाट् ६७, ६६, ११२,
११७, १४४, १५७

काओ-सुङ्ग राजकुमार (चीनी में योगा-
चारभूमिशास्त्र के उपभूमिका-लेखक)
१०३

काओ-लिन्, डॉ. (आयुर्विज्ञान-विद्यालय
के अध्यक्ष) ११

काओ-पेइ-त्येन् (पेइ-चिङ्ग सीमा पर कृषि-
उत्पादन-सहकारी मण्डल) ३१

काओ-त्सी स्स १५३

काङ्-शी राजा १०२

कांटोन् १५६

कान्-सू प्रान्त ८६

कालख मूर्ति (कुम्-बुम् में) ९३

कालचक्र-विद्यालय ६४

कालिन्दी (कुम्-बुम् में) ६३

काली देवी (कुम्-बुम् में) ६३

काल्-गान् (स्यात्र) ४७

काश्यप ४० (अर्हत्), ६४, ११०, ११४,
११८

काष्ठ की कृष्णवर्णी मूर्तियां ४५

काष्ठफलक ४६ (फ्रा-शी स्स में ५,०००),
६४ (कुम्-बुम् में संग्रह), १४३

काष्ठमूर्तियां ४०, ४५ (कृष्णवर्णी)

किन्-फङ् (अभिधर्म की भोट और चीनी
पारिभाषिक शब्दमाला के प्रकाशक)

२६

कुओ-मिन्-ध्साइ (विद्या-विभाग के सम्पर्काधिकारी) १२
 कुओ-मो-ओ (विद्या-विभाग के प्रधान) ३७, ४१
 कुमारजीव १०६, १४५ (माध्यमिक शास्त्र के अनुवादक)
 कुम्-बुम् ४३, ६१-६५
 कुम्-बुम् पुस्तकालय ६२
 कुम्-बुम् मुद्रणालय ६४
 कू-काई (जापान के शिगोन्-सम्प्रदाय के प्रवर्तक) १०४
 कू-कुङ्-पो-बू-य्वेन् (= प्रासाद) १५
 कू-कू-कुन्-नान् १२७
 कू-याङ्-तुङ् (लुङ्-मन्) ११६
 कू-याङ्-तुङ् शिलालेख ११६
 कृत्तिवासस् (चिन्-आन् स्स में) १४८
 कृषक-कान्ति ५
 केसकर ३
 कोरिया १५०
 कोलम्बो (लंका) १६३
 कान्ति-शिक्षणालय ५
 क्रीडास्थान (क्वाङ्-चोउ में) ४
 क्वाङ्-चोउ (= कांटोन्) ८, ११, १२८
 १५६, १६१
 क्वाङ्-चोउ अद्भुतागार ५
 क्वान्-ची मन्दिर (पेइ-चिङ् का प्रसिद्धतम मन्दिर) २६, १२५, १३२
 क्वान्-अन् स्स (शी-आन् में लामा मन्दिर) १०२ (यहां अक्षयदीपगृह है)
 क्वान्-यिन् (= अवलोकितेश्वरी) ८, १५३
 क्वेइ-फ़ङ्-स्मुङ्-मी ध्यानाचार्य १०५
 क्वेङ्-फ़ङ्-स्मुङ्-पो शिलालेख (ध्साओ-वाङ् स्स) १०६

क्वो-छिङ् १४४
 क्वो-मिन्-ताङ् ११, ६७
 क्वो-लून् ३

ख

खण्डित गुहा (लुङ्-मन् में) ११३, ११७
 खण्डित गुहा शिलालेख (लुङ्-मन् में) ११७
 खुङ्-फ़ू-स्स (Confucius) १५४

ग

गजदन्त से बनी मूर्ति (पञ्चोत्स-मन्दिर) ६६
 गरुड ६४, ११७ (लुङ्-मन् में मूर्ति), १३१
 गान्धार प्रभाव ७६, ७६, ८४, ६६
 गुप्तकला का प्रभाव ११४, (लुङ्-मन्) ११६
 गुहा-अन्नर्वस्नु-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेष-णालय की) ८२
 गुहाओं की रक्षा (तुन्-ह्वाङ्) ८१
 गुहा-चित्र-मूर्ति-वर्णन-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय की) ८१
 गुहा-रेखाचित्र-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेष-णालय) ८१
 गुहा-लेख-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेषणा-लय) ८२
 गृध्रकूट १५१, १५४
 गोवर्धन १२, १४२
 ग्रीष्म-प्रासाद (पेइ-चिङ् में) ४४

घ

घण्टा-भवन (शी-आन् में) ६७

चक्रवर्ती (लंका में भारतीय राजदूत)

१६३

चङ्-कू उपामक १११

चङ्-क्वाङ् धर्माचार्य का शिलाचित्र

१०४

चङ्-चुङ्-चिङ् (उपाध्यक्ष, विदेश सांस्कृतिक सम्पर्क मण्डल) ४१

चतुर्मुख ब्रह्मा (चिन् आन् स्स में) १४७

चन्-क्वान् (निर्माता और अध्यक्ष, श्या-ध्येन्-चू स्स) १०२, १५२

चन्-चङ्-तो (संस्कृति-उपमन्त्री) ४१,

४५

चन्दन-पात्र (छिङ्-राजप्रासाद में) १२३

चन्दन-मूर्तियां १२३

चन्द्रकला (स्तूप पर चित्रित) ६१

चन्द्र-प्रतिबिम्बी स्तूप १४६

च-युन् भिक्षु ११६

च-वू १५०

चाओ-छिङ्-लू स्स १५२

चाओ युङ्-चुङ् (दुभाषिया) १२

चाङ्-काङ्-शेक् २४

चाङ्-च्या-खोउ १३०

चान्द्र तिथि (चीनी समाचारपत्रों में)

१२५

चाय-भवन (कुम्-बुम् में E'पिC') ६३

चिङ्-चोउ १४४

चिङ्-छिङ् १०६

चिङ्-ट्येन् (अवलंसक सम्प्रदाय के आचार्य)

१५३

चिङ्-लिङ् (नान्-चिङ् बीट्-सूत्र-मुद्रणालय) १४३

चिङ्-शान् स्स ११२, ११५ (लुङ्-मन्), १५१ (वू-ट्ये मण्डल में), १५६

चिङ् शान् स्स शिलालेख ११५

चिङ्-हाइ प्रान्त ६०

चिन्-आन् स्स १४६, १४७

चिन्-काङ्-खू वज्रगुहा (वू-थाइ-शान् में मञ्जुश्री का निवासस्थान) १५८

चिन्तामणि २८, ११५, ११६, १५३ (त्रयोदशभूमिक स्तूप-शिखर पर)

चिन्-त्सु स्स (वू-ट्ये मण्डल में) १५१

ची (संस्कृत के प्राध्यापक) ४३, ४६, १३२

ची-कुङ् (स्वेन्-म्वाङ् के मुख्य अनुवादक-सहायक) १०३

ची-कुङ् स्तूप (शिङ्-च्याओ स्स में) १०३

चीन की महाभक्ति २६, ४७

चीन में संस्कृत ४५

ची-नान् १४४

चीनी आचार्यों के ग्रन्थ १२६

चीनी त्रिपिटक - 'त्रिपिटक' देखिए

चीनी, मञ्जु, मंगोल और भोट में राजाश्म शिलालों पर उत्कीर्ण युङ्-

हो-कुङ् का इतिहास २७

चीनी मुद्रलिख १६२

चीनी लेख १२३ (बुद्धमूर्ति पर), १३१

चीनी संसद् १२७

ची-लू भिक्षु (अध्यक्ष, स्वेताश्व विहार) ११०

ची-श-लिन् (अध्यक्ष, प्राच्य-भाषा-विभाग, पेइचिङ् विश्वविद्यालय) ४१

ची-सा त्रिपिटक के ७००० खण्ड (शान् सी के पुस्तकालय में) १०१

चुङ्-निङ् १११
 चू-वाङ् (= युक्ता नदी) ११
 चू-च्यान् (नगर) ६८, ६९, ८९
 चू-छू-मङ्-शुन् (४५९-५०० विक्रम,
 तुन्-ह्वाङ् की एक गुहा के निर्माता)
 ६१
 चूता इतो (प्राध्यापक, तोक्यो विश्व-
 विद्यालय) ५९
 चू-स्वान् (स्वान्-ची के अध्यक्ष जिनकी
 योग में हचि है) २९
 चू-युङ्-स्वान् (महाभित्ति का उत्तर द्वार)
 १३०, १३१
 चू-हुङ् (संस्थापक, युन्-छी स्स) १५३,
 १५४
 चोउ-अन्-लाइ (चीन के प्रधान मन्त्री)
 ४१, १२५, १३८, १४०
 चोङ्-ख्-म ५० (पीतल की मूर्ति), ९१,
 ९३ (पाद-चिह्न), ९४ (ग्रन्थावली),
 ९५
 चोने कञ्जूर ९३ (कुम्-बुम् में)
 च्या-छिङ् ११०
 च्येन्-य्वेन् ६१
 च्वाङ्-त्सुङ् सम्राट् ११०

छ

छङ्-स्वान् (अवतंसक-सूत्र के विद्वान्
 टीकाकार) १५८
 छाङ्, कुमारी (दुर्गापिन) ८९
 छाङ् (अध्यक्ष, तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय)
 ७०, ७५, १४२
 छाङ्-त्येन्-योउ (संयान-अभियन्ता) ४७
 छाङ्-मेइ-लो ("चीन में संस्कृत शब्दों का
 प्रयोग" पर कार्य कर रहे हैं) २५

छाङ्-मिङ्-तान् (केन्द्र-प्रान्त-सम्पर्काधि-
 कारी) ४६
 छान् स्तुङ् (= ध्यान सम्प्रदाय) १४३
 छान् नदी १०३
 छा-यिङ् १०९
 छिङ् कञ्जूर १०२ (छिङ् वंश के समय
 भोट में १०० भागों में प्रकाशित।
 स्वान्-जन् स्स में)
 छिङ्-कालीन स्वेन्-च्वाङ् का चित्र ७९
 छिङ् महाराज १२५
 छिङ् राजप्रासाद १२३
 छिङ्-लिन् तुङ् (फाइ-लाइ-फङ्) १५५
 छिङ्-ल्याङ् १५७
 छिङ्-त्याङ्-प्राचीन-अभिलेख १५७
 छिङ्-ल्याङ्-विस्तृत-अभिलेख १५७
 छिङ्-त्याङ् गान् (= वू-याइ शान्)
 (मञ्जुश्री-निवास) १५६, १५७
 छिङ् वंश ७४, ७६ (तुन्-ह्वाङ् में छिङ्
 वंश कालीन मूर्तियां), १२३ (इतिहास)
 छी-यूङ्-या त्रयोदशभूमिक स्तूप (= पूर्वीय
 पो-मा स्स) ११०
 छी-इया स्म (नान्-चिङ् में) १४४
 छी-इया स्स-शिलालेख १४४
 छपेन्-फो (= सहस्र-बुद्ध-गुहा, लुङ्-मन्
 में) ११३
 छपेन्-याङ् नदी १५३
 छपेन् महाराज १५०
 छपेन्-लुङ् (मञ्जु सम्राट्) २८ (विक्रम
 १८०१ का शिलालेख), १६०
 छपेन्-शी स्स (लुङ्-मन् में) ११३
 छपेन्-शू राजा १५०, १५१
 छि-कुङ् ११६

ज

- जन्-यो-सङ्ग (बीड) ३८
जन्-वाङ्ग-कू-बवो-बिङ् ग्रन्थ (संस्कृत से
अनूदित प्रज्ञापारमिता का अंग) १२५
जम्बुद्वीप १५६
जलकूप (बृहत्-भिक्षु भेदियों को पानी देता
है) ८८
जलयान-उद्योग १४६
जलोन्मज्जनवस्त्र कलाशैली (= थाओ-
बुद्ध-त-थाओ-इ-ध्मु-इवी) ७५
जवाहरलाल नेहरू २. १४, ३६, १३८,
१५१, १६४
जातक-कथा-चित्र (लुङ्-मन् में) ११५
जापानी ग्रन्थ १५७
जापानी भिक्षु १५८
जाम्यङ् कुनमि खाङ्(རམ་དབང་ལྷ་
ལྷོ་ལྷ་མོ་) ६३
जावा-निवासी श्रमिक नेता (सिद्धासन
लगाते हुए) १०
जीवित बुद्ध ६२, ६५
जीवित-बुद्धोपदेश-भवन (फ़ा-शी स्स में)
५०
जेतवन (युङ्-हो-कुङ् के लिए प्रयुक्त)
२८
जेहोल् (मञ्चूरिया में) ४३, १२३
जो-साङ् (कुम्-बुम् में) ६३
ज्ञानगुप्त (चीन में भारतीय आचार्य)
१०४
ज्योति (कवान्-जन् स्स में २५० वर्षों से
सतत प्रज्वलित) १०२
ज्योतिष-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२,
६४

ज्योतिष अध्ययन-अध्यापन (युङ्-हो-कुङ्
में) २७

ज्योतिष ग्रन्थ ६४

ज्योतिष-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६४

ट

टण्डन (डूतावास, सिंगापुर) १६३

त

तञ्जूर (भोट भाषा में)—देखिए देर्गे
त°, नार्थाङ्क त°, पेङ्-चिङ्क त°

तञ्जूर (मोंगोल भाषा में) २८

तथागत-सितातपत्रे अपराजित-महाप्रत्यंग
पारमी-मिद्ध नाम धारणो (फ़ा-शी स्स
में पाठ) ५०

तथागतासन (पञ्चशृङ्ग) १५८

तन्त्र का अध्ययन-अध्यापन (युङ्-हो-कुङ्
में) २७

तन्त्रविद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२

तपस्वी भिक्षु ११०

ता-अर् स्स (= कुम्-बुम्) ६१-६५

ताइ-सुङ्क सन्नाट् १०२ (चीनी में
योगाचारभूमिशास्त्र के भूमिका
लेखक), १०४, १०५, ११५

ताइ-पिङ्क कान्ति १४५, १५६

ताओ-ग्रन्थसंग्रह (पेङ्-चिङ्क प्रासाद में)
१२७

ताओ मन्दिर ६६

ताओ-यिन् (योगाचार-दर्शन के विद्वान्)
१०५

ताओ-यिन् धर्माचार्य का सिलालेख १०५
ताङ्क—देखिए शी-इया

ताङ्ग-युङ्ग-युङ्ग (वेइ चिङ्ग वि. वि. के दर्शन
 विभाग के अध्यक्ष; 'बुद्ध-धर्म का
 इतिहास' के लेखक) ३८
 ता-च (ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्य) १०५
 ता-चाओ-ङ्-न्याङ्ग स्स (भोट नाम
 ཏཱ་མ་ལོ་ཤོ་ལོ་) ५०
 ता-चिङ्ग ग्राम १२१
 ता-च्येन्-फू स्स (शी-आन्) ६६
 ता-सा धर्माचार्य (योगाचार, विनय और
 सुखावती के महापण्डित) १०६
 ता-नुङ्ग (शान्-सी प्रान्त की राजधानी)
 ४७, ५१
 ता-नुङ्ग (=महती गुहा, लुङ्ग-मन् में)
 ११६
 ता-नुङ्ग मिलालेख (लुङ्ग-मन् में) ११६
 ता-या-य्वेन् स्स (में सम्राट् अशोक का
 स्तूप) १५८
 तान्त्रिक गुहा (तुन्-ह्लाङ्ग में भोट गुहा)
 ७८, ८५
 तान्त्रिक-बीज-पुस्तक ४३
 ता-पाई (लिङ्ग-यिन् स्स के महन्त) १५१
 ता-फ़ङ्ग-स्येन् स्स (लुङ्ग-मन् में) ११७
 ता-फ़ङ्ग-स्येन् स्स मिलालेख (लुङ्ग-मन् में)
 ११७
 ता-फू स्स (= महाबुद्ध-मन्दिर) १६०
 ता-फो-युङ्ग गुहा (युन्-काङ्ग में) ६२
 ताङ्ग मूर्तियां (शी-काङ्ग) ६२
 ता-यन्-था (शी-आन् में) ६७ (भारतीय
 सूत्रों और मूर्तियों की रक्षा के लिए),
 ६८ (बन्धु हंस का महामन्दिर)
 ता-यन्-था-इतिहास ६८

ता-ली १०४
 ता-शिङ्ग-शान् स्स १०४
 तिङ्ग-ह्नी-छान्-था (=समाधि-प्रज्ञा-
 ध्यानाचार्य उपाधि) १०६
 तुङ्ग-ध्याओ स्स (मिलुणी मन्दिर) ३०
 तुङ्ग-था-नुङ्ग (युन्-काङ्ग) ६१
 तुङ्ग-लिन्-विहार १०६
 तुन्-ह्लाङ्ग ४२ ६०, ६१, ६६, ७१-८८,
 १०१, १५७ (बु-याइ-शान् भित्ति-
 चित्र)
 तुन्-ह्लाङ्ग-कला ८३
 तुन्-ह्लाङ्ग की सहस्रवर्ष प्राचीन छापें
 १०१
 तुन्-ह्लाङ्ग के कलाकार युन्-काङ्ग में ६१
 तुन्-ह्लाङ्ग गवेषणालय ७१, ८०
 तुन्-ह्लाङ्ग गवेषणालय में खण्डित अंश
 ७३
 तुन्-ह्लाङ्ग गुहाएं ६६
 तुन्-ह्लाङ्ग ग्रन्थ ७४, १०० (जापान में
 प्रकाशित)
 तुन्-ह्लाङ्ग चित्र (शी-आन् के विश्रान्तिगृह
 में) ६७
 तुन्-ह्लाङ्ग दशकं पञ्जिका ८४
 तुन्-ह्लाङ्ग नगर ८०
 तुन्-ह्लाङ्ग पर जापानी पुस्तक ७८
 तुन्-ह्लाङ्ग बीड कला पञ्जिका (तुन्-
 ह्लाङ्ग गवेषणालय) ८२
 तुन्-ह्लाङ्ग भित्तिचित्र ७४
 तुन्-ह्लाङ्ग कामा ८८
 तुन्-ह्लाङ्ग बलिताएं ४४, ७२, ७४, १०१
 (शी-आन् विद्वत्विद्यालय के पुस्तकालय)

में), १०१ (तू-शू-क्वान् पुस्तकालय में), १४७ (यू-फू स्स में), १६१ (सुन्-यात्-सन्-विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में), १०१ (फू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में)

तुन्-ह्वाङ्-त्रलिता-सूची ४४

तुन्-ह्वाङ्-शिलालेख ८४

तुन्-ह्वाङ्-शिवमूर्ति ५६

तुन्-ह्वाङ्-शैल-शिखर ८६

तुन्-ह्वाङ्-संस्था ८७

तुषार भाषा द्वारा संस्कृत शब्द चीनी में

४६

तू-शुन् (अवतंसक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक)

१०६

तू-शू-क्वान् (= शान्-सी प्रान्त का पुस्तकालय) १०१

त्रयोदशभूमिक स्तूप (लू-फो स्तूप) १५३

त्रिपिटिक (चीनी भाषा में) ३० (तुङ्-च्याओ स्स में), ३१ (तुङ्-च्याओ स्स में जिह्वारुधिर से) ६४ (अघो ह्वा-यन् स्स में), ६६ (लान्-चाओ स्थित बौद्ध-मना-पुस्तकालय में मिङ्-वंश का संस्करण), १०० (शी-आन् विश्वविद्यालय-पुस्तकालय में), १०१ (शान्-सी प्रान्त के तू-शू-क्वान् पुस्तकालय में ची-सा के ७००० से अधिक खण्ड, मिङ्-संस्करण आदि छः संस्करण हैं), १२४ (मुक्वेन् के नगर पुस्तकालय में सुङ्-य्वेन्, छिङ्-संस्करण), १४७ (चिन्-आन् स्स में ची-सा, झाङ्-हाइ और ताइ-शो संस्करण), १४७ (यू-फू स्स में ची-सा

संस्करण की मूल प्रति), १५०

त्रिपिटिक-परिशिष्ट १२८, १३८

त्रिपिटिक-मुद्रण ऐतिहासिक शिलालेख (वो-लुङ्-स्स में) १०५

त्रिपिटिक-सूची (नांजो) १३२

त्रिभूमि-स्तूप (श-या-तुङ्-गुहा, युन्-काङ्-में) ६१

त्रिमूर्ति ११२, ११५ (लुङ्-मन् में), १५६ (त्रिमूर्ति बुद्ध) (देखिए—बुद्ध त्रिमूर्ति)

त्रिमूर्ति वृषभारूढ शिव ५६

त्रिरत्नविवरण ६० (युन्-काङ्-गुहाओं की खुदाई पर लिखा ग्रन्थ)

त्रिभूलधारी शिव ५६, १४७

त्स-लिन भिक्षु १५०

त्सु-मुङ् भिक्षु १४६

ब

थाइ-त्सुङ् सम्राट्—देखिए ताइ-त्सुङ्

थाइ लिपि—भाषाविज्ञान-पीठ-पुस्तकालय में प्राचीन थाइ लिपि में हस्तलिखित पुस्तिका २६

थाइ-व् सम्राट् ५६, ६१

थाइ हो के सप्तम वर्ष का शिलालेख (युन्-काङ् की ११वीं गुहा में) ६३

थाओ-नुङ्-त-थाओ-इ-थु-इवी (= जलो-न्मज्जन-वस्त्र-कला-शैली, तुन्-ह्वाङ्-)

७५

थाङ्-कालीन गुहा (लुङ्-मन् में) ११२

थाङ्-कालीन मूर्तियां (तुन्-ह्वाङ् में)

७५

थाङ्-कालीन हस्तलिखित ग्रन्थ (तू-शू-

क्वान् पुस्तकालय में) १०१
 भान्-याओ भिङ् ५६ (युन्-काङ् की
 प्रथम ५ गुहाएँ खोदीं), ६१
 थो-पा (तार्तार् जाति) ५२
 ध्येन्-आन्-मन् १६
 ध्येन्-बाह् (सम्प्रदाय) १४४, १५०,
 १५२
 ध्येन्-बाह्-शान् १५७
 ध्येन्-बुङ् स्स (बू-ध्वे मण्डल में) १५१
 ध्येन्-शोउ ११६
 ध्येन्-साङ् (फून् स्स का लामा) ४५
 थ्स-अन् स्स (शी-आन् में) ६७, १०३
 थ्स-अन् स्स अनुवाद-भवन १०३
 थ्स-अन् स्स के महान् त्रिपिटक धर्माचार्य
 (ध्वेन्-च्वाङ्) ६७
 थ्साओ-थाङ् स्स (कुमारजीव के अनुवाद-
 कार्य का मुख्य स्थान) १०६

ब

दलाइ लामा ३० (फून्-थी स्स में), ३५,
 ३६ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय
 में), ६१, ६२, १०२ (क्वान्-जन् स्स
 में), १४७
 दाह-संस्कार १०३ (भारतीय पद्धति से
 विद्वान् ची-कुङ् का), १०४ (आचार्य
 दिवाकर का)
 दिवाकर (भारतीय पण्डित) १०४, १५७
 दुन्दुभि-भवन (शी-आन् में) ६७
 दुभाषिया १२, १३
 दुल्वा ६२
 देर्गे कञ्जूर १४ (पेङ्-चिङ् पुस्तकालय
 में), ३० (सुङ्-चू स्स में), ६३

कुम्-बुम् में)

देर्गे तञ्जूर १४ (राष्ट्रीय-अल्पसंख्य
 जाति-भाषा-साहित्य-विभाग में), ३०
 (सुङ्-चू स्स में), ६३ (कुम्-बुम् में)
 देवनागरी लिपि में ओं मणि पक्षे हूँ
 (लिङ्-यिन् स्स में) १५५
 देवयुग्म ११७
 देवराज ११८
 दोलोनोर् (मञ्चूरिया में) ४३
 टाचत्वारिंशदध्याय-सूत्र १०६, ११०,
 १५३

घ

घर्म का अध्ययन-अध्यापन (युङ्-हो-कुङ्
 में) २७
 घर्मचक्र १५६
 घर्मचक्र और मृग ४६
 घर्मरत्न १०६ (पो-मा-स्स में), ११०
 घर्म-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२
 घर्मनन्दी विहार ४६
 घर्माचार्य १०४, ११८
 घातुगर्म-सप्तभूमि स्तूप ७
 घातुमूर्तियां ४०
 घारणियां (तुन्-ह्लाङ् में भोट) ७३
 घारणी ग्रन्थ १२० (युङ्-हो-कुङ् में
 चार भाषाओं में), १२३ (श-सङ्
 स्स में)
 घारणी-जप १५४
 घारणी-लिखित पत्र १५०
 घारणी-लेख १३१
 घारणी-स्तम्भ १०४ (थाङ्-बंशीय, काङ्-
 ध्वेन् स्स में), १४६

धार्मिक ग्रन्थ (पेइ-चिङ्-पुस्तकालय में)

१२७

धार्मिक चित्र (तुन्-ह्वाङ् में) ७६

भूतराष्ट्र (लोकपाल) १३१

ध्यान १५२, १५४

ध्यानाचार्य १०५, ११८

ध्यान-सम्प्रदाय (= छान्-स्तुङ्) १४३,

१५२, १५४

ध्यान-सम्प्रदाय का उत्कर्ष १०६

ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्यों की मूर्तियां

१५६

न

न (विरोचन) १५८

नगर-पुस्तकालय (मुक्देन्) १२३

नतजानु-सिंह-गुफा (लुङ्-मन् में) ११३

११६

नन्दी (चिन्-आन् स्स में) १४७

नम्मो ओमितोफू (नमोप्रमिताभाय का

जप १६०

नरेन्द्रयशस् (चीन में भारतीय आचार्य)

१०४

नवभूमिक काष्ठ-स्तूप (तुन्-ह्वाङ् में)

८०

नवशब्द-निर्माण (चीन में) २३, २८

नाग-कन्याओं के चित्र ६४, १३१

नागदन्त मूर्ति (पञ्चोत्स मन्दिर में)

६६

नामपुर १६४

नामसेन (अहंत्) ४०

नागाबु'न १४४

नान्-चिङ् २१ (प्रथम निङ्ग राजा की

समाधि), १४२

नान्-चिङ्-अङ्कतागार १४२

नान्-चिङ्-नगरपालिका १४६

नांजो की त्रिपिटिक-सूची १३२

नाममुद्रा (सुदर्शना के लिए) १६१

नारायण-गुहा (मञ्जुश्री का निवास-

स्थान) १५८

नारायण-गुहा-लेख १५६

नारायणचन्द्र सेन (पेइ-चिङ् विद्-विद्यालय में भारतीय विद्यार्थी) २६

नार्थाङ् कञ्जूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ३४ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में), ४६ (फा-शी स्स में), ६३ (कुम्-बुम् में), ६४ (कुम्-बुम् के आयुर्वेद-विद्यालय में)

नार्थाङ् तंजूर १४ (राष्ट्रीय-अल्पसंख्यक-जाति-भाषा-साहित्य-विभाग में), ४६ (फा-शी स्स में) ६३ (कुम्-बुम् में, यहां हस्तलिखित नार्थाङ् भी है)

निङ्-क्या प्रान्त १२६

निमन्त्रण-पत्र १

निर्वाण-समाधि २८

नोलमेघ मन्दिर ४०

नीलाम्बर भिक्षु (बू-घाह-शान् में) १५८

नीलोत्पल-गुहा (लुङ्-मन् में) ११६

नेहरू — देखिए जवाहरलाल नेहरू

न्याय-चर्चा (विहारों-मन्दिरों में) ४६

प

प (अमितायु) १५८

पक्षि-कूजन घुनने के लिए भवन (श्रीष्य

प्रासाद में) ४४

पञ्चदशभूमिक मन्दिर (श्याओ-यन्-था)

६६

पञ्चभूमिक स्तूप १०२ (बुझ को काट छांट कर श्वान्-जन् स्स में), ११६, १४४ (छी-श्या स्स में), १४५ (छी-श्या स्स में शरीर स्तूप), १४६ (श-शान् में)

पञ्चभूमि—देखिए बौद्ध पञ्चभूमि

पञ्चवंशकालीन गुहा (तुन्-ह्लाङ् में)

७६

पञ्चवंशकालीन चित्र (तुन्-ह्लाङ् में) ७४

पञ्चवंशकालीन स्तूप (तुन्-ह्लाङ् में)

७२

पञ्चवर्षीय योजना (चीन की) १२८

पञ्चशत-अर्हत्-मन्दिर (= वू-पाइ-लो-हान्-था) १६०

पञ्चशील १४

पञ्चभृङ्ग (= वू-थाइ) १५७

पञ्चभृङ्ग वर्णन १५८

पञ्चोत्स (लान्-चाओ में) ८६

पञ्चोत्स-मन्दिर (लान्-चाओ में) ६६

पञ्छेन् लामा ३० (फू-धी स्स में), ३६

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में),

६१, १०२ (श्वान्-जन् स्स में), १४७

पञ्च-निर्वाणो (श्वान्-चोउ में) १५६

पञ्चगुहा (लुङ्-मन् में) ११६

पञ्चाकार प्रभावच्छल ११७

पाताललोक के दृश्य (श्रीष्म-प्रासाद के त्रिभूमिक रंगमण्डप में) ४४

पा-ता-लिङ् १३०

पा-वू-सङ् (सुङ्-वू स्स के ज्येष्ठ लामा)

३०

पाद-चिह्न (चोङ्-ख-प के) ६३

पारस देश की कला (चीन में) ११४

पारिभाषिक शब्दावलि समिति २८

पिङ्-याङ्-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११४

पितृपूजा के विशाल भवन २६

पीतनदी १२७

पीत मन्दिर (= श-सङ् स्स, मुक्देन्) १२३

पीताम्बर भिक्षु (वू-थाइ शान् में लामा)

१५८

पीनांग १६३

पी-विन्-स्स = नीलमेघ-मन्दिर ४०

पुई भाषा की लिपि २६

पुण्डरीकसूत्र—देखिए सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र

पुनीत-भूमि सम्प्रदाय—देखिए सुखावती

सम्प्रदाय

पुरातन साहित्य-विक्रयशाला १२८

पुरावशेष-विभाग ६५

पुरुषोत्तम प्रसाद (पेइ-चिङ्, विश्व-

विद्यालय में हिन्दी के अध्यापक) ३८

पू-क्वाङ् स्स १०५

पू-खुङ् (= अमोघवज्र आचार्य) १०४

पू-खुम् (अनुवाद) १२५

पू-छी आचार्य १०५

पूजा कोष्ठ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक

विद्यालय में भोट और मोंगोल

विद्यार्थियों के लिए) ३४

पू-ताई (के रूप में मैत्रेय) १५६

पू-थो-शान् (अवलोकितेश्वर का निवास)

१५७

पूर्वीय पो-मा स्स (= छी-गुङ्-था) ११०

पेइ-क्वाङ्-यू (अध्यय, शा-सङ् स्स)

१२३

पेइ-चिङ् १२, १२०, १२५, १४२

पेइ-चिङ् कञ्जूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ४८ (शी-ली-यू-चाओ में), ४९ (फ्रा-शी स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में)

पेइ-चिङ् की शासन-चालित वस्त्र-निर्माणी सख्या १ ३१

पेइ-चिङ् के आधुनिक भवन ३७

पेइ-चिङ् तंजूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ४९ (फ्रा-शी स्म और शी-ली-यू चाओ में), ९३ (कुम्-बुम् में), १२९ (सरस्वती विहार में आया)

पेइ-चिङ् थू-ष-क्वान् = पेइ-चिङ् पुस्तकालय

पेइ-चिङ् पुस्तकालय १४, १५, १२५

पेइ-चिङ् प्रासाद १२७

पेइ-चिङ् भारत दूरभाष २२

पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय ३८

पेइ-लिन (शी आन् में शिलावन) १०३

(योगाचारभूमिशास्त्र की भूमिका-शिला सुरमित है), १०५

पोलियो (P. Pelliot) ७३, ७७, ७९,

८७

पो-मा स्स (लो-याङ् में) १०८

पो-यन् (सेनापति) १५५

पो-स (उपाधि, कुम्-बुम्) ९५

प्रज्ञा १५४

प्रज्ञापारमिता १२५

प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र २३ (मोंगोल में), ५०, १०३ (शिलालेख)

प्रतिपदा-पाठ (फ्रा-शी स्स में लामाओं द्वारा) ५०

प्रथम मई उत्सव १६

प्रथम मई के घोषनाद १८-२१

प्रदर्शनी १२५ (भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्ध), १६४ (दिल्ली में)

प्रधान मन्त्री (चीन के) ४१, १२५, १३८, १४०

प्रभा (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में हिन्दी की अध्यापिका श्रीमती~) ३८

प्रभातरत्न (युन्-काङ् में) ६१, ६३

प्रभातरत्न-स्तूप ६१

प्रभूतरत्न (युन्-काङ् चित्रों में) ५७

प्रामाद २३

प्रासाद-पुस्तकालय १५, २४

फ

फङ्-कुङ्-शा (चित्रकार) १६१

फङ्-श्येन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७

फङ्-श्येन् स्स-शिलालेख (लुङ्-मन् में)

११७

फन्-क्वो-कुङ्-शिलालेख १०५

फाग्स्या (मोंगोल लिपि के निर्माता) १३१

फाग्स्या (तुन्-ह्वाङ् में षड्-भाषा-शिलालेख) ८४

फाग्स्या (मोंगोल)-लेख १३१

फा-स्तुङ् ग्रामोपाध्याय (युन्-काङ्) ६३

फान् गुलिक् १३२

फ्रा-शी स्स (= धर्मनन्दी विहार) ४९

फ्रा-ध्येन् (अनुवादक) १३२

फिङ्-खङ् (= ता-नुङ्) ५१, ५३

फ्री-लू-को भवन (पो-मा स्स में) ११०

फू-बो-शिङ्-भ्याओ स्स १००
 फू-बो-शिङ्-भ्याओ स्स-पुस्तकालय १०१
 फू-छिन् बाले च्येन् च्येन् के द्वितीय वर्ष
 = ४२३ विक्रम ६१

फू-त्त स्स ४५
 फू-त्त स्स-पुस्तकालय ४५
 फू-बी स्स (= बोधि-विहार) ३०
 फेइ-चाङ्-फाङ् (त्रिरत्नविवरण के
 लेखक) ६०
 फेइ-लाइ-फाङ् (पवंत-गुहाएं) १५१,
 १५२, १५४
 फेइ-लाइ-फाङ्-कला १५६
 फो-लाइ गुहा (युन्-काङ्) ५५
 फोत्कर (बलिन् अद्भुतागार के अधि-
 कारी Völker) २८
 फो-हाइ स्स ११८

ब

बम्बई १६४
 बहुभाषा-कोष १५
 बहुविभागीय विक्रयागार ६
 बाण्डुङ् सम्मेलन ४१
 बामियान् (अफगानिस्तान में) ५२
 बुद्ध १०० (त्रिमंग मूर्ति, ७वीं शती,
 भारत से चीन में), ११७, १२३
 बुद्ध की प्रभास्वर मूर्तियां (ग्रीष्म-
 प्रासाद में) ४४
 बुद्ध की महती मूर्ति (तुन्-ह्वाङ् में)
 ७९
 बुद्ध के क्षरीरांश (लंका से) २९
 बुद्धगया से बोधिवृक्ष ६
 बुद्धचरण (बो-लुङ् स्स में) १०५

बुद्ध-जन्मदिवस ८८ (तुन्-ह्वाङ्), १६०
 बुद्ध-जन्मोत्सव (तुन्-ह्वाङ्) ७६
 बुद्ध-त्रिमूर्ति ११२, ११५ (लुङ्-मन्
 में), १५६
 बुद्ध-धर्म प्रचारकों की मूर्तियां (कुम्-बुम्
 में) ६३
 बुद्ध-धर्म (राज्य-धर्म के रूप में) ५३
 बुद्ध-नाम-जप १५३
 बुद्ध-परिमल-स्तम्भ मन्दिर ४४
 बुद्धपाल (भारतीय भिक्षु) १५६, १५७,
 १५८
 बुद्ध-भवन (उपरि ह्वा-यन् स्स में) ६३
 बुद्ध-मूर्ति ५ (१५०० वर्ष पूर्व भारतवर्ष
 से आई), ६१ (स्वी-ना-फो तुङ् गुहा
 में), ७९ (तुन्-ह्वाङ् में ६६ हाथ
 ऊंची) ९१ (बोधिवृक्ष पर), १०१
 (तू-गू-कवान् पुस्तकालय में ५०० वर्ष
 प्राचीन), १०२ (६ठी, ७वीं शती
 की, अद्भुतागार में), १०२ (कवान्-
 जन् स्म में घाङ् वंश कालीन चन्दन
 की, भारतवर्ष से आई कांस्य की),
 १०९ (पो-मा स्स में), ११३ (लुङ्-
 मन् में), १४३ (हान् वंश की),
 १५४ (महास्थामप्राप्त मुकुट में),
 १६०
 बुद्ध सेटे हुए (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
 बुद्ध-विहार-निर्माण-पुष्प ११८
 बुद्ध-वृक्ष (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
 बुद्ध-क्षरीर (लू-फो स्तूप) १५३
 बेकाल झील ५३
 बोधि-धर्म (भारतीय भाषाएँ) १०७

बोधि-पत्रों पर अर्हंतों के चित्र १०
 बोधिवृक्ष ९, ९१ (कुम्-बुम् में), ९३
 बोधिवृक्ष-स्तूप (कुम्-बुम् में) ९३
 बोधिसत्त्व ७९ (तुन्-ह्लाङ् में), १०३,
 ११४, ११५ (आत्माहुति करते हुए),
 ११६, ११७, ११८, ११९, १२३,
 १५४
 बोधिसत्त्वचर्यावितार ५०
 बोधिसत्त्व युग्म ११४, ११७
 बौद्ध आचार्यों के इतिहास-शिलालेख १०५
 बौद्ध उपदेश १५४
 बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार ८४
 बौद्ध पञ्चमूर्ति (लङ्-मन् में) ११७
 बौद्ध पञ्चमूर्ति-शिलालेख ११७
 बौद्ध मन्दिर (मण्डल में) १०४
 बौद्ध मूर्तियां ६९ (च-च्यान् में), १४५
 (पर्वतोत्कीर्ण)
 बौद्ध विद्या का केन्द्र (ता-शिङ्-शान् स्स)
 १०४
 बौद्ध संग्रह (नगर-पुस्तकालय, मुक्देन्)
 १२४
 बौद्ध सभा (लान्-बाओ में) ९६
 बौद्ध सभा पुस्तकालय ९६
 बौद्ध सम्प्रदाय १५४
 बौद्ध सूत्र ४४ (तुन्-ह्लाङ्, बलिताओं में),
 १३२, १५५
 बौद्धसूत्र-मुद्रणालय १४३
 बौद्ध सूत्रों की अग्निपरीक्षा १०९
 बौद्ध स्तूप (हाङ्-चोउ में) १५०
 ब्रह्मा २४, १४७ (चिन्-आन् स्स में
 चतुर्भुज ब्रह्मा)

भ

भट्ट (लंका के स्फटघातु व्यापारी) १६३
 भागवत पुस्तकालय भवन (अधो ह्या-यन्
 स्स में) ६४
 भानुचन्द्र वर्मा (पेङ्-चिङ् विश्वविद्यालय
 में हिन्दी के अध्यापक) ३८
 भारत-चीन-वीगूर सम्बन्ध २६
 भारत-चीन सम्बन्ध ११४
 भारतवर्ष १५७
 भारतीय धर्मदूत (पो-मा स्स में) १०८
 भारतीय पद्धति से दाह-संस्कार १०३
 भारतीय प्रभाव (तू-शू-क्वान् अद्भुतागार)
 १०१
 भारतीय भिक्षु (युन्-काङ् में) ६०
 भारतीय मूर्तियां (चीन में) ६०, १००
 भारतीय लिपि १३२
 भारतीय इवेन्-च्वाङ् (आचार्य रघुवीर के
 लिए) ४१, ९५, १३९, १४१
 भाषाविज्ञान-पीठ २५
 भाषाविज्ञान-पीठ पुस्तकालय २६
 भिक्षुणी (तुन्-ह्लाङ् में) ८८
 भिक्षुणी-विहार १५४
 भेषज्यगुरु ५०, ६४, ९८
 भोट कञ्जूर—देखिए कञ्जूर
 भोट (षङ्-भाषा-शिलालेख, तुन्-ह्लाङ् में)
 ८९
 भोट-अंग्रेजी कोष (शरत्चन्द्रदाम-कृत का
 चीन में पुनर्मुद्रण) ३६
 भोट कला तथा साहित्य ११४, १५५
 भोट काष्ठलिपियां (पेङ्-चिङ् विश्व-
 विद्यालय में) ३८
 भोट-चित्र-गुहा (तुन्-ह्लाङ् में) ८६

भोट-चीनी कोष (फू-थी स्स में निर्माणा-
धीन) ३०
भोट तान्त्रिक गुहा (तुन्-ह्लाङ् में) ७८
भोट नृत्य ६०
भोट पूजा १५६
भोट बौद्ध साहित्य (शी-आन् विश्व-
विद्यालय के पुस्तालय में) १००
भोट भाषा ६०
भोट भाषा का अध्ययन-अध्यापन (राष्ट्रीय
अल्पसंख्यक विद्यालय में) ३४, ३५
भोट में ओं मणि पद्यो हूं (तुन्-ह्लाङ् में)
८५
भोट, मोंगोल पूजा-गृह (राष्ट्रीय अल्प-
संख्यक विद्यालय में) ३५
भोट लेख ७८ (तुन्-ह्लाङ्), १२३ (बुद्ध-
मूर्ति पर) १३१ (शिलालेख)
भोट स्तूप १३१

म

मगध ११४, १५४
मगध के मिस्र कलाकार (युन्-काङ्
में) ६०
मञ्जु १३६, १४१
मञ्जु कञ्जूर के ६० भाग १५
मञ्जु ग्रन्थ १०० (शी-आन् विश्वविद्यालय
पुस्तकालय में), १२६ (पेइ-चिङ्
विश्वविद्यालय में)
मञ्जु-चीनी कोष १५
मञ्जु त्रिपिटक १५
मञ्जु में बौद्ध साहित्य १५
मञ्जु-मोंगोल ग्रन्थों का सूचीपत्र २४
मञ्जु लिपि के आलंकारिक रूप १५

मञ्जु लेख (बुद्धमूर्ति पर) १२३
मञ्जुश्री ६३ (कुम्-बुम् में), ६६, १५६,
१५७, १५८
मञ्जुश्री-उपासना १५७
मञ्जुश्री का धर्मोपदेश (युन्-काङ् की
छठी गुहा में) ६२
मञ्जुश्री का निवास १५६, १५७ (बू-
बाइ शान्), १५८ (चिन्-काङ् खू
वज्रगुहा और नारायण-गुहा में)
मञ्जु सम्राट् छपेन्-लुङ् १६०
मञ्जु साहित्य (दशसहस्र खण्ड) १५
महती गुहा (=ता-तुङ् लुङ्-मन् में)
११३, ११६
महाकाय धूपपात्र १४६
महाकाल ६३ (कुम्-बुम् में), १४७ (चिन्-
आन् स्स में)
महाकाल-चित्र ५०
महाकाल-मन्दिर (चीनी में—महाकाल-
म्याओ) ४५
महा-बुद्ध-मन्दिर (=ता-फू स्स) १६०
महाभित्ति २६, ४७, १३०
महायान १४४
महा-रत्न सञ्चय-सूत्र २३
महास्थामप्राप्त ६३ (युन्-काङ् में शिला-
लेख), १५४ (मूर्ति)
महा ह्या-यन् स्स = अषो ह्या-यन् स्स ६४
माओ-स्स तुङ् १, १६, २६ (~और
श्वेन्-ष्वाङ् की भारत-यात्रा-पुस्तक),
१२५, १५१, १६१
मातंग (पो-मा स्स में) १०६
मातंग-मूर्ति-कोष्ठ-भित्तिलेख १०६
माध्यमिक शास्त्र १४४

मायूरी-विद्याराज मूर्ति (यन्-श्या तुङ् में)
 १२४
 मार-वमन मुद्रा (में शाक्यमुनि) १५६
 मार्को पोलो (अर्हत्) १६०
 मार्क्सवाद- (शिक्षा का आधार) ३४
 मिङ् ७७
 मिङ्-ती सम्राट् १०६
 मिङ्-राजा (द्वितीय) का शरीर समाधिस्थ
 २६
 मिङ्-राजाओं की समाधियां २६
 मिङ्-लुङ् भवन १०३
 मिङ्-शा शान् (तुन्-ह्लाङ् में पहाड़ी)
 ६०
 मिङ्-संस्करण का त्रिपिटक (तू-शू क्वान्
 पुस्तकालय में २००० खण्ड) १०१
 मिङ्-सङ्-शाओ बौद्ध पण्डित (छी-श्या
 स्स के संस्थापक) १४४
 मी-लो-फो ८
 मुक्देन् १५, १२१-१२४
 मुक्देन् अङ्गनागार १२३
 मुक्देन् की भेंट (धारणी-ग्रन्थ) १२३
 मुक्देन् मन्दिर १२२
 मुद्रणालय (कुम्-बुम् में) ६४
 मुद्रलिख (चीनी भाषा का) १६२
 मू-सुङ् सम्राट् १०६
 मूर्ति-पीठ (तुन्-ह्लाङ् के) ८६
 मूर्तियां, ४० (सुवर्ण-मन्त्र-मण्डित काष्ठमयी
 ५०८ मूर्तियां), १४३ (मृण्मय सुवर्ण-
 मण्डित १०,००० मूर्तियां)
 मृगवाच ५८
 मृच्छकटिक का चीनी अनुवाद २६
 मेघनाद साहा ६६

मैत्रेय ६३ (युन्-काङ् में), ६३ (कुम्-बुम्
 में), ६६ (सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा,
 रांगा, पञ्चघातु से बनी हुई), ११४,
 ११७, १३४, १३५, १५५, १५६
 (पू-ताइ रूप में)
 मैत्रेय-भवन (कुम्-बुम् में) ६३
 मो-गाओ-कू (मरु-महागुहा) का शिला-
 लेख (तुन्-ह्लाङ् में) ८४
 मोंगोल १३६, १४१
 मोंगोल कञ्जूर—देखिए कञ्जूर
 मोंगोल कला १५५
 मोंगोल काष्ठलिपियां (पेह-चिङ् विश्व-
 विद्यालय में) ३८
 मोंगोल शृत्य ६०
 मोंगोल पूजा १५६
 मोंगोल भाषा ३४ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक
 विद्यालय में अध्यापन का विशेष
 प्रबन्ध), ३६ (प्रचारात्मक साहित्य),
 ६२
 मोंगोल-भोट कोष १५
 मोंगोल मन्दिर युङ्-हो-कुङ् २७
 मोंगोल में ओ मणि पद्ये हूँ (तुन्-ह्लाङ्
 में) ८५
 मोंगोल में हृदय-सूत्र २३
 मोंगोल लेख ७८ (तुन्-ह्लाङ् में), १२३
 (बुद्ध-मूर्ति पर)
 मोंगोल व्याकरण ५१
 मोंगोल समाचारपत्र (राष्ट्रीय अल्प-
 संख्यक विद्यालय के वाचनालय में)
 ३६
 मोंगोल साहित्य में संस्कृत शब्द ४५

यन्-ई (संकलनकर्ता, छिद्र-त्याङ्, विस्तृत
अभिलेख) १५७
यन्प्रोपकरण-निर्माणी (मुक्देन् में) १२५
यन्-शोउ १५२ (त्सुङ्-चिङ्-लू=बौद्ध
सम्प्रदायों के दर्शन का संकलनकर्ता),
१५३ (लू-फो स्तूप का संस्थापक)
यन्-शोउ समन्वय १५२
यन्-श्या तुङ् १५४
यब्-युग् = नद्ध-युग (तुन्-ह्लाङ् में) ८६
यम २४
याकुशि-जी मन्दिर में बुद्धचरण १०५
याङ्-स्स (नदी) १२, १४२
याङ्-निङ् द्वार (शी-आन् में) ६६
याङ्-पिङ् १०८
याङ्-त्येन्-चन्-च्या (मोंगोल भिक्षु)
१५५
याङ् सन्नाट् ६२
यिङ्-त्सुङ् सन्नाट् १३१
यिगिकावा (युङ्-हो-कुङ् के अध्यक्ष,
बूद्ध वैद्य) २७, १२०
यी छान्-चू भिक्षु, (तुन्-ह्लाङ् में) ७३
युआन् चुङ्-श्वेन् (भारत में चीनी राजदूत)
१६४
युङ्-मन् ७१
युङ्-लुङ् ११६
युङ्-हो-कुङ् २७, १२०, १२५
युङ्-हो-कुङ्-आयुर्वेद-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ् का इतिहास २७
युङ्-हो-कुङ् का फो-साङ् अर्थात् बुद्ध
भाषागार २७

युङ्-हो-कुङ्-ज्योतिष तथा भूगोल विद्या-
लय १२०
युङ्-हो-कुङ्-तन्त्र-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ्-धर्मपाठ-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ् में आयुर्वेद, ज्योतिष, तन्त्र
और धर्म का अध्ययन-अध्यापन २७
युङ्-हो-कुङ् में सन्नाट् छपेन्-लुङ् का
शिलालेख २८
युङ्-हो-कुङ्-विद्यालय-पाठ्यक्रम १२५
यु-छ्वेन् विहार १४४
युन्-काङ् ४२, ५२-६३ (गुहाए), ७३,
११२, ११३, १४५
युन्-काङ् शिलालेख ११२
युन्-छी स्स १५३
यू-ताओ-छ्वेन् (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक
विद्यालय में भोट-कोष बना रहे हैं)
३५
यू-फू स्स १४७
यू-ह्ला प्रासाद (में श्वेन्-च्वाङ् रहे) ६७
योग २६
योगाचार दर्शन पर टीका (१०० खण्डों
में ची-कुङ् द्वारा लिखित) १०३
योगाचारभूमिशास्त्र का चीनी अनुवाद
१०२
य्वे (अध्यक्ष, शी-आन् विश्वविद्यालय)
६६
य्वेन्-कालीन स्तूप (तुन्-ह्लाङ्) ८०
य्वेन्-कुङ् भिक्षु ११०
य्वेन्-तिङ् भिक्षु (हुङ्-फू स्स के अधि-
पति) १०३
य्वेन्-स्स (कोरिया के महाराज के पीप
और श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य) १०४

ज्येन्-स्स स्तूप (शिक-ब्याओ स्स में) १०३
 ज्येन्-साङ् ११०
 ज्येन्-बंशीय शिलालेख (तुङ्-ह्वाङ् में, छः
 भाषाओ में) ८४
 ज्ये-फाङ्-तुङ् (= औषध-योग-गुहा, लुङ्-
 मन्) ११८
 ज्ये-फाङ्-तुङ् शिलालेख ११६

र

र (रत्नसम्भव) १५८
 रघुवीर का अंकनी-चित्र ८५
 रत्नसञ्चित मूर्तियां (छिङ्-राजप्रासाद में)
 १२३
 रत्नसम्भव ६३, १५८
 रवीन्द्रनाथ ठाकुर १२४, १२६
 राघवन् (भारतीय राजदूत) १३, १३८
 राजेश सरण (पेङ्-चिङ् विश्वविद्यालय
 में हिन्दी के अध्यापक) ३८
 राधाकृष्णन् १६४
 रामायण के चीनी साहित्य में उल्लेख
 २६
 राष्ट्रपति माओ त्स-तुङ्—देखिए माओ-
 त्स-तुङ्
 राष्ट्रभावना २५
 राष्ट्रभाषा २५
 राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय (पेङ्-चिङ्
 में) ३३-३७
 राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य
 विभाग १४
 राहुल (अर्हुत्) ४०
 रघ्वस्वरूपा मूर्तियां ४५
 रूसी भाषा (विश्वविद्यालय में) १००

Robert Heidenreich (येना Jena के
 पुराविशेषज्ञ) २८

ल

लक्ष बुद्ध मन्दिर=कुम्-बुम् ६१
 लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास-प्रकरण का
 चीनी अनुवाद २६
 लंका १६४
 लंका के भिक्षु कलाकार (युन्-काङ् में)
 ६०
 लंका से बौद्ध भिक्षु, चीन में ६१
 लाओ-चुन्-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 लाञ्छा लिपि ६३, १२२, १३१
 लान्-चाओ (कान्-सू प्रान्त की राजधानी)
 ६७, ८६-९०, ९५
 लात्राङ् (कान्-सू प्रान्त में) ४३
 लिंगेती (बूदापेस्ट से प्राध्यापक) २८
 लिङ्-यिन् स्स १४४, १५१ (बू-य्वे
 मण्डल में), १५५
 लिङ्-यिन् स्स-इतिहास १५१
 लिन्-ची ध्यान सम्प्रदाय १५२
 ली-इ-फु ६८
 ली-उङ्-बिङ् (चीन के इतिहास का
 लेखक) ५२
 ली-जन्-ज (कोरिया का दार्शनिक
 विद्वान्) १५०
 ली-ते-ची (मोंगोल के विद्वान् और
 राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य-
 विभाग के अध्यक्ष) १४
 ली-श्याओ-लुन् ११५
 लुओ-छाङ्-फेइ ("चीनी ध्वनिशास्त्र के
 अध्ययन में भारत की देन" के लेखक)
 २५

लुङ्-मन् ११२-१२०, १४५
 लुङ्-मन् शिलालेख ११२
 लुङ्-हुङ्गुङ् (फ्रेड-लाइ-फङ्) १५५
 लुङ्-हुङ् तुङ्ग द्वार-चित्र-कथा १५४
 लू-फ्रो स्तूप १५३
 लू-शान् १०७
 लेइ-फङ् स्तूप (हाङ्-चोउ) १५०
 लोकपाल धृतराष्ट्र १३१
 लोकपाल-भवन (चिङ्-शान् स्त में) १५६
 लोकेश्वर (कुम्-बुम् में) ६३
 लो-चाङ्-पेइ (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान-
 संस्था) ४१
 लो-त्सुन् मिङ् ६०
 लो-याङ् १०८, १११, ११२
 लो-याङ्-मिङ् १०६
 लो-हन्—देखिए अर्हत्
 लो-हन् तुङ् (फ्रेड-लाइ-फङ्) १५५
 ल्याङ् उत्तर ६१
 ल्येन्-ह्वा-नुङ् (= ई-न्वे तुङ्, लुङ्-मन्)
 ११६
 ल्याओ लिपि का शिलालेख (मुक्देन् के
 छिङ्-राजप्रासाद में) १२३
 ल्यु-सी छाङ् में बौद्ध पुस्तकें २३
 ल्हा-सा ६१, ६२
 ल्हासा कञ्जूर ३० (फू-थी स्त में), ६३
 (कुम्-बुम् में), ६४ (कुम्-बुम् के
 आयुर्वेदविद्यालय में)

ब

बंशीय इतिहास १२८
 बज्रगुहा (बू-याइ-शान् में) १५७
 बज्रछेदिका-सूत्र ११६, १५३
 बज्रदेव १५४

बज्रदेव-युग्म ११५, ११६
 बज्रघरदेव ११८
 बज्रघर-युग्म ११७
 बज्रपाणि ६३ (कुम्-बुम् में), १५५ १५६
 बज्रमण्डल-शिलाचित्र (काइ-न्वेन् स्त में)
 १०५
 बज्रयोद्धा ११४
 बज्रशेखर-सूत्र १५८
 बज्रामृतपञ्जिका (पेइ-चिङ् विषव-
 विद्यालय में) ३८
 बनवासिन् (अर्हत्) ४०
 बन्-छङ् सम्राट् ५६
 बन्-म्याओ (में ऐतिहासिक-शिलालेख-
 संग्रह) १०५
 बन् सम्राट् १४५
 बर्तुल लिपि ६३
 बस्त्र-निर्माणी (पेइ-चिङ् में) ३१-३३
 वाङ् (तुन्-ह्वाङ् में) ७३
 वाङ्-चिङ्-लू (शी-स्या के विद्वान्) ४४
 वान्-फ्रो-नुङ् (= सहस्र-बुद्ध-गुहा, लुङ्-
 मन् में) ११६
 वान्-फ्रो-नुङ्-शिलालेख (लुङ्-मन् में)
 ११६
 वान्-स्वेन्-यस (भारत में चीनी अधिकारी)
 ११४
 वार्नर (Warner) ७४, ७५
 विदेश-व्यापार नीति २५
 विद्या-सभा (पेइ-चिङ् में) १३३
 विनय ६२ (बुल्वा), १५२
 विनायक (तुन्-ह्वाङ् में) ६१
 विमलकीर्ति ६०, ६२ (युम्-नाङ् की
 छठी गुहा में)
 विरूढक (लोकपाल) १३१

विरूपाक्ष (लोकपाल) १३१
 विरोचन १५८
 विश्वकोष (= स्स-कू-युन्-शू) १२४
 विश्वसागर का शिला-चित्र (काह-य्वेन्
 स्स में) १०४
 विष्णु ५६ (युन्-काक् की फो-लाइ गुहा
 में पञ्चमुख गडहारूड~), ६१ (तुन्-
 ह्नाक् में), ६२ (युन्-काक् की आठवीं
 गुहा में)
 विहारों के इतिहास के शिलालेख १०५
 वीगूर ८४ (वड्-भाषा-शिलालेख, तुन्-
 ह्नाक्), १४१
 वीगूर काष्ठमुद्र ७६, ७७
 वीगूर भाषा का अध्ययन-अध्यापन
 (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में
 विशेष प्रबन्ध) ३४
 वीगूर (प्राचीन) भाषा में श्वेन्-ज्वाक् की
 जीवनी २६
 वीगूर लेख १३१
 वू-पाइ-लो-ह्वन्-था १६०
 वू-युन् वान् (पर्वत) १५३
 वू (चिन्-वंश के महाराज) १०४
 वू-चाओ (नवी) ५२
 वू-अऊ भिक्षु (तुन्-ह्नाक् में) ८४
 वू-ता-तुक पञ्चगुहा (युन्-काक् में) ५६
 वू-ती स्वप्नचित्र (तुन्-ह्नाक् में) ७५
 वू-थाइ (= पञ्चभुङ्ग) १५७
 वू-थाइ-वान् (पर्वत) ७६ (तुन्-ह्नाक् में),
 १५६, १५७, १५८
 वू-थाइ-वान्-इतिहास १५७
 वू-थाइ-वान्-वज्रगुहा १५७
 वू-थाइ-य्वेन् १५७

वू-पाइ-लो-ह्वन्-था (= पञ्चशत-अहंत्-
 मन्दिर) १६०
 वू महारानी ११२, ११७
 वू-य्वे १५१
 वू-य्वे मण्डल (हाऊ-चोउ) १५०
 वू-श्याओ-लिङ्क (संस्कृत नाम—दिवाकर
 नपाध्याय, चार संस्कृत ग्रन्थों का
 चीनी में अनुवाद कर रहे हैं) २६
 वृषभारूड शिव त्रिमूर्ति ५६
 वेइ-अऊर गुहा (लुङ्क-मन् में) ११७
 वेइ-अऊर-गुहा-शिलालेख (लुङ्क-मन् में)
 ११७
 वेइ-फऊ भिक्षु १४६, १४७
 वेइ महारानी ११५
 वेइ वंश का इतिहास ५६, ११३
 वेइ-वा बौद्ध सम्प्रदाय १५२
 वेदिक मिस्टिसिज्म Vedic Mysticism
 १२४
 वैरोचन बुद्ध ६३, १०५ (काह-य्वेन् स्स
 में शिलाचित्र), ११७, ११८
 वैरोचनमण्डल (छिङ्क-लिन् तुङ्क) १५५
 वैश्रवण (लोकपाल) १३१, १५५
 वो-लुङ्क स्स १०५
 वा
 वाकेन्द्र-गुहा (मगष की) ६८
 वा-जू स्स (लुङ्क-मन् में) ११९
 वा-जू स्स शिलालेख ११६
 वास (भारतवर्ष से वान्-अन् स्स में)
 १०२
 वा-पी स्स ११८
 वा-ध्या-क्रो गुहा (युन्-काक् में) ५५
 वा-वा तुङ्क (युन्-काक् में) ६१

शन्-स्यु (सम्राट्गुह) १०५
 श-फो स्स की ६ गुहाएं (युन्-काङ् में)
 ५६
 श-वू तुङ् (गुहा) १५४
 श-वू तुङ्-शिलालेख १५४
 श-शान् गुहाएं १४५
 श-सू तुङ् (फ्रेड-साइ-फङ् में) १५५
 श-श्वेन् (काश्मीर के राजकुमार) ६१
 श-सङ् स्स (= पीत मन्दिर, मुक्वेन् में)
 १२३
 श-हू (अनुवादक) १३२
 शाओ-लिन् विहार (अःचार्य बोधिधर्म
 का कार्यस्थान) १०७
 शाकुन्तल का चीनी अनुवाद २६
 शाक्य तुङ् (युन्-काङ् में) ६३
 शाक्यमुनि २८, ५७ (युन्-काङ् गुहाओं
 में), ६०, ६१ (युन्-काङ् की श-वा
 तुङ् गुहा में), ६२ (ता-फो तुङ्
 गुहा में युन्-काङ् की विशालतमा
 मूर्ति), ६३ (युन्-काङ् में) ६४, ६२
 (कुम्-बुम् में), ६४, ६५, १०३,
 ११४-११७, ११९, १५४, १५५,
 १५६ (मार-दमन-मुद्रा में)
 शाक्यमुनि-जीवनवृत्त ६६ (गजदन्त-मूर्ति),
 १४५
 शाक्यमुनि-भवन ६२ (युन्-कङ् की ६ठी
 गुहा), ६३ (कुम्-बुम् में जो-शाङ्)
 शाङ्-श्वेन् ११७
 शाङ्-हाइ ६६, १२८, १४६
 शान्-तानो ध्यानाचार्य (लुङ्-मन् में)
 ११८
 शा-तेन् स्हा-शाङ् (कुम्-बुम् में) ६४
 शिङ्-शान् (=शी-शान्) ६७

शिङ्-श्याओ स्स १०३
 शिङ्-श्याओ स्स शिलालेख १०४
 शिन्-श्याओ फ्रान्-श्वेन् (पेइ-शिङ् का
 विश्रान्तिगृह) १२
 शिलालेख
 अष्टकोण स्तम्भ धारणी १११
 इतिहास (विहारों और आचार्यों का)
 १०५
 उष्णीषविजया-धारणी १०४, १४६
 औषध-योगों पर ११६
 काइ-श्वेन् स्स में धारणी-स्तम्भ १०४
 कुम्-बुम् में ६३
 कू-याङ् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 क्वेइ-फङ्-स्मुङ्-मो के ध्यानाचार्य का
 १०६
 खण्डित गुहा (लुङ्-मन् में) ११७
 चिङ्-शान् स्स (लुङ्-मन् में) ११५
 छी-श्या स्स में १४४
 ताओ-यिन् धर्माचार्य का १०५
 ता-व आचार्य का १०५
 ता-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 ता-फङ्-श्वेन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७
 तुन्-त्साङ् में ७४, ७८, ८४, ८५
 त्रिपिटक मूद्रण-वष्टन-विषयक शिलालेख
 (बो-लुङ् स्स में) १०५
 थाइ राजकुमार की मूर्तिका (लुङ्-मन्
 में) ११५
 हावत्पारिषादध्याय-सूत्र १५३
 नारायण-मुद्रा में १५६
 पञ्चमूर्ति (लुङ्-मन् में) ११७
 पू-छी आचार्य का १०५
 पो-मा स्स में १०६, ११०
 फङ्-श्वेन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७

फन्-क्वो-कुङ् में बुद्धभक्त सेनापति का
 १०६
 फ्रेड-लाइ-फङ् में १५४
 बुद्धचरण (जापान के नारा नगर में)
 १०५
 बुद्धमूर्ति-निर्माण-विषयक (लुङ्-मन् में)
 ११५
 भारतीय धर्मदूतों के (पो-मा स्त में)
 १०८
 युन्-काङ् में ११२
 योगाचारभूमिशास्त्र पर सम्राट् की
 भूमिका और राजकुमार की उप-
 भूमिका, मिङ्-लुङ् भवन में १०३
 थ्वे फाङ् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 लाओ-चुन् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 लुङ्-मन् में ११२, ११४, ११६, १०७
 ल्याओ लिपि में (छिङ्-गजप्रासाद में)
 १०३
 वज्रछेदिका ११६ (लुङ्-मन् की श-खू
 स्म में), १५३
 वान्-फो नुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
 विष्वसागर का शिलाचित्र १०४
 वेइ अक्षर-गुहा (लुङ्-मन् में) ११७
 श-बू तुङ् में १५४
 शिङ्-ध्याओ स्त में १०३
 श्वेतकमल-सध १५३
 श्वेन्-चुन् महाराजा का (तुन्-ह्वाङ् में)
 ८४
 श्वेन्-स्मुङ् सम्राट् और धर्माचार्य चङ्-
 क्वाङ् के चित्र १०४
 षड्भाषिक (तुन्-ह्वाङ् में) ८४
 समस्तमुक्त-प्रवेश-रहिम-बिमलोष्णीष-प्रभा-

सर्वतथागतहृदय-समविरोचन-धारणी
 १३२
 सर्वदुर्गतिपरिशोषनोष्णीषविजयधारणी
 १३१
 शिलालेख-वन = पेइ-लिन्
 शिलालेख संग्रह १०२ (तू-शू-क्वान्
 अद्भुतागार में चार सहस्र शिलालेखों
 का संग्रह) १०५ (पेइ-लिन् में),
 १२४ (सुकदेन् के नगर पुस्तकालय में
 शिलालेखों की छापीं का संग्रह)
 शिलोत्कीर्ण-लेख-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्
 गवेषणालय में) ८२
 शिव ६१ (तुन्-ह्वाङ् में), ६२ (युन्-
 काङ् की ८वीं गुहा में)
 वृषभारूढ-त्रिमूर्ति ५६ (युन्-काङ् की
 फो-लाइ गुहा में)
 त्रिगूलधारी शिव ५६, १४७ (चिन्-
 आन् स्म में)
 शिव-मूर्ति (तुन्-ह्वाङ् में) ५६
 शिवरामकृष्ण १६३
 शिवली (लंका के भिक्षु) १६३
 शिशुशाला (पेइ-चिङ् में) १०७
 शी-आन् (शान्-सी प्रान्त की राजधानी)
 ६६, ७७, ६६, १०२, १४३
 शी-आन् पुस्तकालय ६६
 शी-आन् विश्वविद्यालय ६६
 शी-काङ् ६२
 शीतमण्डप (पो-मा स्त में) ११०
 शी-निङ् ६०, ६५
 शी-मिङ् स्त (में श्वेन्-ज्वाङ् रहे) ६७
 शी-यन् के स्मारक रूप में धारणी-लेख
 १११

शील १५४
 शी-ली-च-चाओ (होहे-हाँता में मोंगोल मन्दिर) ४६
 शी-स्या (ताङ्कुत् जाति की भाषा) ४३, ४५, १३१
 शी-स्या अक्षर १२७
 शी-स्या अनुवाद (मुङ् संस्करण से) १२७
 शी-स्या काण्डमुद्रणफलक १२६
 शी-स्या कोष (कारा-हाँता से) ५१
 शी-स्या गुहा (तुन्-ह्लाङ् में) ७५
 शी-स्या ग्रन्थ ४३ (त्रिपिटक), ४४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), १०१ (शान्-सी त्शू-क्वान् में), १२६ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय से)
 शी-स्या चित्र १२७
 शी-स्या लेख ७८ (तुन्-ह्लाङ् में) ८४ (तुन्-ह्लाङ् में षड्-भाषा-शिलालेख), १३१
 शुद्धोधन-जातक (तुन्-ह्लाङ् में) ७६
 शुद्धोधन-शक्ति विशेषाख्यात काशदेग-नामलोङ्क-वल्सरौर्नाम माररोगहः प्रतिभ्रं विहारं । (युङ्-हो-कुङ् में भोट आयुर्वेद ग्रन्थ का संस्कृत शीर्षक) १२०
 शून्यता-सिद्धान्त १४४
 शून्यवाद के प्रसिद्ध प्रवक्ता मिङ् (फू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में) १०१
 शूबटं (बर्लिन अङ्गु तागार से) २८, ३०
 श्रुंगधारी व्याघ्र १५२
 शोतोकु राजकुमार (मूर्तिकार) ५२
 श्याओ-यन्-वा (शी-आङ् में पञ्चदश-

भूमिक मन्दिर) ६६
 श्याओ-वन् सम्राट् ६२
 श्या-ध्येन्-चू स्स (लिन्-ची ध्यान सम्प्रदाय का विख्यात स्थान) १५२
 श्येन्-वन् (सम्राट् श्याओ-वन् के पिता) ६२
 श्येन्-वन्-ती (थो-पा सम्राट् ५२३-५२७ विक्रम) ५३
 श्येन्-हङ् ११६, ११७
 श्ये-पिङ्-गिङ् (कवयित्री) ४१
 श्रमिक-संघ ४६
 श्रावस्ती के चमत्कारों का चित्रण (युन्-काङ् में) ५७
 श्रेयामप्रमाद जैन १६४
 श्वेन-कमल-संघ (= अवतंसक-शुद्ध-जीवन-धार्मिक संघ) १५३
 श्वेताश्व-विहार (=पो-मा स्स) १०८
 श्वेन्-चुङ् महाराजा (तुन्-ह्लाङ् में) ८४
 श्वेन्-च्वाङ् २६ (भारत यात्रा), ७१, ७६ (तुन्-ह्लाङ् में चित्र) ६७ (गो-आन् के थ्स-अन् स्म विहार में ~ की अध्यक्षता में अनुवाद), ६८ (~ द्वारा अनूदित ग्रन्थों की सूची), १०० (फू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में पञ्च-भूमिक समाधि, लेख, और मूर्तिका-मूर्ति), १०१ (फू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में अस्थि-अवशेष), १०२ (योगा-चारभूमिशास्त्र का चीनी में अनुवाद), १०३ (स्तूप), १०५, ११४, १२६, १४३ (अस्थि-अवशेष)
 श्वेन्-च्वाङ् का चित्र ७६
 श्वेन्-रुङ् सम्राट् १०४ (शिलाचित्र),

११२

स्वेन्-डू १११ (ग्राम), ११३ (राजा)

ष

षड्बोधिबुद्ध मन्दिर ६

षड्बोधिबुद्ध मठों १०

षड्भाषा-लेख १३०

स

स (अमोघश्री) १५८

संयुक्त अग्रसंघ (United Front Organization) १२८

संस्कृत का अध्ययन १३२

संस्कृत ग्रन्थ (चीनी में) २६, १४६

संस्कृत मन्त्र १४ २३ (राजप्रामाद से भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी लिपियों में संस्कृत मन्त्र-संग्रह)

संस्कृत लिपि १४, १५५

संस्कृत लेख ८४ (तुन्-ह्वाङ् के षड्भाषा-लेख में)

सद्धर्मपुण्डरीक ५७ (युन्-काङ् में इसके उपदेश का चित्रण). ६०, ६१, ६३, १५२, १५३

सप्तभूमि म्त्रूप (लान्-चाओ में) ६७

समन्तभद्र ६८, १५७ (ओ-मो गान् में ~ का निवाम)

समन्तमुख-प्रवेश-रश्मि-विमलोष्णीष-प्रभा-सर्वतथागत-हृदय-समविरोचन-धारणी १३२

समाधि १५२

समाधि-प्रज्ञा-ध्यानाचार्य (उपाधि) १०६

सम्राट्-भिक्षेक (आचार्य अमोघवज्र द्वारा) १०४

सम्राडादेश (ता-यन्-था में) ६८

स-याङ् गिरि १५६

सरस्वती (कुम्-बुम् में) ६३

सरस्वती-विहार-ग्रन्थमाला १३२

सर्वतथागताधिष्ठानहृदय-गुह्याघातुकरण्ड-धारणी २३ (प्रासाद-संग्रह में), १५० (लेङ्-फ़ङ् स्तूप की ईंटों में)

सर्वदुर्गतिपरिशोधनोष्णीषविजय-धारणी १३२

महम्म बुद्ध ६२ (कुम्-बुम् में)

महम्म-बुद्ध-गिरि (छी-श्या स्स में) १४४, १४५

महम्म-बुद्ध-गुहा (= वान्-फो तुङ्, लुङ्-मन् में) ११६

मा-चाओ मण्डल (= आधुनिक तुन्-ह्वाङ्) ८४

मान्-वेङ्-शान् (तुन्-ह्वाङ् में) ६१

साम्-थान् (शी-ली-थू-चाओ के मुख्य लामा) ४६

साम्यवादी गीत (संयान में) ३

माहित्य-दर्पण के नाटक-परिच्छेद का चीनी अनुवाद २६

सिंहचर्मावृत स्तम्भ (कुम्-बुम् में) ६४

सिंहपुर (= सिगापुर) १६३

सिंहपुर बौद्ध मन्दिर १६३

सिखु साली तुनुङ् (स्वेन्-च्वाङ् की जोवनी के वीगूर में अनुवादक) २६

सिद्धम् लिपि ८, ८५, १३२, १४७

सिद्धासन ६, १०

मुद्दको (जापान कला का युन्-काङ् पर प्रभाव) ५७

मुखावती ११८, १५२, १५३, १५४

मुख्वावती-सूत्र का अवतंसक दर्शन के
 अनुसार निर्वचन १५४
 सुङ्-चू स्स २७ (भोट ग्रन्थों का काष्ठ-
 फलकों द्वारा मुद्रण), ३०
 सुङ्-रे-ब्राम्ह्यो (चिङ्-हाइ प्रान्त के
 संस्कृति और शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष)
 ६१
 सुङ्-शान् १०७
 सुदर्शना का तैलचित्र ८५
 सुन्-यात्-सन् ५ (~स्मारक), ६
 (~भवन), ७ (~स्मारक), ४०
 (~शवाधान), १४२, १६० (क्वाङ्-
 चोउ में ~विश्वविद्यालय)
 सुभग (अहंत) ४०
 सुमेरु (चन्दन का) ४५
 सुमेरु-वेदी (चिङ्-शान स्म में) १५६
 सुवर्णप्रभाम-सूत्र ५६ (~ के अनुसार
 युन्-काङ् की गुहाओं का निर्माण),
 ६०
 सुवर्णमण्डन बुद्धचित्रित ईंटें १४३
 सुवर्ण-स्तूप (कुम्-बुम् में) ६३
 सूत्रपाठ १४७
 सूत्रपाठ-भवन (कुम्-बुम् में) ६२
 सत्र-पुस्तिका ५०
 सूत्र-रक्षा-मन्दिर (=ता-यन्-या) ६८
 सूर्य (स्तूप पर चित्रित) ६२
 सोनाम् जाम्ह्यो का स्तूप (कुम्-बुम् में)
 ६२
 सोल्का (कुम्-बुम् में) ६४
 स्टाइन (Aurel Stein) ७३
 स्तूप-गुहा (=लुङ्-मन् में नत-जानु-सिह-
 गुहा) ११६

स्फोट-कीडा २१
 स्वर्गलोक के दृश्य (शीष्म-प्रासाद के
 त्रिभूमिक रंगमण्डप में) ४४
 स्वस्तिका-रूप मण्डप १४६
 स्वी-ता-फो तुङ् (युन्-काङ् में) ६१
 स्वीवंश-कालीन चित्र (तुन्-ह्वाङ् में) ७५
 स्स-कू-चुन् शू (मुक्देन् के नगर-पुस्त-
 कालय में ३००० खण्डों में विश्व-
 कोष) १२४
 स्स-पू-ग-थाङ् (मोंगोलिया के स्मारक-
 उद्यान में नया प्राणी) ५०
 स्स-मिङ् (निम्पो) १५०
 स्स-शुन् वीषि (हो-नान् नगर में) ११४

ह

हरिकृष्ण महताब (बम्बई प्रदेश के
 राज्यपाल) १६४
 हरीन्द्र चट्टोपाध्याय ३८
 हॉङ्-काँङ् ३, १६२
 हाङ्-चोउ १४६, १५३ १५६
 हाङ्-चोउ-कासार १४६
 हार्ड ६२
 हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन ३८, ३६
 हिम-मञ्जूषा १२३
 हुङ्-फू स्स (शी-आन् में) १०२, १०३
 हुङ्-सङ् (अध्यक्ष, विदेश सांस्कृतिक
 सम्पर्क मण्डल) ४१
 हुतात्म-स्मारक-स्तम्भ (होहे-हाँता में)
 ५१
 हृदय-पारमितासूत्र—देक्षिण प्रज्ञापारमिता-
 हृदय-सूत्र
 हृदय-सूत्र—देक्षिण प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र

होता के राजा (तुन्-ह्वाङ्) ७६
हो-नान् १०८, ११४
होहे-होता (आभ्यन्तर मोंगोल की राज-
धानी नील-नगरी) ४३, ४६ ४८
ह्वाङ्-जन् थाङ् भवन १२७
ह्वाङ् महारानी १५१
ह्वाङ्-हो (अर्थात् पीतनदी) ८६, ९०
ह्वा-यन् सम्प्रदाय १५२

ह्वा-यन् स्स ६३ (ता तुङ् नगर में दो
विहार). १०६
ह्वी-च्येन् (लुङ्-मन् मे धर्माचार्य) ११८
ह्वी-तिङ् मिश्रणी ६३
ह्वी-ली (लिङ्-यिन् विहार के संस्थापक
भारतीय पण्डित) १५१
ह्वी-स्याङ् (छिङ्-त्याङ् प्राचीन अभिलेख
के संकलनकर्ता) ५७